बिखरे मोती

नज़रसानी व तसहीहशुदा एडीशन

इंतिख़ाब व तरतीब

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

बिखरे मोती

नज़रसानी व तसहीहशुदा एडीशन

(जिल्द-8)

इंतिख़ाब व तर्तीब

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

हिन्दी रस्मुल-ख़त व तसहीह

एस० ख़ालिद निज़ामी

फ़ेहरिस्त

सवानेह मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी (रह०)

ताज़ियतनामे

दीन व दावत और दाओी की दिल-नशीन तशरीह

* * *

तहरीर

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّيۡ عَلٰى رَسُوۡلِهِ الۡكَرِيۡمِ اَمَّا بَعۡدُ:

नहमदुहू व नुसल्लि अला रसूलिहिल करीम। अम्मा बअद:

"बिखरे मोती' मेरी पसन्दीदा बातों का मजमूआ है। इसके सात हिस्से नज़रसानी के बाद शाये हो चुके हैं। आठवाँ हिस्सा नज़रसानी और मुफ़ीद इज़ाफ़ों के बाद शाये करने की इजाज़त हाजी नासिर ख़ान, फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली, को दे रहा हूँ।

फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली से जो ऐडीशन शाये हो रहा है, उसमें ग़लतियों की तसहीह का पूरा एहतिमाम किया गया है और मुफ़ीद इज़ाफ़े भी किए गए हैं। इसलिए नाशिर पुरानी किताबों को शाया न करें, वस्सलाम।

अल्लाह की रिज़ा का तालिब

मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

तक़रीज़

मुफ़स्सिरे क़ुरआन, मुहद्दिस कबीर, फ़क़ीहुन्नफ़्स हज़रत मौलाना मुफ़्ती सय्यद अहमद साहब पालनपुरी दामत बरकातुहुम

(उस्ताद : हदीस दारुल उलूम देवबन्द और शारेह हुज्जतुल्लाहिल-बालिग़ा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ، وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ، وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ، اَمَّا بَعْدُ:

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन, वल आक़िबतु लिलमुत्तक़ीन, वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यिदिल मुर्सलीन, व अला आलिही व सहबिही अजमईन, अम्मा बअद :

'बिखरे मोती' में जनाब मुकर्रम मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी ने गुलहाए रंग-रंग चुनकर हसीन गुलदस्ता तैयार किया है। यह किताब मौलाना ज़ैद मुजद्दिहिम का कश्कूल है, जिसमें आपने क़ीमती मोती इकट्ठा किए हैं। एक हसीन दस्तरख़ान है जिसपर अनवाअ व अक़साम के लज़ीज़ खाने चुने गए हैं। इस किताब में जहाँ तफ़्सीरी फ़वाइद व नुकात हैं, हदीसी नसीहतें व इर्शादात भी हैं। दावती और तब्लीग़ी चाशनी लिए हुए सहाबा और बाद के अकाबिर के वाक़िआत भी हैं जिनसे दिल जल्द असरपज़ीर होता है। नीज़ ऐसी दुआएँ भी शामिले किताब की गई हैं जो गौना अमलियात का रंग लिए हुए हैं। इस तरह किताब बहुत दिलचस्प बन गई है।

नीज़ मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमीन साहब पालनपुरी, उस्ताद हदीस व फ़िक़्ह दारुल उलूम देवबन्द की नज़रसानी ने इसकी एतिबारियत में इज़ाफ़ा किया है, गोया किताब में चार चाँद लगाए हैं। इसलिए उम्मीद है कि किताब लोगों के लिए बेहद मुफ़ीद साबित होगी। अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाए और मुसन्निफ़ के लिए ज़ख़ीर-ए-आख़िरत बनाए और उम्मत को उससे फ़ैज़याब फ़रमाए। वस्सलाम।

सय्यद अहमद अफ़ाउल्लाह अन्हु पालनपुरी

तआरुफ़ व तबसिरा

अज़ हज़रत मौलाना शम्सुल हक़ साहब नदवी

मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी दावत व तब्लीग़ के नामवर ख़तीब व वाइज़ मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी (जिन्होंने अपनी पूरी उम्र दावत व तब्लीग़ के लिए वक़्फ़ फ़रमा दी थी, जो हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब (रह०) के ख़ास तर्बियतयाफ़्ता थे, और हज़रत जी की वफ़ात के बाद तो बड़े इज्तिमाआत को उमूमन मौलाना ही ख़िताब फ़रमाते थे। मौलाना की तक़रीर बड़ी मुअस्सिर और आम-फ़हम होती थी। दुआ भी तवील फ़रमाते थे। मौलाना यूनुस साहब इन्हीं) के फ़रज़न्द अर्जमन्द हैं और मौलाना की वफ़ात के बाद अपने वक़्त का बड़ा हिस्सा मर्कज़ निज़ामुद्दीन में गुज़ारते हैं। मौलाना को मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी रहमतुल्लाहि से बैअ़त व ख़िलाफ़त का शर्फ़ भी हासिल है, जिसकी वजह से हज़रत की तस्नीफ़ात का भी ज़ौक़ व शौक़ के साथ मुताला फ़रमाते हैं। बड़े इज्तिमाआत में शिर्कत का पूरा एहतिमाम रहता है। जिस वक़्त ये सतरें लिखीं जा रही हैं, दो अहम इज्तिमाआत में शिर्कत के बाद यानी 9 ज़िलहिज्जा को इश्क़ व सरमस्ती के आलम में अरफ़ात में होंगे। अल्लाह तआला हज्जे-मबरूर नसीब फ़रमाए, यह एक दूर-इफ़्तादा की दुआ है।

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ.

रब्बना तक़ब्बल् मिन्ना इन्न-क अंतस्-समीउल अ़लीम०

मौलाना अपनी तक़ारीर में अहादीस शरीफ़ा और तक़ारीर और बुज़ुर्गों के तज़्किरों में मज़्कूर मुअस्सिर वाक़िआत व हिकायात और

नसायह व हुक्म को बयान करते, और सामईन के दिलों को गर्माते और दीनी ग़ैरत व हमीयत को जगाते हैं। मौलाना अर्से से ऐसे मुअस्सिर वाक़िआत, तालीमात और बाज़ ज़रूरी मसाइल व फ़तावा की बयाज़ भी तैयार करते जाते हैं, जो वाक़ई बिखरे मोतियों का बड़ा दिलकश हार है, जो पढ़नेवाले के दिल को खींचता है और रूह को बालीदगी अता करता है, ख़ुसूसन रमज़ानुल-मुबारक में मौलाना मौसूफ़ का तरावीह के बाद मुम्बई में दो जगह वअ्ज़ और तफ़्सीर क़ुरआन पाक बयान करने का मामूल है, जिसका सिलसिला बारह बजे रात तक जारी रहता है और इख़्तिताम गुलूगीर आवाज़ में तवील दुआ पर होता है। लोगों ने दूर-दूर कनेक्शन ले रखे हैं जिससे घरों में मस्तूरात भी शौक़ के साथ मौलाना के मुअस्सिर वअ्ज़ को सुनती हैं, उन तक़रीरों और बयान में मौलाना के उन्हीं बिखरे मोतियों को मौक़ा व मुनासिबत से ज़ीनते बयान व तक़रीर बनाते जाते हैं; जो अब किताबी शक्ल में आ गए हैं। उन बिखरे मोतियों का मुताला बड़ा मुफ़ीद और दिल को गर्मानेवाला है, ज़बान व बयान असान व रवाँ है। अल्लाह तआला से दुआ है कि इससे ज़्यादा-से-ज़्यादा फ़ायदा पहुँचाए।

मौलाना शमसुल हक़ नदवी

तक़रीज़

मौलाना मुफ़्ती अमीन साहब पालनपुरी
(उस्ताद हदीस व फ़िक़्ह दारुल-उलूम देवबन्द)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَحْدَهٗ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى مَنْ لَا نَبِيَّ بَعْدَهٗ اَمَّا بَعْدُ:

अलहम्दुलिल्लाहि वह्दहू, वस्सलातु वस्सलामु अला मन ला नबिय-य बअ़दहू, अम्मा बअ़द :

मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी; हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी क़द्द-स-सिर्रहू के बड़े साहबज़ादे हैं। मौसूफ़ ने सन् 1393 हि० मुताबिक़ सन् 1973 ई० में मज़ाहिर उलूम सहारनपुर से उलूमे मुतदावला से फ़राग़त हासिल की है। तालिबे इल्मी के ज़माने से आपका महबूब मश्ग़ला अस्लाफ़ व अकाबिर की किताबों का मुताला और पसन्दीदा बातों को कापी में महफ़ूज़ करना है।

उलूम मुतदावला से फ़राग़त के बाद एक तवील अर्से तक वालिद मुहतरम के ज़ेरे-साया दावत व तब्लीग़ के काम में शबो-रोज़ लगे रहे और वालिद मुहतरम के औसाफ़ व कमालात को जज़्ब करते रहे। जिन हज़रात ने हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी क़द्द-स सिर्रहू के बयानात सुने हैं और उसको क़रीब से देखा है, वह इस बात की खुले दिल से गवाही देंगे कि मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब अख़्लाक़ व आदात और औसाफ़ व कमालात में उमर-सानी हैं।

दावत व तब्लीग़ के काम से मौलाना जो दिलचस्पी रखते हैं वह 'अज़हर मिनश्शम्स' है, और रमज़ानुल मुबारक में तरावीह के बाद

मुम्बई में मौसूफ़ के जो बयानात होते हैं उनसे आपकी उलूमे-क़ुरआन के साथ मुनासिबत अयाँ है। हज़ारों आदमी अपने घरों में कनेक्शन सिर्फ़ मौलाना के बयानात सुनने के लिए रखते हैं। इस तरह मर्दों के साथ-साथ औरतें भी आपके बयानों से ख़ूब इस्तिफ़ादा करती हैं।

दूसरी तरफ़ मौलाना उन पसन्दीदा बातों को जो आप तालिबे इल्मी के ज़माने से अब तक मुंतख़ब व महफ़ूज़ फ़रमा रहे हैं 'बिखरे मोती' के नाम से शाये फ़रमा कर पूरी उम्मते-मुस्लिमा को फ़ैज़ पहुँचा रहे हैं। बिला शुब्हा यह किताब इस्मे-बामुसम्मा है, जो ख़ुशक़िस्मत उसको देखता है, पूरा पढ़े बग़ैर दम नहीं लेता।

इस किताब के कई हिस्से 'फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली' से शाये (प्रकाशित) हो चुके हैं, अब आठवाँ हिस्सा पहली बार हिन्दी में 'फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली' से शाया हो रहा है, साबिक़ा हिस्सों की तरह इस हिस्से में भी मौलाना ने इबरतआमेज़ वाक़िआत, निहायत मुफ़ीद मज़ामीन और कारआम बातें जमा कर दी हैं। अल्लाह तआला इस किताब को उम्मत के लिए रुश्दो-हिदायत का ज़रीया बनाए और मौसूफ़ को अज्रे अज़ीम अता फ़रमाए। आमीन या रब्बुल आलमीन!

मुहम्मद अमीन पालनपुरी

ख़ादिम हदीस व फ़िक़्ह

दारुल उलूम देवबन्द

अर्ज़े-नाशिर

इस किताब (बिखरे मोती) के सभी तसहीह शुदा हिस्से उर्दू में फ़रीद बुक डिपो, नई दिल्ली से शाया हो चुके हैं। हिन्दुस्तान के कई नाशिराने कुतुब ने पाकिस्तानी ऐडीशन को जूँ का तूँ शाया किया है। उन ऐडीशनों में बहुत ज़्यादा ग़लतियाँ हैं, नीज़ अक्सर अरबी इबारतों पर आराब भी नहीं हैं, और बाज़ जगह सिर्फ़ अरबी इबारत है, उसका तर्जमा नहीं है। मगर किसी नाशिर ने उसकी इस्लाह की तरफ़ तवज्जोह नहीं की।

बिल आख़िर साहिबे किताब हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी दामत बरकातुहुम ने नाशिर से राब्ता किया और इग़लात की तसहीह, अरबी इबारतों पर आराब लगाने और उनके तर्जमे करने की फ़रमाइश की। इसी फ़रमाइश का नतीजा है कि बिखरे मोती (उर्दू) के सभी हिस्से और हिन्दी के सात हिस्से शाया हो चुके हैं। आठवाँ हिस्सा आपके हाथ में है।

अलग़र्ज़ किताब को आसान और उमदा बनाने की पूरी कोशिश की गई है, यह महज़ अल्लाह जल्ले शानुहू का फ़ज़्ल व करम और हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी दामत बरकातुहुम की दुआओं की बरकत है। अल्लाह तआला इस किताब को मौलाना और उनके अहले ख़ाना के लिए सदक़ए-जारियह् और क़ारईन के लिए रुश्द व हिदायत का ज़रिया बनाए। आमीन या रब्बल आलमीन!

मुहम्मद नासिर ख़ान
फ़रीद बुक डिपो,
नई दिल्ली-2

रहमत बारगाहे रिसालत

रहमत बारगाहे रिसालत भूल जाने के क़ाबिल नहीं है
कैसे कैसे इनायत हुई है यह बताने के क़ाबिल नहीं है

ताब दीदार की भी नहीं है ज़ब्त ग़म का भी यारा नहीं है
पास आने के क़ाबिल नहीं है दूर जाने के क़ाबिल नहीं है

दौलत दर्दे दिल देनेवाले हौसले ज़ब्ते ग़म का भी दे दे
नातवाँ है मरीज़े मदीना ग़म उठाने के क़ाबिल नहीं है

मैं हूँ बन्दा तू ख़ालिक़ मेरा है मैं भी क्या मेरा सज्दा भी क्या
सर झुकाना फ़रीज़ा है वर्ना सर झुकाने के क़ाबिल नहीं है

बारगाहे नबी में पहुँच कर देर तक हम यह सोचा किए हैं
सामने कौन मुँह लेके जाएँ मुँह दिखाने के क़ाबिल नहीं है

फ़र्द असयाँ में लिखे हुए थे चन्द आँसू भी यादे नबी के
और हुक्म हुआ रोज़े महशर यह जलाने के क़ाबिल नहीं है

हर नफ़स तेरे लुत्फ़ व करम की है यह मोहताज दोनों जहाँ में
उम्मते मुस्तफ़ा मेरे मौला आज़माने के क़ाबिल नहीं है

देखकर मेर पथराई आँखें क़ाफ़िले वाले कहने लगे हैं
छोड़ दो इसको शहरे नबी में अब यह जाने के क़ाबिल नहीं है

इक नज़र ऐ तमन्नाए हर दिल जानिब यूनुस दिल शिकस्ता
सर झुकाए हुए आ गया है सर उठाने के क़ाबिल नहीं है

दुनिया में हर वक़्त गूँजनेवाली आवाज़ 'अज़ान' है

दुनिया में हर वक़्त गूँजनेवाली आवाज़ (अज़ान) की आवाज़ है। रिपोर्ट के मुताबिक़ इंडोनेशिया के मशरिक़ में वाक़ेअ जज़ाइर से तुलूअ आफ़ताब के साथ ही फ़ज्र की अज़ान शुरू हो जाती है और बयक वक़्त हज़ारों मुअज़्ज़िन अल्लाह तआला की तौहीद और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की रिसालत का एलान करते हैं। मशरिक़ी जज़ाइर से यह सिलसिला मग़रिबी जज़ाइर तक चला जाता है। डेढ़ घंटे बाद यह सिलसिला समाट्रा में शुरू हो जाता है और समाट्रा के क़स्बों और देहातों में अज़ानें शुरू होने से पहले ही मलाया की मस्जिद में अज़ानों का सिलसिला शुरू हो जाता है और एक घंटे के बाद ढाका पहुँचता है। रिपोर्ट के मुताबिक़ बंगलादेश में अभी अज़ानें ख़त्म नहीं होतीं कि कलकत्ता से श्रीलंका तक फ़ज्र की अज़ानें शुरू हो जाती हैं। दूसरी तरफ़ यह सिलसिला कलकत्ता से मुम्बई तक पहुँचता है और पूरे हिन्दुस्तान की फ़िज़ा तौहीद और रिसालत के एलान से गूंज उठती है। रिपोर्ट के मुताबिक़ श्रीनगर और सियालकोट में फ़ज्र की अज़ान का वक़्त एक ही है। सियालकोट से क्वेटा कराची और गवादर तक चालीस मिनट हैं इस अर्से में फ़ज्र की अज़ानें पाकिस्तान में गूंजती रहती हैं। पाकिस्तान में यह सिलसिला शुरू होने से पहले अफ़ग़ानिस्तान और मस्क़त में अज़ानें शुरू हो जाती हैं। मस्क़त से बग़दाद तक एक घंटे का फ़र्क़ है। इस अर्से में अज़ानें सऊदी अरब, यमन, मुत्तहिदा अरब अमारात, कुवैत और ईराक़ तक गूंजती रहती हैं। बग़दाद से अस्कन्दरिया तक फिर एक घंटे का फ़र्क़ है। इस वक़्त शाम, मिस्र, सोमालिया और सूडान में अज़ानें शुरू हो जाती हैं। अस्कन्दरिया से तराबुलुस तक एक घंटे का फ़र्क़ है। इस अर्से में शुमाली अमेरिका, लीबिया, टयूनिस में अज़ानों का सिलसिला शुरू हो जाता है। रिपोर्ट के मुताबिक़ फ़ज्र की अज़ान जिसका आग़ाज़ इंडोनेशिया के मशरिक़ी जज़ाइर से शुरू हुआ था साढे नौ घंटे का सफ़र तै करके बहरे-ओक़ियानूस के मशरिक़ी किनारे तक पहुँचती हैं।

फ़ज्र की अज़ान बहरे-ओक़ियानूस तक पहुँचने से पहले मशरिक़ी इंडोनेशिया में ज़ुहर का सिलसिलस शुरू हो जाता है और ढाका में ज़ुहर की अज़ानें शुरू होने तक इंडोनेशिया में अस्र की अज़ानें बुलन्द होने लगती हैं। यह सिलसिला डेढ़ घंटे में बमुश्किल जकारता तक पहुँचता है और मशरिक़ी जज़ाइर में मग़रिब की अज़ानों का सिलसिला शुरू हो जाता है। मग़रिब की अज़ानें भी सीलूज़ से समाट्रा तक ही पहुँचती हैं कि इतने में इंडोनेशिया के मशरिक़ी जज़ाइर में इशा की अज़ानें शुरू हो जाती हैं। रिपोर्ट के मुताबिक़ कर्रए अर्ज़ पर एक भी सेकेण्ड ऐसा नहीं गुज़रता होगा जब सैकड़ों, हज़ारों बल्कि लाखों मुअज़्ज़िन अल्लाह तआला की तौहीद और रसूल की रिसालत का एलान न करते हों।

हरमे मक्का और हरमे मदीना का एहतिराम

हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) के पोते सालिम (रह०) एक मर्तबा हरमे मक्का में तशरीफ़ लाए। मताफ़ में आपकी मुलाक़ात वक़्त के बादशाह हिशाम बिन अब्दुल मलिक से हुई। हिशाम ने सलाम के बाद अर्ज़ किया कि हज़रत! कोई ज़रूरत हो तो हुक्म फ़रमाइए ताकि मैं आपकी ख़िदमत कर सकूँ। आपने फ़रमाया : हिशाम! मुझे बैतुल्लाह के सामने खड़े होकर ग़ैरुल्लाह से हाजत बयान करते हुए शर्म आती है। अदबे इलाही का तक़ाज़ा है कि यहाँ फ़क़त उसी के सामने हाथ फैलाया जाए। हिशाम लाजवाब होकर ख़ामोश हो गया। क़ुदरतन जब आप हरम शरीफ़ से बाहर निकले, तो हिशाम भी ऐन उस वक़्त बाहर निकला। आपको देखकर क़रीब आया और कहने लगा कि हज़रत! अब फ़रमाइए मैं आपकी क्या ख़िदमत कर सकता हूँ? आपने फ़रमाया: हिशाम बताओ मैं तुमसे क्या माँगूँ, दीन या दुनिया? हिशाम जानता था कि दीन के मैदान में तो आपका शुमार वक़्त की बुज़ुर्गतरीन हस्तियों में होता है। लिहाज़ा कहने लगा : हज़रत! आप मुझसे दुनिया माँगें। आपने फ़ौरन जवाब दिया कि दुनिया तो मैंने कभी ख़ालिक़ व मालिक से नहीं माँगी, भला तुमसे

कहाँ माँगूँगा। यह सुनते ही हिशाम का चेहरा लटक गया। सच है जिन हज़रात को बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में फ़रियाद पेश करने के आदाब आते हैं वे दुनियावालों के सामने दस्ते-दराज़ नहीं करते।

बाज़ मशाइख़े अज़्ज़ाम सफ़र मदीना के लिए प्यादा पा अपने घरों से रवाना हुए। जब पूछा गया तो फ़रमाया : मफ़रूर गुलाम अपने आक़ा के दरवाज़े पर सवार होकर नहीं आता। अगर हममें ताक़त होती तो सर के बल चलकर आते।

ख़लीफ़ाए-राशिद हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह०) का जब वक़्त वफ़ात आया, बाज़ लोगों ने सोचा कि इन्हें गुम्बदे ख़िज़रा में दफ़न करेंगे। जब यह बात उनके कानों में पड़ी तो मना करते हुए फ़रमाया :

"मेरा नबी अकरम (सल्ल०) के क़रीब दफ़न होना बड़ी गुस्ताख़ी और नबी (सल्ल०) की बेअदबी है। मेरी औक़ात क्या है कि मेरी क़ब्र उनके क़रीब हो।"

तिलावते क़ुरआन के आदाब

क़ुरआन मजीद की तिलावत के आदाब दो तरह के हैं। एक आदाब ज़ाहिरी और दूसरे आदाब बातिनी। दोनों तरह के आदाब की तफ़्सील दर्जे ज़ेल है :

आदाबे ज़ाहिरी

- बावुज़ू और क़िबला रू होकर बैठे अगर ख़ुश्बू लगा ले तो बेहतर है।
- तिलावत करते वक़्त लिबास भी पाकीज़ा होना चाहिए।
- ऐसी जगह न बैठे जहाँ आने-जाने वालों को तंगी हो या उनकी पुश्त होने का इम्कान हो।
- क़ुरआन मजीद को तकिया, रहल या ऊंची जगह पर रखे।
- तिलावते क़ुरान का आग़ाज़ तअव्वुज़ और तस्मिया से करे।
- जब दौराने तिलावत कोई सूरह आ जाए तो तअव्वुज़ पढ़ने की ज़रूरत नहीं सिर्फ़ तस्मिया पढ़ा जाए।

- जब आग़ाज़ तिलावत सूरह तौबा हो तो तअव्वुज़ ज़रूरी है और तस्मिया में इख़्तियार है चाहे पढ़े या न पढ़े।
- जब दौराने तिलावत सूरह तौबा आ जाए तो तअव्वुज़ और तस्मिया दोनों का पढ़ना ज़रूरी नहीं।
- जहाँ मुख़्तलिफ़ लोग अपने-अपने कामों में मशग़ूल हों वहाँ ज़ेरे लब पढ़ना बेहतर है।
- अगर तंहाई नसीब हो तो ऊँची आवाज़ से तिलावत कर सकता है। अगर किसी को तकलीफ़ का अंदेशा हो तो आहिस्ता पढ़े।
- ऊँची आवाज़ से तिलावत करते हुए अपने कान या रुख़्सार पर हाथ न रखे, क्योंकि यह गानेवालों का तरीक़ा है।
- क़ुरआन मजीद को तज्वीद के उसूलों के मुताबिक़ उम्दा और सही मख़ारिज और सिफ़ात का लिहाज़ रखते हुए पढ़े।
- जितना मुमकिन हो क़ुरआन मजीद को तर्तील से (ठहर-ठहरकर) पढ़े।
- रमूज़ व औक़ाफ़ का ख़्याल रखकर तिलावत करे।
- अपनी बिसात के मुताबिक़ ख़ुश-इल्हामी से क़ुरआन मजीद की तिलावत करे ताहम राग और गाने की तर्ज़ लगाना बेअदबी है।
- आयाते रहमत पर रहम की दुआ करे जबकि आयात वईद पर मग़फ़िरत की दुआ करे।
- दौराने तिलावत इधर-उधर देखना बेअदबी में दाख़िल है।
- तिलावत करते वक़्त अपने पाँव पर हाथ न रखे और न इधर-उधर की चीज़ों के साथ खेले। अगर वर्क़ उलटना पड़े तो उंगली पर थूक ज़बान से न लगाए कि यह बेअदबी है।
- दौराने तिलावत नाक में उँगली डालना अदब के ख़िलाफ़ है।
- दौराने तिलावत किसी से बात न करे। अगर ज़रूरी हो तो आयत मुकम्मल करके बात करे। अगर मुमकिन हो तो रुकूअ मुकम्मल करके कलाम करे। दोबारा तिलावत करने से पहले तअव्वुज़ ज़रूर पढ़े।

- दौराने तिलावत आयाते अज़ाब पर रोने की कोशिश करे तो बेहतर है।
- आयाते सज्दा पर सज्दा करे, अगर फ़ौरन नहीं तो बाद में पहली फ़ुरसत में सज्दा करे। यह उन आयात का हक़ है।
- जब तबीअत तिलावत करते-करते थक जाए तो रुक जाए। तिलावत के दौरान तबीयत का इंशिराह बेहतर है।
- क़ुरआन मजीद मुकम्मल करने पर दुआ करना सुन्नते नबवी है।

आदाबे बातिनी

कलाम पाक की तिलावत के बातिनी आदाब दर्जे ज़ल हैं :

- कलाम पाक की अज़्मत दिल में रखे कि कैसा आली मर्तबा कलाम है।
- अल्लाह तआला की अज़्म व किब्रियाई को दिल में रखे कि किसका कलाम है।
- दिल को वसाविस और ख़तरात से पाक रखें।
- मानी का तदब्बुर करे और लज़्ज़त के साथ पढ़ें।
- जिन आयात की तिलावत कर रहा है दिल को उनके ताबेअ बना दे जैसे अगर आयत अज़ाब ज़बान पर है तो दिल लरज़ जाए।
- अपने कानों को इस दर्जे मुतवज्जह बना दे कि मानो अल्लाह तआला कलाम फ़रमा रहे हैं और यह सुन रहा है।

क़ुरआन मजीद की बेअदबी की

मुख़्तलिफ़ सूरतें

क़ुरआन मजीद की बेअदबी की मुख़्तलिफ़ सूरतें दर्जे ज़ेल हैं। हर मुसलमान को उनसे हत्तल वुसअत इज्तिनाब करना चाहिए :

- बग़ैर वुज़ू क़ुरआन मजीद को छूना।
- कुतुब तफ़ासीर या आम किताबों में मरक़ूम क़ुरआनी आयात पर बग़ैर वुज़ू हाथ लगाना।

- नजस जगह पर बैठे हुए ज़बानी या नाज़रा क़ुरआन मजीद पढ़ना।
- जब तिलावत की आवाज़ कानों में पड़ रही हो तो उसको ख़ामोशी से न सुनना।
- क़ुरआन मजीद याद करके भूल जाना।
- क़ुरआन मजीद के ऊपर कोई किताब रखना चाहे हदीस या फ़िक़्ह ही की क्यों न हो।
- क़ुरआन मजीद के ऊपर अपनी ऐनक, क़लम या टोपी वग़ैरह रखना।
- क़ुरआन मजीद की तरफ़ पाँव फैलाना।
- क़ुरआन मजीद नीचे होना और ख़ुद क़रीब ही ऊँची जगह बैठना।
- क़ुरआन मजीद ऐस जगह पर रखना जहाँ आने-जाने वालों की पुश्त होती हो।
- तिलावत के दौरान पाँव को हाथ लगासना या नाक में उंगली डालना।
- बग़ैर शरअी उज़्र के लेटकर क़ुरआन मजीद पढ़ना, चाहे नाज़रा हो या ज़बानी।
- क़ुरआन मजीद का मुताला करते वक़्त हुक़्क़ा या सिगरेट पीना या मुंह में निस्वार रखे हुए तिलावत करना।
- नाजाइज़ कारोबार में बरकत के लिए क़ुरआन मजीद पढ़ना या पढ़वाना।
- क़ुरआनी हुरूफ़ वाली अंगूठी पहन कर बैतुल-ख़ला में जाना।
- अख़्बारात में क़ुरआनी आयात की इशाअत करना और फिर उन्हें आम काग़ज़ों की तरह ज़मीन पर फेंक देना।
- अख़्बार व रसाइल वग़ैरह जिनमें आयाते क़ुरानी हों उनको दस्तरख़्वान वग़ैरह के लिए इस्तेमाल करना।
- क़ुरआन करीम के नक़्शवाले कैलेण्डर या किताबों की तरफ़ पाँव फैलाना।

- मोनोग्राम का गिफ़्ट की चीज़ों आदि पर आयात लिखना कि जिससे बेअदबी का अंदेशा हो।
- क़ुरआन मजीद की आयात को मसूरी और ख़त्ताती के मुख़्तलिफ़ डिज़ाइनों में इस तरह लिखना कि पढ़नेवाले न समझ सकें और ग़लत पढ़ें, सख़्त बेअदबी है।
- क़ुरआन मजीद को मय्यित के साथ क़ब्र में रखना।
- क़ुरआन मजीद के बोसीदा औराक़ को आम कूड़ा करकट के ढेर में फेंकना। (अगर ज़रूरत पेश आए तो ऐसे औराक़ जमा करके नहर या दरिया के पानी में बहा देना चाहिए।)
- क़ुरआनी आयातवाला काग़ज़ खुली हालत में बैतुल-ख़ला ले जाना। (चाँदी, चमड़े आदि में बन्द हो तो मुस्तसना है।)
- आयात क़ुरआनी या क़ुरआन मजीद को हक़ीर समझते हुए आग में डालना।
- लहू व लइब की मजालिस की इब्तिदा तिलावत क़ुरआन से करना।
- जिसने क़ुरआन पाक की तिलावत की और गुमान किया कि कोई शख़्स उससे अफ़ज़ल चीज़ का हामिल है तो उसने कलामुल्लाह की तौहीन की।

वालिदैन के आदाब के समरात

बनी इसराईल का एक यतीम बच्चा हर काम अपनी वालिदा से पूछकर उनकी मर्ज़ी के मुताबिक़ किया करता था। उसने एक ख़ूबसूरत गाय पाली और हर वक़्त उसक देखभाल में मसरूफ़ था। एक मर्तबा एक फ़रिश्ता इंसान शक्ल में उस बच्चे के सामने आया और गाय ख़रीदने का इरादा ज़ाहिर किया। बच्चे ने क़ीमत पूछी तो फ़रिश्ते ने बहुत थोड़ी क़ीमत बताई। जब बच्चे ने माँ को इत्तिला दी तो उसने इंकार कर दिया। फ़रिश्ता हर बार क़ीमत बढ़ाता रहा और बच्चा हर बार अपनी माँ से पूछकर जवाब देता रहा। जब कई बार ऐसा हुआ तो बच्चे ने महसूस किया कि मेरी वालिदा गाय

बेचने पर राज़ी नहीं हैं। लिहाज़ा उसने फ़रिश्ते को साफ़ इंकार कर दिया कि गाय किसी क़ीमत पर नहीं बेची जा सकती। फ़रिश्ते ने कहा तुम बड़े ख़ुशबख़्त और ख़ुश-नसीब हो कि हर बात अपनी वालिदा से पूछकर करते हो। अंक़रीब तुम्हारे पास कुछ लोग इस गाय को ख़रीदने के लिए आएंगे तो तुम इस गाय की ख़ूब क़ीमत लगाना।

दूसरी तरफ़ बनी इसराईल में एक आदमी के क़त्ल का वाक़िया पेश आया और उन्हें जिस गाय की क़ुरबानी का हुक्म मिला वह उस बच्चे की गाय थी। चुनाँचे इसराईल के लोग जब उस बच्चे से गाय ख़रीदने के लिए आए तो उस बच्चे ने कहा कि इस गाय की क़ीमत उसके वज़न के बराबर सोना अदा करने के बराबर है। बनी इसराईल के लोगों ने इतनी भार क़ीमत अदा करके गाय ख़रीद ली। तफ़्सीर अज़ीज़ी और तफ़्सीर मआलिमुल इरफ़ान फ़ी दुरूसिल क़ुरआन में लिखा है कि उस बच्चे को यह दौलत वालिदैन के अदब और उनकी इताअत की वजह से मिली। तफ़्सीर तबरी में भी इसी तरह का वाक़िया मंक़ूल है। इससे मालूम हुआ कि वालिदैन की ख़िदमत व अदब का कुछ सिला इस दुनिया में भी दे दिया जाता है।

एक नौजवान अपने वालिदैन का बड़ा अदब करता था और हर वक़्त उनकी ख़िदमत में मशग़ूल रहता था। जब वालिदैन काफ़ी उम्र रसीदा हो गए तो उसके भाइयों ने मशवरा किया कि क्यों न अपनी जायदाद को वालिदैन की ज़िंदगी में ही तक़्सीम कर लिया जाए ताकि बाद में कोई झगड़ा न खड़ा हो। उस नौजवान ने कहा कि आप जायदाद को आपस में तक़्सीम कर लें और उसके बदले मुझे अपने वालिदैन की ख़िदमत का काम सुपुर्द कर दें। दूसरे भाइयों ने ख़ुशी से यह काम उसके सुपुर्द कर दिया। यह नोजवान सारा दिल महनत मज़दूरी करता फिर घर आकर बक़िया वक़्त अपने वालिदेन की ख़िदमत और बीवी-बच्चों की देखभाल में गुज़ारता। वक़्त गुज़रता रहा यहाँ तक कि उसके वालिदैन ने दाओ अजल को लब्बैक कहा।

एक मर्तबा यह नौजवान रात को सो रहा था कि उसने ख़्वाब में देखा कि कोई कहनेवाला कह रहा है, ऐ नौजवान! तुमने अपने वालिदैन का अदब किया, उनको राज़ी व ख़ुश रखा, उसके बदले तुम्हें इनाम दिया जाएगा। जाओ फ़लाँ चट्टान के नीचे एक दीनार पड़ा है वह उठा लो। उसमें तुम्हारे लिए बरकत रख दी गई है। यह नौजवान सुबह के वक़्त बेदार हुआ तो उसने चट्टान के नीचे जाकर देखा तो उसे एक दीनार पड़ा हुआ मिल गया। उसने दीनार उठा लिया और ख़ुशी-ख़ुशी घर की तरफ़ रवाना हुआ। रास्ते में एक मछली-फ़रोश की दुकान के क़रीब गुज़रते हुए उसे ख़्याल आया कि इस दीनार के बदले में एक बड़ी मछली ख़रीद ली जाए ताकि बीवी-बच्चे आज इसके कबाब बनाकर खाएँ। चुनाँचे उसने दीनार के बदले एक बड़ी मछली ख़रीद ली। जब घर वापस आया तो उसकी बीवी ने मछली को पकाने के लिए काटना शुरू किया। पेट चाक किया तो उसमें से एक क़ीमती हीरा निकला। नौजवान उस हीरे को देखकर ख़ुशी से फूला न समाया। जब बाज़ार जाकर उस हीरे को बेचा तो उसकी इतनी क़ीमत मिली कि उसकी सारी ज़िंदगी का ख़र्चा पूरा हो गया।

वालिदैन का अदब और नुक़ूश अस्लाफ़

हज़रत इमाम आज़म अबू-हनीफ़ा (रह०) अपनी वालिदा का बहुत अदब व एतिराम किया करते थे। जब कभी उनकी वालिदा साहिबा को मसला मालूम करना होता तो वह एक सिन-रसीदा फ़क़ीह से दरयाफ़्त करतीं। ऐसे मौक़े पर इमामे आज़म अबू-हनीफ़ा (रह०) अपनी वालिदा को ऊँट पर सवार करते और ख़ुद ऊँट की नकेल पकड़ कर पैदल चलते। जब लोग देखते तो अदब व एहतिराम की वजह से रास्ते के दोनों तरफ़ खड़े होकर सलाम करते। इमाम आज़म अबू-हनीफ़ा (रह०) की वालिदा उनसे मसला दरयाफ़्त करतीं। कई मर्तबा ऐसा होता कि मामर फ़क़ीह को मसले का सही हल मालूम न होता तो वह ज़ेरे लब इमाम आज़म

अबू-हनीफ़ा (रह०) से पूछ लेते फिर ऊंची आवाज़ से आपकी वालिदा को बता देते। इमामे आज़म अबू-हनीफ़ा (रह०) की तवाज़ो और उनके अदब का यह आलम था कि सारी ज़िन्दगी अपनी वालिदा पर यह ज़ाहिर न होने दिया कि जो मसाइल आप उनसे पूछती हैं वह मैं ही तो बताता हूँ। यह सब इसलिए था कि वालिदा साहिबा की तबीयत जिस तरह मुत्मइन होती है, होनी चाहिए। इस अदब व एहतिराम के सदक़े ही इमामे आज़म बने।

ख़ुलासा कलाम

अगरचे वालिदैन का अदब व एहतिराम उम्र के हर हिस्से में वाजिब है लेकिन जब दोनों शबाब के बहारों, रूनाइयों और तवानाइयों से महरूम होकर बुढ़ापे की ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं तो औलाद को चाहिए कि उनका ज़्यादा ख़्याल रखे। ऐसा न हो कि औलाद की ज़रा-सी बेरुख़ी वालिदैन के लिए दिल का रोग बन जाए। जब वालिदैन औलाद के रहम व करम के मोहताज हों तो हालात के उन बेरहम थपेड़ों में औलाद पर ज़िम्मेदारी आयद होती है कि ऐसा कोई क़ौली या फ़ेली रवैया इख़्तियार न करे जिससे वालिदैन को ईज़ा पहुँचे। बल्कि उस वक़्त इंसान अपने बचपन को याद करे कि जब वह अपने वालिदैन की शफ़क़त और हुस्ने सुलूक का इससे ज़्यादा मोहताज था। अपने नंगे बदन को ढाँप नहीं सकता था, खुद अपनी मर्ज़ी से करवट नहीं बदल सकता था, अपनी ग़िज़ा का बन्दोबस्त नहीं कर सकता था, यहाँ तक कि अपने बदन के साथ लगी निजासत को नहीं धो सकता था। उस बेबसी के आलम में बाप की शफ़क़त और माँ की ममता ने शजर सायादार की तरह उसे अपनी मुहब्बत की घनी छाँव से नवाज़ा। यह माँ ही तो थी जो बच्चे को पहले खिलाती थी फिर खुद खाती थी। जो बच्चे को पहले पिलाती थी, बाद में खुद पीती थी। जो बच्चे को पहले सुलाती थी, बाद में खुद सोती थी। जो अपने सर की एक चादर के कोने से बेटे के जूतों को साफ़ करती थी। जो अपने हाथों से बच्चे के पाँव में जूता पहनाती थी। आज उस माँ के एहसानात का बदला चुकाने का

वक़्त आ पहुँचा। पस औलाद को चाहिए कि वालिदैन का अदब व एहतिराम का ख़्याल रखे। नबी करीम (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया:

اَلْجَنَّةُ تَحْتَ اَقْدَامِ الْاُمَّهَاتِ

"जन्नत माओं के क़दमों के नीचे है।

दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया :

رِضَى الرَّبِّ فِيْ رِضَى الْوَالِدِ وَسَخَطُ الرَّبِّ فِيْ سَخَطِ الْوَالِدِ۔

"रब की रज़ा वालिद की रज़ा में है और रब की नाराज़गी वालिद की नाराज़गी में है।" (मिश्कात, जिल्द 2, पे० 419)

सच तो यह है कि औलाद अपने वालिदैन की जितनी ख़िदमत करे उनके एहसानात का हक़ अदा नहीं कर सकती। बल्कि अगर सारी कायनात की नेमतों का लुक़मा बना-बनाकर वालिदैन के मुँह में दे दे तो भी वालिदा के सीने से पिये हुए दूध का बदला नहीं चुका सकती।

एक बुज़ुर्ग से किसी ने पूछा कि बाप बेटे की मुहब्बत में कितना फ़र्क़ है? फ़रमाया : बेटा बीमार हो और लाइलाज मर्ज़ में गिरफ़्तार हो जाए तो बाप उसकी दराज़ उम्री की रो-रोकर दुआएँ करता है। उसके बस में हो तो अपनी बक़िया ज़िंदगी के दिन अपने बेटे को देकर ख़ुद मौत को क़बूल कर ले, लेकिन जब बाप बीमार हो और लाइलाज हो जाए तो चन्द दिन ही में बेटा मायूस होकर दुआ माँगता है कि या अल्लाह! मेरे बूढ़े बाप को अपने पास बुला ले। कितनी अजीब बात है कि वफ़ा के बदले इतनी जफ़ा।

अल्लाह तआला हमें वालिदैन के अदब व एहतिराम और ख़िदमत व इताअत की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे।

इज़्ज़त उसे मिली जो घर से निकल गया
वह फूल सर चढ़ा जो चमन से निकल गया।

तालिबे-इल्म को इल्म का हरीस होना चाहिए

अगर वतन में मवाक़ेअ मयस्सर न हों तो सफ़र से घबराना नहीं चाहिए।

हज़रत अबू-सईद खुदरी (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया कि "मोमिन को इल्म से सीरी हासिल नहीं होती यहाँ तक कि जन्नत में पहुँच जाए।"

हज़रत ईसा (अलैहि०) से पूछा गया कि इल्म कब तक हासिल करना चाहिए? फ़रमाया : जब तक ज़िंदगी है। सईद-बिन-मुसय्यिब (रह०) कहते हैं कि मैं एक हदीस के लिए कई दिन और कई रात सफ़र करता था। शाबी (रह०) का क़ौल है कि "अगर कोई शख़्स मुल्क शाम के आख़िर से चलकर यमन के आख़िर तक महज़ इसलिए सफ़र करे कि इल्म की एक बात सुने तो मेरे नज़दीक उसका सफ़र ज़ाया नहीं हुआ।"

हज़रत अबू-दरदा (रज़ि०) से मन्क़ूल है : "जो कोई तलबे-इल्म के सफ़र को जिहाद नहीं समझता उसकी अक़्ल में नुक़्स है।"

इब्ने-अबी-ग़स्सान का मक़ूला है : "आदमी उस वक़्त तक आलिम है जब तक तालिबे-इल्म है। जब तालिबे-इल्मी को ख़ैरबाद कह दे तो जाहिल है।"

अबू उसामा हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक (रह०) के मुताल्लिक़ लिखते हैं:

مَا رَأَيْتُ رَجُلًا اَطْلَبَ الْعِلْمِ فِي الْاٰفَاقِ مِنِ ابْنِ الْمُبَارَكِ۔

"मैंने अब्दुल्लाह बिन मुबारक से ज़्यादा मुल्क-दर-मुल्क घूमकर तलबे-इलम करनेवाला नहीं देखा।"

इमाम ज़हबी (रह०) जब पहली मर्तबा तलबे इल्म के लिए निकले तो सात साल तक सफ़र ही में रहे। बहरैन से मिस्र फिर रमला वहाँ से तरतूस का सफ़र पैदल किया। उस वक़्त उनकी उम्र बीस साल की थी। इब्ने अल मक़री फ़रमाते हैं कि मैंने सिर्फ़ एक

नुस्ख़ा की ख़ातिर सत्तर मंज़िल का सफ़र किया। उन बुज़ुर्गों के दिल में शौक़े इल्म की ऐसी बेताबी थी जो उनको किसी शहर या मुल्क में क़रार नहीं लेने देती थी। एक समुन्द्र से दूसरे समुन्द्र और एक बर्रे-आज़म से दूसरे बर्रे-आज़म का सफ़र तहसील इल्म के लिए करते थे।

हज़रत इमाम अबू-हनीफ़ा (रह०) के हालात ज़िंदगी में लिखा है कि इमाम अबू-यूसुफ़ (रह०) को उनकी वालिदा ने कसबे मआश के लिए भेजा। यह हुसूल रिज़्क़ के लिए मुख़्तलिफ़ काम करते रहे। वालिदा का मशवरा था कि अगर कपड़े धोने का फ़न सीख लें तो कुछ गुज़र औक़ात का बन्दोबस्त हो जाएँ। एक मर्तबा इमाम अबू-यूसुफ़ (रह०) हज़रत इमाम अबू-हनीफ़ा (रह०) के दर्स में शरीक हुए तो उन्हें इल्म हासिल करने का शौक़ पैदा हुआ। वालिदा साहिबा की तरफ़ से इसरार था कि मेहनत-मज़दूरी करके पैसा कमाएँ और उनका दिल चाहता था कि इल्म हासिल करके आलिम बनूँ, उन्होंने सारा हाल इमाम अबू-हनीफ़ा (रह०) के गोश-गुज़ार कर दिया। इमाम साहब (रह०) ने शागिर्द रशीद में सआदत के आसार देखे तो फ़रमाया कि आप दर्स में बाक़ायदगी से आते रहें, हम आपको कुछ माहाना वज़ीफ़ा दे दिया करेंगे, वह आप अपनी वालिदा को दे दिया करें। चुनाँचे इमाम अबू-यूसुफ़ (रह०) सारा महीना इमाम साहब की मस्जिद दर्स में शरीक रहते और इमाम साहब (रह०) अपनी गिरह से कुछ वज़ीफ़ा के तौर पर पैसे दे देते जो इमाम अबू-यूसुफ़ (रह०) अपनी वालिदा के सुपुर्द कर देते। काफ़ी अर्से तक यह सिलसिला इसी तरह चलता रहा। एक दिन इमाम अबू-यूसुफ़ (रह०) की वालिदा को पता चला कि बेटा मेहनत-मज़दूरी के बजाए तहसील इल्म में मशग़ूल है तो वह बुरा फ़रोख़्ता हुई। बेटे को समझाया कि तुम्हारे वालिद फ़ौत हो गए हैं, घर में कोई दूसरा मर्द नहीं जो कमा सके। लिहाज़ा तुम अगर कोई काम-काज करते तो अच्छा होता। बेहतर था कि कोई फ़न सीख लेते। इमाम अबू-यूसुफ़ (रह०) ने यह माजरा इमाम साहब की ख़िदमत में पेश

कर दिया। इमाम साहब (रह०) ने कहा कि अपनी वालिदा से कहना कि किसी वक़्त आकर मेरी बात सुनें। चुनाँचे इमाम साहब (रह०) अपनी वालिदा को लेकर हाज़िरे ख़िदमत हुए। वालिदा ने इमाम साहब की ख़िदमत में वही सूरते हाल पेश की जो आप पहले सुन चुके थे। आपने इरशाद फ़रमाया कि मैं आपके बेटे को एक फ़न सिखा रहा हूँ कि जिससे यह पिस्ता का बना हुआ फ़ालूदा खाया करेगा। इमाम अबू-यूसुफ़ (रह०) की वालिदा समझीं कि शायद इमाम साहब (रह०) खुश-तबअी फ़रमा रहे हैं, ताहम ख़ामोश हो गईं। क्योंकि घर का ख़र्च तो वज़ीफ़ा की वजह से चल रहा था।

जब इमाम अबू-यूसुफ़ (रह०) ने तक्मील इल्म से फ़राग़त हासिल कर ली और अबू-यूसुफ़ (रह०) इमाम बन गए, तो उनके इल्म का शहरा दूर-दूर तक फैल गया। हुकूमते वक़्त ने इमाम आज़म अबू-हनीफ़ा (रह०) को क़ाज़ी-क़ज़ात का ओहदा पेश किया, तो उन्होंने इल्मी मशग़ूलियत की वजह से माज़रत कर दी। अलबत्ता इमाम अबू-यूसुफ़ (रह०) को फ़रमाया कि वह यह ओहदा क़बूल कर लें। इमाम अबू-यूसुफ़ (रह०) वक़्त की चीफ़ जस्टिस (क़ाज़ी-क़ज़ात) बन गए। पूरे मुल्क में उनक क़बूलियत आम हो गई। हुकूमते वक़्त ने यह ज़िम्मा लिया कि काम के दौरान खाने का बन्दोबस्त हुकूमत की तरफ़ से होगा। एक बार ख़लीफ़ा वक़्त उनको मिलने के लिए आया और अपने हमराह प्याले में फ़ालूदा लाया। जब इमाम अबू-यूसुफ़ (रह०) को पेश किया तो कहा, हज़रत! यह क़बूल फ़रमाएँ, यह वह नेमत है जो हमें कभी-कभी मिलती है मगर आपको रोज़ाना मिला करेगी। आपने पूछा यह क्या है? ख़लीफ़ा ने कहा, यह पिस्ता का बना हुआ फ़ालूदा है। इमाम अबू-यूसुफ़ (रह०) हैरान हुए कि उस्ताद मुकर्रम के मुँह से निकली हुई बात मन व अन पूरी हो गई।

दस्तरख़्वान मुनासिब जगह पर झाड़ा जाए

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ीअ साहब (रह०) एक मर्तबा मौलाना सय्यद असग़र हुसैन (रह०) के यहाँ मेहमान हुए। खाने से फ़राग़त पर मुफ़्ती साहब ने दस्तरख़्वान समेटना चाहा। मौलाना असग़र (रह०) ने पूछा : क्या करना चाहते हैं? बताया कि दस्तरख़्वान झाड़ दूँ। पूछा : दस्तरख़्वान झाड़ना आता भी है? मुफ़्ती साहब हैरान हुए कि इसमें जानने वाली कौन-सी बात है। लिहाज़ा यूँ पूछा कि आप बता दीजिए कैसे झाड़ते हैं? फ़रमाया : यह भी एक फ़न है। फिर हड्डियों को, गोश्त लगी बूटियों को, रोटी के टुकड़ों को और छोटे ज़र्रात को अलग-अलग किया। फिर हड्डियों को ऐसी जगह फेंका जहाँ कुत्ते खा सकें। गोश्त लगी बोटियों को ऐसी जगह फेंका जहाँ बिल्ली खा सके। रोटी के टुकड़ों को दीवार पर रख दिया ताकि परिन्दे खा सकें। छोटे-छोटे ज़र्रात को ऐसी जगह डाला जहाँ चींटियों का बिल क़रीब था। फिर फ़रमाया : यह अल्लाह का रिज़्क़ है, इसका कोई हिस्सा ज़ाया नहीं होना चाहिए।

हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी (रह०) के यहाँ एक साहब मेहमान हुए, तो उनके खाने में फल पेश किए गए। फ़राग़त पर उस आलिम साहब ने कहा : हज़रत! फलों के छिलके मैं बाहर फेंक देता हूँ। पूछा : फेंकने आते हैं? उन्होंने कहा : इसमें आने वाली बात क्या है? फ़रमाया : मेरे पड़ोस में ग़ुरबा रहते हैं। अगर सब छिलके एक जगह फेंक दिए तो उन्हें देखकर हसरत होगी। पस थोड़े-थोड़े छिलके इस तरह कई जगहों पर फेंक दिए कि देखने वालों को एहसास भी न हो।

बाज़ लोग रोटी के बड़े टुकड़े कूड़ा-करकट में डाल देते हैं। यह सख़्त बेअदबी है। देखने वालों को चाहिए कि वह उन टुकड़ों को उठाकर ऊंची जगह रख दें।

एक बुज़ुर्ग अपनी सवारी पर बैठे कहीं जा रहे थे और चने भी खा रहे थे। एक चना हाथ से गिर गया। उन्होंने सवारी रोकी और नीचे उतरकर चना उठाकर खा लिया। अल्लाह तआला ने उनके

तमाम गुनाहों की मग़फ़िरत फ़रमा दी कि इस बन्दे ने मेरे रिज़्क़ का अदब किया।

आजकल मश्रूब पीते हुए थोड़ा-सा मश्रूब बर्तन में बचा देना फैशन बन गया है। यह तकब्बुर की अलामत है और रिज़्क़ की बेअदबी है। हज़रत अक़दस थानवी (रह०) एक मर्तबा बीमार हुए तो आपके लिए दूध लाया गया। और थोड़ा-सा बचा हुआ दूध सरहाने रख दिया। इस दौरान आपकी आँख लग गई। जब बेदार हुए तो गिलासस अपनी जगह से ग़ायब पाया। ख़ादिम से पूछा कि बचे हुए दूध का क्या मामला बना? उसने कहा : हज़रत! एक घूंट ही तो था फेंक दिया। आप बहुत नाराज़ हुए। फ़रमाया : तुमने अल्लाह तआला की नेमत की नाक़द्री की। ख़ुद ही पी लेते या तोते, बिल्ली बग़ैरा को पिला देते ताकि मख़्लूक़े ख़ुदा को फ़ायदा पहुँचता। फिर एक उसूल समझाया कि जिन चीज़ों की ज़्यादा मिक़्दार से इंसान अपनी ज़िंदगी में फ़ायदा उठाता है उसकी थोड़ी मिक़्दार की क़द्र और ताज़ीम उसके ज़िम्मे वाजिब होती है।

हज़रत ख़्वाजा फ़ज़ल अली शाह क़ुरैशी मिस्कीन पुरी (रह०) की ख़ानक़ाह पर सालिकीन का हर वक़्त हुजूम रहता था। एक मर्तबा जब सालिकीन के लिए दस्तरख़्वान बिछाया गया और खाना लगा दिया गया तो हज़रत ने फ़रमाया : फ़क़ीरो! यह रोटी जो तुम्हारे सामने रखी है, इसके गंदुम के लिए खेत में बावुज़ू हल चलाया गया, बावुज़ू पानी दिया गया, जब गंदुम की फ़सल पक कर तैयार हो गई तो इसे बावुज़ू काटा गया फिर गंदुम को भूसे से बावुज़ू जुदा किया गया। उस गंदुम को बावुज़ू पीसकर आटा बनाया गया, फिर उसे आटे को बावुज़ू गूंधा गया। उसकी रोटी बावुज़ू बनाई गई फिर बावुज़ू आपके सामने लाकर रखी गई। काश! कि आप इसे बावुज़ू खा लेते।

औरतों के लिए मख़्सूस आदाब

- रास्ते में चलते हुए मर्दों से अलेहदा होकर चलें।
- रास्तों के दर्मियान न गुज़रें बल्कि किनारों पर चलें। (अबू-दाऊद)
- बजनेवाला ज़ेवर न पहनें। (अबू-दाऊद)
- जो औरत शान (बड़ाई) ज़ाहिर करने के लिए ज़ेवर पहनेगी तो उसको अज़ाब होगा।
- चाँदी के ज़ेवर से काम चलाना बेहतर है। (अबू-दाऊद)
- औरत को अपने हाथों में मेंहदी लगाते रहना चाहिए।
- औरत की ख़ुश्बू ऐस हो जिसका रंग ज़ाहिर हो मगर ज़्यादा न फैले। (अबू-दाऊद)
- औरत ऐसा बारीक कपड़ा न पहने जिसमें से नज़र आए। (अबू-दाऊद)
- अगर दुपट्टा बारीक हो तो उसके नीचे मोटा कपड़ा लगा लें। (अबू दाऊद)
- जो औरतें मर्दों की शक्ल इख़्तियार करें उन पर लानत है। (बुख़ारी)
- कोई (नामहरम) मर्द हरगिज़ किसी औरत के साथ तंहाई में न रहे। हरगिज़ कोई औरत सफ़र न करे मगर इस हाल में कि उसके साथ महरम हो।(बुख़ारी)

औरत अय्यामे-हैज़ में मुक़द्दस मक़ामात जैसे मस्जिद में नहीं जा सकती। क़ुआन मजीद को नहीं छू सकती ताहम वह किसी चीज़ को छू ले तो वह चीज़ नापाक नहीं होती। खाना पका सकती है। शरअ के मुताबिक़ मर्द ऐसी हालत में औरत से जिमाअ के अलावा सब काम ले सकते हैं। सय्यदा आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं :

"मैं इस हालत में नबी करीम (सल्ल०) के बालों में कंघी करती थी, आप (सल्ल०) के सर को धोती थी। एक बार आप (सल्ल०) ने मुझसे कोई चीज़ उठाकर लाने के लिए

कहा। मैंने नापाकी का उज़्र किया तो फ़रमाया कि नापाकी तुम्हारे हाथ में नहीं है।"

अल्लाह तआला को सफ़ाई-सुथराई पसन्द है। लिहाज़ा घरों से बाहर जो जगहें ख़ाली पड़ी हैं उनको साफ़ रखो।

(तिर्मिज़ी)

औरतें घर के अंदर सफ़ाई खुद रखें और बाहर बच्चों से सफ़ाई करा लिया करें।

मुतफ़र्रिक़ आदाब

(1) अकड़-अकड़ कर इतराते हुए न चलो।

(2) कोई मर्द औरतों के दर्मियान न चले। (अबू-दाऊद)

(3) उस घर में फ़रिश्ते दाख़िल नहीं होते जिसमें कुत्ता या (जानदार की) तस्वीरें हों। (बुख़ारी)

(4) जब किसी का दरवाज़ा खटखटाओ और अंदर से पूछें कि कौन हो, तो यह न कहो कि मैं हूँ (बल्कि अपना नाम बताओ)। बुख़ारी)

(5) छुपकर किसी की बातें न सुनो। (बुख़ारी)

(6) जब किसी को ख़त लिखो तो शुरू में अपना नाम लिख दो। (बुख़ारी)

(7) जब किसी के घर जाओ तो पहले इजाज़त लो फिर दाख़िल हो। (बुख़ारी)

(8) तीन मर्तबा इजाज़त माँगने पर भी न मिले तो वापस हो जाओ। (बुख़ारी)

(9) इजाज़त लेते वक़्त दरवाज़े के सामने के बजाए दायीं या बायीं जानिब खड़े रहो।

(10) अपनी वालिदा के पास जाना हो तब भी इजाज़त लेकर जाओ। (मालिक)

(11) किसी की चीज़ मज़ाक़ में लेकर न चल दो। (तिर्मिज़ी)

(12) इसी तरह छुरी, चाक़ू आदि का हुक्म है। अगर ऐसा करना पड़े

तो फल अपने हाथ में रखो और दस्ता उनको पकड़ाओ।

(तिर्मिज़ी)

(13)ज़माने को बुरा मत कहो क्योंकि उसकी उलट-फेर अल्लाह ही के क़ब्ज़े में है। (मुस्लिम)

(14)हवा को बुरा मत कहो। (तिर्मिज़ी)

(15)बुख़ार को भी बुरा मत कहो। (मुस्लिम)

(16)जब रात का वक़्त हो जाए तो बिस्मिल्लाह पढ़कर दरवाज़ा बन्द कर दो क्योंकि शैतान बन्द दरवाज़े नहीं खोलता। फिर बिस्मिल्लाह पढ़कर मश्कीज़ों के मुँह तस्मों से बाँध दो। बर्तनों को ढाँप दो।

(17)जब रात को गली कूचों में आमद व रफ़्त बन्द हो जाए तो ऐसे वक़्त में बाहर कम निकलो। (शरह सुन्नह)

(18)आम लोगों के सामने अंगड़ाई और डकार लेना तहज़ीब के ख़िलाफ़ है।

(19)अगर पेट में हवा का दबाव हो तो बैतुल-ख़ला में या ख़िल्वत में उसको ख़ारिज करना चाहिए।

दौरे हाज़िर में उम्मते-मुस्लिमा की हालते-ज़ार

आज उम्मते-मुस्लिमा दाख़िली इंतिशार व अंदरूनी ख़ल्फ़िशार पैदा करनेवाले फ़िक्री बुहरान का शिकार है। गो कि इल्म व दानिश की कोई कमी नहीं मगर मफ़ाद-परस्ती और नफ़्स-परस्ती ने उम्मते मुस्लिमा का शीराज़ा बिखेर दिया है। इल्म तो पा लिया मगर आदाबे इल्म से ग़ाफ़िल रहे। वसीला तो मिल गया मगर मक़सद हाथ से जाता रहा। अम्रे मुबाह व मन्दूब पर इख़्तिलाफ़ात ने उम्मत से बहुत सारी चीज़ें छीन लीं। मुसलमानों को फ़न्ने इख़्तिलाफ़ में तो महारत हासिल हो गई मगर رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ "रु-ह-माउ बैनहुम" के उसूल व आदाब से अमलन नाआशना रहे। नतीजा यह निकला कि हर मैदान में मुसलमान इतने ज़वाल-पज़ीर हुए कि हवा ही उखड़ गई। इरशाद बारी ताला है :

وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ (الانفال ۴۶)

"और आपस में न झगड़ो, पस तुम नाकाम हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी।" (अनफ़ाल : 46)

आज मुसलमान माद्दी वसाइल व असाब के एतिबार से खुद कफ़ील हैं मगर इफ़्कार व नज़रियात के लिहाज़ से कमज़ोर क़ौम बन चुके हैं। अपनी आला इक़्दार व रिवायात से अमली तौर पर दस्त्बरदार होकर पिदरम सुल्तान बूद के ज़बानी दावों से अपना दिल बहला रहे हैं।

छः आदमी जिनपर लानत की गई

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : छः (तरह के) आदमी ऐसे हैं जिनपर मैं लानत करता हूँ और अल्लाह तआला ने भी उनपर लानत की है और हर नबी की दुआ क़बूल की जाती है :

(1) एक तो अल्लाह तआा की किताब में ज़्यादती करनेवाला।

(2) अल्लाह की तक़्दीर को झुठलानेवाला।

(3) ज़बरदस्ती तसल्लुत और ग़लबा हासिल करनेवाला ताकि उस शख़्स को इज़्ज़त दे जिसको अल्लाह तआला ने ज़लील किया है और उस शख़्स को ज़लील करे जिसको अल्लाह तआला ने इज़्ज़त दी।

(4) अल्लाह के हरम (में क़त्ल व क़िताल और शिकार वग़ैरा) को हलाल समझनेवाला।

(5) मेरी औलाद के हक़ में इस चीज़ को हलाल जाननेवाला जिसको अल्लाह ने हराम क़रार दिया।

(6) मेरी सुन्न को तर्क करनेवाला।

मोमिनीन और मुश्रिकीन की औलाद का अंजाम

हज़रत अली (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि उम्मुल-मोमिनीन हज़रत ख़दीजा ने नबी करीम (सल्ल०) से अपने उन (दोनों कमसिन) बच्चों के बारे में जो (उनके पहले शौहर से थे) ज़माना जाहिलियत में मर

गए थे, पूछा (कि उनका क्या अंजाम है)? रसूलल्लाह (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "वे दोनों दोज़ख़ की आग में हैं।" हज़रत अली (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि (यह सुनकर ख़दीजा (रज़ि०) कुछ मलूल और रंजीदा सी हो गईं और) आँहज़रत (सल्ल०) ने उनके चेहरे पर रंजीदगी और नापसन्दीदगी के असरात देखे तो इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम अपने बच्चों का हाल ठिकाना देख लो (कि वे कैसी ज़िल्लत और रहमते इलाही से कितने दूर हैं) तो ख़ुद तुम उनसे नफ़रत करने लगोगी।" हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) बोलीं : "या रसूलल्लाह! और मेरे उन (कमसिन) बच्चों का (क्या अंजाम है) जो आपसे हुए थे यानी क़ासिम और अब्दुल्लाह? हुज़ूर ने फ़रमाया, वे जन्नत में हैं। और उसके बाद रसूलुलाह (सल्ल०) ने फ़रमाया : अहले ईमान और उनकी औलाद का ठिकाना जन्नत है और अहले कुफ़्र व शिर्क और उनकी औलाद का ठिकाना दोज़ख़ है।" फिर रसूलल्लाह (सल्ल०) ने (इस बात की दलील में) यह आयत

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ

(वल्लज़ी-न आमनू अत्तबअतहुम ज़ुर्रिय्यतुहुम) तिलावत फ़रमाई।

(अहमद)

हज़रत आदम (अलैहि0) ने अपनी उम्र के चालीस साल हज़रत दाऊद (अलैहि0) को हदिया दिया

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहि० को पैदा किया तो उनकी पुश्त पर हाथ फेरा (यानी फ़रिश्ते को हाथ फेरने का हुक्म दिया)। पस उनकी पुश्त से वे तमाम जानें बाहर निक आईं जिनको अल्लाह तआला उन (आदम अलैहि०) की नस्ल से क़ियामत तक पैदा करनेवाला था। फिर अल्लाह तआला ने उनमें से हर इंसान की दोनों आँखों के दर्मियान एक नूरानी चमक

रखी, उसके बाद उन तमाम जानों को आदम (अलैहि०) के सामने पेश कर दिया।

हज़रत आदम (अलैहि०) ने पूछा, परवरदिगार ये सब कौन हैं? परवरदिगार ने इरशाद फ़रमाया : ये सब तुम्हारी औलाद हैं (जिनको पुश्त-ब-पुश्त क़यामत तक पैदा होना है) हज़रत आदम (अलैहि०) ने उनमें से एक को जो देखा तो उसकी दोनों आँखों के दर्मियान की चमक उनको बहुत भली लगी। उन्होंने पूछा, "ऐ मेरे परवरदिगार! यह कौन है?" परवरदिगार ने इरशाद फ़रमाया, यह दाऊद (अलैहि०) हैं, हज़रत आदम (अलैहि०) ने पूछा, मेरे परवरदिगार! तूने इसकी उम्र कितनी मुक़र्रर की है? परवरदिगार ने इरशाद फ़रमाया, साठ साल! हज़रत आदम (अलैहि०) ने अर्ज़ किया, मेरे परवरदिगार! मेरी उम्र से चालीस साल लेकर इसकी उम्र में इज़ाफ़ा कर दीजिए। (तिर्मिज़ी)

नोट : इस सिलसिले में इससे तवील और अहम हदीस पेज नम्बर 65 पर है, इसे ज़रूर पढ़ें।

ख़ुदाया अपनी दाहिनी मुट्ठी वाला हमको बना दे

हज़रत दाऊद (रज़ि०) नबी करीम (सल्ल०) से रिवायत करते हैं कि आपने इरशाद फ़रमाया : "आदम (अलैहि०) को अल्लाह तआला ने जब पैदा किया तो उनके दायीं मूंढों पर (दस्त क़ुदरत से या फ़रिश्ते के हाथ के ज़रिए) थपकी लगाई और उनकी औलाद बाहर निकाली जो सफ़ेद चमकदार थीं और ऐसी मालूम पड़ती थीं जैसे वह कोयला हों, फिर अल्लाह तआला ने (आदम अलैहि० की) उस औलाद के बारे में जो उनके दायीं मूंढों की (तरफ़ से निकली) थीं, इरशाद फ़रमाया कि यह जन्नत में जाने वाली मख़्लूक़ हैं और मुझको उसकी परवाह नहीं। फिर (आदम अलैहि० की) उस औलाद के बारे में, जो उनके बायीं मूंढों की (तरफ़ से निकली) थीं, इरशाद फ़रमाया कि ये आग में जाने वाली मख़्लूक़ हैं और मुझको इसकी परवाह नहीं।" (अहमद)

हज़रत अबू-नुज़रा (ताबई) से रिवायत है कि नबी करीम के सहाबा में से एक सहाबी जिनको अबू-अब्दुल्लाह कहा जाता है, जब (बीमार हुए) उनके अहबाब इयादत के लिए उनके पास पहुंचे तो (देखा कि) वह (अल्लाह के ख़ौफ़ और आख़िरत की बाज़पुर्स के डर से) रो रहे हैं। उन लोगों ने कहा, क्यों रोते हो? क्या रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने तुमसे यह नहीं फ़रमाया था कि अपने लब के बाल ख़ूब पस्त करो और उसपर क़ायम रहो यहाँ तक तुम मुझसे आ मिलो। अबू-अब्दुल्लाह ने कहा, हाँ लेकिन मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह भी फ़रमाते सुना है कि "बुज़ुर्ग व बरतर ने (अपनी मख़्लूक़ में से) एक हिस्से को अपने दाहिने हाथ की मुट्ठी में लिया और दूसरे हिस्से को दूसरे हाथ में लिया, फिर फ़रमाया, यह (दायीं मुट्ठी) जन्नत में जाने के लिए हैं और मुझे इसकी परवाह नहीं और यह (बायीं मुट्ठी) दोज़ख़ में जाने के लिए हैं और मुझे इसकी परवाह नहीं।" (फिर अबू-अब्दुल्लाह ने कहा) मुझे मालूम नहीं कि मैं उन दोनों मुट्ठियों में से किसमें हूँ? (अहमद)

इंसान की ख़स्लत व जिबिल्लत अटल होती है

हज़रत अबू-दरदा (रज़ि०) बयान फ़रमाते हैं कि (एक दिन) हम (चन्द सहाबा) रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास बैठे हुए वक़ूअ-पज़ीर होने वाली चीज़ों के बारे में बातचीत कर रहे थे कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने (हमारी बातों को सुनकर) इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम सुनो कि कोई पहाड़ अपनी जगह से सरक गया तो उसको (चाहे) सच मान लेना, लेकिन अगर तुम यह सुनो कि किसी शख़्स की ख़स्लत व जिबिल्लत बदल गई है तो उसका हरगिज़ एतिबार न करना, क्योंकि जो शख़्स जिस ख़स्लत व जिबिल्लत के साथ पैदा किया गया है वह उसी का होकर रहेगा।" (अहमद)

जन्नत में दाख़िल होने के तीन आसान नबवी नुस्ख़े

हज़रत अबू-सईद ख़ुदरी (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया :

"जिसने पाक (रिज़्क़) खाया और सुन्नत पर अमल किया और लोग उसकी ज़्यादतियों से महफ़ूज़ रहें वह जन्नत में जाएगा। (यह सुनकर) एक साहब ने कहा या रसूलुल्लाह : आजकल तो यह बात बहुत लोगों में है। आँहज़रत (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया, "और मेरे बाद के ज़मानों में भी इस तरह के लोग होंगे।" (तिर्मिज़ी)

झगड़ालू आदमी गुमराह हो जाता है

हज़रत अबू-उमामा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "कोई भी क़ौम राहे हिदायत पर गामज़न होने के बाद उसी वक़्त गुमराही का शिकार हुई जब उसको झगड़ने की आदत हो गई।" इसके बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने यह आयत पढ़ी

مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ

"वह (कुफ़्फ़ार) इस बात को आपके सामने सिर्फ़ झगड़ने के लिए बयान करते हैं बल्कि (दर हक़ीक़त) वह क़ौम झगड़ालू है।"

(अहमद, तिर्मिज़ी, इब्ने-माजा)

एक बिदअत की ईजाद से एक सुन्नत उठा ली जाती है फिर वह क़ियामत तक वापस नहीं आती

हज़रत ग़ज़ीफ़ बिन हारिस सुमाली (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "जो भी क़ौम व जमाअत कोई बिदअत ईजाद करती है, तो उस जैसी कोई सुन्नत उठा ली जाती है। पस सुन्नत को मज़बूती से पकड़ना बिदअत के ईजाद करने से बेहतर है।" (अहमद)

हज़रत हस्सान फ़रमाते हैं कि जब कोई क़ौम व जमाअत अपने दीन में कोई बिदअत निकालती है तो अल्लाह तआला इतनी ही सुन्नत उनसे छीन लेता है और फिर वह सुन्नत क़ियामत तक उनके पास लौटकर नहीं आ सकती। (दारमी)

दावत के बारे में यह मज़मून अंजीब है

हज़रत अबू-सईद ख़ुदरी (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि (एक दिन) रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने (हम सहाबा को मुख़ातिब करके) इरशाद फ़रमाया : "देखो! लोग तुम्हारे ताबेअ हैं (यानी मेरे बाद लोग तुम्हारी पैरवी करेंगे, तुम्हारे तरीक़े पर चलेंगे) और इतराफ़े आलम से कितने ही लोग दीन का इल्म व फ़हम हासिल करने के लिए तुम्हारे पास आएंगे, पस जब वे आएँ तो उनके हाथ भलाई करना, और उनको दीनी इल्म की तालीम देना।" (तिर्मिज़ी)

दिल से इल्म कैसे निकल जाता है?

हज़रत सुफ़ियान (ताबई) से रिवायत है कि (एक दिन) हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) ने (मशहूर ताबई आलिम और तौरात वग़ैरह के उलूम पर गहरी नज़र रखने वाले) हज़रत कअब बिन अहबार (रज़ि०) से पूछा कि तुम्हारे नज़दीक अरबाब इल्म कौन हैं? हज़रत कअब ने जवाब दिया, वे लोग जो उन बातों पर अमल करते हैं जिनको वे जानते हैं (यानी आलिम बाअमल ही को अरबाब इल्म में शुमार किया जा सकता है)। फिर हज़रत उमर (रज़ि०) ने पूछा, अच्छा वह कौन-सी चीज़ है जो उलमा के दिलों से इल्म (की बरकत व हैबत और इल्म के नूर) को निकाल देती है? हज़रत कअब बिन अहबार ने जवाब दिया, तमा (और लालच)। (दारमी)

क़ियामत के दिन सबसे बदतरीन शख़्स कौन होगा?

हज़रत अबू-दरदा (रज़ि०) से रिवायत है कि उन्होंने इरशाद

फ़रमाया : क़ियामत के दिन अल्लाह तआला के नज़दीक मर्तबा के एतिबार से बदतरीन शख़्स वह आलिम है जिसने अपने इल्म से फ़ायदा हासिल नहीं किया।" (दारमी)

गुनाहगार ज़िम्मेदार के फ़ैसले इस्लाम को ढा देते हैं

हज़रत ज़ियाद बिन हुदैर (रह०) (ताबई) फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन सय्यदना उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) ने मुझसे पूछा, जानते हो क्या चीज़ इस्लाम (की इमारत) को ढा देती है? मैंने अर्ज़ किया, नहीं। इरशाद फ़रमाया "आलिम का फिसलना (यानी उसका ख़ता और गुनाह में मुब्तला होना), मुनाफ़िक़ का किताबुल्लाह के ज़रिए झगड़ा करना और गुमराह क़ायदीन का अहकाम सादिर करना इस्लाम को ढा देता है।" (दारमी)

जन्नत में बहुत-बहुत महल बनाने का नबवी नुस्ख़ा

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब बतरीक़ इरसाल नक़ल करते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : जो सूरह क़ुल हुवल्लाहु अहद दस (10) बार पढ़े, उसके लिए उसकी वजह से जन्नत में एक महल बनाया जाता है और जो शख़्स इसको बीस (20) बार पढ़े, उसके लिए उसकी वजह से दो महल बनाए जाते हैं और जो शख़्स इसको तीस (30) मर्तबा पढ़े, उसके लिए जन्नत में तीन महल बनाए जाते हैं। लिसानुन नुबूवत (सल्ल०) से यह बशारत सुनकर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) कहने लगे : "ख़ुदा की क़सम! ऐ अल्लाह के रसूल, फिर हम (जन्नत में) अपने बहुत ज़्यादा महल बना लेंगे।" (यानी जब इस सूरह को पढ़ने की यह बरकत है और उसका यह सवाब है तो हम इस सूरह को पढ़ेंगे ताकि उसकी वजह से जन्नत में हमारे लिए बहुत ज़्यादा महल बनें।) रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह तआला इससे बहुत ज़्यादा फ़राख़ है।" (यानी इस सूरह की फ़ज़ीलत और उसका सवाब बहुत

अज़ीम और बहुत वसीअ है लिहाज़ा इस बशारत पर ताज्जुब न करो बल्कि उसके हुसूल की कोशिश करो।) (दारमी)

हज़रत उबय्य बिन काअब (रज़ि०) का नाम अर्श पर लिया गया

हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि (एक दिन) रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हज़रत बिन काअब से फ़रमाया : "अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हारे सामने कुरआन पढ़ूँ।" हज़रत उबी ने अर्ज़ किया, "क्या अल्लाह तआला ने आपके सामने मेरा नाम लिया है?" आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया: "हाँ" हज़रत उबी ने कहा, "तमाम जहानों के परवरदिगार के यहाँ मेरा ज़िक्र किया गया?" आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "हाँ।" यह सुनते ही हज़रत उबी की दोनों आँखों से आँसू बहने लगे।

और एक रिवायत में यूं आता है, कि आँहज़रत (सल्ल०) ने हज़रत उबी से फ़रमाया : لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ "मुझे अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है, कि मैं तुम्हारे सामने (लम यकुनिल्लज़ी-न क-फ़-रू) पढ़ूँ।" हज़रत उबी ने अर्ज़ किया, क्या अल्लाह तआला ने मेरा नाम लिया है? आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "हाँ" (यह सुनते ही) हज़रत उबी रो पड़े। (बुख़ारी, मुस्लिम)

आपस के इख़्तिलाफ़ की वजह से हलाक हो गए

हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैंने एक शख़्स को क़ुरआन पढ़ते हुए सुना और रसूले ख़ुदा (सल्ल०) को इसके ख़िलाफ़ पढ़ते हुए सुना था, चुनाँचे मैं उस शख़्स को नबी करीम (सल्ल०) की ख़िदमत में लाया और आपसे सूरते हाल बयान की (कि इस शख़्स की क़िरअत आपकी क़िरअत से मुख़्तलिफ़ है), फिर मैंने महसूस किया कि (मेरे झगड़े और इख़्तिलाफ़ की वजह से) आपके पाक चेहरे पर नागवारी के आसार नुमायाँ हैं। बहर कैफ़ आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : तुम दोनों सही और अच्छा पढ़ते हो।

(देखो) आपस में इख़्तिलाफ़ न करो क्योंकि वे लोग जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं वे आपस के इख़्तिलाफ़ की वजह से हलाक हो गए।"
(बुख़ारी)

दुआ के बाद मुँह पर हाथ क्यों फेरते हैं?

हज़रत मालिक बिन यसार (रज़ि०) रावी हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "जिस वक़्त तुम अल्लाह से दुआ माँगो तो उससे अपने हाथ के अंदरूनी रुख़ के ज़रिए माँगो, उससे अपने हाथों के ऊपर के रुख़ के ज़रिए न माँगो।"

और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) की रिवायत में है कि आँहज़रत (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह तआला से अपने हाथों के अंदरूनी रुख़ के ज़रिए माँगो, उससे अपने हाथों के ऊपर के रुख़ के ज़रिए न माँगो, और जब तुम दुआ से फ़ारिग़ हो जाओ तो अपने हाथों को अपने मुँह पर फेर लो (ताकि वह बरकत जो हाथों पर उतरती है मुँह को भी पहुँच जाए)।" (अबू-दाऊद)

हज़रत सलमान (रज़ि०) रावी हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारा परवरदिगार बहुत हयामन्द है (यानी वह हयामन्दों का-सा मामला करता है) और बड़ा सख़ी है, वह अपने बन्दे से हया करता है कि उसे ख़ाली हाथ वापस करे जब उसका बन्दा उसकी तरफ़ (दुआ के लिए) अपने दोनों हाथ उठाता है।"
(तिर्मिज़ी, अबू-दाऊद, बैहक़ी)

हज़रत साइब बिन यज़ीद अपने वालिद से नक़ल करते हैं कि नबी अकरम (सल्ल०) जब दुआ माँगते और अपने दोनों हाथ उठाते, तो अपने मुँह पर दोनों हाथों को फेरते। (बैहक़ी)

अल्लाह से बहुत दूर वह शख़्स है जिसका दिल सख़्त है

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) रावी हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह के ज़िक्र के अलावा ज़्यादा कलाम न करो क्योंकि अल्लाह के ज़िक्र के अलावा कलाम की कसरत दिल की सख़्ती का बाइस है, और याद रखो! आदमियों में अल्लाह से बहुत दूर वह शख़्स है जिसका दिल सख़्त है।" (तिर्मिज़ी)

अपनी ज़िंदगी में अपनी जन्नत देखने का नबवी नुस्ख़ा

हज़रत इमाम मालिक (रह०) फ़रमाते हैं कि मुझ तक यह रिवायत पहुंची है कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) इरशाद फ़रमाते थे ग़ाफ़िलों के दर्मियान ख़ुदा का ज़िक्र करनेवाला, भागनेवालों के बीच लड़नेवाले के मानिन्द है (यानी उस शख़्स के मानिन्द है जो कारेज़ार में अपने लश्कर के भाग खड़े होने के बाद तंहा काफ़िरों के मुक़ाबले में डटा रहा है), नीज़ ग़ाफ़िलों के दर्मियान ख़ुदा का ज़िक्र करने वाला, ख़ुश्क दरख़्तों के बीच में सब्ज़ दरख़्त की मानिन्द है। और एक रिवायत में यूं है कि सरसब्ज़ व शादाब दरख़्त के मानिन्द है।

और ख़ुदा का ज़िक्र करनेवाला, अंधेरे घर में चिराग़ के मानिन्द है, और ग़ाफ़िलों में ख़ुदा का ज़िक्र करनेवाले को अल्लाह तआला उसकी ज़िंदगी में जन्नत में उसकी जगह दिखा देता है। और ग़ाफ़िलों में ख़ुदा को याद करनेवाले के लिए हर फ़सीह और ग़ैर-फ़सीह (यानी तमाम इंसानों और चौपायों की) गिनती के बक़द्र गुनाह बख़्शे जाते हैं। (रज़ीन)

क़ातिल और मक़्तूल को देखकर अल्लाह तआला हँसता है

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह तआा दो शख़्सों को देखकर हँसता है (यानी उनसे राज़ी होता है और अपनी रहमत के साथ उनकी तरफ़ मुतवज्जह होता है)। उनमें से एक तो वह है जो ख़ुदा की राह में जिहाद करता है और शहीद हो जाता है (यहाँ तक कि जन्नत में दाख़िल हो जाता है) फिर अल्लाह तआला उसके क़ातिल को तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है (और फिर वह कुफ़्र से ताइब होकर ईमान ले आता है) फिर ख़ुदा की राह में जिहाद करके शहीद हो जाता है। (लिहाज़ा उसको भी जन्नत में दाख़िल किया जाता है।") (बुख़ारी व मुस्लिम)

शहीद के लिए ख़ुसूसी इनाम

हज़रत मिक़्दाद बिन मअदी-करिब (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूले खुदा (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "हक़ तआला के यहाँ शहीद के लिए छः खस्लतें (यानी छः इम्तियाज़ी इनामात) हैं :

(1) उसको अव्वल वहला में (यानी ख़ून का पहला क़तरा गिरते ही) बख़्श दिया जाता है और उसको जन्नत में अपना ठिकाना दिखा दिया जाता है।

(2) वह क़ब्र के अज़ाब से महफ़ूज़ रहता है।

(3) वह बड़ी घबराहट (यानी आग के अज़ाब) से मामून रहेगा।

(4) उसके सर पर अज़्मत व वक़ार का ताज रखा जाएगा जिसका एक याक़ूत दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से बेहतर व गिराँनुमा होगा।

(5) उसकी ज़ौजियत में बड़ी आँख वाली बहत्तर (72) हूरें दी जा जाएंगी।

(6) और उसके अज़ीज़ व अक़रबा में से सत्तर (70) आदमियों के हक़ में उसकी शफ़ाअत क़ बूल की जाएगी। (तिर्मिज़ी, इब्ने-माजा)

सवाल व जवाब के अंदर में

हसना बिन्ते मुआविया (बिन सुलैम) फ़रमाती हैं कि मुझसे मेरे चचा हज़रत असलम बिन सुलैम (रज़ि०) ने बयान किया कि (एक दिन) मैंने नबी करीम (सल्ल०) से दरयाफ़्त किया : "जन्नत में कौन-कौन लोग होंगे?" तो आँहज़रत (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "जन्नत में नबी होंगे, शहीद होंगे, जन्नत में बच्चे होंगे और जन्नत में वे बच्चे भी होंगे जिनको जीते जी गाड़ दिया गया है।" (अबू दाऊद)

हाथ का बोसा वग़ैरह लेना कैसा है?

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि (एक मर्तबा) रसूले खुदा (सल्ल०) ने हमें लश्कर में भेजा। (वहाँ पहुंचकर हमारे लश्कर के) लोग भाग खड़े हुए। चुनाँचे हम मदीना वापस आए तो (मारे शर्म व नदामत के) अपने घरों में छुपकर बैठ गए और हमने (अपने दिल में) कहा या रसूलुल्लाह! हम मैदान छोड़कर भाग आनेवाले लोग हैं। आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "(नहीं) बल्कि तुम दोबारा हमला करनेवाले लोग हो और मैं तुम्हारी जमाअत हों।"

(तिर्मिज़ी)

और अबू-दाऊद ने भी ऐसी ही रिवायत नक़ल की है। और उसमें यह अल्फ़ाज़ हैं कि "नहीं बल्कि तुम दोबारा हमला करनेवाले लोग हो।" हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि (जब हमने देखा कि आँहज़रत (सल्ल०) ने हमसे कोई जवाब तलब करने या सरज़निश करने के बजाए इस शफ़क़त-आमेज़ अंदाज़ में हमारी हिम्मत बढ़ाई, तो (फ़र्त अक़ीदत व मुहब्बत से) हम आपके क़रीब पहुंचे और आपके दस्त मुबारक का बोसा लिया, फिर आँहज़रत (सल्ल०) ने इरशाद फ़माया : "मैं मुसलमानों की जमाअत हों।"

मुर्दे भी ज़िन्दों का कलाम सुनते हैं

हज़रत क़तादा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) ने हज़रत अबू-तलबा (रज़ि०) के हवाले से हमारे सामने यह बयान किया कि अल्लाह के नबी (सल्ल०) ने जंगे बदर के दिन (मक्के के) कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के चौबीस (मक़्तूल) सरदारों के बारे में हुक्म दिया (कि उनको ठिकाने लगा दिया जाए) चुनाँचे उनकी लाशों को बद्र के एक ऐसे कुएं में डाल दिया गया, जो नापाक था और नापाक करने वाला था। नबी करीम (सल्ल०) की यह आदत थी कि जब आप (जंग में) किसी क़ौम (यानी दुश्मनों) पर ग़लबा पा-लेते तो मैदाने जंग में तीन रातें क़याम फ़रमा लेतें।

चुनाँचे (इसी आदत के मुताबिक़ आप जंग जीत लेने के बाद बद्र के मैदान में भी तीन रातें क़याम फ़रमा रहे और) जब तीन दिन गुज़र गए तो आपने अपनी सवारी के ऊँट पर कजावा बाँधने का हुक्म दिया। चुनाँचे कजावा बाँध दिया गया और आप वहाँ से रवाना हुए और आपके सहाबा भी आपके पीछे हो लिए (जब उस कुएँ पर पहुँचे जिसमें सरदाराने क़ुरैश की लाशें डाली गईं थीं तो) आप उस कुएं के किनारे खड़े हो गए और सरदारों को उनका और उनके बापों का नाम लेकर पुकारना शुरू किया कि ऐ फ़ुलाँ इब्ने फ़ुलाँ और ऐ फ़ुलाँ इब्ने फ़लाँ! क्या (अब) तुम्हें यह अच्छा मालूम होता है कि तुम अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करते? बिला शुबहा हमें तो वह चीज़ हासिल हो गई जिसका हमसे हमारे परवरदिगार ने वादा किया था, क्या तुमने भी वह चीज़ पा ली जिसका तुमसे तुम्हारे परवरदिगार ने वादा किया था? (यानी हमको तो खुदा के वादे के मुताबिक़ फ़तह व कामयाबी हासिल हो गई। क्या तुमको भी अज़ाब मिला जिससे तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हें डराया था?)

हज़रत उमर (रज़ि०) ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह (सल्ल०)! क्या आप ऐसे जिस्मों से गुफ़्तुगू कर रहे हैं, जिनमें रूहें नहीं हैं? नबी करीम (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "क़सम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है, इन (जिस्मों) से मैं जो कुछ कह रहा हूँ तुम उसको ज़्यादा सुननेवाले नहीं हो।" और एक रिवायत में यूँ है कि "तुम इनसे ज़्यादा सुननेवाले नहीं लेकिन (तुम जवाब देने पर क़ादिर हो और) ये जवाब नहीं दे सकते।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

माले-ग़नीमत में ख़ियानत करने का वबाल

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूले खुदा (सल्ल०) ने एक दिन हमारे सामने खुत्बा दिया और (उस खुत्बे के दौरान) माले-ग़नीमत में ख़ियानत का ज़िक्र फ़रमाया : चुनाँचे आपने उसको बहुत बड़ा गुनाह बताया और बड़ी अहमियत के साथ उसको बयान

किया, फिर इरशाद फ़रमाया :

(1) "(ख़बरदार!) मैं तुममें से किसी को क़ियामत के दिन इस हाल में न देखूँ, कि वह अपनी गर्दन पर बिलबिलाते हुए ऊँट को लादे हुए (मैदाने हश्र में) आए (यानी जो शख़्स माले-ग़नीमत से मसलनः ऊँट की ख़ियानत करेगा, वह शख़्स मैदाने हश्र में इस हालत में आएगा कि उसकी गर्दन पर वही ऊँट सवार होगा और बिलबिला रहा होगा) फिर मुझसे यह कहे : या रसूलुल्लाह! मेरी फ़रियाद-रसी कीजिए और मैं उसके जवाब में यह कह दूँ, कि मैं (अब) तुम्हारी कुछ मदद नहीं कर सकता (यानी मैं तुम्हें अल्लाह के अज़ाब से छुटकारा नहीं दिला सकता) क्योंकि मैंने तुम्हें (दुनिया में) शरीअत के अहकाम पहुँचा दिए थे।"

(2) (ख़बरदार!) मैं तुममें से किसी को क़ियामत के दिन इस हाल में न देखूँ, कि वह अपनी गर्दन पर हिनहिनाते हुए घोड़े को लादे हुए (मैदाने हश्र में आए) फिर मुझसे कहे : "या रसूलुल्लाह (सल्ल०) मेरी फ़रियादरसी कीजिए और मैं उसके जवाब में कह दूँ कि मैं (अब) तुम्हारी कुछ मदद नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने तुम्हें शरीअत के अहकाम पहुँचा दिए थे (यानी तुम्हें पहले ही आगाह कर दिया था कि माले-ग़नीमत में ख़ियानत या किसी चीज़ में नाहक़ तसर्रुफ़ करना बहुत बड़ा गुनाह है।")

(3) (और ख़बरदार!) मैं तुममें से किसी को क़ियामत के दिन इस हाल में न देखूँ कि वह अपनी गर्दन पर मिम्याती हुई बकरी लादे हुए (मैदाने हश्र में) आए, और फिर मुझसे यह कहे : "या रसूलुल्लाह (सल्ल०)! मेरी फ़रियादरसी कीजिए और मैं जवाब में कह दूँ कि मैं (अब) तुम्हारी कुछ मदद नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने तुम्हें शरीअत के अहकाम पहुँचा दिए थे।"

(4) (और ख़बरदार!) मैं तुममें से किसी को क़ियामत के दिन इस हाल में न देखूँ कि वह अपनी गर्दन पर किसी चिल्लाते हुए आदमी को (यानी किसी ग़ुलाम या बाँदी को, जो उसने ग़नीमत के क़ैदियों में से ख़ियानत करके ले लिया हो) लादे हुए (मैदाने हश्र में)

आए, और फिर मुझसे कहे : "या रसूलुल्लाह! मेरी फ़रियादरसी कीजिए और मैं उसके जवाब में कह दूँ कि मैं (अब) तुम्हारी कुछ मदद नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने तुम्हें शरीअत के अहकाम पहुँचा दिए थे।"

(5) (ख़बरदार!) मैं तुममें से किसी को क़ियामत के दिन इस हाल में न देखूँ कि वह अपनी गर्दन पर लहराते हुए कपड़े रखे हुए (मैदाने हश्र में) आए, फिर मुझसे कहे : "या रसूलुल्लाह! मेरी फ़रियादरसी कीजिए और मैं उसके जवाब में यह कह दूँ कि मैं (अब) तुम्हारी कुछ मदद नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने तुम्हें शरीअत के अहकाम पहुंचा दिए थे।"

(6) (और ख़बरदार!) मैं तुममें से किसी को क़ियामत के दिन इस हाल में न देखूँ कि वह अपनी गर्दन पर सोना-चाँदी लादे हुए (मैदाने हश्र में) आए, फिर मुझसे कहे, "या रसूलुल्लाह! मेरी फ़रियादरसी कीजिए और मैं उसको जवाब में यह कह दूं कि (अब) मैं तुम्हारी कुछ मदद नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने तुम्हें शरीअत के अहकाम पहुँचा दिए थे।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने रसूले ख़ुदा (सल्ल०) की ख़िदमत में एक ग़ुलाम हदिये के तौर पर पेश किया, जिसका नाम 'मुदअम' था (एक दिन ग़ालिबन किसी मैदाने जंग में) वह रसूले ख़ुदा (सल्ल०) का कजावा उतार रहा था कि अचानक किसी नामालूम शख़्स का तीर आकर लगा, जिससे वह जाँबहक़ हो गया। लोगों ने कहा : 'मुदअम' को जन्नत मुबारक हो (यानी मुदअम ख़ुश क़िस्मत रहा कि आँहज़रत (सल्ल०) की ख़िदमत करते हुए शहीद हुए और जन्नत में पहुँच गए।)

(यह सुनकर) रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "नहीं! ऐसा नहीं है, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, वह चादर जिसको मुदअम ने ख़ैबर के दिन माले-ग़नीमत में से उसकी तक़्सीम से पहले ले लिया था, आग बनकर मुदअम पर शोले बरसा रही है।" जब लोगों ने (इस शदीद वईद को) सुना तो एक शख़्स तस्मा

या दो तस्मे (वापस करने के लिए) नबी करीम (सल्ल०) की ख़िदमत में लाया। आप (सल्ल०) ने (उसको देखकर) फ़रमाया : "यह आग का तस्मा है या आग के दो तस्मे हैं।" (बुख़ारी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक शख़्स जिसका नाम 'करकरा' था किसी ग़ज़वे में रसूले ख़ुदा (सल्ल०) (की तरफ़ से सामान व असबाब) का निगराँ मुक़र्रर हुआ, जब उसका इंतिक़ाल हुआ तो रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "वह (करकरा) दोज़ख़ में है।" चुनाँचे लोगों ने (उसके सामान को) देखना शुरू किया तो उसमें एक कमली पाई गई जिसको उसने माले-ग़नीमत में से ख़ियानत करके ले ली थी। (बुख़ारी)

अबू जहल की तलवार किसको मिली?

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने जंगे बदर के दिन मुझको अबू-जहल की तलवार (मेरे हिस्से में) ज़ायद दी। और अबू-जहल को अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने क़त्ल किया था। (अबू-दाऊद)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) कमज़ोर थे, पिंडलियाँ कमज़ोर थीं मगर काम अल्लाह ने बड़ा लिया। (अज़ मुअल्लिफ़)

दो दिरहम से कम ख़ियानत करनेवाले की नमाज़े जनाज़ा आप (सल्ल०) ने नहीं पढ़ाई।

हज़रत यज़ीद बिन ख़ालिद (रज़ि०) रावी हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) के सहाबा में से एक शख़्स का ख़ैबर के दिन इंतिक़ाल हो गया, सहाबा ने रसूले ख़ुदा (सल्ल०) से (यानी आपको) बताया गया कि फ़ुलाँ शख़्स का इंतिक़ाल हो गया है)। आँहज़रत (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "तुम लोग इसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ लो (मैं उसकी नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ूँगा)।" यह सुनकर लोगों का रंग बदल गया, तो आँहज़रत (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "(मैं इसकी नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ूँगा क्योंकि) तुम्हारे (इस) साथी ने अल्लाह की राह में (यानी माले-ग़नीमत में) ख़ियानत का इरतिकाब किया

है।" चुनाँचे हमने उसके असबाब की तलाशी ली, तो उसमें हमें यहूद (की औरतों) के हीरों में से कुछ हीरे मिले, जो दो दिरहमों के बराबर भी नहीं थे (यानी उसकी क़ीमत दो दिरहम से भी कम थी।) (मालिक, अबू-दाऊद, नसाई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) जब माल को जमा करवाकर तक़्सीम करने का इरादा फ़रमाते तो हज़रत बिलाल को (एलान करने का) हुक्म देते। चुनाँचे वह लोगों के दर्मियान एलान और (उस एलान को सुनते ही) लोग अपनी-अपनी ग़नीमत ले आते, फिर आँहज़रत (सल्ल०) (पहले) ख़ुम्स यानी पाँचवाँ हिस्सा निकालते और उसके बाद उस माले-ग़नीमत को लोगों (यानी मुजाहिदीन) के दर्मियान तक़्सीम फ़रमा देते।

(एक बार ऐसा हुआ कि) एक शख़्स (माले ग़नीमत में से ख़ुम्स निकालने और उसको मुजाहिदीन के दर्मियान तक़्सीम करने के) एक दिन बाद बालों की बुनी हुई एक मुहार लेकर आया और अर्ज़ किया : "या रसूलुल्लाह! जो माले-ग़नीमत हमारे हाथ लगा था उसमें मुहार भी थी।" आपने इरशाद फ़रमाया : "बिलाल ने तीन बार जो एलान किया था उसको तुमने सुना था?" उसने कहा, हाँ मैंने सुना था। आपने इरशाद फ़रमाया : "फिर इसको (उसी वक़्त) लाने से तुम्हें किस चीज़ ने रोका था।" उसने कोई उज्र बयान किया, फिर आपने इरशाद फ़रमाया : "पस (अब) यूँ ही रहो (अब इसको अपने ही पास रखो अब तो) कल क़ियामत के दिन ही इसको लेकर आना (और ख़ुदा तआला को इस ताख़ीर का जवाब देना) मैं (अब) इसको तुमसे हरगिज़ न लूंगा।" (अबू-दाऊद)

माले-ग़नीमत में ख़ियानत करनेवाले की सज़ा

हज़रत अम्र बिन शुऐब अपने वालिद (हज़रत शुऐब) से और शुऐब अपने दादा (हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि०)) से रिवायत करते हैं कि रसूले ख़ुदा ने और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और

हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) ने माले ग़नीमत में ख़ियानत करनेवाले का सामान व असबाब जला डाला और उसकी पिटाई (भी) की। (अबू दाऊद)

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी करीम (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "अंबिया (अलैहि०) में से एक नबी (यानी हज़रत यूशअ बिन नून अलैहिस्सलाम) ने जिहाद का इरादा किया और जब वह जिहाद के लिए रवाना होने लगे तो उन्होंने अपनी क़ौम से फ़रमाया : मेरे साथ वह शख़्स न चले जिसने किसी औरत से निकाह किया हो और उस औरत को अपने घर लाकर उससे सोहबत का इरादा रखता हो और अभी तक उसको (अपने घर न लाया हो), और मेरे साथ न वह शख़्स चले जिसने घर बनाया हो, लेकिन (अभी तक) उसकी छत न डाल सका हो, नीज़ वह शख़्स (भी) मेरे साथ न चले जिसने गाभन बकरियाँ या गाभन ऊंटनियाँ ख़रीदी हों और वह उनके बच्चे जनने का मुंतज़िर हो।" (इसलिए कि जिहाद में जाएगा तो उसका दिल बीवी और मकान में और बच्चों के जनने में अटला रहेगा।)

इसके बाद वह नबी (अपने बाक़ी साथियों के साथ) जिहाद के लिए रवाना हुए और जब उस बस्ती के क़रीब पहुंचे जहाँ वह जिहाद करने का इरादा रखते थे, तो नमाज़े अस्र का वक़्त हो चुका था। उस नबी ने सूरज को मुख़ातिब होकर फ़रमाया : "तू भी चलने पर मामूर है और मैं भी (इस बस्ती को फ़तह करने पर मामूर हूँ), ऐ अल्लाह! तू इस आफ़ताब को ठहरा दे।" चुनाँचे आफ़ताब ठहर गया, ताकि अल्लाह तआला ने उन नबी को फ़तह अता फ़रमा दी। फिर जब माले-ग़नीमत जमा किया गया और उसको जला डालने के लिए आग आई, तो उस आग ने माले-ग़नीमत को नहीं जलाया। (यह देखकर) उन नबी अलैहिस्सलाम ने अपने साथियों से फ़रमायाः "यक़ीनन तुम्हारे अंदर माले-ग़नीमत में ख़ियानत वाक़ेअ हुई है। (यानी तुममें से किसी ने माले-ग़नीमत के अंदर ख़ियानत की है जिसकी वजह से यह आग अपना काम नहीं कर रही है) लिहाज़ा

तुममें से हर क़बीले में से हर शख़्स मुझसे बैअत हो।"

चुनाँचे (जब बैअत शुरू हुई तो) एक शख़्स का हाथ उस नबी के हाथ से चिपक कर रह गया। नबी अलैहिस्सलाम ने (उस शख़्स से) फ़रमाया : "ख़ियानत, तुम्हारे क़बीले की तरफ़ से हुई है।" फिर उस क़बी के लोग सोने का एक सर लाए जो बैल के सर के मानिन्द था और उसको रख दिया, उसके बाद आग आई और उसने उसको जला दिया।

और एक रिवायत में रावी ने यह इबारत भी नक़ल की है (कि आँहज़्रर (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया) "कि हमसे पहले किसी के लिए माले-ग़नीमत हलाल न था। फिर अल्लाह तआला ने माले-ग़नीमत को हमारे लिए हलाल कर दिया। अल्लाह तआला ने हमें (माली तौर पर) ज़ईफ़ व कमज़ोर देखा तो माले-ग़नीमत को हमारे लिए हलाल कर दिया।"

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का अद्ल व इंसाफ़

हज़रत मुग़ीरा बिन मुक़सिम फ़रमाते हैं : जब हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ बिन मरवान बिन हकम ख़लीफ़ा बनाए गए तो उन्होंने मरवान के बेटों को जमा किया और इरशाद फ़रमाया : "रसूले ख़ुदा (सल्ल०) फ़िदक (की ज़मीन व जायदाद) पर अपना ज़ाती हक़ रखते थे जिसके मुहासिल (आमदनी व पैदावार) को आप (सल्ल०) (अपने अहल व अयाल और फ़ुक़रा व मसाकीन पर) ख़र्च करते थे। इसी में से बनू हाशिम के छोटे बच्चों पर और नादार मर्द व औरत की शादी में ख़र्च करते थे, उनके साथ हुस्ने सुलूक करते और ग़ैर शादीशुदा औरतों और मर्दों की शादी करते थे।

(एक मर्तबा) हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) ने आँहज़रत से यह दरख़्वास्त की थी कि फ़िदक (की ज़मीन व जायदाद मेरे नाम कर दीजिए। लेकिन आपने उनकी दरख़्वास्त को रद्द कर दिया। रसूले ख़ुदा की ज़िंदगी में मामला इसी तरह चलता रहा यहाँ तक कि आप दुनिया से तशरीफ़ ले गए।)

जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) को ख़लीफ़ा बनाया गया तो उनका मामूल भी वही रहा जो रसूले ख़ुदा (सल्ल०) का अपनी हयात मुबारका में था (यानी आँहज़रत (सल्ल०) के मज़्कूरा मामूल की तरह हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) भी फ़िदक के मुहासिल को आँहज़रत (सल्ल०) के अहल व अयाल और बनू हाशिम के बच्चों पर और नादार मर्दों व औरतों की शादी में ख़र्च करते थे।) यहाँ तक कि हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) अल्लाह को प्यारे हो गए और (उनके बाद) जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) को ख़लीफ़ा बनाया गया, तो इस सिलसिले में उनका भी वही मामला रहा जो उन दोनों (यानी आँहज़रत (सल्ल०) और हज़रत अबू बक्र (रज़ि०)) का रहा था। यहाँ तक कि हज़रत उमर (रज़ि०) भी अल्लाह को प्यारे हो गए।

फिर मरवान ने (हज़रत उसमान (रज़ि०) की ख़िलाफ़त के ज़माने में या अपनी हुक्मरानी के दौर में) इस (फ़िदक) को अपनी (और अपने वारिसीन की) जागीर क़रार दे दिया। चुनाँचे (अब) वह जागीर उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ बिन मरवान की हो गई है। लेकिन मैं देखता हूँ कि जिस चीज़ को रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने (अपनी बेटी) फ़ातिमा को नहीं दिया, उसका मुस्तहिक़ मैं नहीं हो सकता। लिहाज़ा मैं तुम्हें (अपने इस फ़ैसले का) गवाह बनाता हूँ कि मैंने फ़िदक को इसकी उसी हैसियत पर वापस कर दिया जिस पर वह था। (अब फिर उसी तरीक़े पर ख़र्च किया जाएगा और फ़िदक किसी शख़्स की ज़ाती जागीर नहीं बनेगा।") (अबू-दाऊद)

यहूदियों का सलाम, उंगलियों से इशारा करना है और ईसाइयों का सलाम, हथेलियों से इशारा करना है और मुसलमानों का सलाम, अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि कहना है।

हज़रत अम्र बिन शुऐब अपने बाप (हज़रत शुऐब) से और शुऐब अपने दादा (हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र) से रिवायत करते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "जो शख़्स हमारे ग़ैरों की मुशाबिहत इख़्तियार करेगा, वह हममें से नहीं है। तुम न यहूदियों

की मुशाबिहत इख़्तियार करो और न ईसाइयों की, यहूदियों का सलाम उंगलियों से इशारा करना है और ईसाइयों का सलाम हथेलियों से इशारा करना है।" (तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम (अलैहि०) को बनाया और उनके जिस्म में रूह फूंकी तो उनको छींक आई। उन्होंने अलहम्दुलिल्लाह कहा, इस तरह उन्होंने अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ व इजाज़त से ख़ुदा तआला की हम्द की। अल्लाह तआला ने उन (की हम्द) के जवाब में फ़रमाया : *यरहमुकल्लाह* यानी तुम पर अल्लाह तआला की रहमत नाज़िल हो। फिर फ़रमाया : "आदम! फ़रिश्तों की उस जमाअत के पास जाओ जो वहाँ बैठी हुई है और कहो, *अस्सलामु अलैकुम* (चुनाँचे हज़रत आदम अलैहि० उन फ़रिश्तों के पास गए और उनको सलाम किया) फ़रिश्तों ने (जवाब में) कहा, عليك السلام ورحمة الله *अलैकस्सलाम व रहमतुल्लाह।* उसके बाद हज़रत आदम (अलैहि०) अपने परवरदिगार के पास आए (यानी उस जगह लौटकर वापस आए) जहाँ पर परवरदिगार ने उनसे कलाम किया था, तो अल्लाह तआला ने उनसे फ़रमाया : यह السلام عليكم ورحمة الله *'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह'* तुम्हारा और तुम्हारी औलाद का बाहमी सलाम है।

फिर अल्लाह तआला ने उनसे फ़रमाया : इस हाल में कि अल्लाह तआला के दोनों हाथ बन्द थे। उन दोनों हाथों में से जिसको चाहो पसन्द कर लो, हज़रत आदम (अलैहि०) ने कहा : मैंने अपने परवरदिगार के दाहिने हाथ को पसन्द कर लिया और मेरे परवरदिगार के दाहिने हाथ बाबरकत हैं, फिर अल्लाह तआला ने उस हाथ को खोला तो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने देखा कि उसमें आदम और आदम की औलाद की सूरतें थीं। उन्होंने पूछा : परवरदिगार! यह कौन हैं? परवरदिगार ने फ़रमाया : "यह तुम्हारी औलाद हैं।" और हज़रत आदम (अलैहि०) ने यह भी देखा कि हर इंसान की उम्र उसके दोनों आँखों के दर्मियान लिखी हुई है। फिर

उनकी नज़र एक ऐसे इंसान पर पड़ी जो सबसे ज़्यादा रौशन था या रौशन तरीन लोगों में से था, हज़रत आदम (अलैहि०) ने (उस इंसान को देखकर) पूछा : मेरे परवरदिगार! यह कौन है? परवरदिगार ने फ़रमाया : यह तुम्हारा बेटा दाऊद है और मैंने उसकी उम्र चालीस साल लिखी है। हज़रत आदम अलैहि० ने कहा : परवरदिगार! इसकी उम्र कुछ और बढ़ा दीजिए। परवरदिगार ने फ़रमाया : "यह वह चीज़ है जिसको मैं उसके हक़ के साथ लिख चुका हूँ।" हज़रत आदम (अलैहि०) ने कहा : परवरदिगार! (अगर इसकी उम्र लिखी जा चुक है तो) मैं अपनी उम्र के साठ साल इसको देता हूँ। परवरदिगार ने फ़रमाया : "तुम जानो और तुम्हारा काम जाने" (यानी इस मामले में तुम खुद मुख़्तार हो)।

रसूले खुदा (सल्ल०) फ़रमाते हैं कि उसके बाद हज़रत आदम (अलैहि०) जन्नत में रहे जब तक अल्लाह ने चाहा, फिर उनको जन्नत से (ज़मीन पर) उतारा गया और हज़रत आदम (अलैहि०) बराबर अपनी उम्र के साल गिनते थे। (जब उनकी उम्र नौ सौ चालीस साल की हुई तो) मौत का फ़रिश्ता (रूह क़ब्ज़ करने के लिए) उनके पास आया। हज़रत आदम (अलैहि०) ने उनसे कहा : तुमने जल्दी की, मेरी उम्र तो एक हज़ार साल मुक़र्रर की गई है। फ़रिश्ते ने कहा : (यह सही है) लेकिन आपने अपनी उम्र के साठ साल अपने बेटे दाऊद (अलैहि०) को दे दिए हैं। हज़रत आदम (अलैहि०) ने उससे इंकार किया इसलिए उनकी औलाद भी इंकार करती है। और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम भूल गए इसलिए उनकी औलाद भी भूलती है। आँहज़रत (सल्ल०) ने फ़रमाया : उस दिन से लिखने और गवाह बनाने का हुक्म दिया गया है। (तिर्मिज़ी)

अपने मातहतों की तर्बियत की ख़ातिर इजाज़त तलब न करने पर तंबीह

हज़रत कुल्दा बिन हंबल (रज़ि०) कहते हैं कि सफ़वान बिन उमैया ने (मेरे हाथ) रसूले खुदा (सल्ल०) के लिए दूध, हिरन का

बच्चा और ककड़ियाँ भेजीं और उस वक़्त रसूले ख़ुदा (सल्ल०) मक्का के बालाई किनारे पर (जिसको मुअल्ला कहते हैं) क़याम-पज़ीर थे। कुल्दा कहते हैं कि मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ (और दाख़िल होने से पहले) न मैंने सलाम किया, न इजाज़त माँगी। चुनाँचे आँहज़रत (सल्ल०) ने मुझसे फ़रमाया : वापस जाओ (यानी यहाँ से निकलकर दरवाज़े पर जाओ) और वहाँ खड़े होक कहो, अस्सलामु अलैकुम, क्या अंदर आ सकता हूँ? (तिर्मिज़ी, अबू-दाऊद)

'लोग कहते हैं' : यह बात है मर्द की बुरी सवारी है

हज़रत अबू-मसऊद अंसारी (रज़ि०) से रिवायत है। उन्होंने हज़रत अबू-अब्दुल्लाह से या हज़रत अबू-अब्दुल्लाह ने हज़रत अबू-मसऊद अंसारी से दरयाफ़्त किया कि आपने रसूले ख़ुदा (सल्ल०) से (लोग कहते हैं) के बारे में क्या फ़रमाते हुए सुना है? उन्होंने जवाब दिया : मैंने रसूले ख़ुदा (सल्ल०) को फ़रमाते हुए सुना है, कि (यह लफ़्ज़) मर्द की बुरी सवारी है। (क्योंकि, लोग कहते हैं, यह बोल अक्सर व बेशतर इंसान झूठी बात बयान कता है।) (अबू दाऊद)

तक़रीर में बेफ़ायदा मुबालिग़ा-आराई करने वाले का न फ़र्ज़ क़बूल न नफ़्ल क़बूल

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "जो शख़्स तरह तरह से बात करने का सलीक़ा सीखे ताकि उसके ज़रिए लोगों के दिलों पर क़ाबू पा ले, तो अल्लाह तआला क़ियामत के दिन न उसकी नफ़्ल इबादत क़बूल करेगा न फ़र्ज़।" (अबू-दाऊद)

ज़बान की ख़ूब हिफ़ाज़त करें

हज़रत अबूज़र (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "जो शख़्स किसी को "काफ़िर" कहकर पुकारे या किसी को "ख़ुदा का दुश्मन" कहे और वह हक़ीक़त में ऐसा न हो तो उसका कहा हुआ ख़ुद उस पर लौट जाता है (यानी कहने वाला ख़ुद काफ़िर या ख़ुदा का दुश्मन हो जाता है।") (बुख़ार, मुस्लिम)

आग की दो ज़बानों से बचें

हज़रत अम्मार (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया : "जो शख़्स दुनिया में दो रुख़ा होगा, क़ियामत के दिन उसके मुंह में आग की दो ज़बानें होंगी।" (दारमी)

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "क़ियामत के दिन सबसे बदतर शख़्स वह होगा जो (फ़ितना-अंगेज़ी की ख़ातिर) दो मुंह रखता है, एक जमाअत के पास जाता है तो कुछ कहता है और दूसरी जमाअत के पास जाता है तो कुछ और कहता है।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

अफ़सोस है तुम पर! तुमने अपने भाई की गर्दन काट दी

हज़रत मिक़्दाद बिन असवद (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "जब तुम तारीफ़ करने वालों को देखो तो उनके मुँह में ख़ाक डाल दो (यानी उनका मुह बन्द कर दो और तारीफ़ करने से रोको)।" (मुस्लिम)

हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) कहते हैं कि (एक दिन) नबी करीम (सल्ल०) के सामने एक शख़्स ने एक आदमी की (मुबालिग़ा-आमेज़ी के साथ तारीफ़ की और जिसकी वह तारीफ़ कर रहा था वह वहाँ मौजूद था) चुनाँचे आँहज़रत (सल्ल०) ने (तारीफ़ करने वाले से) फ़रमाया : "अफ़सोस है तुम पर, तुमने अपने भाई

की गर्दन काट दी।" आपने यह अल्फ़ाज़ तीन बार दोहराए (फिर फ़रमाया), "अगर तुममें से कोई शख़्स किसी की तारीफ़ करना ज़रूरी समझे, तो यूँ कहे : मैं फ़ुलाँ शख़्स के बारे में यह गुमान रखता हूं, और अल्लाह तआला ख़ूब वाक़िफ़ है और वही उसके आमाल का हिसाब लेने वाला है, अगर तारीफ़ करने वाला यह गुमान रखता है कि उसने जिस शख़्स की तारीफ़ की वह वाक़ियतन ऐसा ही है और अल्लाह पर (लाज़िम करके) किसी की तारीफ़ न करे (यानी पूरे वुसक़ के साथ किसी की तारीफ़ न करे वर्ना अल्लाह पर हुक्म करना लाज़िम आएगा।") (बुख़ारी व मुस्लिम)

दो चीज़ें जन्नत में और दो चीज़ें दोज़ख में पहुँचाती हैं

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया : "जानते हो लोगों को आम तौर पर कौन-सी चीज़ जन्नत में दाख़िल करती है?" वह तक़वा (यानी अल्लाह से डरना) और अच्छा ख़ुल्क़ है, और जानते हो! लोगों को आम तौर पर कौन-सी चीज़ दोज़ख़ में ले जाती है? वह दो खोखली चीज़ें हैं यानी मुंह और शर्मगाह।" (तिर्मिज़ी, इब्ने-माजा)

अफ़सोस है उस शख़्स पर! अफ़सोस है उस शख़्स पर!

बहज़ बिन हकीम अपने वालिद (हकीम बिन मुआविया) से और हकीम, बहज़ के दादा (हज़रत मुआविया बिन हैदरा) से रिवायत करते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "अफ़सोस है उस शख़्स पर जो बात करे तो झूठ बोले ताकि उसके ज़रिए से लोगों को हँसाए, अफ़सोस है उस शख़्स पर! अफ़सोस है उस शख़्स पर।" (अहमद, तिर्मिज़ी, अबू-दाऊद, दारमी)

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "बेशक बन्दा एक बात कहता है और सिर्फ़ इसलिए कहता है कि उसके ज़रिए लोगों को हंसाए, तो वह उस बात की वजह से ज़मीन और आसमान के दर्मियान जितनी दूरी है उससे

ज़्यादा दूर (दोज़ख़ में) जा गिरता है और बिला शुबहा बन्दे की ज़बान उसके क़दमों से ज़्यादा फिसलती है।" (बैहक़ी)

जो शख़्स किसी ऐसी चीज़ पर लानत करे जो लानत के क़ाबिल न हो, तो वह लानत उसी पर लौट आती है।

हज़रत अबू-दरदा (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह फ़रमाते हुए सुना कि जब कोई बन्दा किसी चीज़ (यानी किसी इंसान या ग़ैर-इंसान) पर लानत करता है तो वह लानत आसमान की तरफ़ जाती है, तो आसमान के दरवाज़े उस लानत पर बन्द कर दिए जाते हैं, फिर ज़मीन की तरफ़ उतरती है तो उस लानत प ज़मीन के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं, फिर वह लानत दायीं-बायीं तरफ़ जाती है (मगर उधर से भी धुत्कारी ज़ाती है) चुनांचे जब वह किसी तरफ़ भी रास्ता नहीं पाती तो उस चीज़ की तरफ़ मुतवज्जह होती है जिस चीज़ पर लानत की गई है, अगर वह चीज़ उस लानत की अहल व सज़ावार होती है, तो उस पर वाक़ेअ हो जाती है, वर्ना अपने कहने वाले की तरफ़ लौट जाती है।" (अबू-दाऊद)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि (एक दिन) एक शख़्स की चादर हवा में उड़ गई तो उसने हवा को लानत की। उस पर रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "हवा को लानत न करो क्योंकि वह तो हुक्म के ताबेअ है और इसमें कोई शक नहीं कि जो शख़्स किसी ऐसी चीज़ पर लानत करे जो लानत के क़ाबिल न हो, तो वह लानत उसी पर लौट आती है।" (तिर्मिज़ी, अबू-दाऊद)

अपने ज़िम्मेदार के सामने किसी साथी की शिकायत न करें

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "मेरे सहाबा में से कोई शख़्स किसी के बारे में मुझ तक कोई (ऐसी) बात न पहुंचाए जिससे उसकी बुराई ज़ाहिर होती हो (यानी मेरे पास आकर किसी के बारे में यह न कहे कि फ़लाँ

आदमी ने यह बुरा काम किया या यह बुरी बात कही है या वह उस बुरी आदत में मुब्तला है) क्योंकि मैं यह पसन्द करता हूँ कि मैं जब (घर से) निकल कर तुम्हारे पास आऊँ तो मेरा सीना साफ़ हो (यानी मेरे दिल में तुममें से किसी की तरफ़ से नाराज़गी, ग़ुस्सा और बुग्ज़ न हो)।" (अबू-दाऊद)

ग़ीबत दरिया को भी ख़राब कर देती है

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) कहती हैं कि (एक दिन) मैं नबी करीम (सल्ल०) से यह कह बैठी कि सफ़िया के तयीं बस आपके लिए इतना काफ़ी है कि वह ऐसी-ऐसी हैं (यानी पस्ता क़द हैं) रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने (मेरी यह बात सुनकर नागवारी के साथ) फ़रमाया : "तुमने अपनी ज़बान से ऐसी बात निकाली है कि उसको दरिया में मिलाया जाए तो बिला शुबहा यह बात दरिया पर ग़ालिब आ जाए।" (अहमद, तिर्मिज़ी, अबू-दाऊद)

किसी को गुनाह पर आर न दिलाए

हज़रत ख़ालिद बिन मादान, हज़रत मुआविया (रज़ि०) से नक़ल करते हैं कि उन्होंने कहा रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "जो शख़्स अपने (मुसलमान) भाई को किसी गुनाह पर आर दिलाता है (यानी ऐसे गुनाह पर सरज़निश करता है जिससे उसने तौबा कर ली है) तो वह आर दिलाने वाला मरने से पहले उस गुनाह में (किसी न किसी तरह ज़रूर) मुब्तला होता है।" (तिर्मिज़ी)

किसी की तकलीफ़ पर ख़ुशी का इज़्हार न करें

हज़रत वासिला (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "अपने मुसलमान भाई की तकलीफ़ पर ख़ुशी मत ज़ाहिर करो, हो सकता है (तुम्हारी बेजा ख़ुशी से नाराज़ होकर) अल्लाह तआला उसपर रहमत नाज़िल कर दे (यानी उसको मुसीबत व आफ़त से नजात दे दे) और तुम्हें उस आफ़त में मुब्तला कर दे।" (तिर्मिज़ी)

फ़ासिक़ की तारीफ़ से अर्श भी काँप उठता है

हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "जब फ़ासिक़ की तारीफ़ की जाती है तो अल्लाह तआला (तारीफ़ करने वाले पर) ग़ुस्सा होता है और उसकी तारीफ़ की वजह से अर्शे इलाही काँप उठता है।" (बैहक़ी)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने सात बिखरे मोती अबू ज़र (रज़ि०) को दिए

हज़रत अबूज़र (रज़ि०) कहते हैं कि (एक दिन) मैं रसूले ख़ुदा (सल्ल०) की ख़िदम में हाज़िर हुआ। उसके बाद (ख़ुद अबूज़र (रज़ि०) ने या हज़रत अबूज़र (रज़ि०) से नक़ल करने वाले रावी ने) तवील हदीस बयान की (जो यहाँ नक़ल नहीं की गई है बल्कि उसके यह आख़िरी जुमले नक़ल किए गए हैं) फिर हज़रत अबूज़र (रज़ि०) ने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे कोई नसीहत फ़रमाइए। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया :

मोती नम्बर (1) "मैं तुमको अल्लाह से डरने की नसीहत करता हूँ क्योंकि तक़वा तुम्हारे तमाम (दीनी व दुनियावी) उमूर व अमवाल को बहुत ज़्यादा ज़ीनत व आराइश बख़्शने वाला है।"

मोती नम्बर (2) मैंने अर्ज़ किया : मुझे कुछ और (नसीहत) फ़रमाइए। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : "तिलावते क़ुरआन और ज़िक्रुल्लाह को अपने लिए ज़रूरी समझो, क्योंकि यह (तिलावते क़ुरान और ज़िक्रुल्लाह) तुम्हारे लिए आसमान में ज़िक्र का सबब होगा और ज़मीन पर नूर का सबब होगा।"

मोती नम्बर (3) मैंने अर्ज़ किया : मेरे लिए कुछ और (नसीहत) फ़रमाइए। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : "तवील ख़ामोशी को अपने ऊपर लाज़िम कर लो, क्योंकि ख़ामोशी शैतान को दूर भगाती है और दीनी उमूर में तुम्हारी मददगार होती है।"

मोती नम्बर (4) मैंने अर्ज़ किया : मेरे लिए कुछ और (नसीहत)

फ़रमाइए। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : "बहुत ज़्यादा हँसने से परहेज़ करो, क्योंकि ज़्यादा हँसना दिल को मुर्दा करता है और चेहरे की रौनक़ खो देता है।"

मोती नम्बर (5) मैंने अर्ज़ किया : मेरे लिए कुछ और (नसीहत) फ़रमाइए। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : "सच्ची बात कहो, अगरचे कड़वी हो।"

मोती नम्बर (6) मैंने अर्ज़ किया : मेरे लिए कुछ और (नसीहत) फ़रमाइए। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : "ख़ुदा के दीन और ख़ुदा के पैग़ाम को ज़ाहिर करने और उसकी ताईद व तक़्वियत में किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरो।"

मोती नम्बर (7) मैंने अर्ज़ किया : मेरे लिए कुछ और (नसीहत) फ़रमाइए। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : "वह चीज़ तुम्हें लोगों के उयूब (ज़ाहिर करने) से रोके, जिसको तुम अपने बारे में जानते हो (यानी जब तुम्हें किसी के ऐब का ख़्याल आए तो फ़ौरन अपने उयूब की तरफ़ देखो और सोचो कि ख़ुद मेरी ज़ात में ऐब हैं, दूसरे के ऐब बयान करने से क्या फ़ायदा?)" (बैहक़ी)

ग़ीबत का कुछ कफ़्फ़ारा अदा कर दीजिए

हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "ग़ीबत का कुछ कफ़्फ़रा यह है कि तुम उस शख़्स के लिए मग़फ़िरत व बख़्शिश की दुआ माँगो जिसकी तुमने ग़ीबत की है और इस तरह माँगोः ऐ अल्लाह! हमको और उस शख़्स को (जिसकी मैंने ग़ीबत की है) बख़्श दे।" (बैहक़ी)

वादे के पास व लिहाज़ का नादिर-तरीन वाक़िया

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उबैय हमसा (रज़ि०) कहते हैं, नबी करीम (सल्ल०) के नबी होने से पहले (एक मर्तबा) मैंने आप (सल्ल०) से एक चीज़ ख़रीदी और कुछ क़ीमत की अदाएगी मुझ पर बाक़ी रह गई, मैंने आपसे वादा किया कि मैं बक़िया क़ीमत

लेकर उसी जगह आपकी ख़िदमत में हाज़िर होता हूँ। लेकिन मैं उस वादे को भूल गया और तीन दिन के बाद यह बात याद आई (तो आप (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ) तो क्या देखता हूँ कि आप (सल्ल०) उसी जगह बैठे हुए थे और (मुझे देखकर) फ़रमाया कि तुमने मुझे ज़हमत में मुब्तला कर दिया, मैं तीन दिन से इसी जगह बैठा हुआ तुम्हारा इंतिज़ार कर रहा हूँ। (अबू-दाऊद)

हुस्ने मुआशिरा की मिसाल

हज़रत नोमान बिन बशीर कहते हैं कि (एक दिन) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने नबी करीम (सल्ल०) (की ख़िदम में हाज़िर होने के लिए दरवाज़े पर खड़े होकर आप (सल्ल०)) से इजाज़त तलब की। जभी उन्होंने हज़रत आइशा (रज़ि०) की आवाज़ सुनी जो ज़ोर-ज़ोर से बोल रही थीं। फिर अबू बक्र (रज़ि०) जब घर में दाख़िल हुए तो उन्होंने हज़रत आइशा (रज़ि०) को तमाँचा मारने के इरादे से पकड़ा और कहा : (ख़बरदार! आइंदा) मैं तुम्हें रसूले ख़ुदा (सल्ल०) की आवाज़ से ऊँची आवाज़ में बोलते हुए न देखूं। उधर नबी करीम (सल्ल०) ने हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) को मारने से रोकना शुरू किया। फिर हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ग़ुस्से की हालत में बाहर निकल कर चले गए।

नबी करीम (सल्ल०) ने हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) के चले जाने के बाद (हज़रत आइशा (रज़ि०) से) फ़रमाया : "तुमने देखा मैंने तुम्हें उस आदमी यानी अबू बक्र (रज़ि०) के हाथ से किस तरह बचा लिया। हज़रत आइशा (रज़ि०) कहती हैं : (उसके बाद) हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) (मुझसे ख़फ़गी की बिना पर या आँहज़रत (सल्ल०) से शर्मिन्दगी की वजह से) कई नि तक आँहज़रत (सल्ल०) की ख़िदमत में नहीं आए, फिर (एक दिन) उन्होंने दरवाज़े पर हाज़िर होकर (अंदर आने की) इजाज़त माँगी (और अंदर आए तो) देखा कि दोनों (यानी आँहज़रत (सल्ल०) और आइशा (रज़ि०)) सुलह की हालत में हैं। पस उन्होंने दोनों को मुख़ातिब करके कहा : तुम दोनों मुझको अपनी सुलह में शरीक कर लो, जिस तरह तुमने मुझको अपनी लड़ाई में शरीक किया था। आँहज़रत (सल्ल०) ने

(यह सुनकर) फ़रमाया : "बेशक हमने ऐसा ही किया, बेशक हमने ऐसा ही किया (यानी तुम्हें अपनी सुलह में शरीक कर लिया)।" (अबू-दाऊद)

माँ-बाप के हुक़ूक़ अदा करने की फ़ज़ीलत

हज़रत अब्दुल्लह बिन अब्बास (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले-खुदा ने फ़रमाया : "जिस शख़्स ने इस हालत में सुबह की कि वह माँ-बाप के हक़ में अल्लाह तआला की फ़रमाँबरदारी करनेवाला है (यानी उसने माँ-बाप के हुक़ूक़ अदा करके अल्लाह तआला के हुक्म की इताअत की है) तो वह इस हालत में सुबह करता है कि उसके लिए जन्नत के दरवाज़े खुले होते हैं। और अगर उसके माँ-बाप में से कोई एक (ज़िन्दा) हो (और उसने उसकी इताअत व फ़रमाँबरदारी की है) तो एक दरवाज़ा खुला होता है। और जिस शख़्स ने इस हालत में सुबह की कि वह माँ-बाप के हक़ में अल्लाह तआला की नाफ़रमानी करनेवाला है (यानी उसने माँ-बाप के हुक़ूक़ की अदाएगी में कोताही करके अल्लाह तआला के हुक्म की नाफ़रमानी की है) तो वह इस हालत में सुबह करता है कि उसके लिए दोज़ख़ के दरवाज़े खुले होते हैं। और अगर माँ-बाप में से कोई एक (ज़िन्दा) हो (और उसने उसकी नाफ़रमानी की है) तो एक दरवाज़ा खुला होता है।" (यह इरशाद सुनकर) एक शख़्स ने अर्ज़ किया : अगरचे माँ-बाप उस पर ज़ुल्म करें? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : "हाँ, अगरचे माँ-बाप उसपर ज़ुल्म ही क्यों न करें, अगरचे माँ-बाप उसपर ज़ुल्म ही क्यों न करें, अगरचे माँ-बाप उस पर ज़ुल्म ही क्यों न करें।" (बैहक़ी)

मुसलमान भाई के हुक़ूक़

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूले खुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का दीनी भाई है, न उसपर ज़ुल्म करता है, न उसको दुश्मन के हवाले करता

है (बल्कि दुश्मन के मुक़ाबले पर उसकी मदद करता है) और (याद रखो) जो शख़्स किसी मुसलमान भाई की हाजत-रवाई की कोशिश करता है, अल्लाह तआला उसकी हाजत-रवाई करता है। और जो शख़्स किसी मुसलमान भाई के ग़म और तकलीफ़ को दूर करता है (चाहे वह ग़म और तकलीफ़ ज़्यादा हो या कम) तो अल्लाह तआला उसको क़ियामत के ग़मों से एक बड़े ग़म से नजात देगा। और जो शख़्स किसी मुसलमान भाई के ऐब को छुपाता है, अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसके ऐब छुपाएगा।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

जन्नती और जहन्नमी आदमी

हज़रत अयाज़ बिन हिमार (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले-ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया, जन्नती तीन तरह के हैं :

(1) एक तो वह हाकिम जो अद्‌ल व इंसाफ़ करने वाला और लोगों के साथ एहसान करने वाला है और जिसको नेकियों और भलाइयों की तौफ़ीक़ दी गई है।

(2) दूसरा वह शख़्स जो (छोटों और बड़ों पर) मेहरबान और क़राबतदारों और मुसलमानों के लिए रक़ीक़ुल क़ल्ब यानी नर्म दिल है।

(3) और तीसरा वह शख़्स जो (नाजाइज़ चीज़ों से) बचने वाला (किसी के आगे दस्त सवाल दराज़ करने से) परहेज़ करने वाला और अयालदार (बाल बच्चों वाला) है (यानी मोहताज होने के बावजूद नाजाइज़ चीज़ों से बचता है और अल्लाह के सिवा किसी के सामने दस्त सवाल दराज़ नहीं करता)।

और दोज़ख़ी पाँच तरह के हैं :

(1) एक वह कमज़ोर आदमी जो गुनाहों से बचने की हिम्मत नहीं रखता और तुम्हारा ताबे और तुफ़ैली है, न बीवी तलाश करता है (ताकि जाइज़ तरीक़े पर अपनी ख़्वाहिश को पूरा करे), न माल कमाने की फ़िक्र करता है (बल्कि दूसरों के टुकड़ों पर ज़िंदगी बसर करता है और ग़लत काम करता रहता है)।

(2) दूसरा वह ख़ाइन व बददियानत आदमी जो पोशीदा चीज़ को ढूँढ निकालता है और उसमें ख़ियानत करता है चाहे तमा (लालच) की चीज़ मामूली क्यों न हो।

(3) तीसरा वह आदमी जो सुबह व शाम तुम्हें तुम्हारे अहले ख़ाना और माल में धोखा देने के चक्कर में रहता है।

(4) और (चौथे आदमी के बारे में रावी को अच्छी तरह याद न रहा कि आप (सल्ल०) ने उसका किस तरह तज़्किरा किया इसलिए रावी कहता है कि) आँहज़रत (सल्ल०) ने बुख़्ल या झूठ का तज़्किरा किया।

(5) और पाँचवाँ आदमी बद-अख़्लाक़, फ़हश गो है। (मुस्लिम)

तीन बार आप (सल्ल०) ने क़सम खाई है पड़ोसियों को ईज़ा पहुंचाने वाला कामिल मोमिन नहीं

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले-खुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "क़सम है खुदा की! वह शख़्स (कामिल) मोमिन नहीं है, क़सम है खुदा की! वह शख़्स (कामिल) मोमिन नहीं है, क़सम है खुदा की! वह शख़्स (कामिल) मोमिन नहीं है।" (जब आपने बार-बार यह अल्फ़ाज़ इरशाद फ़रमाए और उस शख़्स की वज़ाहत नहीं की तो) सहाबा ने पूछा : या रसूलुल्लाह! वह कौन शख़्स है? हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया : "वह शख़्स जिसके पड़ोसी उसकी बुराइयों से महफ़ूज़ व मामून न हों।" (बुख़ारी व मुस्लिम)

जन्नत में नबी (सल्ल०) के पड़ोस में रहने का नबवी नुस्खा

हज़रत अबू-उमामा (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले खुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "जो शख़्स महज़ खुदा की रज़ा व खुशनूदी हासिल करने के लिए किसी यतीम बच्चे (लड़के या लड़की) के सर पर (प्यार व मुहब्बत और शफ़क़त के साथ) हाथ फेरता है उसके लिए हर बाल

के एवज़ में जिसपर उसका हाथ लगा है, नेकियाँ लिखी जाती हैं। और जो शख़्स उस यतीम लड़के या लड़की के साथ जो उसकी परवरिश व तर्बियत में हो, अच्छा सुलूक करता है, वह शख़्स और मैं जन्नत में इस तरह होंगे। यह कहकर आप (सल्ल०) ने अपनी दोनों उंगलियों को मिलाया (यानी अंगुश्त शहादत और बीच की उंगली को मिलाकर दिखाया कि जिस तरह ये दोनों उंगलियाँ एक-दूसरे के क़रीब हैं, इसी तरह मैं और वह शख़्स जन्नत में एक-दूसरे के क़रीब होंगे)।" (अहमद, तिर्मिज़ी)

जन्नत वाजिब करनेवाले काम

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "जो शख़्स अपने खाने-पीने में किसी यतीम को शरीक करता है उसके लिए अल्लाह तआला बिला शुबहा जन्नत वाजिब कर देता है, अलबत्ता वह कोई ऐसा गुनाह करे जो बख़्शे जाने के क़ाबिल न हो (तो उसके लिए जन्नत वाजिब नहीं होती)।

और जो शख़्स तीन बेटियों या तीन बहनों की परवरिश करे फिर उनकी तर्बियत करे और उनके साथ प्यार व शफ़क़ का बर्ताव करे यहाँ तक कि अल्लाह तआला उनको बेपरवाह बना दे (यानी वह बड़ी हो जाएँ और बियाह दी जाएँ) उसपर भी अल्लाह तआला जन्नत वाजिब कर देता है। यह सुनकर एक सहाबी ने अर्ज़ किया : क्या दो बेटियों या दो बहनों की परवरिश करने पर भी यह अज्र मिलता है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : "हाँ, दो पर भी यह अज्र मिलता है।" (रावी कहते हैं) अगर सहाबा एक बेटी या एक बहन के बारे में भी सवाल करते तो आप यही जवाब देते कि हाँ एक पर भी यही अज्र मिलता है।

फिर हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया : "अल्लाह तआला जिस शख़्स की दो प्यारी चीज़ें ले ले, उसके लिए जन्नत वाजिब हो जाती है।" पूछा गया: या रसूलल्लाह! दो प्यारी चीज़ों से क्या मुराद है? आपने फ़रमाया : "उसकी दोनों आँखें।"

बेवा औरत बच्चों की तर्बियत पर ध्यान दे

हज़रत औफ़ बिन मालिक अशजई (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले खुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "मैं और वह औरत जिसके रुख़्सार (अपनी औलाद की परवरिश व देखभाल की वजह से) सियाह पड़ गए हों, क़ियामत के दिन इस तरह होंगे।" इस हदीस के रावी यज़ीद बिन ज़रीअ ने यह अल्फ़ाज़ बयान करने के बाद अंगुश्ते शहादत और बीच की उंगली से इशारा किया (जिस तरह ये दोनों उंगयाँ एक-दूसरे के क़रीब क़रीब हैं, इसी तरह क़ियामत के दिन आप (सल्ल०) और वह बेवा औरत क़रीब क़रीब होंगे) और (सियाह रुख़्सार वाली औरत की तशरीह करते हुए बताया : कि इससे मुराद) वह औरत है जो अपने शौहर के मर जाने या उसके तलाक़ दे देने की वजह से बेवा हो गई हो और वह हसीन व जमील और जाह व इज़्ज़त वाली होने के बावजूद महज़ अपने यतीम बच्चों की परवरिश और उनकी भलाई की ख़ातिर (दूसरा निकाह करने से) अपने आपको बाज़ रखे यहाँ तक कि वे बच्चे जुदा हो जाएं (यानी बड़े और बालिग़ हो जाने की वजह से अपनी माँ के मोहताज न रहें) या मर जाएँ। (अबू दाऊद)

पड़ोसी अच्छा कहें तो आप अच्छे, पड़ोसी बुरा कहें तो आप बुरे

हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) कहते हैं कि एक शख़्स ने नबी (सल्ल०) से अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! मैं किस तरह मालूम कर सकता हूँ कि मैं अच्छा हूँ या बुरा? हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया : "जब तुम अपने पड़ोसियों को यह कहते सुने कि तुमने अच्छा किया तो बिला शुबहा तुम अच्छे हो। और जब तुम पड़ोसियों को यह कहते सुनो कि तुमने बुरा किया, तो यक़ीनन तुम बुरे हो (यानी पड़ोसी तुम्हें अच्छा कहें तो तुम अच्छे हो और पड़ोसी तुम्हें बुरा कहें तो तुम बुरे हो)।" (इब्ने-माजा)

ज़रूरतमन्द की ज़रूरत पूरी करने की फ़ज़ीलत

हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "जो शख़्स निहायत परेशान हाल की मदद करता है, अल्लाह तआला उसके लिए तेहत्तर (73) बख़्शिशें लिख देता है। उनमें से सिर्फ़ एक बख़्शिश से उसकी तमाम (दुनियावी और उख़रवी) उमूर की इस्लाह हो जाती है और बाक़ी बहत्तर (72) बख़्शिशें क़ियामत के दिन उसके दरजात की बुलन्दी का सबब होंगी।" (बैहक़ी)

सत्तर हज़ार फ़रिश्तों को अपने पीछे-पीछे चलाने का नबवी नुस्ख़ा

हज़रत अबू-रज़ीन (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूले-ख़ुदा (सल्ल०) ने उनसे फ़रमाया : "मैं तुम्हें इस अम्र की (यानी दीन की) जड़ न बता दूँ, जिसके ज़रिए तुम दुनिया व आख़िरत की भलाई हासिल कर सको? (फिर आपने फ़रमाया) (1) अहले-ज़िक्र की मजालिस में ज़रूर बैठा करो (ताकि तुम्हें भी ज़िक्रुल्लाह की तौफ़ीक़ व सआदत नसीब हो)। (2) और जब तुम तंहा हो तो जिस क़दर मुमकिन हो अल्लाह के ज़िक्र से अपनी ज़बान को हरकत में रखो (यानी लोगों के साथ बैठकर भी अल्लाह का ज़िक्र करो और तंहाई में ख़ुदा की याद में मशग़ूल रहो)। (3) और अल्लाह की रज़ा व ख़ुशनूदी के लिए मुहब्बत करो, (4) और अल्लाह की रज़ा व ख़ुशनूदी के लिए बुग़्ज़ रखो।

(इसके बाद आपने यह भी फ़रमाया) अबू-रज़ीन! क्या तुम्हें मालूम है कि जब कोई शख़्स अपने किसी मुसलमान भाई की ज़ियारत व मुलाक़ात के इरादे से घर से निकलता है तो सत्तर (70) हज़ार फ़रिश्ते उसके पीछे-पीछे चलते हैं और वह (सब फ़रिश्ते) उसके लिए दुआ व इस्तिग़फ़ार करते हैं और कहते हैं : ऐ हमारे परवरदिगार! इस शख़्स ने महज़ तेरी रज़ा व ख़ुशनूदी की ख़ातिर

(एक मुसलमान भाई से) मुलाक़ात की है, तो उसको अपनी रहमत व मग़फ़िरत के साथ मुंसलिक फ़रमा। लिहाज़ा अगर तुम उन कामों को कर सकते हो तो ज़रूर करो।" (बैहक़ी)

सात बुरी ख़स्लतें मुआशरे को बिगाड़ देती हैं

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले-ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "(1) (किसी के बारे में) बदगुमानी क़ायम करने से इज्तिनाब करो, क्योंकि यह बदतरीन झूठ है (2) किसी के अहवाल की टोह में न रहो, (3) न किसी के अहवाल की खोद-कुरेद करो, (4) न किसी के सौदे पर ख़रीदने का इज़्हार करो, (5) न एक-दूसरे से हसद करो, (6) न एक-दूसरे से बुग़्ज़ रखो, (7) न एक-दूसरे की ग़ीबत करो और तुम सब ख़ुदा के बन्दे और एक-दूसरे के भाई-भाई बनकर रहो।" (बुख़ारी व मुस्लिम)

कीना न रखिए, सुलह व सफ़ाई कर लीजिए

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले-ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : पीर और जुमेरात के दिन जन्नत के दरवाज़े खोले जाते हैं, फिर हर उस बन्दे की बख़्शिश की जाती है जो ख़ुदा के साथ किसी को शरीक न करता हो। मगर जो शख़्स अपने मुसलमान भाई से कीना और दुश्मनी रखता हो, उनके बारे में फ़रिश्तों से कहा जाता है : इन दोनों को (जो आपस में अदावत व दुश्मनी रखते हैं) मोहलत दो, यहाँ तक कि वे आपस में सुलह सफ़ाई कर लें।"(मुस्लिम)

हर पीर और जुमेरात को जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले-ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "हर हफ़्ते में दो बार पीर और जुमेरात के दिन परवरदिगार के हुज़ूर लोगों के अमल पेश किए जाते हैं, फिर हर

मोमिन बन्दे की मग़फ़िरत की जाती है। मगर जो बन्दा अपने मुसलमान भाई से कीना और दुश्मनी रखता है, उनके बारे में फ़रिश्तों से कहा जाता है : उन दोनों को छोड़ दो, यहाँ तक कि वे (दोनों अदावत व दुश्मनी से) बाज़ आ जाएँ।" (मुस्लिम)

तवील मुद्दत तक तर्क मुलाक़ात का गुनाह और नाहक़ क़त्ल करने का गुनाह क़रीब-क़रीब है

हज़रत ख़राश अबू-सलमा (रज़ि०) से रिवायत है कि उन्होंने रसूले-ख़ुदा (सल्ल०) को यह फ़रमाते हुए सुना कि "जिस शख़्स ने (नाराज़गी की वजह से) अपने मुसलमान भाई से एक साल तक मिलना-जुलना छोड़े रखा, उसने गोया उसका ख़ून किया (यानी तवी-मुद्दत तक तर्क मुलाक़ात का गुनाह और नाहक़ क़त्ल करने का गुनाह क़रीब-क़रीब है)।" (अबू दाऊद)

सुलह कराने की फ़ज़ीलत और फ़साद फैलाने की मज़म्मत

हज़रत अबू-दरदा (रज़ि०) कहते हैं कि (एक दिन) रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें एक ऐसा अमल न बता दूँ, जिसका दर्जा (और सवाब) (नफ़्ली) रोज़े, (नफ़्ली) सदक़े और (नफ़्ली) नमाज़ के दर्जे (और सवाब) से ज़्यादा है? अबू-दरदा (रज़ि०) कहते हैं कि हमने अर्ज़ किया : हाँ, ज़रूर बताइए। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : "आपस में दुश्मनी रखने वालों के दर्मियान सुलह कराना, (उसके बाद फ़रमाया) और आपस में फ़साद फैलाना ऐसी ख़स्लत है जो दीन को मूंढने वाली और बर्बाद करने वाली है।" (तिर्मिज़ी, अबू-दाऊद)

इस उम्मत की तरफ़ यहूद व नसारा की एक बीमारी सरक आई है

हज़रत ज़ैद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूले-ख़ुदा (सल्ल०) ने

फ़रमाया : "तुम्हारी तरफ़ तुमसे पहली उम्मतों (यानी यहूद व नसारा) की बीमारी हसद और जलन सरक आई और बुग़्ज़ व अदावत मूंढने वाली है। मैं नहीं कहता कि यह बालों को मूंढती है, बल्कि दीन को मूंढती है और बर्बाद कर देती है।" (अहमद, तिर्मिज़ी)

जब किसी मोमिन से हया को छीन लिया जाता है तो ईमान भी रुख़्सत हो जाता है

हज़रत इब्ने-उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया : हया और ईमान एक-दूसरे के साथ हैं। लिहाज़ा जब इन दोनों में से एक को उठाया जाता है तो दूसरे को भी उठा लिया जाता है (यानी जब किसी मोमिन से हया को छीन लिया जाता है तो ईमान भी रुख़्सत हो जाता है)। और हज़रत इब्ने-अब्बास (रज़ि०) की रिवायत में यूँ है कि "जब उन दोनों में से एक को छीन लिया जाता है, तो दूसरा उसके पीछे चल देता है।"

(बैहक़ी)

तीन चीज़ें क़ाबिले तवज्जह

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) कहते हैं कि (एक दिन) नबी करीम (सल्ल०) तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक शख़्स ने हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) को बुरा-भला कहना शुरू कर दिया। हुज़ूर (सल्ल०) (उसकी बातें सुनकर) ताज्जुब फ़रमाते थे और मुस्कुराते थे। जब उस शख़्स ने (हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) को) बहुत बुरा-भला कहा तो हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने उसकी बाज़ बातों का जवाब दिया। उसपर नबी करीम (सल्ल०) नाराज़ हुए और वहाँ से उठ खड़े हुए। हुज़ूर (सल्ल०) के पीछे-पीछे हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) भी गए और ख़िदमते अक़दस में हाज़िर होकर अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! जब वह शख़्स मुझको बुरा-भलाई कह रहा था तो आप वहाँ बैठे रहे,

लेकिन मैंने जब उसकी बाज़ बातों का जवाब दिया, आप नाराज़ हो गए और वहाँ से उठ खड़े हुए (इसमें क्या हिक्मत थी)? हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया : तुम्हारे साथ एक फ़रिश्ता था जो (तुम्हारी तरफ़ से) उसको जवाब दे रहा था मगर जब तुमने खुद जवाब दिया तो शैतान दर्मियान में कूद पड़ा (इसलिए मैं वहाँ से खड़ा हो गया)।

फिर फ़रमाया : "अबू बक्र! तीन बातें हैं और वे सब हक़ हैं :

1. जिस बन्दे पर कोई ज़ुल्म किया जाता है, फिर वह मज़्लूम बन्दा अल्लाह (की रज़ा) के लिए उस ज़ुल्म से चश्मपोशी करता है, तो अल्लाह तआला उस (ज़ुल्म से चश्मपोशी) की वजह से उसकी भरपूर मदद करता है।
2. जो बन्दा अता व बख़्शिश का दरवाज़ा खोलता है, ताकि उसके ज़रिए अपने क़राबतदारों और मिस्कीनों के साथ एहसान और नेक सुलूक करे, तो अल्लाह तआला उस (अता व बख़्शिश) की वजह से उसके माल व दौलत में इज़ाफ़ा करता है।
3. और जो शख़्स सवाल व गदाई का दरवाज़ा खोलता है, ताकि उसके ज़रिए से अपनी दौलत को बढ़ाए, तो अल्लाह तआला उस (गदाई की वजह) से उसके माल व दौल को कम कर देता है।" (अहमद)

हक़ बात को ठुकराना और लोगों को हक़ीर व ज़लील समझना यह तकब्बुर है

हज़रत हारिसा बिन वहब (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले खुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें जन्नती लोग न बतला दूँ? (यानी यह बताऊँ कि कौन लोग जन्नती हैं, सुनो!) हर वह ज़ईफ़ शख़्स (जन्नती है) जिसको लोग ज़ईफ़ व हक़ीर समझें (और उसकी कमज़ोरी व शिकस्ता-हाली की वजह से उसके साथ जब्र व तकब्बुर का मामला करें। मगर वह कमज़ोर शख़्स अल्लाह के नज़दीक इस क़द्र ऊँचा मर्तबा रखता है कि) अगर वह अल्लाह पर भरोसा करके

किसी बात पर क़सम खा बैठे, तो अल्लाह तआला उसकी क़सम को सच्चा कर दे। और क्या मैं तुम्हें वे लोग न बताऊँ जो दोज़ख़ी हैं? (सुनो!) हर वह शख़्स (दोज़ख़ी है) जो झगड़ालू और अक्खड़ मिज़ाज है और तकब्बुर व इनाद की वजह से हक़ बात को क़बूल नहीं करता। (बुख़ारी, मुस्लिम)

हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "वह शख़्स जन्नत में दाख़िल नहीं होगा, जिसके दिल में ज़र्रा बराबर तकब्बुर होगा।" (यह सुनकर) एक शख़्स ने अर्ज़ किया : कोई आदमी यह पसन्द करता है कि उसका लिबास उम्दा हो और उसके जूते अच्छे हों (और वह अपनी उस पसन्द व ख़्वाहिश के तहत अच्छा लिबास पहनता है और अच्छे जूते इस्तेमाल करता है तो क्या इसको भी तकब्बुर कहेंगे)? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : "अल्लाह तआला जमील (यानी अच्छा और आरास्ता है) और जमाल (आरास्तगी) को पसन्द करता है, और तकब्बुर तो हक़ बात को ठुकराना और लोगों को हक़ीर व ज़लील समझना है।" (मुस्लिम)

हद से ज़्यादा तकब्बुर करने का नतीजा

हज़रत सलमा बिन अकवा (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "कोई शख़्स अपने नफ़्स को बराबर बुलन्द करता रहता है (यानी तकब्बुर करता रहता है) यहाँ तक कि (उसका नाम) सरकशों (यानी ज़ालिम और मुतकब्बिर लोगों की फ़ेहरिस्त) में लिख दिया जाता है। फिर जो आफ़त व बला उन सरकशों को पहुँचती है, वही उस शख़्स को भी पहुँचती है।" (तिर्मिज़ी)

हज़रत अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से और वह रसूले ख़ुदा (सल्ल०) से रिवायत कते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : "क़ियामत के दिन तकब्बुर कनेवालों को छोटी चींटियों की तरह आदमी की सूरत में जमा किया जाएगा (यानी उनकी शक्ल व सूरत तो आदमियों की-सी होगी, लेकिन

जिस्म चींटियों के बराबर होगा) और हर तरह से ज़िल्लत व ख़्वारी उनको पूरी तरह घेर लेगी। फिर उनको जहन्नम के एक क़ैदख़ाने की तरफ़ जिसका नाम (बोलिस) है, हाँका जाएगा। वहाँ आगों की आग उन पर छा जाएगी और उनको दोज़ख़ियों का निचोड़ यानी दोज़ख़ियों के बदन से बहने वाला ख़ून और पीप पिलाया जाएगा।"

(तिर्मिज़ी)

नौ (9) बुरे बन्दे

हज़रत असमा बिन्ते अमीस (रज़ि०) कहती हैं कि मैंने रसूले ख़ुदा (सल्ल०) को यह फ़रमाते हुए सुना :

(1) बुरा है वह बन्दा जिसने अपने आपको दूसरों से बेहतर जाना और तकब्बुर किया और ख़ुदावंद बुज़ुर्ग व बरतर को भूल गया (यानी उसने यह फ़रामोश कर दिया कि बुज़ुर्गी और बुलन्दी व बरतरी सिर्फ़ अल्लाह तआला के लिए मख़्सूस है। या यह भूल गया कि उसने दुनिया में एहतियात व तक़्वा की राह छोड़कर जिस बुरे रास्ते को इख़्तियार किया है उसकी जवाबदेही उसको आख़िरत में करनी होगी और वहाँ ख़ुदा का अज़ाब भुगतना पड़ेगा)।

(2) बुरा है वह बन्दा जिसने लोगों पर जब्र व ज़ुल्म किया और ज़ुल्म व फ़साद-रेज़ी में हद से बढ़ गया और ख़ुदावंद जब्बार व क़हहार को भूल गया, जिसकी क़ुदरत व इज़्ज़ सबसे बुलन्द है।

(3) बुरा है वह बन्दा जो दीन के कामों को भूल गया और दुनियादारी में मशग़ूल रहा और उसने मक़बरों को और ख़ाक में मिल जाने वाले जिस्म की बोसीदगी को फ़रामोश कर दिया (यानी उसने इस बात से कोई इबरत नहीं पकड़ी कि कैसे-कैसे लोग हज़ारों मन मिट्टी के नीचे दफ़न कर दिए गए और उनके जिस्म कीड़ों की ख़ुराक बन गए)।

(4) बुरा है वह बन्दा जिसने फ़ितना व फ़साद बरपा किया और हद से तजावुज़ कर गया और अपनी इब्तदा को भूल गया (यानी न

तो उसको यह याद रहा कि वह कितनी हक़ीर चीज़ से पैदा किया गया है और इब्तिदा में वह किस क़द्र आजिज़ व नातवाँ था और न उसको अपना अंजाम याद रहा, आख़िरकार पेवन्दे ज़मींन हो जाता है)।

(5) बुरा है वह बन्दा जो दीन के ज़रिए दुनिया हासिल करे (यानी दुनिया को हासिल करने के लिए दीन को वसींला बनाए। या यह मानी हैं कि सुल्हा और बुज़ुर्गों की-सी शक्ल इख़्तियार करके और दीन का लुबादा ओढ़कर अहले दुनिया को फ़रेब दे, ताकि वे उसके मोतक़िद व मदाह हों और उनसे माल व जाह हासिल करे)।

(6) बुरा है वह बन्दा जिसने शुब्हात में मुब्तला होकर दीन को ख़राब कर दिया।

(7) बुरा है वह बन्दा जिसने मख़्लूक़ से तमा और उम्मीद क़ायम की और हिर्स व तमा उसको दुनियादारों के दरवाज़ों पर खींचे-खींचे फिरती है और जिधर चाहती है ले जाती है।

(8) बुरा है वह बन्दा सिको ख़्वाहिशे नफ़्स गुमराह करती हैं।

(9) बुरा है वह बन्दा जिसको दुनिया की रग़बत, हुसूले दुनिया की हिर्स और कसरते माल व जाह की हवस, ज़लील व ख़ुवार करती है। (तिर्मिज़ी, बैहक़ी)

गुस्सा ईमान को ख़राब कर देता है

हज़रत बहज़ बिन हकीम अपने वालिद से और वह बहज़ के दादा हज़रत मुआविया बिन हैदरा क़शीरी (रज़ि०) से रिवायत करते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "बिला शुबहा गुस्सा ईमान को ख़राब कर देता है, जिस तरह ऐलवा शहद को ख़राब कर देता है।" (बैहक़ी)

आम तौर पर ज़ालिम की उम्र दराज़ नहीं होती

हज़रत अबू-मूसा (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "बिला शुबहा अल्लाह तआला ज़ालिम को मोहल देता है (यानी दुनिया में उसकी उम्र दराज़ करता है, ताकि वह ज़ुल्म करता रहे और आख़िरत में सख़्त अज़ाब में गिरफ़्तार हो) यहाँ तक कि जब उसको पकड़ता है, तो फिर छोड़ता नहीं। उसके बाद आँहज़रत (सल्ल०) ने (दलील के तौर पर) यह आयत पढ़ी :

وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ اِنَّ اَخْذَهٗٓ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ

"और आपके रब की दारगीर ऐसी ही है जब वह किसी बस्ती वालों पर दारगीर करता है, जबकि वह ज़ुल्म किया करते हैं। बिला शुबहा उसकी दारगीर बड़ी तकलीफ़देह और सख़्त है।" (बुख़ारी व मुस्लिम)

बुराई का जवाब अच्छाई से देना चाहिए

हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "तुम (इम्मअह) न बनो यानी यह न कहो कि अगर लोग हमारे साथ भलाई करेंगे तो हम भी उनके साथ भलाई करेंगे और अगर लोग हमारे साथ ज़ुल्म करेंगे, तो हम भी उनके साथ ज़ुल्म करेंगे। बल्कि तुम अपने आपको इस बात पर जमाओ कि अगर लोग भलाई करें, तो तुम भी भलाई करो और अगर लोग बुराई करें, तो तुम ज़ुल्म न करो।" (तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू-उमामा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "क़ियामत के दिन मर्तबे के एतिबार से बदतरीन आदमी वह बन्दा होगा जिसने दूसरे की दुनिया (बनाने) की वजह से अपनी आख़िरत बर्बाद कर दी (जैसे ज़ालिम हाकिम के मददगार किया करते हैं)।" (इब्ने-माजा)

ज़ालिम की ताईद और मुवाफ़िक़त करने वाला कमाल ईमान से महरूम हो जाता है

हज़रत औस बिन शुरजील (रज़ि०) से रिवायत है कि उन्होंने रसूले ख़ुदा (सल्ल०) को यह फ़रमाते हुए सुना कि "जो शख़्स किसी ज़ालिम की तक़्वियत व ताईद के लिए उसके साथ चले (यानी उसकी मुवाफ़िक़त व हिमायत करे) और वह यह जानता है कि (मैं जिस शख़्स की मदद और ताईद कर रहा हूँ) व ज़ालिम इंसान है, तो वह शख़्स इस्लाम से ख़ारिज हो जाता है (यानी वह कमाले दीन से महरूम हो जाता है)।"

ज़ुल्म की नहूसत यह है कि हुबारा परिन्दा भी घोंसले में दुबला होकर मर जाता है

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) से रिवायत ह कि उन्होंने एक शख़्स को यह कहते हुए सुना कि ज़ालिम हक़ीक़त में अपने आप ही को नुक़्सान पहुँचाता है (दूसरों तक उसके ज़ुल्म के असरात नहीं पहुँचते)। (यह सुनकर) हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) ने फ़रमाया : "क्यों नहीं, ख़ुदाए पाक की क़सम (ज़ालिमाना हरकतों से दूसरों को भी नुक़सान पहुँचता है) यहाँ तक कि हुबारा परिन्दा अपने घोंसले में ज़ालिम के ज़ुल्म की वजह से दुबला होकर मर जाता है।"(बैहेक़ी)

ज़ालिम को मुहब्बत से समझाना चाहिए वर्ना अज़ाब सब पर आएगा

और अबू-दाऊद की रिवायत में यूँ है कि जब लोग किसी को ज़ुल्म करते देखें और उसका हाथ न पकड़ें (यानी उसको ज़ुल्म से न रोकें) तो क़रीब है कि अल्लाह तआला उन सबको अपने अज़ाब की गिरफ़्त में ले ले।

रसूले-ख़ुदा(सल्ल०) का एक अहम बयान इसको याद कर लीजिए

हज़र अबू-सईद ख़ुदरी (रज़ि०) कहते हैं कि (एक दिन) अस्र के बाद रसूले ख़ुदा (सल्ल०) हमारे सामने ख़ुत्बा देने के लिए खड़े हुए। उस ख़ुत्बे में आपने क़ियामत तक पेश आने वाली कोई ज़रूरी बात नहीं छोड़ी, जिसका आपने तज़्किरा न किया हो। याद रखने वालों ने उनको याद रखा और भूलने वाला उसको भूल गया। आप (सल्ल०) ने उस वक़्त जो कुछ फ़रमाया उसमें यह भी था कि "यह दुनिया बड़ी शीरीं और हरी-भरी है और यक़ीनन अल्लाह तआला ने तुम्हें इस दुनिया में अपना ख़लीफ़ा बनाया है। लिहाज़ा वह देखता है कि तुम किस तरह अमल करते हो? पस ख़बरदार! तुम दुनिया से बचो और औरतों से दूर रहो।" आँहज़रत (सल्ल०) ने यह फ़रमाया कि "क़ियाम के दिन हर अहदशिकनी के लिए एक निशान (अलामती झंडा) खड़ा किया जाएगा जो दुनिया में उसकी अहदशिकनी के बक़द्र होगा, और कोई अहदशिकनी अमीर आम की अहदशिकनी से ज़्यादा बुर नहीं। चुनाँचे उसका निशान उसकी सुरीन के क़रीब खड़ा किया जाएगा (ताकि उसकी ज़्यादा फ़ज़ीहत व रुसवाई हो)। हुज़ूर (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया : "तुममें से किसी को लोगों की हैबत और ख़ौफ़, हक़ बात कहने से बाज़ न रखे, जबकि वह हक़ बात से वाक़िफ़ हो।"

और एक रिवायत में यूँ है कि "अगर तुममें से कोई शख़्स किसी ख़िलाफ़े शरअ बात को देखे, तो लोगों की हैबत उसको ख़िलाफ़े शरअ बात की इस्लाह से बाज़ न रखे।" (यह बयान करके) हज़रत अबू-सईद ख़ुदरी (रज़ि०) रो पड़े और कहने लगे कि हमने ख़िलाफ़े शरअ बात को (अपनी आँखों से) देखा और लोगों के ख़ौफ़ से हम इसके बारे में कुछ न बोल सके। (इसके बाद हज़रत अबू-सईद ने बयान किया कि) हुज़ूर (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया : "जान लो! इंसान को मुख़्तलिफ़ जमाअतों और मुतज़ाद अक़्साम व

मराति पर पैदा किया गया है। चुनाँचे :

(1) उनमें से बाज़ वे हैं जिनको मोमिन पैदा किया जाता है और ईमान की हालत में ज़िंदा रहते हैं और ईमान पर ही उनका ख़ातिमा होता है।

(2) और उनमें से बाज़ वे हैं जिनको काफ़िर पैदा किया जाता है और कुफ़्र की हालत में ज़िंदा रहते हैं और कुफ़्र पर ही उनका ख़ातिमा होता है।

(3) और उनमें से बाज़ वे हैं जिनको मोमिन पैदा किया जाता है और ईमान ही की हालत में ज़िंदा रहते हैं लेकिन उनका ख़ातिमा कुफ़्र पर होता है।

(4) और उनमें से बाज़ वे हैं जिनको काफ़िर पैदा किया जाता है और कुफ़्र की हालत में ज़िंदा रहते हैं लेकिन उनका ख़ात्मा ईमान पर होता है।''

हज़रत अबू-सईद कहते हैं कि (इस मौक़े पर) हुज़ूर (सल्ल०) ने ग़ज़ब व गुस्से की क़िस्मों को भी ज़िक्र किया। चुनांचे आप (सल्ल०) ने फ़रमाया :

(1) बाज़ आदमी बहुत जल्द ग़ज़बनाक हो जाते हैं, लेकिन उनका ग़ुस्सा जल्द ही ख़त्म हो जाता है। चुनांचे उन दोनों में से एक दूसरे का बदल जाता है (यानी यह शख़्स न अच्छा न बुरा)।

(2) और बाज़ आदमी ऐसे होते हैं जिनको ग़ुस्सा देर में आता है और देर से जाता है। चुनांचे उन दोनों में से एक दूसरे का बदल बन जाता है (यानी यह शख़्स न अच्छा है न बुरा)।

(3) और तुममें से बेहतरीन शख़्स वह है जिसको ग़ुस्सा देर से आता है और जल्द ख़त्म हो जाता है।

(4) और तुममें से बदतरीन शख़्स वह है, जिसको जल्द ग़ुस्सा आता है और देर से जाता है।'' (इसके बाद) हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया : ''तुम ग़ुस्से से बचो, क्योंकि ग़ुस्सा इब्ने आदम के क़ल्ब पर एक दहकता हुआ अंगारा है। क्या तुम नहीं देखते कि (जब कोई शख़्स ग़ज़बनाक होता है तो) उसकी गर्दन की

रगें फूल जाती हैं और आँखें सुर्ख़ हो जाती हैं, लिहाज़ा जो शख़्स गुस्से का असर महसूस करे, वह फ़ौरन पहलू पर लेट जाए और ज़मीन से चिमट जाए।"

और हुज़ूर (सल्ल०) ने क़र्ज़ का भी ज़िक्र किया। चुनांचे आपने फ़रमाया :

(1) तुममें से बाज़ आदमी (क़र्ज़ की) अदाएगी में अच्छे होते हैं, लेकिन अपना क़र्ज़ वुसूल करने में सख़्ती करते हैं। चुनांचे उसकी दोनों ख़स्लतों में से एक, दूसरी का बदल हो जाती है।

(2) और बाज़ आदमी क़र्ज़ अदा करने में तो बुरे साबित होते हैं, लेकिन किसी से अपना क़र्ज़ वुसूल करने में अच्छे साबित होते हैं। चुनांचे उसकी उन दोनों में से एक-दूसरे का बदल हो जाती है।

(3) और तुममें बेहतरन शख़्स वह है जो किसी का क़र्ज़ अदा करने में भी अच्छा हो और किसी से अपना क़र्ज़ वुसूल करने में भी अच्छा हो।

(4) और तुममें बदतरीन शख़्स वह है जो क़र्ज़ अदा करने में भी बराबर हो और किसी से अपना क़र्ज़ वुसूल करने में भी बराबर हो।"

हुज़ूर (सल्ल०) ने अपने इस ख़ुत्बे में यह नसीहतें फ़रमाईं। यहाँ तक कि जब सूरज की रौशनी खजूरों की चोटियों और दीवारों के किनारों तक आ गई (यानी जब दिन का आख़िर हो गया) तो आपने फ़रमाया : "याद रखो! इस दुनिया का जो ज़माना गुज़र चुका है, उसकी बनिस्बत सिर्फ़ इतना ज़माना बाक़ी रह गया है, जितना आज के दिन के गुज़रे हुए हिस्से की बनिस्बत, यह आख़िरी वक़्त (यानी जिस तरह आज के दिन का क़रीब-क़रीब पूरा हिस्सा गुज़र चुका है और थोड़ा-सा बाक़ी है, इसी तरह अक्सर ज़माना गुज़र चुका है, अब बहुत क़लील अर्सा बाक़ी रह गया)।"
(तिर्मिज़ी)

आख़िरी ज़माने के मुताल्लिक़ अहम हिदायात

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : बिला शुबहा मेरी उम्मत को आख़िर ज़माने में उनके हुक्मराँ की तरफ़ से सख़्तियाँ और बलाएँ पहुँचेंगी। उसकी सख़्तियों से नजात पाने वाला एक तो वह शख़्स होगा जिसने ख़ुदा के दीन को (अच्छी तरह) जाना और पहचाना, फिर दीन को सरबुलन्द करने के लिए अपनी ज़बान, अपने हाथ और अपने दिल से जिहाद किया। बस दुनिया व आख़िरत की सआदतें उसकी तरफ़ सब्क़त करेंगी।

और दूसरा वह शख़्स होगा जिसने ख़ुदा के दीन को जाना, फिर ज़बान और दिल से उसकी तस्दीक़ की (यानी सिर्फ़ ज़बान और दिल से जिहाद किया, क़ुव्वत से काम नहीं लिया)। और तीसरा वह शख़्स होगा जिसने ख़ुदा के दीन को पहचाना, फिर उसको सुकूत इख़्तियार किया। चुनांचे जब किसी को नेक काम करते हुए देखता है तो उसको दोस्त रखता है और किसी को ग़लत काम करते देखता है तो उससे नफ़रत करता है, और यह शख़्स भी नेकी से मुहब्बत और गुनाह से नफ़रत को पोशीदा रखने की वजह से नजात पाएगा। (बैहक़ी)

लोगों के डर से इस्लाह की फ़िक्र न करने वाले की माफ़ी

हज़रत अबू-सईद ख़ुदरी (रज़ि०) कहते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : "अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर क़ियामत के दिन बन्दे से पूछेगा : तुझको क्या हुआ था कि जब तूने ख़िलाफ़े शरअ काम को देखा था, तू उससे क्यों नहीं रुका था? रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया : फिर उसको दलील सिखाई जाएगी। चुनांचे वह अर्ज़ करेगा : मेरे परवरदिगार! मैं लोगों से डरता था और तेरे अफ़ू व मग़फ़िरत की उम्मीद रखता था।"

क़ाबिले-रश्क बन्दा

हज़रत अबू-उमामा (रज़ि०) नबी करीम (सल्ल०) से नक़ल करते हैं कि आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे नज़दीक मेरे दोस्तों (यानी मोमिनीन) में निहायत क़ाबिले रश्क वह मोमिन है जो सबक बार है, नमाज़ से बहुत ज़्यादा बहरामन्द है और अपने रब की इबादत ख़ूबी के साथ करता है (और जिस तरह ज़ाहिर में इबादत करता है उसी तरह) ख़िल्वत में भी ताअते इलाही में मशग़ूल रहता है और लोगों में गुमनाम है कि उसकी तरफ़ उंगलियों से इशारा नहीं किया जाता। नीज़ उसकी रोज़ी बक़द्र किफ़ायत है और उसी पर साबिर व क़ानेअ है। यह कहकर आपने चुटकी बजाई और इरशाद फ़रमाया : "इसकी मौत बस यूँ (चुटकी बजाते) अपना काम जल्द पूरा कर लेती है और उसकी मौत पर रोने वाली औरतें भी कम हैं और उसका तर्का भी बहुत मुख़्तसर है।" (अहमद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

मसाकीन मालदारों से चालीस साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे

हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्ल०) ने दुआ फ़रमाई, "ऐ अल्लाह! मुझको मिस्कीन बनाकर ज़िन्दा रख, मिस्कीन ही की हालत में मुझे मौत दे और मिस्कीन ही के ज़मा में मेरा हश्र फ़रमा।" हज़रत आइशा (रज़ि०) (ने हुज़ूर (सल्ल०) को यह दुआ फ़रमाते हुए सुना तो) कहने लगीं, "या रसूलुल्लाह! आप ऐसी दुआ क्यों करते हैं?" हुज़ूर (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : इसलिए कि मसाकीन मालदारों से चालीस साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे, ऐ आइशा! किसी मिस्कीन को अपने दरवाज़े से नाउम्मीद न जाने देना। अगरचे उसको देने के लिए तुम्हारे पास खजूर का एक टुकड़ा ही क्यों न हो। आइशा! (अपने दिल में) मिस्कीनों से मुहब्बत रखो और उनको अपनी क़ुर्ब से नवाज़ो (यानी

उनको हक़ीर व कमतर जानकर अपने यहाँ आने-जाने से मत रोको) अगर तुम ऐसा करोगी तो अल्लाह तआला तुम्हें क़ियामत के दिन अपनी क़ुरबत से नवाज़ेगा।" (तिर्मिज़ी, बैहेक़ी, इब्ने-माजा)

सात बिखरे मोती

हज़रत अबू-ज़र (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मेरे ख़लील (सल्ल०) ने मुझको सात बातों का हुक्म दिया है। चुनांचे आपने एक हुक्म तो यह दिया कि :

(1) मैं फ़ुक़रा व मसाकीन से मुहब्बत करूँ और उनसे क़रीब रहूँ।

(2) दूसरा हुक्म यह दिया कि मैं उस शख़्स की तरफ़ देखूँ जो (दुनियावी एतिबार से) मुझसे कमतर दर्जे का है और उस शख़्स की तरफ़ न देखूँ जो (जाल व माल और मंसब में) मुझसे बालातर है।

(3) तीसरा हुक्म यह दिया कि मैं क़राबतदारों से नातेदारी को क़ायम रखूँ अगरचे कोई (क़राबतदार) नातेदारी को मुँक़ता करे।

(4) चौथा हुक्म यह दिया कि मैं किसी शख़्स से कोई चीज़ न माँगूँ।

(5) पाँचवाँ हुक्म यह दिया कि मैं (हर हालत में) हक़ बात कहूँ अगरचे वह (सुननेवाले को) तल्ख़ मालूम हो।

(6) छठा हुक्म यह दिया कि मैं ख़ुदा के दीन के मामले में और अम्र-बिल-मारूफ़ और नह्य अनिल मुंकर के सिलसिले में मलामत करनेवाले की मलामत से न डरूँ।

(7) और सातवाँ हुक्म यह दिया कि मैं कसरत के साथ "ला हौ-ल व-ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह" कहा करूँ, क्योंकि ये कलिमात उस ख़ज़ाने में से हैं जो अर्शे इलाही के नीचे है।" (अहमद)

बूढ़े का दिल दो चीज़ों में हमेशा जवान रहा है

हज़र अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "इंसान बूढ़ा हो जाता है, मगर उसमें दो चीज़ें

जवान और क़वी हो जाती हैं, एक तो माल (जमा करने) की हिर्स और दराज़ी उम्र की आरज़ू।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "बूढ़े आदमी का दिल दो चीज़ों में हमेशा जवान रहता है, एक दुनिया की मुहब्बत में और दूसरी आरज़ू उम्र की दराज़ी में।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

हलाल कमाई और आरज़ुओं की कमी का नाम ज़ुह्द है

हज़रत सुफ़ियान सौरी (रह०) से मन्क़ूल है कि उन्होंने फ़रमायाः "ज़ुह्द (यानी दुनिया से बेरग़बती) इसका नाम नहीं है कि मोटे और सख़्त कपड़े पहन लिए जाएँ और रूखा-सूखा और बदमज़ा खाना खाया जाए बल्कि दुनिया से ज़ुह्द इख़्तियार करना हक़ीक़त में आरज़ुओं और उम्मीदों की कमी का नाम है।" (बग़वी)

हज़रत ज़ैद बिन हुसैन फ़रमाते हैं कि जब इमाम मालिक (रह०) से पूछा गया कि दुनिया से ज़ुह्द इख़्तियार करना किस चीज़ का नाम है? तो मैंने इमाम मालिक (रह०) को यह फ़रमाते हुए सुना कि "हलाल कमाई और आरज़ुओं की कमी का नाम ज़ुह्द है।" (बैहेक़ी)

यह दुनिया बस चार आदमियों के लिए है

हज़रत अबू-कबशा अनसारी (रज़ि०) से रिवायत है कि उन्होंने रसूले ख़ुदा (सल्ल०) को यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना कि "तीन बातें हैं जिनकी हक़्क़ानियत व सदाक़त पर मैं क़सम खा सकता हूँ और मैं तुमसे एक बात कहता हूँ तुम इसको याद रखना, पस वे तीन बातें जिनकी हक़्क़ानियत व सदाक़त पर मैं क़सम खा सकता हूँ, ये हैं :

(1) बन्दे का माल ख़ुदा की राह में ख़र्च करने की वजह से कम नहीं होता।

(2) और जिस बन्दे पर ज़ुल्म किया जाए और उसका माल नाहक़

ले लिया जाए और वह बन्दा उस ज़ुल्म व ज़्यादती पर सब्र करे तो अल्लाह तआला उसकी इज़्ज़त को बढ़ाते हैं।

(3) और जिस बन्दे ने अपने नफ़्स पर सवाल का दरवाज़ा खोला अल्लाह तआला उसके लिए फ़क्र व इफ़्लास का दरवाज़ा खोल देता है।

और रही वह बात जिसके बारे में मैंने कहा था कि इसको याद रखना वह यह है कि :

(1) एक तो वह बन्दा जिसको अल्लाह ताला ने माल व ज़र भी आ किया और इल्म की दौलत से भी नवाज़ा, पस वह बन्दा अपने माल व दौत के बारे में अल्लाह से डरता है (यानी उसको हराम व नाजाइज़ कामों में ख़र्च नहीं करता) इसके ज़रिए अपने क़राबतदारों और अज़ीज़ों के साथ हुस्ने सुलूक और एहसान करता है और उस माल व ज़र में उसके हक़ के मुताबिक़ अल्लाह तआला के लिए काम करता है (यानी माल व दौल के तयीं अल्लाह तआला ने जो हुक़ूक़ मुतय्यन किए हैं उनको अदा करता है) पस यह बन्दा मर्तबा के एतिबार से कामिल-तरीन है।

(2) दूसरा वह बन्दा जिसको अल्लाह तआला ने इल्म तो अता किया लेकिन उसको माल इनायत नहीं फ़रमाया पस वह बन्दा (अपने इल्म के सबब सच्ची नीयत रखता है और) कहता है कि अगर मेरे पास माल होता तो फ़लाँ शख़्स जैसे अच्छे काम करता, पस उन दोनों का अज्र व सवाब बराबर है।"

(3) तीसरा बन्दा वह है जिसको अल्लाह तआला ने माल अता किया है लेकिन इल्म नहीं दिया पस वह बन्दा बेइल्म होने की वजह से अपने माल के बारे में बहक जाता है वह उस माल व दौलत के बारे में अपने रब से नहीं डरता है और अपने क़राबतदारों और अज़ीज़ों के साथ माली एहसान व सुलूक नहीं करता है और न उन हुक़ूक़ को अदा करता है जो उस माल व दौलत से मुताल्लिक़ हैं, पस यह बन्दा मर्तबे के एतिबार से बदतरीन है।

(4) और चौथा बन्दा वह है जिसको अल्लाह आला ने न तो माल अता किया है और न इल्म दिया है, पस वह बन्दा कहता है कि अगर मेरे पास माल होता तो मैं भी उसको फ़लाँ शख़्स की तरह (बुरे कामों में) ख़र्च करता। पस यह बन्दा बदनीयत है और उन दोनों का गुनाह बराबर है।" (तिर्मिज़ी)

जहाँ तक इस ज़माने का ताल्लुक़ है तो अब माल व दौलत भी मुसलमानों की ढाल है।

हज़रत सुफ़ियान सौरी (रह०) फ़रमाते हैं कि अगले ज़माने में माल को बुरा समझा जाता था लेकिन जहाँ तक इस ज़माने का ताल्लुक़ है, तो अब माल व दौलत मुसलमानों की ढाल है।

हज़रत सुफ़ियान सौरी (रह०) ने यह भी फ़रमाया कि "अगर (हम लोगों के पास) यह दिरहम व दीनार और रुपया पैसा न होता, तो यह (आज कल के) सलातीन व उमरा हमें ज़लील व पामाल कर डालते। और उन्होंने फ़रमाया, किसी शख़्स के पास अगर थोड़ा बहुत माल हो तो उसको चाहिए कि वह उसकी इस्लाह करे (यानी उस थोड़े-से माल को यूँ ही ज़ाया न होने दे, बल्कि तदबीर वग़ैरह व हुनरमन्दी के साथ उसको किसी तिजारत वग़ैरह में लगाकर बढ़ाने की कोशिश करे) क्योंकि हमारा यह ज़माना ऐसा है कि उसमें अगर कोई मोहताज व मुफ़्लिस होगा तो (दुनिया को हासिल करने की ख़ातिर) अपने दीन को अपने हाथ से गँवाने वाला सबसे पहला शख़्स वही होगा।" हज़रत सुफ़ियान का एक क़ौल यह भी है कि "हलाल माल, इसराफ़ को बर्दाश्त नहीं करता (यानी हलला माल में इसराफ़ नहीं करना चाहिए)।" (बग़वी)

क़ियामत के दिन एलान होगा कि साठ साल की उम्रवाले लोग कहाँ हैं?

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "एलान करने वाला (फ़रिश्ता)

क़ियामत के दिन (अल्लाह के हुक्म से) यह एलान करेगा कि साठ साल की उम्र वाले लोग कहाँ हैं? (यानी दुनिया में जिन लोगों ने साठ साल की उम्र पाई, वह अपनी उम्र का हिसाब देने के लिए अपने आपको पेश करें) और यह उम्र, वह उम्र है जिसके बारे में अल्लाह तआला ने यह इरशाद फ़रमाया है :

اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ

"क्या हमने तुमको ऐसी उम्र नहीं दी जिसमें नसीहत हासिल करने वाला नसीहत हासिल करे और तुम्हारे पास डराने वाला (बुढ़ापा) भी आ चुका है।" (बैहक़ी)

अल्लाह के नज़दीक उस मुसलमान से ज़्यादा अफ़ज़ल कोई नहीं है जिसने इस्लाम की हालत में ज़्यादा उम्र पाई।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन शद्दाद (रज़ि०) फ़रमाते हैं बनी उज़रा क़बीले के कुछ लोग जिनकी तादाद तीन थी, नबी करीम (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और इस्लाम क़बूल किया (फिर वे लोग हुसूले दीन की ख़ातिर और ख़ुदा की राह में रियाज़त व मुजाहिदा की नीयत से हुज़ूर (सल्ल०) के पास ठहर गए। उनकी माली हालत चूंकि बहुत ख़स्ता थी और वह अपनी ज़रूरियाते ज़िंदगी की किफ़ालत ख़ुद करने पर क़ादिर नहीं थे इसलिए) रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने फ़रमाया, "कौन है जो उन लोगों की ख़बरगीरी के सिलसिले में मुझे बेफ़िक्र कर दे? हज़रत तलहा (रज़ि०) ने अर्ज़ किया : मैं इस ज़िम्मेदारी को क़बूल करता हूँ। चुनांचे तीनों हज़रत तलहा (रज़ि०) के पास रहने लगे। (कुछ दिनों के बाद) जब नबी करीम (सल्ल०) ने किसी तरफ़ एक लश्कर भेजा, तो उस (लश्कर) में उन तीनों में से एक शख़्स गया और मैदाने जंग में (दुश्मनों से लड़ता हुआ) शहीद हो गया, उसके बाद हुज़ूर (सल्ल०) ने एक और लश्कर भेजा, उसके साथ दूसरा शख़्स गया और वह भी शहीद हो गया और फिर तीसरा शख़्स अपने बिस्तर पर अल्लाह को प्यारा हो गया।

रावी फ़रमाते हैं कि हज़रत तलहा ने बयान किया कि (उन तीनों के इंतिक़ाल के बाद एक दिन ख़्वाब में) मैंने देखा कि वह तीनों जन्नत में हैं, और मैंने देखा कि जो शख़्स अपने बिस्तर पर अल्लाह को प्यारा हुआ था, वह तो सबसे आगे है और जो शख़्स दूसरे लश्कर के साथ जाकर शहीद हुआ था वह उसके पीछे और उसके बिल्कुल क़रीब है और उन तीनों में से जो पहले लश्कर के साथ जाकर शहीद हुआ था सबसे आख़िर में है चुनांचे (उन तीनों को इस तरह एक-दूसरे के आगे पीछे देखकर) मेरे दिल में शुबहा पैदा हो गया, चुनांचे मैंने नबी करीम (सल्ल०) से अपने इस ख़्वाब का ज़िक्र किया। हुज़ूर (सल्ल०) ने (वह ख़्वाब और उस पर मेरा शुबहा सुनकर) इरशाद फ़रमाया : "इसमें शक व शुबहा और इंकार की बाइस कौन-सी चीज़ है? (तुमने अपने ख़्वाब में तीनों को जिस तर्तीब के साथ देखा है वह बिल्कुल ठीक है) क्योंकि अल्लाह के नज़दीक उस मुसलमान से ज़्यादा अफ़ज़ल कोई नहीं है जिसने इस्लाम की हालत में ज़्यादा उम्र पाई और उसकी वजह से उसको खुदा की तस्बीह व तक्बीर और तहलील का ज़्यादा मौक़ा मिला।"

(मुस्लिम, अहमद)

खुदा की नाफ़रमानी से डरते रहो क्योंकि जो चीज़ खुदा के पास है उसको उसकी इताअत व खुशनूदी ही के ज़रिए पाया जा सकता है।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूले खुदा (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "लोगो! कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो तुमको जन्नत से क़रीब कर दे और दोज़ख़ से दूर कर दे, मगर उस (को इख़्तियार करने) का हुक्म मैंने तुम्हें दिया है और कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो तुमको दोज़ख़ से क़रीब कर दे और जन्नत से दूर कर दे, मगर उससे मैंने तुम्हें मना किया है और रूहुल अमीन और एक रिवायत में है कि रूहुल क़ुद्स(यानी हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम) ने मेरे दिल में यह बात डाली कि बिला शुबहा कोई शख़्स उस वक़्त तक नहीं मरता जब तक अपना रिज़्क़ पूरा नहीं

कर लेता, लिहाज़ा ग़ौर से सुनो! तुम ख़ुदा की नाफ़रमानी से डरते रहो और हुसूले मआश की सई व जिद्दोजुहद में नेक-रवी और एतिदाल इख़्तियार करो (ताकि तुम्हारा रिज़्क़ तुम तक जाइज़ व हलाल वसाइल व ज़राए से पहुंचे) और रिज़्क़ पहुंचने में ताख़ीर तुम्हें इस बात पर न उक्साए कि तुम गुनाहों के इरतिकाब के ज़रिए रिज़्क़ हासिल करने की कोशिश करने लगो क्योंकि जो चीज़ ख़ुदा के पास है उसको इताअत व ख़ुशनूदी ही के ज़रिए पाया जा सकता है।" (बग़वी)

अपने आपको एक के हवाले कर दो तो वह एक, एक-एक को हमारे हवाले कर देगा

हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि वह नबी करीम (सल्ल०) के साथ उस जिहाद में शरीक थे जो नज्द के इतराफ़ में हुआ था और जब रसूले ख़ुदा (सल्ल०) जिहाद से फ़ारिग़ हुए तो जाबिर (रज़ि०) भी आपके साथ ही वापस हुए। (इसी सफ़र के दौरान यह वाक़िया पेश आया कि एक दिन) सहाबा (रज़ि०) दोपहर के वक़्त एक ऐसे जंगल में पहुंचे जिसमें कीकर के दरख़्त ज़्यादा थे, चुनांचे रसूले ख़ुदा (सल्ल०) (सहाबा के साथ) वहीं उतर पड़े और तमाम लोग दरख़्तों के साये की तलाश में इधर-उधर फैल गए और रसूले ख़ुदा (सल्ल०) भी कीकर के एक बड़े दरख़्त के नीचे फ़रोकश हो गए और अपनी तलवार को उस दरख़्त की टहनी में लटका दिया। (हज़रत जाबिर (रज़ि०) फ़रमाते हैं) हम लोग सो चुके थे कि अचानक हमने सुना कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) हमें आवाज़ दे रहे हैं, चुनांचे हम लोग (अपनी-अपनी जगह से उठकर) आपके पास पहुंचे, तो देखा कि आपके पास एक देहाती काफ़िर मौजूद है। आँहज़रत (सल्ल०) ने (हमारे जमा होने पर) इरशाद फ़रमाया : "यह देहाती, उस वक़्त जब मैं सो रहा था, मुझ पर मेरी तलवार सूंत कर खड़ा हो गया और जब मेरी आँख खुली तो मैंने देखा कि मेरी नंगी

तलवार उसके हाथ में है। इसने मुझसे कहा : अब तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा? मैंने फ़ौरन जवाब दिया : मेरा ख़ुदा मुझे बचाएगा। हुज़ूर (सल्ल०) ने यह बात तीन मर्तबा कही और उस देहाती को कोई सज़ा नहीं दी, फिर आप बैठ गए।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

और इस रिवायत में जिसको अबू बक्र इसमाईली ने अपनी सहीह में नक़ल किया है यह अल्फ़ाज़ हैं कि उस देहाती ने (आँहज़रत (सल्ल०) पर तलवार सूँत कर) कहा : अब तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा? हुज़ूर (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह बचाएगा। (यह सुनते ही) देहाती के हाथ से तलवार गिर पड़ी। हुज़ूर (सल्ल०) ने तलवार को उठा लिया और फ़रमाया : (अगर मैं तुम्हें क़त्ल करना चाहूँ तो बताओ) तुम्हें कौन मुझसे चाएगा। देहाती ने जवाब दिया कि आप बेहतरीन (तलवार) पकड़ने वाले हो जाएँ (यानी आप मुझे माफ़ कर दें)। हुज़ूर (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : अच्छा इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और बिला शुबहा मैं अल्लाह का रसूल हूँ। देहाती ने कहा : मुसलमान तो नहीं होता अलबत्ता आपसे यह अहद ज़रूर करता हूँ कि मैं न ख़ुद आपसे लड़ूँगा और न उन लोगों का साथ दूँगा जो आपसे लड़ेंगे। बहरहाल आप (सल्ल०) ने उस देहाती को छोड़ दिया और जब वह देहाती अपनी क़ौम में पहुंचा तो कहने लगा कि मैं तुम्हारे दर्मियान एक ऐसे शख़्स के पास से आ रहा हूँ जो सबसे बेहतर इंसान है। (बुख़ारी)

बिलाशुबहा इंसान के दिल के लिए हर जंगल में एक शाख़ है

हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "बिला शुबहा इंसान के दिल के लिए हर जंगल में एक शाख़ है (यानी इंसान के दिल में रिज़्क़ के असबाब व ज़राए और उसके हुसूल के ताल्लुक़ से तरह-तरह की

फ़िक्रें और ग़म हैं) पस जिस शख़्स ने अपने दिल को उन शाख़ों की तरफ़ मुतवज्जह रखा (यानी उसने अपने दिल को उन तफ़क्कुरात और ग़मों में मशग़ूल व मुंहमिक रखा) तो अल्लाह तआला को कोई परवाह नहीं कि उसको किस जंग में हलाक करे, और जिस शख़्स ने अल्लाह तआला पर तवक्कुल और एतिमाद किया, तो अल्लाह तआला उसके लिए काफ़ी हो जाता है।" (इब्ने माजा)

रिज़्क बन्दे को तलाश करता है

हज़रत अबू-दरदा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "इसमें कोई शुबहा नहीं कि रिज़्क़ बन्दे को तलाश करा है, जिस तरह इंसान को उसकी मौत ढूँढती है।"
(अबू नुऐमा)

आख़िर ज़माने में ऐसे लोग पैदा होंगे जो दीन के नाम पर दुनिया के तलबगार होंगे। उनका अंजाम पढ़िये

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "आख़िर ज़माने में ऐसे लोग पैदा होंगे जो दीन के नाम पर दुनिया के तलबगार होंगे (यानी दीनी व उख़रवी आमाल के ज़रिए दुनिया कमाएंगे) और लोगों के सामने नर्मी ज़ाहिर करने के लिए दुंबों की खाल का लिबास पहनेंगे (ताकि लोग उन्हें आबिद व ज़ाहिद, दुनियावी नेमतों से बेपरवाह और आख़िरत के तलबकार समझकर उनके मुरीद व मोतक़िद हों) उनकी ज़बानें शक्र से ज़्यादा शीरीं होंगी लेकिन उनके दिल भेड़ियों के दिल की तरह (सख़्त) होंगे। अल्लाह तआला (ऐसे लोगों को तंबीह करने के लिए) फ़रमाता है : "क्या ये लोग मेरी तरफ़ से मोहलत दिए जाने की वजह से फ़रेब में मुब्तला हैं या ये लोग मेरी मुख़ालिफ़त पर कमरबस्ता हैं? पस मैं अपनी क़सम खाकर कहता हूँ कि यक़ीनन उन लोगों पर उन्हीं में से कुछ लोगों को फ़ितना और बला की शक्ल में मुसल्लत कर दूँगा जो बड़े-से-बड़े दानिशवर और अक़्लमन्द

शख़्स को भी आजिज़ व हैरान कर देंगे।" (तिर्मिज़ी)

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) नबी करीम (सल्ल०) से नक़ल करते हैं कि आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैंने एक ऐसी मख़्लूक़ पैदा की है जिसकी ज़बान शक्र से ज़्यादा शीरीं हैं और जिसके दिल ऐलवे से ज़्यादा तल्ख़ हैं। पस मैं अपनी क़सम खाकर कहता हूँ कि मैं यक़ीनन उनपर ऐसी बलाएँ नाज़िल करूँगा जो बड़े-से-बड़े दानिशवर व अक़्लमन्द शख़्स को भी हैरान व आजिज़ बना देंगी। क्या वे लोग मुझे धोखा देते हैं या मुझपर जुर्रत व दिलेरी दिखाते हैं?" (तिर्मिज़ी)

आख़िर ज़माने में ऐसी जमाअतें पैदा होंगी जो ज़ाहिर में तो दोस्त होंगी मगर बातिन में दुश्मन होंगी

हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "आख़िर ज़माने में ऐसी जमाअतें पैदा होंगी जो ज़ाहिर में तो दोस्त होंगी मगर बातिन में दुश्मन होंगी।" अर्ज़ किया गया : "या रसूलल्लाह! ऐसा क्योंकर और किस सबब से होगा?" हुज़ूर (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "ऐसा इस वजह से होगा कि उनमें से बाज़ बाज़ से ग़र्ज़ व लालच रखेंगे और बाज़ बाज़ से ख़ौफ़ज़दा होंगे।" (अहमद)

शिर्क ख़फ़ी मसीह दज्जाल से भी ज़्यादा ख़तरनाक है

हज़रत अबू-सईद (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि (एक दिन) हम लोग आपस में मसीह दज्जाल का ज़िक्र कर रहे थे कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) आकर हमारे दर्मियान तशरीफ़ फ़रमा हो गए। (फिर हमारी बातचीत सुनकर) फ़रमाने लगे कि "क्या मैं तुम्हें उस चीज़ के बारे में न बताऊँ जो मेरे नज़दीक तुम्हारे हक़ में मसीह दज्जाल से भी ज़्यादा ख़तरनाक है?" हमने अर्ज़ किया : "हाँ, या रसूलल्लाह!" आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "वह चीज़ शिर्क ख़फ़ी है।

(और शिर्क ख़फ़ी यह है कि जैसे) एक आदमी नमाज़ के लिए खड़ा होता है और नमाज़ पढ़ता है और अपनी नमाज़ में ज़्यादती करता है, महज़ इसलिए कि कोई शख़्स उसको नमाज़ पढ़ते देख रहा है।"

(इब्ने माजा)

नौ बातों का हुक्म

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे रब ने मुझको नौ बातों का हुक्म दिया है :

(1) ज़ाहिर और पोशीदा हर हालत में अल्लाह से डरने का।

(2) गुस्सा और नाराज़गी की हालत में रास्त व दुरुस्त बात कहने का।

(3) ग़रीबी और मालदारी की हालत में मयानारवी इख़्तियार करने का।

(4) और जो मेरे साथ बदसुलूकी करे उसके साथ मैं नेक सुलूक करूँ।

(5) जो मुझे महरूम रखे, उसको मैं दाद व दहश से नवाज़ूँ।

(6) और जो शख़्स मुझपर ज़ुल्म करे उससे दरगुज़र करूँ।

(7) और मेरी ख़ामोशी फ़िक्र हो।

(8) मेरा बोलना ज़िक्र हो।

(9) और मेरा देखना इबरत हो, और मेरे रब ने मुझे यह भी हुक्म दिया है कि मैं नेकी की तल्क़ीन करता रहूँ। (रज़ीन)

क़ुर्बे कियामत शर व फ़साद करनेवाला अक़्लमन्दशुमार होगा

हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "क़ियामत उस वक़्त तक न आएगी यहाँ तक कि दुनिया में सबसे बड़ा इक़बालमन्द वह शख़्स होगा जो कमीना और अहमक़ है और कमीना का बेटा है।" (तिर्मिज़ी, बैहक़ी)

कौन-से गुनाह पर कौन-सा अज़ाब आता है

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया : "जब कोई क़ौम माले ग़नीमत में ख़ियानत करने लगती है। तो अल्लाह तआला उसके दिलों में दुश्मन का रौब व ख़ौफ़ पैदा कर देता है। जिस क़ौम में ज़िनाकारी फैल जाती है उसमें अमवात की ज़्यादती हो जाती है। जो क़ौम नाप-तौल में कमी करती है उसका रिज़्क़ उठा लिया जाता है (यानी बरकत ख़त्म कर दी जाती है या उस क़ौम को हलाल रिज़्क़ से महरूम कर दिया जाता है)।

जो क़ौम नाहक़ अहकाम जारी करने लगती है, उनके दर्मियान ख़ूनरेज़ी फैल जाती है, और जो क़ौम अपने अहद व पैमान तोड़ देती है, अल्लाह तआला उसपर उसके दुश्मन को मुसल्लत कर देता है।" (मालिक)

यहूदियों का दरख़्त कौन-सा है?

हज़रत अबू-हुरैरह (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया : "क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी जब तक मुसलमान यहूदियों से न लड़ेंगे, चुनांचे (उस लड़ाई में) मुसलमान यहूदियों को बहुत क़त्ल करेंगे, यहाँ तक कि यहूदी पत्थर और दरख़्त के पीछे छिपता फिरेगा और दरख़्त यह कहेगा : ऐ मुसलमान! ऐ ख़ुदा के बन्दे! इधर आ, मेरे पीछे यहूदी छिपा बैठा है उसको मार डाल। मगर ग़रक़द का दरख़्त (ऐसा न कहेगा) क्योंकि वह यहूदियों का दरख़्त है।" (मुस्लिम)

काबा का ख़ज़ाना एक हब्शी निकालेगा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि०) नबी करीम (सल्ल०) से रिवायत करे हैं कि आपने इरशाद फ़रमाया : "तुम हब्शियों को उनके हाल पर छोड़ दो और उनसे किसी क़िस्म का तआरुज़ न करो तावक़्ते कि वे तुमसे कुछ न कहें और तुमसे तआरुज़ न करें

और इसमें कोई शक नहीं कि काबा का ख़ज़ाना एक हब्शी ही निकालेगा जिसकी दोनों पंडलियाँ छोटी-छोटी होंगी।" (अबू दाऊद)

सबसे पहले ख़त्म होनेवाली मख़्लूक़ टिड्डी है

हज़रत जाबिर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) ने जिस साल वफ़ात पाई उस साल टिड्डियाँ गुम हो गईं। हज़रत उमर (रज़ि०) टिड्डियों के गुम होने की वजह से सख़्त ग़मगीन और मुतफ़क्किर हुए (कि कहीं टिड्डियों का मुकम्मल ख़ातिमा तो नहीं हो गया) फिर उन्होंने एक सवार यमन की तरफ़, एक सवार ईराक़ की तरफ़ और एक शाम की तरफ़ भेजा ताकि वह लोगों से दरयाफ़्त करें कि आया किसी शख़्स ने कहीं कुछ टिड्डियाँ देखी हैं। चुनांचे जिस सवार को यमन भेजा गया था वह एक मुट्ठी टिड्डियाँ लेकर हज़रत उमर (रज़ि०) के पास आया और उनके सामने वे टिड्डियाँ डाल दीं। हज़रत उमर (रज़ि०) ने टिड्डियाँ देखीं तो (ख़ुशी से) अल्लाहु अकबर का नारा बुलन्द किया, फिर फ़रमाया : "(मैं टिड्डियों के मुकम्मल ख़ातिमे से इसलिए मुतफ़क्किर और परेशान हो गया था कि) मैंने रसूले ख़ुदा (सल्ल०) को यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना है :

"ख़ुदावंद बुज़ुर्ग व बरतर ने हैवानात की हज़ार क़िस्में पैदा की हैं। उनमें छः सौ (600) दरिया में हैं और चार सौ (400) जंगल में हैं, और जब क़ियामत आने को होगी तो उनमें से सबसे पहले टिड्डियाँ हलाक होंगी, फिर जब टिड्डियाँ हलाक होंगी तो हैवानात की दूसरी क़िस्में भी इस तरह पेदरपे हलाक होना शुरू हो जाएंगी, जिस तरह मोतियों की लड़ी टूटने पर मोती पेदरपे गिरने लगते हैं। (बैहक़ी)

रकअत छूटने की चार शक्लें और उनके पूरा करने के तरीक़े

सवाल : अगर एक रकअत छोटी हो तो उसको किस तरह पूरा करें?

जवाब : अगर आपकी एक रकअत छूटी हो तो इस तरह पूरी करें कि इमाम के साथ आप सलाम न फेरें। जब इमाम दोनों तरफ़ सलाम फेर चुके तो आप खड़े हो जाएँ। याद रखें इमाम के एक तरफ़ सलाम फेरने के बाद मुक़तदी का खड़ा होना ठीक नहीं क्योंकि मुमकिन है कि इमाम सज्दा सह्व का सलाम फेर रहा हो। आपकी जो रकअत छूटी है वह पहली रकअत थी। आप उसको पहली रकअत की तरह पढ़ें। यानी पहले सना (*सुब्हानकल्लाहुम-म*) पढ़ें। इमाम के पीछे तो आप सूरह फ़ातिहा वग़ैरह नहीं पढ़ते लेकिन छूटी हुई रकअत पूरी करते वक़्त सूरह फ़ातिहा (*अलहम्दु*) और उसके साथ कोई सूरह या क़ुरआन की तीन छोटी या एक बड़ी आयत पढ़ें। बाक़ी नमाज़ आम नमाज़ की तरह पूरी करें।

सवाल : अगर दो रकअतें छूट गईं तो किस तरह पूरी करें?

जवाब : उनको पूरा करने का तरीक़ा बहुत आसान है। बस आम नमाज़ों की तरह आपको दो रकअत पढ़नी हैं, लेकिन यह रकअतें आप तंहा नमाज़ की तरह पढ़ेंगे यानी आप पहली रकअत में सना, अलहम्दु वग़ैरह पढ़ेंगे और दूसरी रकअत में अलहम्दु और सूरह पढ़ेंगे। अगर ज़ुह्र, अस्र और इशा की नमाज़ है, तो आपने जो दो रकअतें इमाम के साथ पढ़ी हैं वह तीसरी और चौथी रकअतें थीं, अब आपको पहली और दूसरी रकअत पढ़नी है। बहुत-से लोग इमाम के साथ मिलनेवाली आख़िरी दो रकअतों को अपनी पहली दो रकअतें समझने की ग़लती करते हैं और इस वजह से छूटी हुई रकअतों को पूरा करते वक़्त उनमें सूरह नहीं मिलाते जिससे उनकी नमाज़ नहीं होती।

सवाल : अगर तीन रकअतें छूट गई हों, तो किस तरह पूरी करें?

जवाब : तीन रकअतें छूटने की सूरत में उनको पूरा करते वक़्त आम तौर पर लोग ग़लतियाँ करते हैं, लिहाज़ा उसको अहमियत से समझने की कोशिश करें। तीन रकअतें छूटने की सूरत में आप पहले छूटी हुई पहली रकअत पढ़ेंगे यानी सलाम फेरने के

बाद अल्लाहु अकबर कहते हुए आप खड़े हो जाएंगे और सबसे पहले सना पढ़ेंगे, फिर तअव्वुज़ (अऊज़ुबिल्लाह) और तस्मिया (बिस्मिल्लाह) के बाद सूरह फ़ातिहा (अलहम्दु शरीफ़) और उसके साथ कोई सूरह पढ़ेंगे और एक रकअत पूरी करके क़ायदा में बैठेंगे और सिर्फ़ अत्तहिय्यात वाली दुआ पढ़कर खड़े हो जाएंगे। अब आप अपनी छूटी हुई दूसरी कअत पढ़ेंगे यानी उसमें अलहम्दु के साथ सूरह मिलाएंगे। उस रकअत को पूरी करके आप अपनी तीसरी रकअत पढ़ेंगे जिसमें सिर्फ़ अल्हम्दु पढ़ी जाएगी। (इमाम के साथ आपको जो रकअत मिली थी वह चौथी रकअत थी) लिहाज़ा उस तीसरी रकअत को पूरा करने पर आपकी चारों रकअत मुकम्मल हो जाएंगी, अब आप क़ायदा अख़ीरा में बैठेंगे जिसमें अत्तहिय्यात के साथ आप दोनों दुरूद शरीफ़ (अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्मदिन और अल्लाहुम-मा बारिक अला मुहम्मदिन) और दुआ (अल्लाहुम-म इन्नी ज़ुलमतु नफ़्सी) पढ़कर सलाम फेरेंगे, लीजिए आपकी नमाज़ मुकम्मल हो गई।

सवाल : अगर चार रकअतें छूट गई हों तो किस तरह पूरी करें?

जवाब : चारों रकअतें छूटने की सूरत में आप उनको चार रकअत की तंहा फ़र्ज़ नमाज़ की तरह पढ़कर पूरी करें यानी पहली रकअत में सना, सूरह फ़ातिहा और कोई सूरह पढ़ेंगे, दूसरी में सूरह फ़ातिहा व सूरह और तीसरी और चौथी में सिर्फ़ सूरह फ़ातिहा पढ़ेंगे।

सवानेह हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी (रह०)

वतन, विलादत और बचपन का ज़माना

आपका वतन पालनपुर से पाँच किलो मीटर गाँव "गड्डामन" है। आपके वालिद कारोबार की ग़र्ज़ से मुम्बई में रहते थे, नाम वज़ीरुद्दीन था। आपकी पैदाइश मुम्बई में 15 सितम्बर, 1929 ई० इतवार का दिन गुज़रकर रात 12 बजे यानी पीर की रात में हुई और नाम मुहम्मद उमर रखा गया। आपने सात साल के बाद हंफ़िया स्कूल मुम्बई में दाख़िल लिया। उसके एक साल के बाद आपके वालिद वज़ीरुद्दीन बिन नसीरुद्दीन खरोडिया का इंतिक़ाल हो गया और आप यतीम हो गए। उस वक़्त आपकी उम्र आठ साल की थी। आपके घरेलू हालात तंगी-सी तुरशी से गुज़र रहे थे। मगर जब बारी तआला किसी को नवाज़ना चाहता है, तो उसके असबाब मुहैया फ़रमा देते हैं। आपकी तर्बियत का सबबे क़वी जरिया आपकी वालिदा थीं। आपके मुहल्ले में एक मरयम ख़ाला रहती थीं। वह भी पारसा थीं और मिश्कात शरीफ़ तक तालीम ली हुई थीं। मौलाना की वालिदा मरयम ख़ाला की सोहबत में रहतीं और उनसे दीन व ईमान की बातों को सुना करतीं जिससे बदर्जा अतम फ़िक्र आख़िरत और ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा हो गया था। उसी फ़िक्र आख़िरत और ख़ौफ़े ख़ुदा से अपने बेटे को आरास्ता करने की ताहीन हयात कोशिश करती रहें। आप फ़रमाते हैं कि वालिदा अगरचे पढ़ी हुई न थीं मगर मेरे बारे में उनकी तमन्ना थी कि मैं आलिम बनूँ। और फ़रमाते कि वालिदा को क़ुरआन तो मैंने पढ़ाया मगर मुझे क़ुरआन पर वालिदा डाला। हर दिन दीन व ईमान की कोई न कोई बात

ज़ेहन-नशीन करातीं। बचपन ही में अंबिया अलैहिस्सलाम के क़िस्से जो क़ुरआन पाक में हैं वालिदा सुनाया करतीं और क़ियामत की हौलनाकी से डरातीं। एक मर्तबा वालिदा ने फ़रमाया : क़ब्र में दो फ़रिश्ते आएंगे और तीन सवालात करेंगे। तीन सवालात भी बताए और उसके जवाब भी। फिर दूसरे मौक़े पर क़ब्र के अज़ाब से डराना शुरू किया, तो अपने वालिदा से फ़रमाया : मुझे फ़रिश्तों के सवालात और जवाबात याद हो गए हैं तो जवाब में वालिदा ने फ़रमाया : क़ब्र में चमड़े की ज़बान काम न देगी, वहाँ अमल की ज़बान जवाब देगी, पस तुम अमल करो और हराम क्या है और हलाल क्या है? मुझे भी बताओ चूंकि मैं तो अनपढ़ हूँ और तुम अब पढ़ने लगे हो। और वालिदा फ़रमातीं : बेटा! ग़ीबत करना चाहो तो मेरी कर लिया करना कि बात घर की घर में रहे, तेरी नेकियाँ मुझको मिलें। आप फ़रमाते कि मंशा ग़ीबत से डराना और बचाना था। इसलिए कि आदमी बड़ा भोला-भोला है, दुश्मन की ग़ीबत करके उसको अपनी नेकियाँ दे देता है। और वालिदा फ़रमातीं : सदक़ा से बला दूर होती है और देनेवाला हाथ हमेशा ऊपर रहता है। आप बचपन में जब वालिदा से दीन की बात सुनते तो सलीमुल-फ़ितरत होने की बिना पर पूरा तास्सुर लेते थे। एक मर्तबा का वाक़िया है, आप खुद बयान फ़रमाते हैं : मेरी वालिदा ने क़ियामत का मंज़र खींचा कि आसमान टूटेगा और ज़मीन हिलेगी वग़ैरा-वग़ैरा। रात में मैं फ़र्श पर सोया था और छोटा भाई चारपाई पर, ख़्वाब में मैंने क़ियामत का मंज़र देखना शुरू किया। इत्तिफ़ाक़ से छोटा भाई चारपाई से मुझ पर गिरा। मैंने चिल्लाना शुरू कर दिया कि क़ियामत आ गई और हिसाब देना पड़ेगा। वालिदा ने चिराग़ जलाया और फ़रमाने लगीं कि उमर तुम क्यों रोते हो, छोटा भाई ही तो गिरा है? आप आँखें बन्द किए रोते हुए कहते जाते क़ियामत आ गई, गोया बचपन ही से ख़ौफ़े खुदा और ख़ौफ़े क़ियामत आपके रग व रेशे में जागुज़ीं हो गया था।

आपकी वालिदा ने एक मर्तबा मरयम ख़ाला से एक हदीस सुनी जिसमें फ़रमाया गया है : जो क़ुरआन सीख ले तो उसके वालिदैन को ताज पहनाया जाएगा, जो नूर का होगा। हदीस सुनकर आपकी वालिदा रोयीं और फ़रमाई : बेटा! तू तो क़ुरआन पढ़ ले और बुख़ारी शरीफ़ पढ़ ले। वालिदा से फ़रमाया : अम्माँ स्कूल की तालीम का क्या होगा? अम्माँ ने कहा कि कुछ भी हो, बस तू इल्म-इलाही हासिल कर ले।

स्कूल की तातीलात अपने वतन गठामन में

बहरहाल आपकी वालिदा स्कूल के ज़माने में जो बचपन का ज़माना है आपकी तर्बियत फ़रमाती रहीं और पाँच साल स्कूल के पूरे फ़रमाकर 1942 ई० को तातीलात गुज़ारने के लिए आप वालिदा के हमराह अपने वतन गठामन में आए। उन्हीं दिनों में मौलाना अब्दुल हफ़ीज़ साहब जलालपुरी (यू.पी.) मुदर्रिस होकर गठामन में आए। निहायत मुख़्लिस और ज़ाहिद थे। जब मदरसे में मौलाना की वालिदा ने आपको भेजना शुरू किया तो उस्ताद ने आपकी ज़हानत व फ़तानत देखकर आपके साथ ख़ुसूसी मेहनत की और एक ही साल में पचास किताबें पढ़ डालीं। जब सालाना इम्तहान का मौक़ा आया तो पालनपुर से हज़रत मौलाना नज़ीर अहमद साहब (रह०) इम्तेहान के लिए तशरीफ़ लाए। जब आपकी पढ़ी हुई किताबों का इम्तेहान लिया, तो आप अच्छे नम्बरात से कामयाब हुए। उस पर मौलाना नज़ीर साहब (रह०) ने मुताज्जुब होकर मालूम किया कि किसका लड़का है? वालिद चूंकि ग़ैर मारूफ़ थे। तो आपके दादा हाजी नसीरुद्दीन खरोडिया का नाम लिया गया कि उनका पोता है, तो आप फड़क उठे, और यह फड़क क्यों न हो। हाजी नसीरुद्दीन खरोडिया वह हैं जब मौलाना मुहम्मद नज़ीर साहब (रह०) ने इलाक़े में इस्लाह का काम जारी फ़रमाया, तो उन ख़तरनाक हालात में हाजी नसीरुद्दीन गठामन के उन चार हज़रात में से थे, जिन्होंने दीन व ईमान की सही राह को सबसे पहले अपनाया था और मौलाना

मुहम्मद नज़ीर साहब (रह०) की मुआविनत में दस्त रास्त बने रहे थे। मौलाना नज़ीर साहब (रह०) को हाजी नसीरुद्दीन साहब की क़ुरबानी याद आ गई और उस क़ुरबानी का समरा अपनी आँखों से देख रहे थे। ज़ुहद व इख़्लास से मुत्तसिफ़ मौलाना अब्दुल हफ़ीज़ साहब जिनकी तंख़्वाह उस वक़्त बीस रुपये थी, अपने हमराह अपनी दो छोटी औलाद भी लाए थे। हर जुमा को पालनपुर पैदल (पाँच किलोमीटर दूर) जाते और ज़रूरी सामान के साथ छः अदद मूली भी लाते, जो उनके हफ़्ते भर के सालन का काम देतीं। छः मूली अलमारी में क़िफ़्ल लगाकर रख देते और हर रोज़ एक मूली का सालन बनाते। इस तरह पूरा हफ़्ता निकालते। आपके उस्ताद एक मर्तबा ख़ारिज औक़ात में मस्जिद में हौज़ के किनारे बैठकर हिदायतुल-ख़ू का सबक़ पढ़ा रहे थे कि उस्ताद ज़ादा अब्दुल हसीब जो छोटा बच्चा था, आपके पास आया और कहने लगा भूख लगी है, अब्बा घर जल्दी चलो नहीं तो सब सींगली खा जावेंगे यानी मूली सब की सब खा जावेंगे। उस्ताद बीस रुपये लेकर न सिर्फ़ यह कि मदरसे के औक़ात के पाबन्द थे बल्कि ख़ारिज औक़ात में भी पढ़ाया करते थे, शागिर्द के पढ़ने का शौक़ व ज़ौक़ मुख़्लिस उस्ताद को पढ़ाने पर मजबूर कर देता है।

हज़रत वालिद साहब फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मेरी वालिदा ने हज़रत उस्ताद (रह०) के पास पाँच रुपये बतौर हदिया भेजे, तो रोने लगे और वापस कर दिया और फ़रमाया कि मैं मुहम्मद उमर अपनी आख़िरत के लिए मेहनत कर रहा हूं। दर्मियान साल में मौलाना अब्दुल हफ़ीज़ साहब अपने वतन जाने लगे तो दादी साहिबा को पैग़ाम भेजा कि मैं आपके लड़के को अपने हमराने अपने वतन ले जाना चाहता हूँ ताकि उसकी पढ़ाई का नुक़सान न हो। वालिदा की तमन्ना आलिम बनाने की थी ही। लिहाज़ा उस तंगी-तुर्शी के ज़माने में पचास रुपये बतौर क़र्ज़ लेकर वालिद साहब को इनायत किए और आप अपने उस्ताद के हमराह रवाना हो गए।

दुनिया क़दमों में आएगी

उन्हीं दिनों में मुम्बई से रिश्तेदार आपकी वालिदा के पास पहुंचकर ज़ेहनसाज़ी कर रहे थे कि स्कूल की तालीम में उसका नतीजा अच्छा है। 26 रानी छाप सिक्का इनाम में मिल चुका है, फिर यह मदरसे की तालीम पढ़ाकर मौलवी-मुल्ला बनाकर क्या करोगी? आपकी वालिदा ने फ़रमाया कि तुम लोग दुनिया-दुनिया किया करते हो, दुनिया तो उसके क़दमों में आएगी, इंशा-अल्लाह। अलग़र्ज़ वालिद साहब अपने उस्ताद के हमराह उनके वतन रवाना हो गए और उस्ताद ने पाँच-छः महीने पढ़ाया और उसके बाद आपको पहली मर्तबा अक्टूबर 1944 ई० को दारुल उलूम देवबन्द में दाख़िल फ़रमाया। आपका इम्तिहाने दाख़िला शैख़ुजल अदब हज़रत मौलाना ऐज़ाज़ अली साहब (रह०) ने लिया और आपको मत्लूबा किताबें कंज़ुल दक़ाइक़ वग़ैरह मिल गईं। उन दिनों आपने इल्मे दीन की तहसील में ख़ूब मेहनत की यहाँ तक कि बाईस घंटे आप पढ़ते सिर्फ़ दो घंटे आराम करते, जिसका नतीजा यह हुआ कि आपकी सेहत मुतास्सिर हुई और आपको तपेदिक (टी.बी.) का मर्ज़ लाहिक़ हो गया। सालाना इम्तेहान से फ़राग़त के बाद आप मुम्बई के लिए वापस हुए। यह वापसी 1945 ई० में हुई। मुम्बई में कुछ मुद्दत के बाद एक चिल्ले की जमाअत में मर्कज़ दिल्ली पहुंचे। उस वक़्त हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब (रह०) ने आपको भाँप लिया और आपको मशवरा दिया कि मुम्बई में रहकर तालीम पूरी करो। आप इस सफ़र में हज़रत जी (रह०) से बैअत हो गए। आपने मुम्बई में अपने कुछ कारोबारी शग़ल के साथ मदरसे में तालीम जारी रखी। हर मौक़े पर आपके लिए बारी तआला ने कोई न कोई सबब पैदा कर दिया, जो बर वक़्त आपकी रहबर करता। वालिद साहब इब्तिदा ही से अपने बड़ों की बात ध्यान में लेकर अमल पैरा होने के ख़ूगर थे और उसी में आपकी तरक़्क़ी का राज़ मुज़मिर था। बारी तआला की तरफ़ से हर आन असबाब व वसाइल

जार वसारी हैं मगर हर आदमी जिद्दोजहद और तौफ़ीक़ के बक़द्र मुस्तफ़ीद होता है।

मुम्बई में दीनी तालीम और निकाह

आपका निकाह 3 मई 1946 ई० को हुआ और रुख़्सती 5 मई 1950 ई० जुमा को अमल में आई। बहरहाल हज़रत जी मौलाना यूसुफ़ साहब (रह०) के फ़रमाने से आप ने मुम्बई में रहते हुए दर्सियात की तालीम और मुताला जारी रखा। आपने जलालैन शरीफ़ के साल में बयानुल क़ुरआन का मुकम्मल मुताला कर लिया। मंगली मन्दूरी मस्जिद में 1952 ई० में इमामत इख़्तियार फ़रमाई। उन दिनों आप हफ़्ते में मुसलसल छः दिन पढ़ने में मशग़ूल रहते और एक दिन घर जाते। वालिदा को घर में दीन व ईमान की बातें सुनाते। उस वक़्त वालिदा फ़रमातीं : "तुम्हारी बात आज मैं अकेली सुन रही हूं, मगर एक वक़्त होगा कि तुमसे लाखों इंसान दीन व ईमान की बातें सुनेंगे।" आपकी वालिदा की दोनों पेशीनगोइयाँ बारी तआला ने आपके हक़ में मन व अन पूरी करके दिखा दीं, पहली पेशीनगोई यह थी कि दुनिया तेरे क़दमों में आएगी और दूसरी यह कि दीन व ईमान की बात तुझसे लाखों इंसान सुनेंगे। हज़रत वालिद साहब इस सिलसिले में फ़रमाया करते कि जो भी दीन व ईमान की मेहनत इख़्लास और इस्तख़्लास से करेगा, खुदा उसको दुनिया पैर पड़ी देंगे और जो दीन व ईमान की मेहनत न करेगा, उसको भी दुनिया मिलेगी मगर सर चढ़ी मिलेगी (यह अल्फ़ाज़ बज़ाते खुद वालिद साहब के हैं) और आपकी पूरी ज़िंदगी उसकी शाहिद अदुल है।

आपका तालीमी सिलसिला जारी था जबकि आपके घरेलू हालात परेशानकुन थे, मगर आप अज़्म व हिम्मत के पहाड़ बने हुए हमातन पढ़ने में मुंहमिक रहे। आपने "मिश्कात" के साल में "मज़ाहिरे हक़" का मुकम्मल मुताला किया। गाहे गाहे तब्लीग़ी काम में अमलन शरीक होकर चिल्ले वग़ैरा भी लगाते।

चार माह के लिए तब्लीग़ी जमाअत में

इसी असना मर्कज़ दिल्ली से एक जमाअत जिसके अमीर क़ारी अब्दुर्रशीद ख़ुरजवी (रह०) थे, मुम्बई पहुंची थी। उसने आपकी तश्कील चार माह की की। आप चार माह के लिए तैयार हो गए और जमाअत के हमराह अपने बिस्तर के साथ स्टेशन पहुंचे। आपके रिश्तेदारों को मालूम हुआ, तो वह भी स्टेशन पहुंच गए और वालिद साहब के घरेलू हालात की तंग तुरश बताकर जमाअत में जाने का इरादा मुल्तवी करने पर मजबूर किया मगर उस जमाअत के एक साथी ने (मुंशी अनीस, इदारा इशाअते दीनयात) वालिद साहब को एक तरफ़ ले जाकर फ़रमाया कि नबियों वाला काम करोगे, तो ख़ुदा तुम्हें ज़ाया नहीं करेगा बल्कि ख़ुदा तुमको भी चमकाएगा और तुम्हारी क़ौम को भी चमकाएगा :

मुतलक़ आँ आवाज़ हक़ अज़ शहबूद
गरचे अज़ हल्क़ूम अब्दुल्लाह बूद

तर्जुमा : वह मुतलक़ आवाज़ शाह हक़ीक़ी की होती है अगरचे अल्लाह के बन्दे के हलक़ से हो।

वालिद साहब ने बिल आख़िर अज़्म मुसम्मम कर लिया और बिस्तर लेकर जमाअत में हमराह रवाना हो गए। वालिद साहब फ़रमाते हैं कि मेरे यह चार महीने आज तक पूरे नहीं हुए और ख़ुदा करे पूरे न हों। बारी तआला ने आपकी यह दुआ भी क़बूल फ़रमा ली और ताहीन हयात इसी राह में मशग़ूल रहे यहाँ तक कि अल्लाह ही के रास्ते में वक़्त मौऊद आ पहुंचा।

बहरहाल यह जमाअत काम करते-करते जब मर्कज़ दिल्ली पहुंची, तो यहाँ आपके मुरब्बी और मोहसिन हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब (रह०) ने आपसे फ़रमाया : अब तो मुहम्मद उमर तालीम पूरी कर लो। चूंकि आपकी तालीम मिश्कात तक हुई थी और दौरे हदीस बाक़ी था। वालिद साहब जमाअत का वक़्त पूरा फ़रमाकर मुम्बई पहुंचे। आपकी उस साल नक़्ल व हरकत में बहुत-से

हवादिसात पेश आए यहाँ तक कि आप मक़रूज़ भी हो चुके थे। बाल बच्चों का भी सवाल था मगर फ़िक्र आख़िरत और उम्मत का दर्द पैदा हो गया था और तालीम को पूरा करना भी ज़रूरी समझते थे। चूंकि यही तमन्ना आपकी मुश्फ़िक़ा वालिदा की थी और यह तमन्ना आपके मुरब्बी हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब (रह०) की भी थी। आपकी वालिदा साहब फ़राश और चलते-फिरत, बीनाई व शनवाई से माज़ूर हो चुकी थीं। हर एतिबार से हालात शदीदा का सामना था। उसके बावजूद तालीम के लिए आपने सफ़र का इरादा फ़रमा लिया और वालिदा से इजाज़त ली। वालिदा ने फ़रमाया : बेटा! हमको छोड़कर जाओगे। फ़रमाया : अल्लाह के दीन को सीखने जा रहा हूँ। वालिदा ने फ़रमाया : जाओ बेटा। आपके सर पर शफ़क़त का हाथ फेरा और आप अल्लाह की ज़ात पर तवक्कुल करते हुए तक्मील के लिए देवबन्द रवाना हो गए।

दोबारा दारुल उलूम देवबन्द में दाखिला

मुम्बई से दिल्ली मर्कज़ की मस्जिद में पूरे रमज़ान का एतिकाफ़ करके आप दारुल उलूम देवबन्द में दूसरी मर्तबा 11 जून, 1955 ई० को दाख़िल हुए। दाख़िला इम्तहान में कामयाब हुए और मत्लूबा दर्जा (दौरे हदीस) मिल गया। उस वक़्त दारुल उलूम देवबन्द में यगाना रोज़गार असातज़ा मौजूद थे। खुसूसन शैखुल इस्लाम हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी नव्वरल्लाहु मरक़दहू आपके बुख़ारी शरीफ़ के उस्ताद थे। आप तालीम में हमातन मशग़ूल हो गए मगर अपने मुरब्बी हज़रत जी मौना यूसुफ़ साहब (रह०) की नसीहत पेश नज़र रहती थी कि तुम्हें तालीम भी हासिल करना है और तब्लीग़ भी करना है। तब्लीग़ में इस क़द्र मुंहमिक न होना कि तालीम का नुक़सान हो और तालीम में भी इस क़द्र मशग़ूल न होना कि तब्लीग़ का नुक़सान हो। आपने इस नसीहत के पेश नज़र अपने वक़्त की तर्तीब इस तरह जमाई कि हर हफ़्ते में चार घंटे तब्लीग़ के लिए फ़ारिग़ करते और हफ़्ते भर के काम की तर्तीब उन चार घंटों में

जमा देते। इस तरह आपके दोनों मशग़ले जारी रहते। उस वक़्त दारुल उलूम क्या, पूरे मुल्क में तब्लीग़ का उमूमी माहौल न था। इसलिए बाज़ तलबा आपका मज़ाक़ उड़ाते थे। मगर आप (लौम-त लाइम) की परवाह किए बग़ैर तालीमी और तब्लीग़ी दोनों काम अंजाम देते रहे। तलबा का उमूमी ज़ेहन यह था कि तब्लीग़ में, ग़बी लगते हैं या ज़हीन लगकर ग़बी बन जाते है। जब सहमाही इम्तहान के नताइज बरामद हुए, तो आप एज़ाज़ी नम्बरात के साथ दौरे हदीस शरीफ़ में अव्वल नम्बर पर कामयाब हुए। तलबा उसके बाद आपके मोतक़िद हो गए। आपने उससे ख़ूब फ़ायदा उठाया और तब्लीग़ का काम ख़ूब लिया।

वालिदा की वफ़ात

जब आपकी वालिदा मर्ज़ुल वफ़ात में मुब्तला हुईं, तो रिश्तेदारों ने कहा कि देवबन्द से मुहम्मद उमर को भी बुला लें, तो फ़रमाने लगी : नहीं! नहीं! उसे न बुलाओ। दीन के काम में गया हुआ है। मैं तो ख़ाली हाथ हूं ही, वही ज़रिया आख़िरत बनेगा और अगर अल्लाह मुझसे पूछेगा कि क्या लाई हो? तो मैं कहूंगी एक चहेते बेटे को तेरे रास्ते में छोड़ आई हूं जिसे मैंने तेरे लिए जुदा किया है। जब इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब हुआ तो वालिदा ने फ़रमाया : मुझे ख़ुश्बू आ रही है हालाँकि नाक-कान मुद्दत से माऊफ़ हो चुके थे। उसके बाद वालिदा ने सलाम किया और मुस्कुराईं फिर बेहोश रहीं। होश आने पर घर वालों ने मालूम किया कि अम्मा! आपने किसको सलाम किया था और क्यों मुस्कुराईं थीं? तो फ़रमाया कि मैंने अपने बेटे मुहम्मद उमर को दो फ़रिश्तों के दर्मियान देखा, तो उसने सलाम किया और बेटे को देखकर मुस्कुराई। उसके बाद यह आबिदा, ज़ाहिदा ख़ातून दुनिया की तंगी तुर्शी बर्दाश्त फ़रमाकर अपने प्यारे बेटे को फ़िक्र आख़िरत में संवार कर अल्लाह के हवाले करके अल्लाह को प्यारी हो गई। رحمها الله رحمةً واسعة

रहलत का दिन 14 दिसम्बर 1955 ई० है। आपने अपनी वालिदा की ख़्वाब में ज़ियारत की। आपने मालूम किया कि अम्मा! आप कहाँ हो? तो अरबी में जवाब दिया (*अना फ़िल जन्नह*) मैं जन्नत में हूं और फ़रमाने लगीं : तुमने मुझे हज नहीं कराया। उसके बाद आपने अपनी वालिदा की तरफ़ से हज करवाया और ईसाले सवाब किया।

बाज़ औरतें पूरे घराने में दीन लाने का सबब बनती हैं

आप फ़रमाते हैं कि बचपन में मेरी वालिदा हर वक़्त मुझे साथ रखतीं और रात में भी जुदा न करतीं और दीन व ईमान की बातों को ख़ूब सूनातीं और लम्बी नमाज़ पढ़ातीं और लम्बी दुआ करतीं और ख़ुदा का मालिक व ख़ालिक़ होना समझातीं। एक मर्तबा मोहल्ले में एक घर फ़रोख़्त हुआ, तो वालिदा ने मुझसे मालूम किया कि किसका घर फ़रोख़ति हुआ है? जवाब में फ़रमाया कि उस घर का मालिक पारसी था। मेरे मुंह से मालिक का लफ़्ज़ सुनकर वालिदा नाराज़ हो गईं कि मालिक तो ख़ुदा है, तुमने पारसी को मालिक क्यों कहाँ बिल आख़िर मरयम ख़ाला की सिफ़ारिश व गुज़ारिश से मेरी वालिदा राज़ी हुईं। यह था आपकी वालिदा का ज़माना तफ़ूलियत में आंज़म तर्बियत जो हमारे लिए बाइस इबरत है:

जिसे तू ग़म समझता है ख़ज़ाना है मसर्रत का
जिसे तू चश्मतर कहता है सरचश्मा है रहमत का

वक़्त की क़द्र व क़ीमत

आपके तालिबे इल्मी का ज़माना भी निहायत तंगी तुर्शी से गुज़र रहा था। चिराग़ जलाने के लिए तेल न होता, तो उस ज़माने में सड़क की लालटेन की रौशनी में मुताला करते। अपना कोई वक़्त ज़ाया न होने देते यहाँ तक कि रिश्तेदार मदरसे में आते, तो आपके मुँह से इन्ना लिल्लाहि निकल जाता कि अब वक़्त ज़ाया होगा। जब

कोई साथी मदरसा दिखाने वाला मिल जाता तो ख़ुशी होती कि ज़ियाअ वक़्त से हिफ़ाज़त हो गई इस क़द्र व क़ीमत की बिना पर शशमाही इम्तहान में भी एज़ाज़ी नम्बरात हासिल किए। मौलाना उसकी वजह बयान फ़रमाते थे कि पर्चों के जवाबात में हाशिये और शरूहात की बात को भी ख़ूब लिखता। उसके अलावा उन अहादीस के जवाबात में हज़रत जी मौलाना यूसुफ़ (रह०) से सुनी हुई इल्मी बातों को मौक़ा बमौक़ा जोड़ देता और ये बातें मुमतहिन के लिए नई चीज़ होतीं। इस तरह सालाना इम्तहान में आला नम्बरात के साथ नम्बर दोम पर दौरा हदीस में कामयाब हुए और 8 अप्रैल 1956 में फ़राग़त हासिल फ़रमाई।

लाखों इंसानों को दीन व ईमान की बात सुनाने की एक कामयाब मिसाल

हिन्दुस्तान और बेरूनी मुमालिक में होने वाले बड़े इज्तिमाआत में तक़रीबन आपका बयान ख़ास तौर पर तै होता और लाखों इंसान जमकर दीन व ईमान की बातें सुनते और आपकी दीन व ईमान की बातें कामिल इख़्लास और दर्द के साथ वलस्वला-अंगेज़ होतीं। हज़ारों इंसानों की ज़िंदगियाँ बन जातीं और हज़ारों फ़िस्क़ व फ़ुजूर वाले रास्ते से ताइब होते और हज़ारों मुर्दा दिलों को रूह का सामान मिल जाता और हज़ारों इंसान अपने जान व माल को अल्लाह के रास्ते में लगाने का अज़्म मुसम्मम करते और बड़ी तादाद में निकलते, तब्लीग़ी जिद्दोजहद के लिए बेरूनी मुमालिक में इक्यासी (81) मर्तबा तशरीफ़ ले गए और हज बैतुल्लाह के लिए बीस मर्तबा। आपकी यह नक़ल व हरमत मुख़्तलिफ़ मक़ामात के लिए और बयानात तक़रीबन चालीस साल तक पूरे आलमे इस्लाम में होते रहे। बाज़ मर्तब कई-कई लाख का मज्मा सुनने वाला होता। इस क़द्र बयानात और मक़ामात और सुनने वालों की तादाद तारीख़ में बहुत कम मिलती है कि एक शख़्स वाहिद ने बेशुमार इंसानों को दीन व ईमान की बात सुनाई और पहुंचाई हो।

ذَالِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ

यह असफ़ार और अनथक जिद्दोजुहद और उसके नतीजे में दीन की निस्बत पर इंसानों की नक़ल व हरकत किसी इंसान के बस में नहीं है जब तक कि ख़ुदा की मदद शामिले हाल न हो। यह आपकी सबसे बड़ी करामत थी जो बारी तआला ने आपके हाथों सादिर फ़रमाई और ख़ुदाई वादा है :

اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ

"जो भी अहयाए-दीन व ईमासन की मेहनत करेगा, ख़ुदा उसकी मदद करेगा।" मगर दर्द व इख़्लास के बक़द्र फ़ैज़याब होगा। आपकी ज़ात में उम्मत का बेपनाह दर्द, ख़ुदा की तरफ़ से वदीअत फ़रमाया गया था। दीन व ईमान की दावत के बग़ैर आपकी बेकरार तबीअत को क़रार न आता था। आप अक्सर व बेशतर बयानात में यह शेर तरन्नुम के साथ वालिहाना अंदाज़ में पढ़ते :

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इंसान को
वर्ना ताअत के लिए कुछ कम न थे कर्र व बियाँ

भूखों को खाना खिला देना और नंगों को कपड़ा पहना देना और किसी हाजतमन्द की हाजत को पूरा कर देना यह भी दर्दे दिल में दाख़िल है। मगर सबसे बढ़कर दर्दे दिल का अमल जो हो सकता है, वह यह है कि इंसानों को जहन्नम के रास्ते से हटाकर जन्नत के रास्ते पर लाया जाए और उनकी अबदुल आबाद की ज़िंदगी की फ़िक्र व कुढ़न पैदा की जाए, यही दर्द और फ़िक्र व कुढ़न अंबिया अलैहिस्सलाम दुनिया में लेकर मब्ऊस हुए थे और यही शेवा नाएबीन अंबिया का रहा है। यह दर्दे उम्मत आपमें फ़ज़ूंतर था जिसकी बिना पर पूरे आलमे इस्लाम में कई माज़ूरियों के साथ चलत फिरत करके पूरी उम्मत में दीन व ईमान के पैदा करने की जिद्दोजहद फ़रमाई और मरते दम तक इस जिद्दोजुहद में कमी गवारा न फ़रमाई।

इज्तिमाआत में आपके बयानात की नौइयत

आप बयान की इब्तिदा में खुत्बा मंसूबा पढ़ते। खुत्बा के शुरू होते ही मशग़ूल और मुंतशिर हज़रात मानूस आवाज़ सुनकर इज्तिमागाह की तरफ़ परवानावार दौड़ते हुए जमा हो जाते और बयान के ख़त्म तक अदब के साथ बैठे रहते। अमूमन आपके बयानात में क़ुरआनी क़िससे जिसमें खुदा की मानकर ज़िंदगी गुज़ारने वालों की कामयाबी और न मानने वालों की तबाही का ज़िक्र होता, और जन्नत और जहन्नम का ज़िक्र भी तफ़्सीली होता। जन्नत का ज़िक्र इस तरह फ़रमाते जैसे जन्नत पूरी आराइश व ज़ेबाइश के साथ आपके सामने मौजूद है। आप उसकी नेमतों को देखते हुए बयान फ़रमा रहे हैं। असनाए बयान में आयाते क़ुरआनिया अपने मख़्सूस ख़ूबसूरत इलहान के साथ तिलावत फ़रमाते, तो पूरे मज्मू पर एक कैफ़ का समा बन्ध जाता और ऐसा मालूम होता जैसा कि क़ुरआन दिल में उतरता जा रहा है। उसके बाद तौहीद व मारफ़त की बातों को महसूस मिसालों से समझाते और खुदा की क़ुदरत को वाशगाफ़ बयान करते। अलग़र्ज़ तमाम ख़ूबियों का जामे बयान होता, जिससे अवाम व ख़ास यकसाँ तौर पर मुस्तफ़ीद और महज़ूज़ होते और गाहे यह शेर भी पढ़ते :

दरफ़ैज़ मुहम्मद वाहे आए जिसका जी चाहे
न आए आतिश दोज़ख़ जाए जिसका जी चाहे

इज्तिमा और आपकी ज़ात लाज़िम व मल्ज़ूम थे। इज्तिमा का नाम आते ही आपकी ज़ात का तसव्वुर दिल व दिमाग़ में आ जाता था। मुल्क के किसी गोशे में बड़ा इज्तिमा होता, तो आपका बयान ज़रूर होता। बयान में हक़ाइक़ व मारफ़त की बड़ी बातें सीधी-सादी महसूस मिसालों से आम तौर पर लाकर बयान करते। सुनकर हर आदमी अपने अंदर रूहानी कैफ़ियत महसूस करता। एक नौ वारिद इस क़द्र ज़रूर मुतास्सिर होता कि वह कम से कम दावत के काम

से मुंसलिक और मानूस हो जाता। आपको बयान का मिंजानिब अल्लाह खुसूसी मलका इनायत हुआ था। आप इब्तिदाए बयान में दीन का शौक़ व ज़ौक़ पैदा फ़रमाकर रग़बत पैदा फ़रमा देते और अपनी जान व माल को दीन के काम के लिए बेक़ीमत बतलाकर अल्लाह की राह में खपाने को मक़सदे ज़िंदगी साबित करते थे। इस तरह पूरे मज्मे की ज़ेहनसाज़ी फ़रमाकर अख़ीर बयान में शौक़ व ज़ौक़ के साथ जोश भी दिलाते, जिससे अल्लाह की राह में निकलना आसान हो जाता और इज्तिमाई तश्कील में ऐसा अंदाज़ इख़्तियार फ़रमाते, जैसा फ़रदन-फ़रदन आप तश्कीस फ़रमा रहे हैं। हर आदमी अपनी जगह मुत्तफ़िक़ हो जाता, नाम लिखवाने वालों की हिम्मत अफ़ज़ाई करते और खुसूसी दुआओं से नवाज़ते और उस वक़्त पूरी बशारत में आ जाते। जिस क़दर ज़्यादा नाम आते उसी क़दर आपकी खुशी में इज़ाफ़ा होता रहता। लाखों बन्दगाने खुदा, खुदा की राह में निकलकर अपनी पिछली ज़िंदगियों से ताइब होते और सही राह पर गामज़न होते और आपकी पूरी ज़िंदगी की नक़्ल व हरकत से साफ़ महसूस होता, जैसा कि आप इसी काम के लिए पैदा हुए हैं। हक़ीक़त भी यही थी। होश संभालते ही आपने दावत क काम को अपना लिया था और पूरी ज़िंदगी यही एक मशग़ला रहा। यही आपका ओढ़ना-बिछौना था। आपके पास मिलने वाले खुसूसी हज़रात हों या आम लोग, ज़रूर उनको इस काम की दावत देते। हस्बे मौक़ा कम से कम तीन दिन की तश्कील करते। इस क़द्र गुंजाइश न होती, तो एक रात दिन की और यह भी न होता तो सुबह का बयान सुनकर जाने के लिए आमादा करते। शब व रोज़ अमूमी और खुसूसी तौर पर यही दावते दीन का मशग़ला था। फ़रमाते कि क़ुरूने ऊला में यही दावत का काम मुहतमिन बिश्शान और असल उसूल के दर्जे पर था। यही वजह थी कि सहाबा रज़ि० ने दावत के काम को अपना लिया और पूरी दुनिया पर छा गए। अगर आज भी उम्मते मुस्लिमा इस काम को उसूली तौर पर अपना ले तो खुदाई वादा जो सहाबा (रज़ि०) के ज़माने में पूरा हुआ, आज

भी वही वादा है। खुदा अपने फ़ज़्ल व करम से दीनी और दुनियाव सरसब्ज़ी और शादाबी पैदा फ़रमा देंगे। आपकी फ़िक्र व कुढ़न और जिद्दोजुहद के नतीजे में बारी तआला इस काम को फैलाने और समझाने की नई-नई राहें आपको वदीयत फ़रमाता था। आप उसी अंदाज़ से उम्मते मुस्लिमा की रहबरी फ़रमाते थे।

आपकी ज़िंदगी के आख़िरी दिन

आपका आख़िरी हज 1997 ई० में हुआ था। आख़िरी हज बैतुल्लाह के सफ़र से वापसी 29 अप्रैल, 1997 ई० को बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन (रह०) में हुई। आपकी तबीयत अर्से से अलील चल रही थी। कभी सेहत कभी अलालत रहती थी, मगर आप अज़्म व हिम्मत के पहाड़ थे। किसी क़द्र सेहत ग़ालिब देखते, अपने मामूल के मुताबिक़ बयान वग़ैरह जारी रखते। उन दिनों में हज़रत मौलाना के वतन (गठामन) के अहबाब व अइज़्ज़ा मर्कज़ बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन में तशरीफ़ लाए थे। मक़सद यह था कि गठामन में इज्तिमा जो मशवरे से तै हुआ था उसमें आपकी शिरकत हो जाए। उनके इसरार पर हज़रत मौलाना गठामन इज्तिमा के लिए रवाना हुए। बज़रिए हवाई जहाज़ दिल्ली से अहमदाबाद और फिर अहमदबाद से बज़रिए कार काकूसी "मदरसा नज़ीरिया" में पहुंचे। यहाँ आपका मुख़्तसर बयान हुआ। जिसमें इब्तिदाई तालिबे इल्मी के दौर की बातें बयान फ़रमाईं। उसके बाद आप अपने वतन गठामन पहुंचे। तीन दिन का इज्तिमा था। अलहम्दुलिल्लाह तबीयत अच्छी रही। अइज़्ज़ा व अक़रबा से मुलाक़ात हुई। गाँव और इलाक़े के तमाम हज़रात से तआरुफ़ के साथ मुलाक़ात की यहाँ तक कि आपके बचपन के हिन्दू साथियों से भी मिले और उन्हें दावत भी दी।

आपका अहले वतन और क़ौम से आख़िरी ख़िताबे-आम

यह तक़रीबन 17 मई 1997 ई० की तारीख़ थी। आपकी वफ़ात से क़रीब चार दिन पहले अपने गांव गठामन में क़ौम से आख़िरी ख़िताब फ़रमा रहे थे। किसे ख़बर थी कि दीन व ईमान की रौशनी फैलाने वाला आफ़ताब अंक़रीब ग़ुरूब होने वाला है। आपने इस बयान में इब्तिदाई बेरूनी सफ़रों की कारगुज़ारी पर रौशनी डाली थी और इस्लाम और मुसलमानों पर जो हालात आए उसकी मिसाल में दौरे सिद्दीक़ी के हालात दोहराए थे कि उस वक़्त सहाबा (रज़ि०) ने किस तरह अमल किया। हमें भी उन हालात में यह आमाल इख़्तियार करने हैं। इसपर मुफ़स्सल रौशनी डाली थी, क़ौम व मिल्लत का हमदर्द और ग़मगुसार यह आख़िरी ख़िताब फ़रमाकर हमेशा के लिए अंक़रीब रख़्ते सफ़र बाँधने वाला है। सिवाए अल्लामुल ग़ुरूब के कोई न जानता था। बयान के बाद हस्बे मामूल पूरे जोश और शौक़ व ज़ौक़ के साथ पूरे मज्मे की तश्कील फ़रमाई और अल्लाह की राह में निकलने वालों और इरादा करने वालों के लिए ख़ुसूसी दुआएं फ़रमाईं। और आख़ीर में पूरे मज्मे को बुलन्द आवाज़ से तीन बार अस्सलामु अलैकुम कहा। सबने बयक ज़बान, व अलैकुमुस्सलाम, से जवाब दिया और दुआ में यह अल्फ़ाज़ भी फ़रमाए : कि या अल्लाह! अब मैं ज़ईफ़ और कमज़ोर हो चुका हूँ। यह मज्मा बड़ी मुश्किल से वजूद में आया है, या अल्लाह! तू इस मज्मे की हिफ़ाज़त फ़रमा, इस बन्दाए ख़ुदा को दर्द था और चाहत थी तो यह कि हर हाल में ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में लोग अल्लाह की राह में निकलें और क़ौमों और मुल्कों में चलत-फिरत करके बेदीनों और बेतलबों को दीन की दावत देकर जन्नत वाले रास्ते पर ले आवें। यही एक फ़िक्र और कुढ़न थी। मरते-मरते कर गए और करते-करते मर गए। बहरहाल चार दिन के बाद बज़रिए कार

गठामन से अहमदाबाद आए और फिर दिल्ली के लिए रवानगी हुई और दिल्ली मर्कज़ (बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन (रह०)) पहुंचे। सुबह को यौमे आशूरा पर मामूल के मुताबिक़ बयान हुआ। 10, 11 और 12 मुहर्रम 1419 हि० को मद्रास के इज्तिमा के लिए सफ़र दरपेश था। पहले गंगवारा ज़िला ऐटा में इज्तिमा था। उसमें शिरकत के लिए बज़रिए कार जाना तै हुआ था। 21 मई, 1997 ई० को सुबह के वक़्त में नमाज़ पढ़ी और ख़ादिम से फ़रमाया कि अब मुझे गाड़ी में बिठा दिया जाए ताकि मेरी वजह से दूसरों को इंतिज़ार की तकलीफ़ न हो। आपके इरशाद के मुताबिक़ गाड़ी में सवार कर दिया गया मगर आपकी तबीय में ख़ामोशी ज़्यादा थी। बहरहाल सफ़र शुरू हुआ। आपके हमराह उस सफ़र में दो ख़ादिम थे। आपकी गाड़ी खुरजा पहुंची। यहाँ पहुंचकर दुआ कराना तै था। यहाँ पहुंचकर वालिद साहब ने इस्तिंजा किया। आपकी हिम्मत टूट चुकी थी। कुछ खाने की भी हिम्मत न होती थी। फ़रमाया : मुझे दवा खिलाकर गाड़ी में बिठा दो। जब आपको कहा गया कि घंटा भर आराम फ़र्मा लें और बाद में आ जावें। उस पर वालिद साहब ने फ़रमाया कि मैं अकेला रहना नहीं चाहता, क़ाफ़िले से अलग कहाँ रहूंगा, मुझे तो साथ ले चलो। गाड़ी में बैठने के बाद ख़ादिम ने आपकी हालते-ज़ार देखकर अर्ज़ किया कि हज़रत! मैं तो आपको मर्कज़ (बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन (रह०)) वापस ले चलता हूँ। फ़रमाया कि नहीं क़ाफ़िला वालों से बात नहीं हो सकती है। हालाँकि आपकी तबीयत में बेइंतिहा कमज़ोरी महसूस होती थी इसलिए ख़ादिम ने कहा कि क़ाफ़िला वालों को मैं इत्तिला कर देता हूँ। आपने फ़रमाया : हाँ ताकि इंतिज़ार की तकलीफ़ न हो और मेरी वजह से परेशानी न हो। यह आपकी आख़िरी दिन से पहले वाले दिन की बातें हैं। इस क़द्र तकलीफ़ और माज़ूरी में भी दूसरों को मामूली तकलीफ़ देना भी गवारा न किया। जब ख़ादिम ने कहा कि अलीगढ़ फ़ोन करके ख़बर दे दी गई है, तब फ़रमाया कि वापस

चलो और जल्दी करो। यह खुरजा से आख़िरी सफ़र की वापसी हो रही है। जहाँ से दारुल उलूम देवबन्द से फ़राग़त के बाद आपका तब्लीग़ी इब्तिदाई सफ़र हुआ था और जिस जमाअत के अमीर ने आपके इब्तिदाई चार माह की तश्कील की थी, वह भी उसी खुरजा के रहने वाले थे यानी क़ारी अब्दुर्रशीद साहब (रह०) और दोनों की क़ब्रें भी पास-पास बनी हुई हैं।

दीन व ईमान का नूर और रौशनी फैलाने वाला आफ़ताब हमेशा के लिए ग़ुरूब हो गया

खुरजा से वापसी में सीधा आपको हस्पताल ले जाया गया। इलाज व मआलिज के बाद दूसरे दिन इफ़ाक़ा होने की वजह से सुबह ग्यारह बजे बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन लाया गया। मुहिब्बीन ने फ़र्त मुहब्बत और दीदार की खुशी में आपको हाथों हाथ उठा लिया और आपके हुजरे में लिटाया गया। क्या मालूम था इस दुनिया के जेल ख़ाने से ताइर लाहोती अपना क़फ़्स छोड़ने वाला है। सब लोग आपकी सेहतयाबी पर मसरूर हैं। आप आराम फ़रमा रहे थे। तक़रीबन ग्यारह बजे दीन व ईमान का नूर फैलाने वाला आफ़ताब हमेशा के लिए ग़ुरूब हो गया।

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ اَللّٰهُمَّ اجرنا في مصيبتنا واخلف لنا خيراً منها

22 मई 1997 ई० का दिन उम्मते मुस्लिमा के लिए यह अज़ीम हादसा था। बिजली की मानिन्द ख़बर अतराफ़े-आलम में फैल गई। इस हादसे ने बेशुमार इंसानों के दिलों को तड़पा दिया। यह उम्मते मुस्लिमा का अज़ीम ग़मख़्वार रातों को उठकर खुदाए बेनियाज़ के सामने घंटों रोने वाला और रसूलुल्लाह (सल्ल०) के लाए हुए दीन का सच्चा दर्द रखने वाला और उम्मत की बेदीनी पर कुढ़ने वाला और दीन व ईमान का नूर फैलाने वाला आफ़ताब आनन-फ़ानन ग़ुरूब हो गया और उम्मत अपने अज़ीम मोहसिन से महरूम हो गई और पूरी दुनिया मातमकदा बन गई। बाज़ार बेरौनक़ हो गए, चहार

सू उदासी छा गई और हर जानिब से मोतक़िदीन और आशिक़ीन जूक़ दर जूक़ आख़िरी दीदार के लिए आने लगे। हर एक इस मुसाफ़िरे आख़िरत का आख़िरी दीदार करके ज़िक्र व दुआ और तिलावत में मशग़ूल हो गया। कोई आह व फ़िग़ाँ कर रहा था कि आह हमारा पुरसाने हाल रहबर अब कौन बनेगा। ऐसा रहबर जो कामिल, जो अल्लाह की तरफ़ उस खुश उस्लूबी से ले चले, जिस तरह यह मर्द मुजाहिद चलता रहा। हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब और हज़रत जी मौलाना इनामुल हसन साहब और हज़रत मौलाना इज़हारुल हसन साहब (रह०) सब के सब यके बाद दीगरे रहलत फ़रमा हुए, तो ग़मख़्वारी और तसल्ली देने वाला मौजूद था, जिसने पूरी उम्मत की ख़ैरख़्वाही की और दावत के काम की सह को संभाला और बढ़ाया भी। आज यह भी दाग़ मफ़ारिक़त दे गया। हर एक मग़मूम और हैरत में डूबा हुआ था। मगर क़ज़ाए इलाही पर रज़ा के सिवा कोई चारा न था। इशा की नमाज़ तक बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन (रह०) के गली कूचे इंसानों से भर चुके थे। अज़दहाम कसीर होने की बिना पर नमाज़े जनाज़ा हुमायूं के मक़बरे के बिल मुक़ाबिल पार्क में हुई फिर वहाँ से पंज पीराँ क़ब्रिस्तान में जनाज़ा पहुंचा, जहाँ एक छोटे-से हिस्साए ज़मीन में एक तरफ़ मौलाना उबैदुल्लाह साहब (रह०) की क़ब्र है, दूसरी जानिब क़ारी अब्दुर्रशीद साहब (रह०) खुरजवी की और तीसरी जानिब मुंशी बशीर अहमद साहब (रह०) की और दर्मियान में पूरी दुनिया को बबाँग दहल अल्लाह की बात पहुंचाने वाला थका माँदा मुसाफ़िर खुद ख़ामोश होकर सो गया।

رحمها الله رحمةً واسعة

ताज़ियतनामे

अहबाबे शूरा रायविंड की तरफ़ से ताज़ियतनामा

बक़लम जनाब अब्दुल वहाब साहब दामत बरकातुहुम

दिन के डेढ़ बजे हादसाए फ़ाजिआ की ख़बर मिल गई थी,

انا لله وانا اليه راجعون ۔ان لله تعالیٰ ما اخذوله ما اعطیٰ و کل شیء

عندہ باجل مسمّی

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। हम सबको बहुत दिली सदमा हुआ। सब इसी वक़्त आमाल व दुआए मग़फ़िरत में लग गए। ज़ुहर के बाद मदरसे में क़ुरआन शरीफ़ पढ़े गए। एक ही मज्लिस में सत्तर क़ुरआन ख़त्म हो गए। अब तब ईसाल सवाब का सिलसिला जारी है। उनके जाने से उम्मते मुस्लिमा का अमूमन और अहले तब्लीग़ का ख़ुसूसन बड़ा नुक़सान हुआ। اللهم اجرنا فی مصیبتنا هذہ واخلف لنا خیراً منه । हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब (रह०) के ज़माने में तब्लीग़ी मेहनत में शामिल हुए और बतदरीज क़ुरबानी के साथ आगे बढ़ते रहे, फिर इसी महनत के हो गए और मर्कज़ बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन (रह०) की बहार बन गए और हज़रत जी मौलाना इनामुल हसन साहब (रह०) के ज़माने में बयान की ज़िम्मेदारी भी इन्हीं पर आ गई और हज़रत जी (रह०) जिस शूरा के हवाले काम करके गए, उस शूरा में वह भी शामिल थे। ग़र्ज़ यह कि अल्लाह तआ़ा ने इस तब्लीग़ी मेहनत को चलाने और बढ़ाने के लिए जिन हज़रात से काम लिया है, वह उनमें से एक थे। हमारे यहाँ सालाना इज्तिमा में वही रौनक़ थे। मौलाना तव्वाब जा चुके और उनके जाने पर सदमा होना एक तबअी चीज़ है, सब्र और ऐसे मौक़े पर हौसले और हिम्मत से काम लेना और रज़ा बर क़ज़ा

मोमिन की शान है, जब हमने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की जुदाई बर्दाश्त कर रखी है, जिनसे हमें जान, माल, आल व औलाद, अज़ीज़ व अक़ारिब, असातज़ा व मशाइख़ से भी ज़्यादा मुहब्बत है, तो हमें हज़रत मौलाना की जुदाई अहसन तरीक़े से बर्दाश्त कर लेना चाहिए। हम सब दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला उनके साथ ख़ास लुत्फ़ व करम का मामला फ़रमाएं। बाल-बाल मग़फ़िरत फ़रमाएं। आला दर्जात से नवाज़ें और आपके सब पसमान्दगान को सब्रे जमील और अज्र जज़ील अता फ़रमाएं। उनकी मौजूदगी में अल्लाह तआला उम्मते मुस्लिमा को जिन बरकतों और रहमतों से नवाज़ रहे थे, अब भी उनसे नवाज़ते रहें। اللهم لا تحرمنا اجره ولا تفتنا بعده واغفر لنا وله जिस अल्लाह तआला ने नबवी मेंहनत को इस ज़माने में शुरू फ़रमाकर यहाँ तक पहुंचाया और इस मेहनत की तरक़्क़ी में मौलाना मरहूम को ज़रिया बनाया, उसी ने मौलाना मरहूम को सिफ़ाते मत्लूबा से नवाज़ा था और वही मौलाना मरहूम जैसे सिफ़ात वाले हज़ारों, लाखों अफ़रादा उम्मते मुस्लिमा को दे सकता है। उसी मौलाए करीम की बारगाह में दरख़्वास्त है कि वह अपने ख़ुसूसी करम से उस तब्लीग़ी मेहनत की तक्मील फ़रमाए। और उसके ज़रिए से सारे दीन को सारे आलम में ज़िंदा फ़रमाए और उसके लिए सारी उम्मते मुस्लिमा को क़बूल फ़रमा कर सिफ़ात तब्लीग़ से आरास्ता फ़रमाए और अहले तब्लीग़ को मत्लूबा क़ुरबानियों के साथ तब्लीग़ी मेहनत में ज़ाहिरन व बातिनन तरक़्क़ी करने वाला बनाए।

हज़रात मर्कज़ निज़ामुद्दीन (रह०) की ख़िदमत में सलाम मसनून और मज़मून ताज़ियत, इस वक़्त आप सबके दिल शिकस्ता हैं और आपकी दुआएं क़बूलियत का ख़ास दर्जा रखती हैं, हमें भी अपनी दुआओं में याद रखें।

फ़क़त वस्सलाम

मज्लिसेशूरा दारुल उलूम देवबन्द की तरफ़ से ताज़ियत

मिंजानिब मौलाना मरग़ूबुर्रहमान साहब
मोहतमिम दारुल उलूम देवबन्द

मज्लिसेशूरा दारुल उलूम देवबन्द का यह इज्लास हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी (रह०) की वफ़ात पर अपने दिली रंज व ग़म का इज़्हार करता है और बारगाहे ख़ुदावंदी में हज़रत मरहूम की मग़फ़िरत और तरक़्क़ीए दर्जात के लिए दुआ गो है।

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी मरहूम दारुल उलूम देवबन्द के क़दीम फ़ाज़िल और शैख़ुल इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यद हुसैन अहमद मदनी के तलामिज़ा में थे। ज़माना तालिबे इल्मी ही से अपनी नेक सीरत, जिद्दोजुहद, मक़सद से लगन और सालेहीन से ताल्लुक़ की बिना पर मशहूर थे।

तालिबे इल्मी के ज़माने में एक मर्तबा शदीद बीमारी के सबब तर्क तालीम पर मजबूर हो गए थे। लेकिन मक़सद से बेपनाह दिलचस्पी के सबब कई साल की बीमारी के बाद फिर तलबे इल्म में लग गए और कामयाबी से हमकिनार हुए।

दारुल उलूम देवबन्द से फ़राग़त के बाद मौसूफ़ तब्लीग़ी जमाअत से वाबस्ता हो गए और पूरी ज़िंदगी दावत व तब्लीग़ के लिए वक़्फ़ कर दी, अल्लाह तआला ने उनकी ज़बान में बड़ी तासीर अता फ़रमाई थी। उनकी तक़रीरों से हज़ारों इंसानों की ज़िंदगी में इंक़िलाब आया और इस तरह वह अकाबिर देवबन्द के मक़ासिद आलिया की तक्मील के लिए अपनी तमाम तवानाइयों को सर्फ़ फ़रमाते रहे। मौसूफ़ कई साल से दारुल उलूम तशरीफ़ लाकर मादर इल्मी ख़िराजे अक़ीदत पेश करते थे और दावत व तब्लीग़ के लिए तलबा अज़ीज़ की ज़ेहन-साज़ी फ़रमाया करते थे। मज्लिसे शूरा दारुल उलूम देवबन्द के फ़रज़न्द क़दीम और मस्लक देवबन्द के क़दीम तब्लीग़ी र्जुमान की वफ़ात पर अपने दिली रंज व ग़म का इज़्हार करती है और मौसूफ़ के साहब ज़ादगान, अहले ख़ानदान

और जुमला मुताल्लिक़ीन ख़ुसूसन तब्लीग़ी जमाअत के अहबाब की ख़िदमत में ताज़ियत मसनूना पेश करती है और बारगाहे ख़ुदावंदी में दस्त ब-दुआ है कि वह मौसूफ़ की मग़फ़िरत फ़रमाए, दर्जात बुलन्द करे और उनकी ख़िदमात को क़बूलियत का शर्फ़ अता करे। (आमीन)

हज़रत मौलाना अबरारुल हक़ साहब हरदोई (रह०) की तरफ़ से ताज़ियतनामा

आज ही दोपहर को सफ़र तवील से वापसी हुई, अस्र के वक़्त इत्तिला मिली कि हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी की रहलत हो गई है। बहुत ही सदमा और अफ़सोस हुआ, अल्लाह तआला मौलाना मरहूम के मदारिज को बुलन्द फ़रमा दें और पसमान्दगान को सब्र जमील की तौफ़ीक़ बख़्शें, दाअिया हुआ कि फ़ौरी हाजिरी दूँ मगर ताब और थकान इतना है कि क़रीब की मस्जिद में भी हाज़िरी न दे सका। इसलिए चन्द कलिमात तहसील सवाब ताज़ियत के लिए मारूज़ हैं।

हज़रत मौलाना मुफ़्ती अब्दुर्रहीम साहब लाजपुरी (रह०) की तरफ़ से ताज़ियत नामा

मौलाना मुहम्मद उमर साहब बेहद मुख़्लिस और उम्मत का दर्द रखने वाले और आलिमे-रब्बानी थे, अल्लाह पाक ने मौलाना मरहूम को गोना गूँ कमालात से नवाज़ा था, ख़ुद को दीन के लिए वक़्फ़ कर दिया था। रात-दिन उनकी ज़िंदगी का हर लम्हा दीन की फ़िक्रों और उम्मत के दर्द में गुज़रता था, अनेक इमराज़ के शिकार थे, मगर उनकी परवाह न करते हुए हर वक़्त दीनी कामों में मशग़ूल रहते, अपनी राहत व आराम को दीन के लिए क़ुरबान कर दिया था।

मरहूम को अहक़र से लिल्लाह फ़िल्लाह बड़ी मुहब्बत थी और बहुत ही इख़्लास से मिलते थे, हक़ीक़त में मुजस्सम इख़्लास थे, रूहानी ताक़त और ताल्लुक़ मअल्लाह की क़ुव्वत कार फ़रमा थी, वर्ना इतने इमराज़ के बावजूद इस क़दर बड़ी ज़िम्मेदारियों को संभालना, इंसानी ताक़त से बाहर है, बस वह दीन ही के लिए ज़िंदा थे और बेशक إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ (*इन-न सलाती व नुसुकी व महया-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आलमी-न*) के मिस्दाक़ थे। उनकी वफ़ात मिल्लते इस्लामिया का हादसा है और मौत आलमे का मिस्दाक़ है। अल्लाह पाक हम सबकी तरफ़ से मरहूम को बेहतरीन बदला अता फ़रमाएँ। बुलन्द दर्जात नसीब फ़रमाएँ और मरहूम जिन फ़िक्रों को और उम्मत का जो दर्द अपने अंदर रखते थे, अल्लाह पाक हमारे अंदर भी दीन की फ़िक्र और उम्मत का दर्द नसीब फ़रमाए और हम सबको भी ज़िंदगी के आख़िरी लम्हे तक दीन के लिए क़ुबूल फ़रमाए। (आमीन!)

आप सब हज़रात से अर्ज़ है कि मेरे लिए भी ज़रूर दुआ फ़रमाएँ कि अल्लाह तआला मुझसे राज़ी हो जाएँ और वक़्त मौऊद पर हसन ख़ातिमा नसीब फ़रमाएँ। इसी तरह मेरे अहल व अयाल व अइज़्ज़ा व मुताल्लिक़ीन, ख़ुद्दाम और अहबाब से भी अल्लाह पाक राज़ी हो जाएँ और सबको ईमान व आमाले सालेहा पर इस्तक़ामत और उसी पर हुस्न ख़ातिमा नसीब फ़रमाएँ और हम सबको और पूरी उम्मत को ईमान व यक़ीन और हिदायत अता फ़रमाएँ। (आमीन!)

हज़रत मौलाना हबीबुल्लाह साहब फ़िरोज़पुरी (रह०) मुहतमिम माहद इल्मी कंज़ मरग़ूब पट्टन (गुजरात) की तरफ़ से ताज़ियत नामा

बाद तहिया मसनूना! बुज़ुर्गाने निज़ामुद्दीन के हालिया सफ़र गुजरात के तज़्किरे अभी ज़बानों पर जारी ही थे कि अचानक यह

जान गुराज़ और रूह फ़ुरसा ख़बर सुनी कि हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी जिन्हें अब रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते हुए इंतिहाई रंज व क़ल्क़ हो रहा है, अपने क़ल्ब सलीम, रूह बेताब, बेआज़ार तबीअत और पाकीज़ा शख़्सियत के साथ ख़ुदा के हज़ारों बन्दों को सोगवार और अश्कबार छोड़कर सफ़रे आख़िरत पर रवाना हो गए। *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०*

क्या ख़बर थी कि मौलाना के वतन में उनसे यह मुलाक़ात अब आख़िरी मुलाक़ात होगी और दावत व तब्लीग़ और इरशादे दीन का यह चिराग़ जो अर्से से अपनी नाहमवारी सेहत और तवील ज़ोफ़ व अलालत के सबब चिराग़ सहरी हो रहा है, गुल होने के क़रीब है और यह सिलसिला ख़ैर व बरकत जल्द ही ख़त्म होने वाला है। मौलाना (रह०) का इख़्लास व लिल्लाहियत, ताल्लुक़ मअल्लाह, दावत के कामों में इंहिमाक व इस्तग़राक़, ईसार व क़ुरबानी की कैफ़ियत, तवाज़ो व इंकिसारी और फिर उसी राह की मौत बर्सों दिल को तड़पाती और उनकी याद ताज़ा करती रहेगा।

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ

ख़बर सुनते ही मअहद में तिलावत कलाम पाक और ईसाले सवाब का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया और यह सिलसिला ताहुनूज़ जारी है।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَهٗ وَارْحمه وادخله جنان الفردوس عندك ونور قبرهٗ وبرد مضجعهٗ ووسع مدخله وامطر عليه شابيب رحمتك.

हज़रत जी (रह०) और हज़रत मौलाना इज़्हारुल हसन (रह०) की पे दर पे रहलत के बाद इस नाज़ुक घड़ी में अब मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनुपरी (रह०) का भी उठ जाना बज़ाहिर "मर्कज़ दावत व तब्लीग़" के लिए एक ऐसा ख़ला है, जो बहुत दूर तक और बहुत देर तक महसूस किया जाता रहेगा। दुआ है कि

जान गुराज़ और रूह फ़ुरसा ख़बर सुनी कि हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी जिन्हें अब रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते हुए इंतिहाई रंज व क़ल्क़ हो रहा है, अपने क़ल्ब सलीम, रूह बेताब, बेआज़ार तबीअत और पाकीज़ा शख़्सियत के साथ ख़ुदा के हज़ारों बन्दों को सोगवार और अश्कबार छोड़कर सफ़रे आख़िरत पर रवाना हो गए। *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०*

क्या ख़बर थी कि मौलाना के वतन में उनसे यह मुलाक़ात अब आख़िरी मुलाक़ात होगी और दावत व तब्लीग़ और इरशादे दीन का यह चिराग़ जो अर्से से अपनी नाहमवारी सेहत और तवील ज़ोफ़ व अलालत के सबब चिराग़ सहरी हो रहा है, गुल होने के क़रीब है और यह सिलसिला ख़ैर व बरकत जल्द ही ख़त्म होने वाला है। मौलाना (रह०) का इख़्लास व लिल्लाहियत, ताल्लुक़ मअल्लाह, दावत के कामों में इंहिमाक व इस्तग़राक़, ईसार व क़ुरबानी की कैफ़ियत, तवाज़ो व इंकिसारी और फिर उसी राह की मौत बर्सों दिल को तड़पाती और उनकी याद ताज़ा करती रहेगा।

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا

وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ

ख़बर सुनते ही मअहद में तिलावत कलाम पाक और ईसाले सवाब का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया और यह सिलसिला ताहुनूज़ जारी है।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَهٗ وَارْحمه وادخله جنان الفردوس عندك ونور قبرهٗ وبرد

مضجعهٗ ووسع مدخله وامطر عليه شابيب رحمتك.

हज़रत जी (रह०) और हज़रत मौलाना इज़हारुल हसन (रह०) की पे दर पे रहलत के बाद इस नाज़ुक घड़ी में अब मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनुपरी (रह०) का भी उठ जाना बज़ाहिर "मर्कज़ दावत व तब्लीग़" के लिए एक ऐसा ख़ला है, जो बहुत दूर तक और बहुत देर तक महसूस किया जाता रहेगा। दुआ है कि

रबे-रहीम हज़रत मौलाना (रह०) को अपनी मग़फ़िरत व रहमत से नवाज़े, उनके दर्जात बुलन्द फ़रमाए, तमाम अइज़्ज़ा व पसमान्दगान, तमाम मुख़्लिसीन व मुहिब्बीन नीज़ तमाम काम करने वालों को इस सदमे पर सब्रे जमील और अज्र जज़ील अता फ़रमाए और दीन की मेहनत के इस आलमी काम की मुकम्मल हिफ़ाज़त फ़रमाकर आप तमाम हज़रात की पूरी-पूरी रहनुमाई व दस्तगीरी फ़रमाए। (आमीन)

अहबाबे-शूरा मोरिशस की तरफ़ से ताज़ियत नामा

बाद सलाम मसनून! अल्लाह जल्ले शानहू आप हज़रात के फ़ुयूज़ से हमें मुस्तफ़ीद फ़रमाए और आप हज़रात की ज़िंदगियों में बरकत दे, आमीन सुम-म आमीन।

कल सुबह बाज़ अहबाब ने बज़रिए फ़ोन हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी (रह०) के इंतिक़ाल की ख़बर सुनाई, तौसीक़ के लिए हमने इधर-उधर फ़ोन के ज़रिए पता लगाया तो मालूम हुआ कि ख़बर सही है। *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।* उम्मत की रहबरी में एक ऐसी कमी वाक़ेअ हुई कि शायद पुर न हो सकेगी। हज़रत ने सारी ज़िंदगी दावत व तब्लीग़ में गुज़ारी और उम्मत को एक ऐसा रास दिया जिस पर चलकर उम्मत मंज़िले मक़सूद तक पहुंच सकती है। अल्लाह तआला सारी उम्मत की तरफ़ से उनको बहुत-बहुत जज़ाए ख़ैर दे और जन्नत में आला मक़ाम नसीब करे। (आमीन) सारी उम्मत उनकी कमी महसूस करेगी, ख़ुसूसन हम मोरिशस वाले कम नसीब हैं कि इज्तिमा की तारीख़ मुक़र्रर होने के बाद हज़रत मौलाना (रह०) के दीदार व इस्तफ़ादा करने का शिद्दत से इंतिज़ार कर रहे थे और हज़रत (रह०) हमसे जुदा हो गए। अल्लाह तआला पसमान्दगान को जो कि सारी उम्मत है, सब्र जमील की तौफ़ीक़ दे और बाक़ी रहने वाले हज़रात अकाबिरीन की क़द्र और उनसे इस्तफ़ादा की तौफ़ीक़ दे, आमीन सुम्म आमीन।

शूरा मोरिशस के सारे मुसलमानों बल्कि मोरिशस के सारे मुसलमानों की तरफ़ से हज़रत (रह०) के पसमान्दगान और अकाबिरन की ख़िदमत में ताज़ियत व सलाम और दुआओं की दरख़्वास्त है। फ़क़त वस्सलाम।

मस्जिदवार जमाअत चपाटा ज़ाम्बिया की तरफ़ से ताज़ियत नामा

मोहतरम व मुकर्रम मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

बाद सलाम मसनून! हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी (रह०) की रहलत की ख़बर आज दोपहर को टेलीफ़ोन के ज़रिए हुई। और पूरा मुल्क मग़मूम हो गया। किस-किस की ताज़ियत की जाए। लाखों दिल सोगवार और आँखें अश्कबार हैं। वह जो पूरी उम्मत के सरमायाए हयात थे, जो आलम के मीनार थे, जो लाखों दिलों में बसते थे, जो रोज़ाना शीरीं बयान से उम्मत के हज़ारों इंसानों को दावत के नुकात और उसूल बतलाया करते थे, जिन्होंने अपने लिए और दूसरे लाखों इंसानों के लिए फ़ी सबीलिल्लाह सफ़र करना अपना महबूब मशग़ला बनाया था, वह ज़िंदगी भर का थका मुसाफ़िर सारे क़ाफ़िले को छोड़कर मंज़िल पर जा पहुँचा।

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

रब्बे-रहीम हज़रत मौलाना (रह०) को जन्नतुल फ़िरदौस में बुलन्दतरीन मक़ाम अता करे और उनके तमाम पसमान्दगान को ख़ुसूसन और मुहिब्बीन और मुख़्लिसीन को अमूमन इस शदीद तरीन सदमे पर अपनी शायाने शान सब्र जमील और अज्र जज़ल अता फ़रमाए और बाक़ी मान्दा हज़रात अकाबिर की उम्रों में बरकत नसीब फ़रमाए और उनका साया हम सब पर और पूरी उम्मत पर

तादेर क़ायम फ़रमा कर हम सबको और तमाम काम करने वालों को बल्कि पूर उम्मत को हज़रत मौलाना (रह०) के नक़्शे क़दम पर चलने की हिम्मत और तौफ़ीक़ अरज़ानी करे। आमीन

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

ख़ुसूसियात, सिफ़ात और मामूलात

उसके नफ़्स करम की तासीर है ऐसी
हो जाती है ख़ाक चमनिस्ताँ शरर आमेज़

(1) दावते दीन की भरपूर लगन के साथ उसूले दावत की पूरी पूरी रिआयत फ़रमाते, हौसला शिकन हालात में नताइज से बेपरवाह होकर दावते दीन के अमल में मशग़ूल रहते। थकन और उक्ताहट की परवाह किए बग़ैर, किसी शख़्स को दीन की बात पहुँचाने का जहाँ मौक़ा मिल जाता उसे ग़नीमत शुमार करके पहुँचा ही देते। साथ ही उसूल का भी लिहाज़ फ़रमाते कि दारोग़ा बनकर उसके पीछे पड़ने के बजाय अपनी बात मुअस्सिर अंदाज़ में कहकर फ़ारिग़ हो जाते। फिर जब देखते कि उस पर अमल नहीं हुआ, तो फिर मौक़ा देखकर ख़ूबसूरत अंदाज़ में कहते लेकिन न मुसल्लत होने का तरीक़ा इख़्तियार फ़रमाते और न मायूस होकर बैठ जाते।

और मुख़ातिब के साथ मुश्फ़िक़ाना लहजा इख़्तियार फ़रमाते जिसमें अपनी बरतरी और मुख़ातिब की तहक़ीर का कोई शायबा न पाया जाता और दीन की बात कहने में मौक़ा और माहौल ऐसा तलाश करते जो मुख़ातिब के लिए ज़्यादा मुअस्सिर साबित हो, नीज़ अंदाज़े बयान और उस्लूब ऐसा इख़्तियार फ़रमाते जो नर्मी, हमदर्दी और दिलसूज़ी का आईनादार हो, मुख़ातिब आपके कमाले इख़्लास की हलावत महसूस करता और उसका दिल बेइख़्तियार पुकार उठता कि जो कुछ कहा जा रहा है उससे रज़ाए इलाही और कमाले ख़ैरख़्वाही के सिवा कुछ और मत्लूब व मक़सूद नहीं, लिहाज़ा वह मुस्तफ़ीद और मुत्मइन होकर अमल पैरा हो जाता :

हिक्मत व दानाई व इश्क़ व मुहब्बत का निशाँ
फूंक देता था रगों में ज़िंदगी जिसका बयाँ

(2) वालिद साहब दावते दीन की नक़ल व हरकत के लिए जिस तरह दूसरों की तश्कील करते थे, खुद भी हस्बे ज़रूरत मर्कज़ से बाहर रहते थे और महीनों बाहर गुज़ारते थे। हालाँकि मर्कज़ में आपकी मौजूदगी बेहद ज़रूरी थी, तब भी दावते दीन की अहमियत के पेश नज़र हिन्द व पाक के अनेक इज्तिमाआत और मदारिस व मराकिज़ के खुसूसी मज्मों नीज़ अफ़्रीक़ा, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप वग़ैरह बेरूनी मुमालिक के दूर दराज़ असफ़ार करते और इज्तिमाआत में शिरकत करते, हज का फ़रीज़ा अदा करने के बाद नफ़्ली हज और उमरे के लिए जमाअतें ले लेकर कई मर्तबा हिजाज़ मुक़द्दस पहुंचे और वहाँ मुसलमानाने आलम के इज्तिमा से भरपूर दीनी मक़ासिद हासिल किए। मुल्कों के लिए वहाँ से जमाअतें रवाना कीं, मुक़द्दस मक़ामात में दुनिया के मुसलमानों के लिए अमूमन और हिन्दुस्तान के मुसलमानों के लिए खुसूसन फ़लाह व आफ़ियत और रूहानी तरक़्क़ी के लिए दुआएं कीं अपनी फ़िक्र कामिल और सई बलीग़ के ज़रिए आलमे इस्लाम से खुसूसी रब्त पैदा करके मुल्कों में दावते दीन की नित नई राहें खोलीं :

कौन निकलेगा खुदा की राह में दीवानावार
दीं की ख़ातिर ठोकरें दर-दर की अब खाएगा कौन

आसमाने ज़ुहद व तक़वा पैकर हुस्न व यक़ीन
अब हमें राह तवक्कुल आह समझाएगा कौन

(3) मुमालिक अरब व अजम में दावते दीन की इस क़द्र इशाअत हो जाने और आपकी शख़्सियत मशहूर और मक़बूल हो जाने के बाद भी कभी आपने खुद तो क्या किसी दूसरे को भी इजाज़त न दी कि खुसूसियत के साथ उनकी शख़्सियत की तरफ़ दावत दी जाए या इज्तिमाआत में उनके बयानात का एलान किया

जाए बल्कि हमादम अल्लाह की मख़्लूक़ को उसके ख़ालिक़ और ख़ालिक़ के काम के साथ जोड़ने की जिद्दोजहद फ़रमाते रहे। उम्मत के मुख़्तलिफ़ तब्क़ात को बाहम क़रीब करने की जो तालीम आप देते थे, ख़ुद आपकी ज़ात उसका बेहतरीन नमूना थी।

एक मर्तबा अहले मज्लिस ने देखा कि आपने हदीस पढ़ाने वाले अपने एक मुआसिर साथी के होठों को बोसा दिया और फ़रमाया : कि इन होठों से हर वक़्त क़ालल्लाहु क़ालर्रसूल का विर्द रहता है। इस लायक़ हैं कि इन होठों से बरकत हासिल की जाए।

(4) दावते दीन की तहरीक आपके आख़िरी दौर में हमागीर और आलमगीर हो जाने की वजह से हर ख़ित्ते और हर मुल्क में मस्जिदवार जमाअत और मशवरा की जमाअत बन चुकी थी। बाहम मशवरे में इख़्तलाफ़ और इंतिशार के नाज़ुक मवाक़े में इख़्तिलाफ़ात को ख़ुश-अस्लूबी के साथ इस तरह फ़ा करते जिससे अहबाब में पहले की निस्बत ज़्यादा मेल मुहब्बत हो जाती और काम की मिक़्दार भी बढ़ जाती। अगर किसी इलाक़े या फ़र्द में बेउसूली होती, तो उस पर फ़ौरी रोक न लगाते बल्कि हुस्न तदबीर के साथ तदरीजी तौर पर उनको उसूल पर ले आते, जिससे इलाक़े में दावत का काम भी क़ायम रहता और वह फ़र्द भी काम से जुड़ा रहता और उसूल का मक़सद भी हासिल हो जाता। नीज़ बाज़ मौक़ों पर उम्मत के फ़ासिद ख़ून को निकालने के लिए नशतर ज़रूर लगाते मगर उसके बाद उनके मरहम लगाने का जो अंदाज़ होता उससे नशतर की तकलीफ़ जाती रहती।

(5) आपको इस बात का कामिल यक़ीन हासिल था कि ईमान व यक़ीन के बग़ैर उम्मते मुस्लिमा में कोई तग़य्युर और इंक़िलाब पैदा नहीं हो सकता है, इसके बग़ैर कोशिश करना इस्लाम की रूह और इस उम्मत के मिज़ाज के ख़िलाफ़ है चूंकि इस उम्मत ने क़र्न अव्वल में ईमान के बलबूते पर ही कामयाबी हासिल की है और बहरो बर्र पर छा गई है और ईमान ही के कमज़ोर होने से इख़्तिलाफ़ व इंतिशार में मुब्तला होकर अपनी जमीअत खो बैठी है। लिहाज़ा आपके बयान का मौज़ूमे ही ईमान व यक़ीन था और यह

हिक्मत व दानाई व इश्क़ व मुहब्बत का निशाँ
फूंक देता था रगों में ज़िंदगी जिसका बयाँ

(2) वालिद साहब दावते दीन की नक़ल व हरकत के लिए जिस तरह दूसरों की तश्कील करते थे, खुद भी हस्बे ज़रूरत मर्कज़ से बाहर रहते थे और महीनों बाहर गुज़ारते थे। हालाँकि मर्कज़ में आपकी मौजूदगी बेहद ज़रूरी थी, तब भी दावते दीन की अहमियत के पेश नज़र हिन्द व पाक के अनेक इज्तिमाआत और मदारिस व मराकिज़ के खुसूसी मज्मों नीज़ अफ्रीक़ा, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप वग़ैरह बेरूनी मुमालिक के दूर दराज़ असफ़ार करते और इज्तिमाआत में शिरकत करते, हज का फ़रीज़ा अदा करने के बाद नफ़्ली हज और उमरे के लिए जमाअतें ले लेकर कई मर्तबा हिजाज़ मुक़द्दस पहुंचे और वहाँ मुसलमानाने आलम के इज्तिमा से भरपूर दीनी मक़ासिद हासिल किए। मुल्कों के लिए वहाँ से जमाअतें रवाना कीं, मुक़द्दस मक़ामात में दुनिया के मुसलमानों के लिए अमूमन और हिन्दुस्तान के मुसलमानों के लिए खुसूसन फ़लाह व आफ़ियत और रूहानी तरक़्क़ी के लिए दुआएं कीं अपनी फ़िक्र कामिल और सई बलीग़ के ज़रिए आलमे इस्लाम से खुसूसी रब्त पैदा करके मुल्कों में दावते दीन की नित नई राहें खोलीं :

कौन निकलेगा ख़ुदा की राह में दीवानावार
दीं की ख़ातिर ठोकरें दर-दर की अब खाएगा कौन

आसमाने ज़ुहद व तक़वा पैकर हुस्न व यक़ीन
अब हमें राह तवक्कुल आह समझाएगा कौन

(3) मुमालिक अरब व अजम में दावते दीन की इस क़द्र इशाअत हो जाने और आपकी शख़्सियत मशहूर और मक़बूल हो जाने के बाद भी कभी आपने खुद तो क्या किसी दूसरे को भी इजाज़त न दी कि खुसूसियत के साथ उनकी शख़्सियत की तरफ़ दावत दी जाए या इज्तिमाआत में उनके बयानात का एलान किया

जाए बल्कि हमादम अल्लाह की मख़्लूक़ को उसके ख़ालिक़ और ख़ालिक़ के काम के साथ जोड़ने की जिद्दोजहद फ़रमाते रहे। उम्मत के मुख़्तलिफ़ तब्क़ात को बाहम क़रीब करने की जो तालीम आप देते थे, ख़ुद आपकी ज़ात उसका बेहतरीन नमूना थी।

एक मर्तबा अहले मज्लिस ने देखा कि आपने हदीस पढ़ाने वाले अपने एक मुआसिर साथी के होठों को बोसा दिया और फ़रमाया : कि इन होठों से हर वक़्त क़ालल्लाहु क़ालर्रसूल का विर्द रहता है। इस लायक़ हैं कि इन होठों से बरकत हासिल की जाए।

(4) दावते दीन की तहरीक आपके आख़िरी दौर में हमागीर और आलमगीर हो जाने की वजह से हर ख़ित्ते और हर मुल्क में मस्जिदवार जमाअत और मशवरा की जमाअत बन चुकी थी। बाहम मशवरे में इख़्तलाफ़ और इंतिशार के नाज़ुक मवाक़े में इख़्तिलाफ़ात को खुश-अस्लूबी के साथ इस तरह फ़ा करते जिससे अहबाब में पहले की निस्बत ज़्यादा मेल मुहब्बत हो जाती और काम की मिक़्दार भी बढ़ जाती। अगर किसी इलाक़े या फ़र्द में बेउसूली होती, तो उस पर फ़ौरी रोक न लगाते बल्कि हुस्न तदबीर के साथ तदरीजी तौर पर उनको उसूल पर ले आते, जिससे इलाक़े में दावत का काम भी क़ायम रहता और वह फ़र्द भी काम से जुड़ा रहता और उसूल का मक़सद भी हासिल हो जाता। नीज़ बाज़ मौक़ों पर उम्मत के फ़ासिद ख़ून को निकालने के लिए नशतर ज़रूर लगाते मगर उसके बाद उनके मरहम लगाने का जो अंदाज़ होता उससे नशतर की तकलीफ़ जाती रहती।

(5) आपको इस बात का कामिल यक़ीन हासिल था कि ईमान व यक़ीन के बग़ैर उम्मते मुस्लिमा में कोई तग़य्युर और इंक़िलाब पैदा नहीं हो सकता है, इसके बग़ैर कोशिश करना इस्लाम की रूह और इस उम्मत के मिज़ाज के ख़िलाफ़ है चूंकि इस उम्मत ने क़र्ने अव्वल में ईमान के बलबूते पर ही कामयाबी हासिल की है और बहरो बर्र पर छा गई है और ईमान ही के कमज़ोर होने से इख़्तिलाफ़ व इंतिशार में मुब्तला होकर अपनी जमीअत खो बैठी है। लिहाज़ा आपके बयान का मौज़ूमे ही ईमान व यक़ीन था और यह

यक़ीन रग व रेशा में पेवस्त हो गया था, लाखों के मज्मू को पूरी क़ुव्वत और दिलसूज़ी के साथ ईमान व यक़ीन की बातों को वाशगाफ़ बयान फ़रमाते। नीज़ आख़िरत पर यक़ीने ख़ुदा के वादों पर एतिमाद, तवक्कुल, जन्नत व जहन्नम का मुअस्सिर तज़्किरा, रूह इंसान की हक़ीक़त व अहमियत, ग़ैबी हक़ाइक़ का इसबात और माद्दियत का इंकार, रसूलुल्लाह (सल्ल०) और सहाबा किराम (रज़ि०) की पाकीज़ा ज़िंदगी और उनके बसीरत अफ़रोज़ नमूने, दावत की ताक़त और उसकी तासीर व तस्ख़ीर, उन्हीं बातों पर आपका बयान मुश्तमिल होता था और हर तब्क़े और हर हल्क़े को कोई न कोई पहलू ज़रूर मुतास्सिर करता था, उसमें आपके ईमान व यक़ीन की भरपूर कैफ़ियत का भी दख़ल था।

हज़रत वालिद साहब को उम्मते मुस्लिमा के हर तब्क़े और हर हल्क़े में अल्लाह तआला ने मक़बूलियत और महबूबियत अता फ़रमाई थी, लाखों आदमी आपके गरवीदा थे, ग़ैर मुमालिक के अहल दर्द व फ़िक्र भी इसकी तमन्ना करते थे कि वालिद साहब उनके मुल्कों में तशरीफ़ लाएँ और अपने अनमो व शीरीं बयाात से मुस्तफ़ीद और महज़ूज़ फ़रमाएँ और आपसे इस्तिफ़ादा को बाइसे फ़ख़्र व एज़ाज़ा महसूस करते थे।

(6) अपने तमाम अकाबिर के साथ ख़ादिमाना और नियाज़मन्दाना ताल्लुक़ रखते थे बिलख़ुसूस शैख़ुल हदीस हज़रत मौलाना ज़करिया साहब नव्वरल्लाहु मरक़दहू और हज़रत जी मौलाना इनामुल हसन साहब (रह०) से तो बेहद मुहब्बत और अक़ीदत थी। उन बुज़ुर्गों की जुदाई से वालिद साहब को जो सदमा पहुँचा था उसको हदे तहरीर में नहीं लाया जा सकता है। आप उन बुज़ुर्गों के साथ कमाल अदब व एहतिराम और ताज़ीम व इकराम का मामला फ़रमाते थे। आज के दौर में बुज़ुर्गों के साथ यह मुहब्बत, यह ख़ुलूस, यह जज़बा, ताज़ीम व तकरीम नायाब न सही कामयाब ज़रूर है।

(7) आप उन बुज़ुर्गों के मुताल्लिक़ीन का भी बड़ा एहतिराम

और ऐज़ाज़ फ़रमाते नीज़ मर्कज़ के तमाम रुफ़क़ा और बेरून मर्कज़ के तमाम काम करने वालों से जिनमें अमीर व ग़रीब, ताजिर व काश्तकार और मुलाज़िम, कालिज और यूनीवर्सिटी के असातज़ा और तलबा इस्लामी मदारिस के मुअल्लिमीन और मुतअल्लिमीन, डाक्टर और इंजीनियर हर तब्क़े के अफ़राद होते, सबसे दर्जा-बदर्जा इकराम और शफ़क़त व मुहब्बत से पेश आते थे। सब काम करने वालों की तरफ़ से अपना दिल साफ़ रखते थे और उसका पूरा एहतिमाम करते थे कि अगर किसी की कोताही मालूम हो जाती तो हिक्मते अमली से उसका तदारुक फ़रमाते और अपनी किसी चूक पर बड़ी हो या छोटी माफ़ी तलब करने में कोई आर महसूस न फ़रमाते और उलमाए दीन से इस्तिफ़ादा करने में किसी तरह का तकल्लुफ़ और हिजाब न फ़रमाते थे।

(8) हज़रत जी मौलाना इनामुल हसन साहब (रह०) से क़ुरआन हिफ़्ज़ करने के बारे में इस्तसवाब फ़रमाया, तो हज़रत जी (रह०) ने जवाब में फ़रमाया : दावत की मशग़ूली के साथ निभ जाए तो बेहतर है। चुनाँचे मस्जिद नबवी में वाक़अ रियाज़ुल जन्नत में हज़रत जी (रह०) ही से हिफ़्ज़ क़ुरआन की इब्तिदा फ़रमाई और दावत के शग़ल के साथ चार साल की मुद्दत में पूरा क़ुरआन हिफ़्ज़ कर लिया था और उसका ख़त्म भी हज़रत जी (रह०) के पास रियाज़ुल जन्नत में क़ुरआन पाक की आख़िरी आयतें सुनाकर किया। चूंकि आपने बड़ी उम्र में हिफ़्ज़ किया था इस वजह से अपने आम बयानों में यह बात फ़रमाते थे कि अक्सर बचपन के हाफ़िज़ होते हैं और मैं पचपन का हाफ़िज़ हूँ।

(9) हज़रत वालिद साहब मरहूम को क़ुरआन पाक से वालिहाना ताल्लुक़ था। जहाँ मौक़ा मिलता क़ुरआन पाक की तिलावत शुरू फ़रमा देते, इसी ताल्लुक़ की बिना पर दावत व तब्लीग़ की हमागीर मशग़ूलियत के बावजूद बड़ी उम्र में हिफ़्ज़ क़ुरआन पाक की दौलत भी हासिल कर ली और अपने अमूमी और ख़ुसूसी बयानात में ख़ुत्बा मसनूना के बाद और दौरान बयान बड़े वालिहाना अंदाज़ में

कैफ़ व सुरूर के साथ क़ुरआन पाक की आयतों की तिलावत फ़रमाते, ऐसा महसूस होता कि वह कह रहे हैं :

क़ुरआन में हो ग़ोता ज़न ऐ मर्दे मुसलमान

सादगी और तवाज़ो

आपकी ज़ात में सादगी और तवाज़ो कूट-कूटकर भरी हुई थी, जिस ज़माने में आप मर्कज़ दिल्ली में बग़ैर अहल व अयाल के तंहा क़याम पज़ीर थे, तो ऐसे हुजरे में जहाँ दो तीन हज़रात आपके साथ रहते थे आप बग़ैर चारपाई के नीचे फ़र्श पर बिस्तर लगाकर आराम करते, आम तालिबे इल्मों की मानिन्द बेतकल्लुफ़ रहे। मुल्क और बेरून मुल्क की बड़ी-बड़ी शख़्सियतें आतीं, आप उसी हुजरे में फ़र्श ज़मीन पर बैठकर बेतकल्लुफ़ बातें करते। फ़ज़्ल व कमाल के होते हुए इस क़द्र सादगी और तवाज़ोअ वारिदीन को मुतास्सिर किए बग़ैर न रहती। दुनियावी चीज़ों से बेरग़बती की वजह से बेख़बरी का यह आलम था कि एक मर्तबा राक़िमुल हुरूफ़ भी उसी मज्लिस में था, आपने अहले मज्लिस से फ़रमाया : कि मेरा कुर्ता उल्टा है या सीधा? सभी ने जवाब दिया कुर्ता सीधा है। इस सवाल की वजह दरयाफ़्त की गई, तो आपने फ़रमाया : साल गुज़िशता मेरा अफ़्रीक़ा का सफ़र हुआ था। जब मैं अफ़्रीक़ा के हवाई अड्डे पर उतरा तो वहाँ के अहबाब ने बताया कि मौलाना का कुर्ता उल्टा है तो मैंने हवाई अड्डे पर ही कुर्ता सीधा किया था। आज भी मेरा अफ़्रीक़ा का सफ़र है, इसलिए मालूम कर रहा हूँ कि साल गुज़िश्ता की तरह न हो चूंकि आजकल कपड़ों का उल्टा सीधा वाज़ेह नहीं होता है।

बावजूद कमालात के आप निहायत मुतवाज़ेह और मुंकसिरुल मिज़ाज थे। कभी अपने आपको किसी दूसरे पर तर्जीह न देते थे। हर एक के साथ मिले रहते थे। कभी अपने लिए ख़ुसूसी इम्तियाज़ के रवादार न हुए। हुज़ूर (सल्ल०) का फ़रमान है : من تواضع لله رفعه الله

(*मन तवाज़-अ लिल्लाहि रफ़अहुल्लाह*) जिसने अल्लाह के लिए आजिज़ी की, अल्लाह तआा उसको सरबुलन्द करता है। आप इस हदीस के सही मिस्दाक़ थे। आपकी सादगी और तवाज़ो के तुफ़ैल बारी तआला ने लोगों के दिलों में आपकी इ़ज़्ज़त व अ़ज़्मत के अनमिट नक़ूश क़ायम फ़रमाए और बेमिसाल महबूबियत इनायत फ़रमाई। ख़ुदाए पाक इस पैकर ख़ुलूस के नक़्श क़दम पर हमें भी चलने की तौफ़ीक़ बख़्शे :

रहें दुनिया में और दुनिया से बिल्कुल बेताल्लुक़ हों
फिरें दरिया में और हरगिज़ न कपड़ों को लगे पानी

सब्र व तहम्मुल और शफ़क़त

आपकी उम्र का अक्सर हिस्सा दावते दीन के अमल में मसरूफ़ रहा है जिसमें बहुत सी नाहमवारियों और नागवार ख़ातिर उमूर से वास्ता पड़ा मगर सब्र व तहम्मुल का दामन कभी भी हाथ से न छूटा, कभी कोई शिकवा, शिकायत ज़बान पर न आई। वक़्ते मुलाक़ात व मुसाफ़ा बाज़ अवामुन्नास की जानिब से ख़िलाफ़ तबा तर्ज़े अमल या अपनी ज़रूरत के इज़्हार के लिए आपको बेमौक़ा तकलीफ़देने के बावजूद आप निहायत तहम्मुल और ख़ुश अख़्लाक़ी के साथ पेश आते और उनकी दिलजोई भी फ़रमाते और इत्मीनान से सबकी बात सुनते और फ़रमाते, ग़ुरबा और मसाकीन की दुआओं से मैं चल रहा हूँ। किसी को क्या ख़बर उन पर क्या गुज़रती है और उनके अहवाल सुनकर रोया करते और उस वक़्त अपनी इब्तिदाई ज़िंदगी की हालत भी बयान फ़रमाते कि मेरी वालिदा मोहतरमा अगरचे नादार थीं मगर ग़ुरबा और मसाकीन से हमदर्दी करने को कहा करतीं और जितना अपने पास होता उसी में से दे दिया करतीं। आप भी मुस्तहिक़ की इमदाद करते। आप ख़िदमते ख़ल्क़ को सबसे आला अमल समझे और उसका ख़ूब ख़्याल फ़रमाते। बाक़ायदा मुस्तहिक़ीन हज़रात की फ़ेहरिस्त और मौक़े

बमौक़े उनकी इमदाद करते और ग़रीब तलबा की मदद करते। नीज़ उलमा किराम की ख़िदमत में हदिया पहुंचाने का भी आपका मामूल था।

एक मज्लिस में एक तालिबे इल्म जो आपसे क़र्ज़ की कुछ रक़म ले गया था जब वापस अदा करने आया तो आपने वह रक़म तालिबे इल्म ही को इनायत कर दी। उसके बाद अहले मज्लिस से फ़रमाया : नबियों वाला काम करना और नबियों वाला हिसाब रखना मुनासिब नहीं :

तरीक़त बजुज़ ख़िदमत ख़ल्क़ नीस्त
ज़ तस्बीह व सज्जादा व दलक़ नीस्त

तर्जमा : तरीक़त ख़िदमते ख़ल्क़ का नाम है, तस्बीह, मुसल्ला और गुदड़ी का नाम नहीं है।

इत्तिबा सुन्नत का बहुत एहतिमाम फ़रमाते। आपकी ज़िंदगी सुन्नत की पैरवी और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मुहब्बत की परतो थी। हर वक़्त और हर अमल में अदइया मसनूना व मासूरा का ख़ास एहतिमाम फ़रमाते। आपकी ज़िंदगी का महबूब मशग़ला ही अहयाए सुन्नत था। अपने बयानों में सुन्नत की पैरवी और हर-हर सुन्नत को ज़िंदा करने की पुरज़ोर दावत देते थे। ख़ास कर यह फ़रमाते थे कि हुज़ूर (सल्ल०) की एक-एक बात का पूरा करना अल्लाह की मदद उतरवाना है और हुज़ूर (सल्ल०) की किसी एक बात का छूट जाना अल्लाह की ग़ैबी मदद का हट जाना है।

वालिद साहब (रह०) के शब व रोज़ के औक़ात मामूलात से घिरे रहते। कोई घड़ी ज़ाया करना गवारा न फ़रमाते। सुबह ढाई घंटे का बयान और काम से मुताल्लिक़ उमूर का मशवरा और ख़ुतूत के जवाबात और औराद व मशाग़िल के अलावा किताबों के मुताले के लिए भी ज़रूर वक़्त निकालते ख़ुसूसन हयातुस्सहाबा के लिए फ़रमाते कि इसका कुछ हिस्सा ज़रूर मुताला करता हूँ और मेरा तजर्बा है कि इसमें सहाबा (रज़ि०) की ज़िंदगी के नशीब व फ़राज़ और ज़िंदगी के हर पहलू पर वाज़ेह हिदायात की वजह से तहरीक

दावत के क़ीमती उसूल मिल जाते हैं। नीज़ सहाबा (रज़ि०) के हालात व वाक़ियात बड़ी ख़ैर व बरकत का सबब हैं। पूरी उम्मत के लिए क़ाबिले तक़्लीद नमूना और ज़रिया नजात व बरकात हैं। हज़रत वालिद साहब ने मर्ज़ुल मौत में मुझसे फ़रमाया कि मर्कज़ निज़ामुद्दीन में तक़रीबन पैंतीस (35) साल रहा हूँ और मर्कज़ की बिजली और पानी को इस्तेमाल किया है। लिहाज़ा मेरे इंतिक़ाल के बाद पचास हज़ार रुपये मर्कज़ के हिसाब में जमा करा देना। अल्लाह का शुक्र है कि वालिद साहब (रह०) की वसीयत हुई और उस मज़्कूरा रक़म को उसी वक़्त जमा करवा दी।

अपने मक़सदे ज़िंदगी की लगन और धुन में जहाँ दावत व तब्लीग़ के लिए आलमी तौर पर फ़िक्रें करते थे वहीं अपने घराने की तर्बियत की भी फ़िक्र में रहते थे। दावत व तब्लीग़ के लिए जहाँ लोगों को ख़ुरूज फ़ी सबीलिल्लाह के लिए तश्कील फ़रमाते रहे वहीं इल्मे दीन से महरूम इलाक़ों में मकातिब और मदारिस के ज़्यादा से ज़्यादा क़याम के लिए भी हर मुमकिन कोशिश व सई फ़रमाते थे और अपने असर व ताईद से उस कारे ख़ैर को तरक़्क़ी व तक़्वियत पहुंचाते थे।

वालिद साहब की ख़्वाहिश थी कि ज़िंदगी के हर शोबे में दीन ज़िंदा हो और फ़रमाते थे दावते दीन की जिद्दोजुहद का मक़सद भी यह है कि उम्मत में दीन की तलब पैदा हो, जिससे दीन के तमाम शोबे तरक़्क़ी-पज़ीर हों। इन जुमला फ़िक्रों में एक फ़िक्र अपने इलाक़े और बिरादरी के लोगों के मामलात सही इस्लामी नहिज पर लाने के लिए थी। इलाक़े के अवाम और अमाइद क़ौम को बराबर तवज्जोह दिलाते रहते थे। जिसके नतीजे में अपने इलाक़े के मुमताज़ उलमा और बड़े कारोबारी हज़रात के मुस्तक़िल मुज़ाकरे हुए और इस्लाह मामलात के लिए फ़िक्रमन्द हुए, मामलात की ज़ाहिरी और बातिन जो कुछ इस्लाह हुई उसमें वादिल साहब की तवज्जोह और फ़िक्रों का भी बड़ा हिस्सा है :

आँ लताफ़त पस बदान कज़ आप नीस्त
जुज़ अता मुब्दअ व हाब नीस्त

तर्जुमा : यह मेहरबानी आब व गुल की नहीं है, सिर्फ़ पैदा करने वाले और अता करने वाले की बख़्शिश है।

मर्कज़ निज़ामुद्दीन में मुतवातिर तीस साल तक बाद फ़ज्र मुफ़स्सल बयान

मर्कज़ निज़ामुद्दीन में बाद फ़ज्र होने वाला यह तवील और मुफ़स्सलबयान हमेशा ग़ैर मामूली एहमियत व हैसियत का हामिल रहा है। मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब (रह०) और उनसे पहले हज़रत मौलाना इलियास साहब (रह०) यह बयान खुद फ़रमाते थे। लेकिन हज़रत मौलाना इनामुल हसन साहब (रह०) ने अपने दौरे अमारत में यह भारी ज़िम्मेदारी खुद न क़बूल करते हुए वालिद साहब (रह०) को सौंप दी थी और हज़रत वालिद साहब (रह०) ने अपनी रिफ़ाक़त का हक़ भरपूर तरीक़े से अदा करते हुए उस बयान को मुतवातिर तीस साल तक जिस अज़्म व इस्तक़लाल और हिम्मत के साथ जारी रखा और उस अमानत का हक़ अदा किया वह दावत व तब्लीग़ की तारीख़ में फ़रामोश नहीं किया जा सकता।

हज़रत जी मौलाना इनामुल हसन साहब (रह०) को भी दावती व तब्लीग़ी मामलात व उमूर में आप पर बड़ा एतिमाद रहा। बिल खुसूस आपकी तक़रीरों पर जो दावत व तब्लीग़ से भरपूर होती थीं, बहुत इंशिराह व इत्मीनान था। कभी-कभी ख़्वास के मज्मे में भी आप उसका बरमला इज़्हार फ़रमा दिया करते थे। चुनांचे आपके इब्तिदाई दौर का वाक़िआ है कि एक मर्तबा दोनों हज़रात मस्जिद नबवी से निकल रहे थे। अरब मुमालिक में दावत व तब्लीग़ का काम करने वालों का एक मुंतख़ब मज्मा सामने था। हज़रत मौलाना इनामुल हसन साहब (रह०) ने उन हज़रात से मुसाफ़ा करके उस मज्मे से हज़रत वालिद साहब (रह०) का तआरुफ़ हाज़रत शैख़

उमर लिसान दावत व तब्लीग़ कहकर कराया। सवानेह मौलाना इनामुल हसन साहब कांधलवी जिल्द अव्वल, सफ़ा 305

हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब (रह०) के इंतिक़ाल के बाद मर्कज़ निज़ामुद्दीन में फ़ज्र के बाद वाला तवील बयान जब हज़रत वालिद साहब (रह०) के ज़िम्मे आया तो उसकी इब्तिदा में यह नौइयत हुई कि मर्कज़ में मौलाना के बयान के वक़्त एक जानिब शैख़ुल हदीस हज़रत मौलाना ज़करिया साहब नव्वरल्लाहु मरक़दहू तशरीफ़ फ़रमा होते और दूसरी जानिब हज़रत जी मौलाना इनामुल हसन साहब (रह०) तशरीफ़ फ़रमा होते। दोनों बुज़ुर्गों ने पंद्रह दिन तक बयान सुना, फिर तीन दिन तक दोनों बुज़ुर्ग हज़रत मौलाना इलियास साहब (रह०) की क़ब्र के पास बयान ख़त्म होने तक मुराक़िब रहे। जब हज़रत शैख़ुल हदीस साहब (रह०) सहारनपुर तशरीफ़ ले जाने लगे तो हज़त मौलाना इनामुल हसन साहब (रह०) से फ़रमाया कि मौलवी मुहम्मद उमर के बयान में तुम्हें चालीस दिन तक एहतिमाम से बैठना है। जब चालीस दिन पूरे हुए तो हज़रत शैख़ुल हदीस क़ुद्दस सिर्रहू सहारनपुर से तशरीफ़ ले आए, फिर एक हफ़्ता तक दोनों बुज़ुर्गों ने मुराक़िब होकर बयान सुना। उसके बाद हज़रत जी (रह०) से फ़रमाया कि अब बयान सुनने की ज़रूरत नहीं है, अल्लाह ने बात दुनिया में चला दी।

दूसरे मौक़े पर चन्द महीनों के बाद जब शैख़ुल हदीस क़ुद्दस सिर्रहू मर्कज़ में तशरीफ़ लाए। दौराने क़याम वालिद साहब (रह०) से मालूम किया कि किससे बैअत हो? वालिद साहब (रह०) ने जवाब में फ़रमाया कि पहले हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब (रह०) से बैअत था, अब मौलाना इनामुल हसन साहब (रह०) से बैअत हूँ। हज़रत शैख़ुल हदीस साहब (रह०) ने फ़रमाया कि प्यारे मेरे हाथ पर बैअत कर ले। चुनांचे हज़रत मौलाना इनामुल हसन साहब (रह०) के मशवरे से हज़रत शैख़ (रह०) से बैअत हो गए और हज़रत शैख़ुल हदीस साहब ने ख़िलाफ़त भी इनायत फ़रमा दी।

इस वाक़िये के बाद वालिद साहब को हज़रत शैख़ुल हदीस मौलाना ज़करिया साहब क़ुद्दस सिर्रहू से वालिहाना मुहब्बत हो गई और अक़ीदत व अज़्मत बढ़ गई। जिसकी बिना पर हज़रत शैख़ (रह०) से अपने ख़ास व आम हालात की इत्तिला और मशवरा लाज़मी बना लिया था यहाँ तक कि अपने घरेलू मसाइल का भी मशवरा ज़रूर लेते और सफ़र व हज़र में अपने हालात व कैफ़ियात के ख़ुतूत लिखने का भी मामूल रखते, बेरूनी मुमालिक के लम्बे सफ़रों की कारगुज़ारी के ख़ुतूत जिस तरह मर्कज़ हज़रत निज़ामुद्दीन (रह०) इरसाल फ़रमाते थे इसी तरह हज़रत शैख़ुल हदीस नव्वरल्लाहु मरक़दहू को भी तहरीर फ़रमाते, नीज़ मौलाना ने कई मर्तबा अपने ख़्वाबों में हुज़ूरे अकरम (सल्ल०) की ज़ियारत फ़रमाई है और दावते दीन के अमल के मुताल्लिक़ कई बार आप (सल्ल०) ने बशारत दी है तो यह ख़्वाब और उसकी हक़ीक़त हाल से हज़रत शैख़ (रह०) को ज़रूर मुत्तला फ़रमाते। हज़रत शैख़ ख़ुश होते और मुबारकबादी के साथ दुआइया कलिमात जवाब में तहरीर फ़रमाते। अलग़र्ज़ हज़रत शैख़ुल हदीस साहब नव्वरल्लाहु मरक़दहू के अलताफ़ व इनायात और तवज्जोहात के ख़ास मूरद बन गए थे।

वालिद साहब (रह०) के ख़ुसूसी मल्फ़ूज़ात

(1) हम अपने बारे में अल्लाह तआला से जो चाहते हैं, अल्लाह के बन्दों के साथ वही मामला इख़्तियार करें अगर चाहते हैं कि अल्लाह तआला हम पर रहम करे ता हम दूसरों पर रहम करें, अगर चाहते हैं कि अल्लाह तआला हमारी ग़लतियों को माफ़ कर दें तो हम दूसरों की ग़लतियों को माफ़ करें।

(2) अगर रंज व तकलीफ़ आए तो आदमी घबराए नहीं और अगर राहत व नेमत मयस्सर हो तो आदमी इतराए नहीं, इसलिए कि अल्लाह का ध्यान ज़रूरी है। इसको हासिल करने के लिए अल्लाह का ज़िक्र है, क़ुरआन पाक की तिलावत है, दुआएँ माँगना है।

(3) बाज़े लोगों से मुनासिबत होगी और बाज़े लोगों से नहीं होगी और इसमें कोई हरज नहीं है। इसलिए कि कोई आदमी ऐसा नहीं है जिससे सभी लोग मुहब्बत करते हैं। हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि०) ने बारे ख़िलाफ़त हज़रत उमर (रज़ि०) के हवाले फ़रमाया तो उस वक़्त यह अजीब बात इरशाद फ़रमाई :

اَحَبَّكَ مُحِبٌّ وَاَبْغَضَكَ مُبْغِضٌ

बहुत-से आदमी आपसे मुहब्बत करेंगे और बहुत-से नागवारी का इज़्हार करेंगे। हर एक आदमी अपने मिज़ाज की मुनासिबत से मामला करेगा, तो फिर हमारी तुम्हारी क्या हैसियत है? हम ऐसा क्यों समझें कि सारे लोग हमारे हाँ में हाँ मिलाएँ, हरगिज़ ऐसा नहीं होगा।

(4) औरतें आम तौर पर उल्टी बातें करती हैं, तो उनसे मशरा करो, लेकिन जो राय वह दें उसका उल्टा करो, जब उल्टी को उलट दोगे तो सीधी हो जाएगी, नफ़ी की नफ़ी इसबात का फ़ायदा देती है। पस मशवरा करो फिर उल्टा कर दो, सीधा हो जाएगा लेकिन यह मक़ूला क़ायदा कुल्लिया नहीं होगा अक्सरियत के हुक्म में आ सकता है।

(5) हालात से मुतास्सिर होना ऐब नहीं है, लेकिन इस क़दर मुतास्सिर होना कि अल्लाह का हुक्म टूट जाए यह ऐब है।

(6) अपने ग्रुप की नाहक़ तरफ़दारी करना और दूसरे ग्रुप की हक़ तल्फ़ी करना इसका नाम अस्बियत है, और यह अस्बियत आदमी को अल्लाह से दूर कर देती है।

(7) अपने आपको इतना भारी-भरकम न बनाओ (यानी दिल व दिमाग़ में बड़ाई का तसव्वुर न रखो) कि कोई भी बात या नसीहत करना चाहे तो न कर सके, बल्कि अपने आपको मुतवाज़ोअ बनाए रखो, ताकि हर कोई बेतकल्लुफ़ नसीहत और भली बात कह सके।

(8) बाज़ों को हक़ बात तस्लीम करने में अपनी नाक कटनी नज़र

आती है, इसलिए नाक इतनी लम्बी न बनाो कि कटने का सवाल पैदा हो।

(9) अल्लाह से लेने वाला बन और महबूबे ख़ुदा बन और बन्दों को देने वाला बन और महबूबे ख़ल्क़े ख़ुदा बन तो अल्लाह का भी महबूब होगा और बन्दों का भी महबूब होगा।

(10) जो गुनाहगार तौबा इस्तिग़फ़ार करके अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाए, वह अल्लाह तआला को ज़्यादा महबूब है उस शख़्स जो नेक अमल करके फ़ख़्र और बड़ाई में मुब्तला हो।

(11) अपने अंदर वजूह इकराम तलाश करोगे तो आपस में तोड़ होगा। और दूसरों के अंदर वजूह इकराम तलाश करोगे तो जोड़ होगा।

(12) अगर किसी को तक़वा यानी ख़ुदा का ख़ौफ़ और रातों का रोना मयस्सर है तो अल्लाह आला ऐसे लोगों का रौब दूसरों पर डाल देते हैं।

(13) इज्तिमाई काम में भले और बुरे सबको निभाकर चलना है। यह काम किसी को ग़लत और बुरा समझकर छाँटने का नहीं है। अगर छाँटने वाला अमल रहेगा तो आहिस्ता आहिस्ता लोग कम होते चले जाएंगे और उस छाँटने वाले में भी कोई कमज़ोरी होगी तो दूसरा उसको भी छाँट देगा, नतीजा यह होगा कि आदमी ही ख़त्म हो जाएंगे, काम और उसूल का महल भी नहीं रहेगा।

(14) शैतान और नफ़्स ये दोनों इंसान के दुश्मन हैं लेकिन बड़ा दुश्मन नफ़्स है, चूंकि शैतान को नफ़्स ही ने गुमराह किया था। उसका दावा 'अना ख़ैरा'' नफ़्सियात की वजह से था और बड़ाई का माद्दा बचपन ही से होता है। बच्चे को किसी मामले में सराहा जाए तो ख़ुश होता है और उसको निकम्मा और बेकार कहा जाए तो वह नाख़ुश होता है और यह बड़ाई का शमा है जो बचपन ही से होता है, यह बड़ाई का माद्दा बड़े मुजाहिदात के बाद आदमी में से सबसे आख़िर में निकलता है।

(15)बाज़े दीन का काम करने वाले आदमी बुज़ुर्गों से क़रीब होते हैं, मगर दिल से दूर होते हैं। और बाज़े आदमी दीन का काम दूर रहकर करते हैं, मगर बुज़ुर्गों के दिल से क़रीब होते हैं।

(16)शादी को कम ख़र्च वाली और सस्ती बनाओ तो ज़िना का वजूद मंहगा और मुश्किल हो जाएगा। और अगर शादी ज़्यादा ख़र्च वाली और मंहगी बनाओगे तो ज़िना सस्ता और आम हो जाएगा। मिज़ाज शरीअत यह है कि शादी को आसान, मुख़्तसर और सादी करो।

(17)ज़िंदगी में दीन को मुक़द्दम करो और दुनिया को मुअख़्ख़र, तो ज़िंदगी दीन बन जाएगी। और अगर दुनिया को मुक़द्दम किया और दीन को मुअख़्ख़र किया, तो ज़िंदगी दुनिया बन जाएगी।

(18)आपको यह नहीं कहता कि अपनी औलाद को मौलवी बनाओ या मास्टर बनाओ, जो चाहे बनाओ, मगर मशवरा यह दूंगा कि दीनदार बनाओ।

- फिर तशरीह फ़रमाते कि अगर मास्टर है मगर दीनदार है, तो घराने को जन्नत में ले जाएगा और अगर मौलवी है मगर बेदीन है, तो घराने को जहन्नम में पहुँचाएगा।

(19)अगर तू आसमान पर मक़ाम का तालिब है तो ज़मीन पर लोगों के साथ मुहब्बत व अख़्लाक़ का मामला कर, अगर बेजा सख़्ती करेगा तो तेरी बराबरी वाला तुझसे झगड़ा करेगा और अगर वह तुझसे छोटे और आजिज़ हैं, तो वह अंदर ही अंदर कुढ़ेंगे और उनके अंदर की कुढ़न तुझे ख़ुदा से दूर कर देगी।

(20)हज़रत उमर (रज़ि०) अपने ज़मानाए ख़िलाफ़त में अमीरों (गवर्नरों) को लिखा करते कि तुम महबूब बनने से बेरग़बत न बन जाना यानी यूँ मत समझ लेना कि लोग मुझसे मुहब्बत करें या न करें, मैं तो अच्छा ही हूँ। बल्कि अपने अख़्लाक़ से महबूब बनने की कोशिश करो।

(21)हज़रत अली (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि अगर किसी को मालूम करना हो कि आसमान में मेरा क्या मक़ाम है तो वह अपने

दोस्तों और मुताल्लिक़ीन को देख ले, अगर वे सब राज़ी और ख़ुश हैं तो तेरा आसमान में मक़ाम है और अगर वे तेरे साथ अंदर ही अंदर कुढ़ रहे हों तो तेरा आसमान में कोई मक़ाम नहीं है।

(22)अल्लाह तआला ने बाज़ों को सख़्त मिज़ाज बनाया है और बाज़ों को नर्म मिज़ाज बनाया है। उसमें निभाव का तरीक़ा यह है कि सख़्त मिज़ाज की सख़्ती पर सब्र व तहम्मुल से काम लिया जाए। सख़्त मिज़ाज के साथ सख़्ती करना झगड़े और इंतिशार का बाइस बनेगा और नर्मी करना मेल-मुहब्बत का बाइस बनेगा। जैसा कि दाँत सख़्त हैं मगर ज़बान अपनी नर्मी की बिना पर बत्तीस (32) दुश्मनों के दर्मियान महफ़ूज़ रहती है, लेकिन नर्मी इस क़दर भी मुफ़ीद नहीं है कि जो चाहे ग़लत अमल कराए और आदमी हर जगह इस्तेमाल हो जाए :

न हलवा बन कि चट कर जाएं भूखे
न कड़वा बन कि जो चक्खे सो थूके

(23)नेमतों का हुसूल ख़ुदा की रज़ा की दलील नहीं है, इसी तरह तकलीफ़ों का आना भी ख़ुदा के नाराज़ होने की दलील नहीं है। सिर्फ़ तहक़ीक़ यह करना है कि हमारी ज़िंदगी ख़ुदा और उसके रसूल के तरीक़े के मुताबिक़ है या नहीं है।

(24)फ़रमाँबरदार को नेमतें राज़ी होकर दी जाती हैं, जैसा कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम और दाऊद अलैहिस्सलाम के लिए। और नाफ़रमान को नेमतें नाराज़ होकर दी जाती हैं, जैसा कि फ़िरऔन और क़ारून के लिए। जैसे तोते को पिंजरे में नेमतें दी जाती हैं ख़ुश होकर, दिल बहलाने के लिए और चूहे को पिंजरे में नेमतें दी जाती हैं नाख़ुश होकर, दिल की भड़ास निकालने के लिए।

(25)नेमतों में शुक्रगुज़ार कामयाब है, और (*फ़रिहुन फ़ख़ूर*) यानी इतराने वाला नाकाम है। और तकलीफ़ों में सब्र करने वाला

कामयाब है, और (यऊसुन कफ़ूर) नाशुक्री करने वाला नाकाम है।

(26)आख़िरत के इम्तिहान की कामयाबी मौक़ूफ़ है दुनिया के इम्तिहान की कामयाबी पर। दुनिया में इम्तिहान भले बुरे हालात लाकर किया जाता है। हर हाल में ख़ुदा के हुक्म को पूरा करना कामयाबी की दलील है।

(27)अंबिया अलैहिस्सलाम का दर्द व ग़म आदमी को काम के लायक़ बनाता है। यह बेचैनी दीन का काम करवाएगी। कम सलाहियत वाले से भी, ज़्यादा सलाहियत वाले से भी, कम माल वाले से भी, ज़्यादा माल वाले से भी, कम इल्म वाले से भी, ज़्यादा इल्म वाले से भी, चूंकि काम लेने वाला अल्लाह तआला है।

(28)हर काम तरीक़े से तदरीहन होता है। दीन भी तरीक़े की मेहनत से हासिल होगा अगर दीन का दरख़्त तैयार करना हो तो पहले दावत की ज़मीन हमवार करो, ईमानियात की जड़ लगाओ, तालीम के हल्क़ों का पानी दो और क़ुरआन की खाद दो और गुनाहों से बचने की बाड़ लगाओ और ज़िक्र व तिलावत और रोना धोना, बिलबिलाना, तिलमिलाना, गर्म-गर्म आँसू का बहाना, ठंडी आहों का भरना उसकी फ़िज़ा हो और अरकाने इस्लाम का तना हो और मुआशिरत और मामलात को अद्ल व इंसाफ़ के साथ चलाने का दरख़्त हो और उसके ऊपर अख़्लाक़ के फल हों और अख़्लाक़ के फलों में इख़्लास का रस हो, तब दीन का दरख़्त तैयार होगा और लोग इस्तिफ़ादा करेंगे।

(29)दीन में पुख़्तगी और जमाव हासिल करने के लिए हालात और रुकावटों का आना ज़रूरी है। यह हालात और रुकावटें अंडे के छिल्के की तरह ज़रूरी हैं, जिस तरह अंडे से चूज़ा बनने के लिए अंडे का छिल्का ज़रूरी है। बग़ैर छिल्के के सिर्फ़ ज़र्दी और सफ़ेदी से बीस साल में भी चूज़ा नहीं बनेगा, इसी तरह दीन में जमाव हासिल करने के लिए हालात और रुकावटों का

छिल्का ज़रूरी है, अंडे में चूज़ा बनने के बाद ही छिल्का टूटता है, इसी तरह दीन में जमाव हासिल होने के बाद ही हालात का छिल्का टूटता है।

(30)जोश के साथ होश और होश के साथ जोश ज़रूरी है। ना नौजवानों को जोश बहुत होता है, उनको होश की लगाम देनी पड़ती है। और बड़ी उम्र वालों में जोश का धक्का देना पड़ता है, दोनों ही काम ज़रूरी हैं।

(31)हर नेक अमल के अच्छे असरात पूरे आलम पर ग़ैर महसूस तरीक़े से असरअंदाज़ होते हैं। बशर्ते कि यह अमल नहज नबवी पर हो। मानो नेक अमल का असर आलमगीर होता है जिस तरह एक बड़े हौज़ में पाँच डोल पानी डालने से उस हौज़ की सतह ग़ैर महसूस तरीक़े पर चहार जानिब कुछ न कुछ बढ़ती है और पाँच डोल निकालने से पूरे हौज़ की चहार जानिब से पानी कम होता है, चाहे हौज़ की एक ही जानिब से डोल डाले या निकाले गए हों।

(32)दूसरों के जान व माल से मुस्तग़ना होना और अपने जान व माल को दूसरों के लिए इस्तेमाल करना जोड़ और इज्तिमाइयत का बाइस होगा।

(33)रूहानी नेमत जिस पर इतराहट पैदा हो जाए, वह रूहानी नेमत नहीं रहती, बल्कि नफ़्सानी बन जाती है।

(34)राहत व नेमत बाइसे बरकत भी है और वक़्फ़ा मोहलत भी, अगर राहत व नेमत फ़रमाँबरदारी के साथ है तो यह बाइसे रहमत व बरकत है और अगर नाफ़रमानी के साथ है तो यह वक़्फ़ाए मोहलत है।

(35)नमाज़ पढ़ने पर काम बन जाना और इस वजह से अपने आपको बुज़ुर्ग और पाक साफ़ तसव्वुर करना तनज़्ज़ुल का बाइस है, चूंकि इसमें आदमी का कमाल नहीं है, बल्कि तासीर अमल का इज़्हार और वादा ख़ुदावंदी का इतमाम है। बारी तआला का फ़रमान है (*ला तुज़क्कू अनफ़ुसकुम*) अपने आपको

पाक साफ़ न समझो। जो गुनाहगार तौबा व इस्तिग़फ़ार करके अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाए वह अल्लाह को ज़्यादा महबूब है उस शख़्स से जो नेक अमल करके फ़ख़्र और बड़ाई में मुब्तला हो।

(36)मुजाहिदा बेतुकी तकलीफ़ों के उठाने का नाम नहीं है। यह जोगियों वाला मुजाहिदा है जो शरीअत में मत्लूब व महमूद नहीं है, जैसे सर्दी में बचाव का सामान है और इस्तेमाल न करना, यह मुजाहिदा नहीं है, इसमें सवाब भी नहीं बल्कि गुनाह है। मुजाहिदा वह बनता है कि खुदा का हुक्म और दीन का तक़ाज़ा समाने आए जो नफ़्स के ख़िलाफ़ हो तकलीफ़ उठाकर उसको पूरा करे लेकिन तकलीफ़ की हद यह है कि खुदा का हुक्म टूटने न पाए, यह मुजाहिदा इंसान के लिए बाइसे तरक़्क़ी बनेगा।

(37) अल्लाह तआला ने जिसको नर्म बनाया है वह नर्म रहेगा, लेकिन नर्मी का ग़लत इस्तेमाल नहीं होना चाहिए और जिसको सख़्त बनाया है वह सख़्त रहेगा, मगर उसकी सख़्ती से दिल-बर्दाश्ता न होना चाहिए, बल्कि इज्तिमाइयत और जोड़ बरक़रार रखने के लिए एक-दूसरे को निभाना ज़रूरी है। सिद्दीक़े अकबर (रज़ि०) जमाली थे और फ़ारूक़े आज़म (रज़ि०) जलाली, मगर एक-दूसरे को निभाते थे। सिद्दक़े अकबर (रज़ि०) ने मानईन ज़कात और मुरतदीन के मुक़ाबले का हुक्म दिया, तो फ़ारूक़े आज़म (रज़ि०) ने मशवरा दिया कि अज़वाजे मुतह्हरात और औरतों, बच्चों की हिफ़ाज़त का मसला है। उस वक़्त सिद्दक़े अकबर (रज़ि०) ने जलाल में आकर सख़्ती के साथ फ़ारूक़े आज़म (रज़ि०) को फ़रमाया कि جبار في الجاهلية وخوار في الاسلام इस्लाम से पहले बड़े जाबिर और जरी थे और इस्लाम में बुज़दिल बन रहे हो। तो फ़ारूक़े आज़म (रज़ि०) ने सख़्ती बर्दाश्त की और सिद्दीक़े अकबर (रज़ि०) का हुक्म तस्लीम कर लिया। एक दूसरे मौक़े पर सिद्दीक़े

अकबर (रज़ि०) ने मौजूदा सहाबा किराम (रज़ि०) के मशवरे से दो असहाब को ज़मीन की दस्तावेज़ लिख दी। जब यह दो सहाबी (रज़ि०) फ़ारूक़े आज़म (रज़ि०) के दस्तख़त के लिए पहुंचे, फ़ारूक़े आज़म (रज़ि०) ने सख़्ती के साथ दस्तावेज़ को फाड़ दिया और कह दिया कि यह ज़मीन आम्मतुल मुस्लिमीन की है, सिर्फ़ अबू-बक्र (रज़ि०) का हक़ नहीं है। जब उन दोनों हज़रात ने सिद्दीक़े अकबर (रज़ि०) से फ़ारूक़े आज़म (रज़ि०) की सख़्ती की कैफ़ियत बयान की और कहा कि अमीरुल मोमिनीन आप हैं या उमर? तो सिद्दक़े अकबर (रज़ि०) ने क्या ही उम्दा बात इरशाद फ़रमाई कि अमीर बनने का इस्तहक़ाक़ तो उमर का था, मगर यह बार मेरे सर पर थोप दिया है। अलग़र्ज़ अल्लाह ने जिसको सख़्त मिज़ाज बनाया वह सख़्त ही रहेगा, मगर इज्तिमाइयत और जोड़ बरक़रार रखने के लिए तहम्मुल ज़रूरी है।

(38) सिफ़ली निज़ाम भी अलवी निज़ाम की तरह ज़रूरी है, लेकिन उम्दा और बेहतर तरीक़ा यह है कि सिफ़ली निज़ाम के अलावा अलवी निज़ाम में भी जुड़ने वाला बने, लेकिन सिफ़ली निज़ाम को भी बेकार न समझा जाए, चूंकि उनका बन्दोबस्त में लगना पूरे मज्मे के लिए राहत पहुंचाने का क़वी ज़रिया है। अगर सिफ़ली निज़ाम अमल में न आया, तो अलवी निज़ाम धरा रह जाएगा और मज्मा परेशानियों में मुब्तला होगा और उसके बिना मज्मा जोड़ा भी नहीं जा सकता है (सिफ़ली निज़ाम यानी मज्मे को राहत पहुंचाने वाले असबाब में लगना, खाने पीने, लाइट और शामियाने वग़ैरह का बन्दोबस्त और अलवी निज़ाम, यानी तालीम गश्त, बयान जमाअत में निकलना वग़ैरह)।

दीन व दावत और दाओ की दिल-नशीन तशरीह

इंसान के तजुर्बे से ज़्यादा पक्की बात

(1) जिस तरह अल्लाह तआला ने चीज़ों में तासीर रखी है उसी तरह अल्लाह तआला ने आमाल में भी तासीर रखी है, लेकिन चीज़ों की तासीर का अल्लाह तआला ने तजुर्बा करा दिया और आमाल की तासीर का अल्लाह ने वादा किया है, इंसान के तजुर्बे से ज़्यादा पक्की और सच्ची बात अल्लाह का वादा है, इंसान के तजुर्बे के ख़िलाफ़ हो सकता है, लेकिन अल्लाह के वादे के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता है।

अस्ल काम

(2) अगर दावते दीन का काम नहजे नबवी के मुताबिक़ होगा, तो नबियों के मुल्क में औलिया पैदा होंगे और अगर दावते दीन का अमल न होगा, तो नबियों के मुल्क में दहरिये पैदा होंगे।

ज़िक्रे-रसूल के साथ फ़िक्रे-रसूल

(3) ज़िक्रे-रसूल (सल्ल०) के साथ फ़िक्रे-रसूल भी ज़रूरी है, रबीउल अव्व का महीना सिर्फ़ ज़िक्रे विलादत के लिए नहीं है, बल्कि आप (सल्ल०) वाली फ़िक्र के हुसूल के लिए भी है। इसलिए एक ही महीना ज़िक्र के लिए काफ़ी समझा जाए बल्कि क़दम-क़दम पर आप (सल्ल०) का ज़िक्र और आप वाली फ़िक्र ज़रूरी है।

(4) महज़ तब्लीग़ में फिरना नहीं है, बल्कि अपने अंदरून में उसकी हक़ीक़त को फिराना है। फ़क़त औक़ात मत्लूब नहीं हैं, बल्कि औसाफ़ का हासिल करना ज़रूरी है।

फ़तवा और तक़वा क्या है

(5) फ़तवा हुदूदे शरीअत को बतलाना है और तक़वा मिज़ाजे शरीअत की निशानदेही करता है, सिद्दीक़े अकबर (रज़ि०) और फ़ारूक़े आज़म (रज़ि०) ने मिज़ाज शरीअत को बतलाया है और उसमान ग़नी (रज़ि०) और अली मुर्तज़ा (रज़ि०) ने हुदूदे शरीअत को बतलाया है।

उसूल में लचक है

(6) दावत व तब्लीग़ के मरव्वजा उसूल में लचक है। यह उसूल मंसूस नहीं हैं कि उसमें तब्दीली न हो, हालात और मौक़े व महल के एतिबार से उसमें लचक की गुंजाइश है।

असल यह है कि आदमी उसूल पर आ जाए

(7) किसी जगह पर दावत के काम में बेउसूली हो रही हो तो उस पर एक दम ब्रेक मत लगाओ। इससे उसूल आता नहीं है और काम थोड़ा बहुत जो हो रहा था वह ख़त्म हो जाता है। इसी तरह किसी आदमी से बेउसूली हो रही हो, तो उसे भी खुश उस्लूबी से उसूल पर लाने की कोशिश करो। उसको काम से काटने और दूर करने का मत सोचो, इंफ़िरादी तौर पर बेउसूल हो रह हो या इज्तिमाई तौर पर, इस अंदाज़ से बेउसूली को ख़त्म करना है कि हमारा भाई और काम भी बाक़ी रहे और दीन का काम और हमारा भाई भी उसूल पर आ जाए।

तरीक़ा इज्तिमाइयत

(8) दीनी दावत का काम इज्तिमाई है। इसलिए एक-दूसरे के साथ निभाव के लिए मेल-मुहब्बत और अख़्लाक़ वाला मामला ज़रूरी है, खुसूसन अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त की जाए, चापलूसी, खुशामद और मदाहिनत करके मुहब्बत हासिल करना खुदा को पसन्द नहीं है,

चूंकि चापलूसी से जो मुहब्बत हासिल की जाती है। इसमें अपने वालों की तरफ़दार और ग़ैरों की हक़तल्फ़ी होती है। इसलिए इन तमाम नज़ाकतों की रिआयत इज्तिमाइयत को बरक़रार रखने के लिए ज़रूरी है।

सिर्फ़ मेहनत बाक़ी है

(9) दुनिया की कोई यूनीवर्सिटी, कालिज या मदरसा इम्तहानात के पर्चे ज़ाहिर और आउट नहीं करता है और सवालात का पर्चा आउट हो जाने पर भी कोई तालिबे इल्म फेल हो जाए तो वह निहायत फिसड्डी और नाअहल समझा जाएगा और अल्लाह तआला ने अपने करम से सवालात ज़ाहिर और आउट कर दिए और मज़ीद यह करम किया कि जवाबात भी बतला दिए, सिर्फ़ हमें इस दुनिया में तैयारी करनी है।

हयाते दीन के लिए अहम चीज़

(10) खुदा की ताक़त के मुक़ाबले में दुनिया की सारी ताक़तें मकड़ी का जाला हैं और खुदा की ख़ज़ानों के मुक़ाबले में दुनिया के ख़ज़ाने मच्छर का पर हैं। खुदा क ताक़त और ख़ज़ानों से ताल्लुक़ दीन की वजह से होगा। उस अज़ीम दीन को ज़िंदा करने के लिए मुल्क व माल और ओहदे की ज़रूरत नहीं है, बल्कि इसके लिए इंसान का मुजाहिदा, क़ुरबानी और उसके हौसले की ज़रूरत है।

लियाक़त शर्त नहीं है

(11) दीन के हुसूल के लिए मुजाहिदा और तकलीफ़ें उठाने के आदी बनो। बेकस और बेबस इंसान भी क़ुरबानी और मुजाहिदा इख़्तियार करके खुदा और उसके दीन से ताल्लुक़ पैदा करेगा तो खुदा उसके हाथों भी दीन को ज़िंदा फ़रमा देंगे। खुदा के नज़दीक ओहदा, मुल्क व माल और लियाक़त शर्त नहीं है, सिर्फ़ खुदा की रज़ा और उसकी नज़रे करम शर्त है। इसी लिए नबी अकरम (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मैं बादशाहत वाली नुबूवत नहीं चाहता, बल्कि फ़क़ीरी वाली नुबूवत चाहता हूँ।

शैतान का धोखा

(12) दावत का काम करने वालों को बाँझ बनकर नहीं मरना है, बाँझ के मानी यह हैं कि फ़लाँ आदमी मर गया तो दीन का काम बन्द हो गया। ऐसे अंदाज़ से काम लिया जाए कि दूसरे काम करनेवाले बनें। आदमी ख़ूब काम करे और अपने आपको थका दे, लेकिन दूसरे काम करनेवाले आदमी न बनाए, तो यह उसके लिए शैतान का धोखा है।

(13) ख़ुदा अपनी ज़ात से छुपा हुआ है, मगर दलाइल के एतिबार से निराला है। ख़ुदा के मुंकर को ख़ुदा की निशानियाँ समझकर क़ाइल करो। फिर ख़ुदा की मर्ज़ी बताकर दीन की तरफ़ माइल करो, फिर दावत के काम पर खड़ा करके घायल करो।

(14) आज का ग़ैब मौत पर मुशाहिदा होगा और आज का मुशाहिदा मौत पर छुप जाएगा, मौत के वक़्त ईमान व आमाल की क़ीमत और तासीर को तस्लीम करना अल्लाह और उसके रसूल की ख़बर को तस्लीम करना नहीं है, बल्कि अपनी नज़र को तस्लीम करना है।

मक़सदे जिहाद क्या है?

(15) हुज़ूर (सल्ल०) ने पाकीज़ा तरीक़ा आम करने के लिए सहाबा की जमाअतों को बाहर भेजा और हिदायत फ़रमाई कि हमारा मक़सद लड़ाई नहीं है, दीन में रुकावट पैदा करने वालों की मिसाल जिस्म के फोड़ों की है। उसका अंदर से इलाज दावत के जोशान्दा से करना है और बाहर से अख़्लाक़ का मरहम लगाना है। उसके बावजूद फोड़े ज़हरीले और लाइलाज हों तो फिर उनका आपरेशन करना है। जिस तरह मक्की ज़िंदगी में अंदर का इलाज दावत के जोशान्दा से और बाहर का इलाज अख़्लाक़ के मरहम से किया गया, मगर फोड़े ज़हरीले और लाइलाज होने की वजह से बद्र में उनका आपरेशन करना पड़ा। बहरहाल मक़सद लड़ाई नहीं है,

पाकीज़ा तरीक़ा पूरी दुनिया में आम करने के लिए दर्मियान में आने वाली रुकावटों का दिफ़ाअ करना मक़सूद है।

दीन कैसे फैलेगा?

(16) मौजूदा आलम फ़ितनों का दौर है। कहीं झूठी नुबवत का दावा है, कहीं हदीस का इंकार है, कहीं हज़रत अली की मुहब्बत में बेइंतिहा ग़ुलू है, बाज़ों का ख़्याल है कि इस्लामी हुकूमत होगी तो दीन फैलेगा। उनके बरख़िलाफ़ हम यूँ कहते हैं कि हिक्मत होगी तो दीन फैलेगा, और हिक्मत का तक़ाज़ा यह है कि क़ुरआन व हदीस की रू से अस्ल दावत दीन को इख़्तियार किया जाए, जिसमें तमाम फ़ितनों और इख़्तिलाफ़ात का हल है।

रात दिन का तजुर्बा और मुशाहिदा

(17) कायनात का ख़ालिक़ और मालिक ज़ाते वाहिद है, नीज़ इंसानों का दुनिया में आने का तरीक़ा भी वाहिद है और इस दुनिया से हर एक के जाने का तरीक़ा वाहिद है, दोनों का दुनिया में अम्न व राहत हासिल करने का तरीक़ा भी वादिह है जिसको क़ादिरे मुतलक़ वाहिद ज़ात ने तज्वीज़ फ़रमाया है। जो इंसान अपनी अक़्ल से तरीक़ा हयात तज्वीज़ करता है, उसके ग़लत होने का तजुर्बा और मुशाहिदा रात दिन होता रहता है। इसलिए मावरा अक़्ल बातों को समझने के लिए अंबिया किराम का सहारा लेना पड़ता है, जिनका ताल्लुक़ वह्य से है।

क़ुरबानी की सीढ़ी या चबूतरा

(18) दीन का काम जिस क़द्र हो रहा है लायक़े शुक्र है, लेकिन ज़्यादा काम बाक़ी है। इसकी फ़िक्र ज़रूरी है। लिहाज़ा दीन की जिद्दोजुहद करने वालों के लिए क़ुरबानी की मिक़्दार बढ़ती रहनी चाहिए। क़ुरबानी की सीढ़ी बनाओ, चबूतरा न बनाओ वर्ना नए काम करने वाले रुक जाएंगे। जिस तरह हुज़ूर (सल्ल०) ने जंगे उहुद

के मौक़े पर ज़ख़्म ख़ुरदा सहाबा (रज़ि०) को साथ लिया और लश्करे कुफ़्फ़ार का पीछा किया। दूसरे ताज़ा दम सहाबा को साथ नहीं लिया। जब क़ुरबानी देने वालों की मिक़्दार को बढ़ाया तब अल्लाह तआला की मदद शामिले हाल हो गई।

हुसूल हिदायत के लिए दुआ के साथ मेहनत भी ज़रूरी है

अल्लाह तआला ने तमाम इंसानों के हालात को आमाल से जोड़ा है और आमाल को आज़ा से और आज़ा को दिल से जोड़ा है और दिल ख़ुदा तआला के क़ब्ज़े में है। अगर दिल का रुख़ अल्लाह की तरफ़ हो जाए तो आमाल अल्लाह के लिए होकर दुनिया और आख़िरत के हालात बनेंगे, और अगर दिल का रुख़ ग़ैरुल्लाह की तरफ़ हुआ तो आमाल ग़ैरुल्लाह के लिए होकर हालात ख़राब होंगे यहाँ तक कि सख़ी, शहीद और क़ारी भी हो, तो दोज़ख़ में जाएगा। लिहाज़ा दिल का रुख़ अल्लाह की तरफ़ हो। इसे हिदायत कहते हैं जो एक नूर है, जो इंसान के दिल में डाला जाता है। जैसे ख़ारजी रौशन चाँद सूरज के है, उससे चीज़ों का नफ़ा-नुक़सान नज़र आता है और बातिनी आमाल के नफ़ा व नुक़सान को बतलाने के लिए नूरे हिदायत है। दिल में हिदायत का नूर हो तो अमानत और सच्चाई में नफ़ा नज़र आता है और ख़ियानत और झूठ में नुक़सान नज़र आता है। इससे मालूम हुआ कि इंसान को सबसे ज़्यादा ज़रूरत हिदायत की है और हिदायत ख़ुदा के क़ब्ज़े में है :

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ

ख़ुदा से हिदायत लेने के लिए सिवाय दुआ के और कोई रास्ता नहीं है, इसलिए सबके लिए मुश्तरका दुआ सूरह फ़ातिहा में हिदायत की तज्वीज़ की, रोज़ाना नमाज़ में क़रीबन पचास मर्तबा हिदायत की दुआ माँगना ज़रूरी क़रार दिया है। اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ (*इह्दि-*

नस्सिरातल मुस्तक़ीम), लेकिन यह दुनिया दारुल असबाब है, इसलिए दुआ के साथ हिदायत के हुसूल के लिए मेहनत करना भी ज़रूरी है, अगर मुजाहिदा किया जाए तो अल्लाह की तरफ़ से हिदायत का वादा है : وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (*वल्लज़ी-न जाहदू फ़ीना ल-नहदियन्नहुम सुबुलना*), एक तरफ़ मुजाहिदा, दूसरी तरफ़ दुआ हो तो अल्लाह की ज़ात से हिदायत मिलने का क़वी ज़रिया है :

जुज़ नियाज़ व जुज़ तज़रअ राह नीस्त
ज़ीन तक़ल्लुब हर क़ल्ब आगाह नीस्त

तर्जुमा : दुआ और आजिज़ी के सिवा कोई रास्ता नहीं है
इस उलट-फेर से दिल ख़बरदार नहीं है।

तख़्लीक़े कायनात की चार मस्लेहतें

कायनात की पैदाइश की मस्लेहतों में से एक मस्लेहत यह है कि इंसान का बदन कायनात की चीज़ों से बनाया गया है, तो कायनात की पैदाइश इंसान के जिस्म की तर्बियत का ज़रिया है। दूसरी मस्लेहत खुदा की मारफ़त की उसमें निशानियाँ हैं। खुदा की ज़ात दिखाई नहीं देती, उसके लिए ज़मीन व आसमान, चाँद, सूरज, सितारे, इंसानों की आवाज़ों और चेहरों का अलग-अलग होना, रात और दिन का होना, ऐसी बेशुमार निशानियाँ मज़ाहिरे क़ुदरत हैं जिससे इंसान खुदा की मारफ़त हासिल कर सकता है मानो कायनात की पैदाइशे सिलसिला मारफ़त खुदावंदी है। तीसरी मस्लेहत कायनात की पैदाइश आज़माइश के लिए है कि इंसान कायनात की चीज़ों में उलझ कर रह जाता है या अहकामे खुदावंदी की रियायत में चीज़ों को क़ुरबान करता है। चौथी मस्लेहत कायनात की चीज़ें मुल्क व माल, सोना व चाँदी, रुपया व पैसा, ओहदा व डिग्री, दुकान व खेत, यह ज़र्फ़ यानी बर्तन के क़ायम मक़ाम हैं। इस बर्तन में वह मिलेगा जो खुदा की तरफ़ से डाला जाएगा। फ़िरऔन के मुल्क व

माल के ज़र्फ़ में नाकामी डाली गई और सुलैमान अलैहिस्सलाम के मुल्क व माल के ज़र्फ़ में कामयाबी डाली गई तो इज़्ज़त व ज़िल्लत और कामयाबी और नाकामी का मेयार बर्तन का छोटा-बड़ा होना या कम या ज़्यादा होना नहीं है बल्कि मेयार इंसान के बदन से निकलने वाले आमाल हैं, उसके मुताबिक़ खुदा के फ़ैसले होते हैं।

आज की सबसे बेक़ीमत मखलूक़

इंसान ने पाख़ाना से लेकर चाँद तक का रिसर्च किया, मगर अपने आपको नज़र-अंदाज़ किया। डाक्टरों ने पाख़ाना का रिसर्च किया और साइंसदानों ने चाँद का रिसर्च किया, लेकिन इंसान ने अपना रिसर्च नहीं किया। इसका नतीजा यह निकला कि सबसे ज़्यादा बेक़ीमत मख़्लूक़ आज दुनिया में इंसान है। मकान, दुकान और ज़मीन के टुकड़ों के लिए इंसानों को मारा जाए और मंसूबाबन्दी की स्कीम इंसानों पर थोपकर ख़ल्क़ को आइंदा दुनिया में आने से रोकने की कोशिश की जाए, हालाँकि दरख़्त के लिए क़ानून नहीं कि ऐसा दरख़्त लगाओ जिसमें सिर्फ़ तीन फल हों या ऐसा खेत लगाव जिसमें पैदावार सिर्फ़ तीन मन हो, लेकिन इंसान बेक़ीमत हैं कि तीन से ज़्यादा दुनिया में न आएँ, क्योंकि इंसान ने अपनी क़ीमत को खो दिया हालाँकि अल्लाह तआला ने इंसान को इतना क़ीमती बनाया था कि फ़रिश्तों से सज्दा कराया और उन पर फ़ज़ीलत दी। जब इंसानों ने हैवानों जैसे काम किए तो इंसानों से इंसान की ज़िंदगी उजड़ने लगी और इंसान बेक़ीमत होता चला गया।

मौत के बाद-ज़िन्दगी की पुख़्ता दलील

रूह इंसानी दायमी और अबदी है। महज़ रूह के मक़ामात तब्दील होते हैं। आलमे अरवाह से जिस्म में और जिस्म से आलमे बरज़ख़ में और आख़िर मक़ाम आलमे आख़िरत होगा। और जिस्म इंसानी कायनात की चीज़ों से तैयार हुआ है। इसके अज्ज़ा पूरी

कायनात में बिखरे हुए थे। सूरज की किरणों और चाँद की रौशनी में, सितारों की तासीर और हवाओं की लहरों में, बारिश के क़तरात और ज़मीन के ज़र्रात में और खाद की गन्दगियों में बारी तआला के निज़ाम ने सारे अज्ज़ा को यकजा करके ख़ुराक और ग़िज़ा तैयार की। मर्द व औरत ने इस्तेमाल की और मनी बनी और उसी से इंसानी बदन तैयार किया और उसकी रूह आलमे अरवाह से आई और इंसान वुजूद में आया, जिसकी हद मौत है। फिर जिस्म फ़ना कर दिया जाएगा और बरोज़ क़ियामत दोबारा ज़र्रात को जमा करके वुजूद बख़्शा जाएगा। जो ख़ुदा एक बार कायनात के ज़र्रात जमा करके पैदा कर चुका है, उसके लिए दूसरी मर्तबा पैदा करना निहायत आसान है, करोड़ों इंसान इस हक़ीक़त से बेख़बर हैं और जो बाख़बर हैं वे भी ग़फ़लत का शिकार हो जाते हैं अलग़र्ज़ मौत के बाद ज़िन्दगी यक़ीनी है।

छीनने का मिज़ाज और देने का मिज़ाज

मुहम्मद (सल्ल०) के पाक तरीक़े में ईसार व क़ुरबानी का जज़्बा पैदा करने की तालीम है जिससे इंसानों में अता और बख़्शिश यानी बाँटने और तक़्सीम करने का मिज़ाज पैदा होता है और यह मिज़ाज माबैन मुहब्बत व उल्फ़त, हमदर्दी, जाँनिसार, वफ़ा व एतिमाद में इज़ाफ़ा करता है जो अम्न व अमान और दारैन में तरक़्क़ियात का बाइस है। बरख़िलाफ़ अहले दुनिया के कि उनका मिज़ाज मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से लूटने और छीनने का, चोरी, डकैती, सूद, रिश्वत, मक्र व फ़रेब और नाप-तौल में कमी करके जिससे आपस में अदावतों और ज़्यादतियों के साथ इंतिशार और परेशानियों में इज़ाफ़ा होता रहता है। और दुनिया जहन्नमकदा बन जाती है, मसलन सूद के बारे में इंसानों का ख़ालिक़ फ़रमाता है कि (*यमहक़ुल्लाहुर्रिबा व यरबिस्सदक़ात*) अल्लाह तआला सूद को मिटाता है और सदक़ात को बढ़ाता है, मगर इंसान में जराइम के जरासीम और हैवानात के सिफ़ात पैदा हो जाने के वजह से सूद में माल का बढ़ना और

सदक़ात में माल का घटना दिखाई देता है। अगर मेहनत मुजाहिदा करके जराइम से मुज्तनिब होकर हैवानात की सिफ़ात दूर की जाए और फ़रिश्तों वाली सिफ़ात पैदा की जाए, तो उस वक़्त वही दिखाई देगा जो ख़ालिक़ व मालिक फ़रमाता है, यानी सदक़ात में माल का बढ़ना और सूद में माल का घटना साफ़ तौर पर मालूम होगा।

दुआ और मेहनत में तताबिक़ ज़रूरी है

दुआ और मेहनत में मुवाफ़िक़त ज़रूरी है। ढाई तोला की ज़बान नबियों वाली दुआ में मसरूफ़ है। कहता है : *इह्दिनस्सिरातल मुस्तक़ीम* और बाज़ार में *मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ॉल्लीन* वाले तरीक़े पर हरकत करता है, तो दुआ और मेहनत की जाए। *वल्लज़ी-न जाहदू फ़ीना लनह्दियन्नहुम सुबुलना* अल्लाह के रास्ते की मेहनत करो, रास्ता दूर से बन्द नज़र आता है। चलना शुरू करो खुलता जाएगा। दुआ और मेहनत में मुवाफ़िक़त हो जाएगी और नेक समात मुरत्तब होंगे।

क़ियामत के दिन ख़ुदा का मामला फ़ज़्ल का होगा या अद्ल का

क़ियामत के दिन ख़ुदा का मामला फ़ज़्ल का होगा या अद्ल का, राब्ता का होगा या ज़ाब्ता का, मेहरबानी का होगा या क़ानून का। अगर मुसलमानों के साथ अद्ल का मामला हुआ तो गुनाहों के बक़द्र जहन्नम में रखा जाएगा ताकि गुनाहों से पाक साफ़ कर दिए जाएँ और अगर फ़ज़्ल का मामला हुआ तो सीधा जन्नत में भेज दिया जाएगा। अद्ल का तक़ाज़ा है कि नेकियों को ज़्यादा किया जाए। अद्ल का हासिल ख़ौफ़ है और फ़ज़्ल का हासिल उम्मीद है। ख़ौफ़ इस क़द्र भी मुफ़ीद नहीं है जो हलाक का बाइस बने और उम्मीद भी इस क़द्र मुफ़ीद नहीं है कि गुनाहों पर जरी कर दे, बल्कि उम्मीद और ख़ौफ़ के दर्मियान का नाम ईमान है।

الايمان بين الخوف والرجاء

राज़ की बात अलल एलान आलम के सामने

कोई आदमी राज़ और दाव की बात नहीं बतलाता है बल्कि छुपाता है। हम अलल एलान और ढंके की चोट पर पूरे आलम में बसने वाले इंसानों को बतलाते हैं कि अगर लोगों में दो बातें पैदा हो जाएँ तो ज़मीन व आसमान का ख़ालिक़ फ़रमाता है कि हम तुम्हें बर्बाद नहीं करेंगे बल्कि आबाद करेंगे, एक अल्लाह के सामने खड़ा होने का ख़ौफ़ दिल में पैदा हो जाए, दूसरे बुरे आमाल पर अल्लाह की वईदों का डर पैदा हो जाए।

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ

वलनुस्किनन्नकुमुल अर-ज़ मिन बादिहिम ज़ालि-क लिमन ख़ा-फ़ मक़ामी व ख़ा-फ़ वईद। इंसानों में आख़िरत का फ़िक्र और ख़ौफ़ पैदा करने क लिए पूरे आलम में नक़ल व हरकत करके उसका ख़ूब तज़्किरा किया जाए यहाँ तक कि लोगों में फ़िक्र आख़िरत पैदा हो जाए और बर्बादी वाली राह से बचकर आबाद करने वाली राह पर गामज़न हो जाएँ।

दुनिया की हुकूमतों के पास तरीक़एए-राहत व अम्न नहीं है

आलम में अम्न व अमान क़ायम रखने के लिए इस दौर की अदालतें, कचेहरियाँ और मुख़्तलिफ़ महकमे, स्कीमें और इंतिज़ामात नाकाम और फेल हैं। पूरे आलम की हुकूमतें ग़ैर मेयारी और तश्वीशनाक सूरते हाल में मुब्तला हैं। चूंकि उनके पास तरीक़ा-ए-राहत व अम्न नहीं है जिसकी वजह से किसी की जान, इज़्ज़त और माल महफ़ूज़ नहीं है, लेकिन उम्मते मुस्लिमा को मायूस होने की ज़रूरत नहीं है, हमारे सरकार मुहम्मद (सल्ल०) ने इससे ज़्यादा मायूसकुन हालात में अपना पाकीज़ा तरीक़ा दुनिया के सामने पेश किया और आलम की हुकूमतें उस पाकीज़ा तरीक़े को

अपनाकर अम्न व अमान से हमकिनार हुई। आज भी मुहम्मद (सल्ल०) का लाया हुआ पाकीज़ा तरीक़ा अपनाने की और उसको दावत के ज़रिए आम करने की ज़रूरत है। आज भी पूरा आलम अम्न व अमान से हमकिनार हो सकता है और अबदी राहतों से फ़ैज़याब हो सकता है।

जहन्नम अहले ईमान के लिए हस्पताल और शिफ़ाख़ाना है

अहले ईमान का असली ठिकाना जन्नत है और उनके लिए जहन्नम हॉस्पिटल और शिफ़ाख़ाना है, चूंकि जन्नत पाक जगह है और उसके मकानात पाक हैं, फ़रमाया गया है (*व मसाकि-न तय्यिबतिन*) और जन्नत की औरतें भी पाक हैं "*अज़वाजम मुतह्हरतन*, और जन्नत की शराब भी पाक है '*शराबन तहूरा*', ईमान वाला जहन्नम में गन्दगियों और गुनाहों से पाक हो जाएगा तब जन्नत में दाख़िल होगा और कहा जाएगा '*सलामुन अलैकुम तिबतुम फ़दख़ुलूहा ख़ालिदीन*', लेकिन जहन्नम का इलाज बहुत भारी है, इसलिए इस दुनिया में अल्लाह तआला ने पाक साफ़ करने के लिए बतौर इलाज तीन चीज़ें बतलाई हैं :

(1) नेकियों का करना गुनाहों को ज़ाया करता है।

(2) ग़ैर इख़्तियारी तौर पर बीमारियों और तकलीफ़ों पर सब्र करने से गुनाह ज़ायल होते हैं।

(3) तौबा से कबाइर गुनाह भी माफ़ हो जाते हैं।

जहन्नम में कुफ़्र व शिर्क का गुनाह लाइलाज बीमारी है, दुनिया में अस्सी साल का मुश्रिक बूढ़ा तौबा करेगा तो माफ़ी मिल सकती है। सच्ची तौबा के लिए चार चीज़ें ज़रूरी हैं :

(1) गुनाहों पर नदामत।

(2) आइंदा गुनाह न करने का अज़्म।

(3) गुज़िश्ता गुनाहों की तलाफ़ी।

(4) तौबा के वक़्त गुनाहों में मुब्तला न होना।

दुनिया में इन ख़ूबियों को हासिल करने के लिए माहौल शर्त है और माहौल दावते दीन के अमल से ज़िन्दा होगा।

अम्र बिल मारूफ़ और नह्य अनिल मुंकर का बेहतरीन तरीक़ा

अम्र बिल मारूफ़ और अनिल मुंकर का बेहतरीन तरीक़ा अख़्लाक़ और मुहब्बत के साथ मेल-जोल रखना है, अख़्लाक़ का बेइंतिहा दबाव और असर होता है, इब्तिदाए इस्लाम में जब तक आपस में इंतिशारा और झगड़ा था, सुलेह हुदैबिया तक उन्नीस साल में फ़क़त डेढ़ हज़ार मुसलमान हुए, उसके बाद फ़तह मक्का तक दो साल में दस हज़ार हो गए। उसके बाद एक ही साल में ग़ज़वा तबूक के मौक़े पर तीस हज़ार की तादाद हो गई और उसके एक साल के बाद हिज्जतुल विदाअ में सवा लाख मज्मा हो गया। उसका राज़ यही है कि मुहब्बत और अख़्लाक़ के साथ मेल-जोल था, लेकिन शर्त है कि हक़ीक़ी अख़्लाक़ हों, ख़ुशामद न हो वर्ना लोग सर चढ़ जाएंगे और फ़ायदे की बजाय नुक़सान होगा।

हर इंसान के लिए चार मंज़िलें

हर इंसान को चार मंज़िलों से गुज़रना है— पहली मंज़िल माँ का पेट है, यह उसकी ज़ात बनने की जगह है, जिसमें उसके लिए कोई इख़्तियार नहीं है। दूसरी मंज़िल दुनिया का पेट है, यह सिफ़ात बनाने की जगह है, यहाँ इस क़द्र इख़्तियार दिया जाता है कि नेक व शर में इम्तियाज़ करके नेकियों को इख़्तियार कर ले। तीसरी मंज़िल क़ब्र है और चौथी मंज़िल क़ियामत का दिन है। उस दिन अव्वलीन और आख़िरीन का सबसे बड़ा इज्तिमा होगा।

إِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ. إِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ

हर एक के साथ अपने सिफ़ात के ऐतिबार से मामला होगा।

इस इज्तिमा से नाफ़रमानों की जमाअतें बन-बनकर जहन्नम की तरफ़ जाएँगी।

وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوٓا إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا (الايه)

और फ़रमाँबरदारों की जमाअतें बन बनकर जन्नत की तरफ़ जाएंगी।

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا

आइंदा मंज़िलों में सिफ़ात के एतिबार से पेश आनेवाली बातें मावरा अक़्ल हैं, ख़िलाफ़ अक़्ल नहीं हैं। जिस तरह इस दुनिया में दो सौ साल पहले बहुत-सी बातें मावरा अक़्ल थीं, आज वह अक़्ल में आ गईं, इसी तरह माबादल मौत की मावरा अक़्ल बातें मौत के वक़्त अक़्ल में आ जाएंगी। ये तमाम बातें अंबिया अलैहिस्सलाम ने ख़ालिक़ व मालिक और हकीम व अलीम की वह्य के ज़रिए बतलाई हैं जो अनमिट और अटल हैं।

ताक़ते ईमान क्या है?

अल्लाह की ज़ात का यक़ीन ऐसा हो कि दिल में ग़ैर का यक़ीन न रहे। इस ईमान की ताक़त के ज़रिए नमाज़, दुआ और तमाम आमाले सालेहा आसमान पर जाएंगे जिस तरह चाँद पर भेजने के लिए साइंस वालों को रॉकिट के धक्के की ज़रूरत पड़ी। इसी तरह आमाल और दुआओं को आसमान पर पहुंचाने के लिए ताक़त ईमान की ज़रूरत है। إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ फ़क़त ईमान का बोल और अल्फ़ाज़ काफ़ी नहीं है बल्कि ईमान का ताल्लुक़ दिल से है। लिहाज़ा उसकी हक़ीक़त दिल में उतारनी ज़रूरी है और दिल में ईमान होने की निशानी यह है कि मोमिन हर हाल में ख़ुदा के अवामिर पर अमल करने वाला बने और मुंकर चीज़ों से रोकने वाला बने चाहे उसको कितनी ही राहतें क़ुरबान करनी पड़ें। क़ुरआन में जिस क़द्र बड़े-बड़े वादे हैं वे उस ईमान पर हैं।

कामयाबी और नुसरत का वादा, सरबुलन्दी और इज़्ज़त का वादा, नजात और अम्न का वादा, मईयते खुदावंदी और जन्नत का वादा, फ़ज़्ल कबीर और महबूबियत का वादा, नीज़ सिफ़ात ईमान पर भी मईयते खुदावंदी का वादा है और वह तक़वा और सब्र व एहसान है।

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ (1)

ईमान वालों के लिए कामयाबी का वादा है।

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْأَشْهَادُ (2)

ईमान वालों के लिए नुसरत का वादा है।

وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِيْنَ (3)

ईमान वालों के लिए सरबुलन्दी का वादा है।

وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ (4)

ईमान वालों के लिए इज़्ज़त का वादा है।

وَكَذٰلِكَ نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ (5)

ईमान वालों के लिए नजात का वादा है।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْا إِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ مُهْتَدُوْنَ (6)

ईमान वालों के लिए अम्न का वादा है।

وَأَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ (7)

ईमान वालों के लिए मईयत खुदावंदी का वादा है।

إِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ (8)

ईमान वालों के लिए जन्नत का वादा है।

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِأَنَّ لَهُمْ مِنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا (9)

ईमान वालों के लिए फ़ज़्ल कबीर का वादा है।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا (10)

ईमान वालों के लिए महबूबियत का वादा है।

सिफ़ाते ईमानी पर मईयते ख़ुदावंदी का वादा है

(1) إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

(2) إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُحْسِنِيْنَ अल्लाह एहसान करने वालों के साथ है।

(3) إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ अल्लाह तक़वा वालों के साथ है।

एक यूरोपियन आदमी के सवालात का इत्मीनान बख़्श जवाब

वालिद साहब (रह०) की ख़िदमत में एक यूरोपियन आदमी आया और अर्ज़ किया कि मुझे चन्द सवालात दरपेश हैं अगर आप रंजीदा ख़ातिर न हों, तो मैं साफ़ तौर पर पेश करूँ? आपने उसको इत्मीन दिलाया और बेतकल्लुफ़ सवालात करने की इजाज़त दे दी। उसने कहा कि आसमानी किताबें तौरात, ज़बूर, इंजील उस दौर के मुनासिबे हाल नाज़िल हुई थीं। आख़िर में नाज़िल होने वाला क़ुरआन यह भी ऊँट और तलवार के ज़माने का है, अब रॉकिट और ऐटमियात का ज़माना है, लिहाज़ा अब मुहम्मदी क़ुरआन के बजाय कोई मॉडर्न किताब होनी चाहिए या यूँ समझिए कि तौरात में कोई कमी थी वह ज़बूर में पूरी की गई और ज़बूर की कमी को इंजील में पूरा किया गया और इंजील की कमी को क़ुरआन में पूरा किया गया है। अब इस दौर के मुनासिबे हाल जो कमी महसूस हो रही है वह मॉडर्न किताब निकाल कर पूरी करनी चाहिए। या तो जैसा कि आपका अक़ीदा है कि ख़ुदा तआला अलीम व हकीम है और यह क़ुआन क़ियामत तक के लिए नाज़िल किया गया है, तो अल्लाह तआला इब्तिदा ही से तमाम अंबिया अलैहिस्सलाम के लिए एक ही किताब तै कर देते। यूरोपियन आदमी ने एक ही सवाल की कई शक्लें निकाल कर जवाब तलब किया। हज़रत वालिद साहब ने जवाब में फ़रमाया कि आपकी उम्र कितनी है? उसने कहा कि मेरी तीस साल की उम्र है। वालिद साहब ने फ़रमाया कि यह आपकी भरपूर जवानी का ज़माना है। अब आपका यह क़द व क़ामत न

बढ़ेगा और न घटेगा, जिसकी वजह से आपके लिबास की साइज़ जो इस वक़्त है यही साइज़ मौत तक रहेगी।

जब आपकी उम्र एक साल की थी तो आपका कुर्ता आपकी वालिदा ने बहुत छोटा बनाया था। जब दो साल की उम्र हुई फिर कुर्ते का साइज़ बदल कर कुछ बड़ा बनाया, जब पाँच साल की उम्र हुई तो और बड़ा कुर्ता बनाया। इसी तरह साइज़ बढ़ते-बढ़ते मौजूदा साइज़ तक पहुंची। अब आपकी इस वक़्त जो उम्र है यह वह ज़माना है कि अब आपका क़द व क़ामत मौत तक यही रहेगा और लिबास का साइज़ भी यही रहेगा। तो यहाँ आप यह नहीं कह सकते कि एक साल और दो साल वाला छोटा कुर्ता जो आपकी वालिदा ने बनाया था यह वालिदा की भूल या चूक थी बल्कि उसको आप तस्लीम करते हैं कि वह बचपन का ज़माना था। जूँ जूँ क़द व क़ामत बढ़ता रहा लिबास भी उस एतिबार से बढ़ता रहा यहाँ तक कि जवानी का ज़माना, यह वह ज़माना है कि अब क़द व क़ामत बढ़ने-घटने का सवाल न रहा। इसलिए यही साइज़ मौत तक रहेगी। तो अल्लाह तआला यक़ीनन अलीम व हकीम है, हर ज़माने में जो कुछ किया और जो कुछ कर रहा है, उसमें न भूल है और न चूक सिर्फ़ समझ का फ़र्क़ है।

वह यह कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम सबसे पहले नबी और आदमी हैं, यह ज़माना इंसानियत के एतिबार से बचपन का ज़माना था, उनके मुनासिबे हाल अहकामात दिए गए। फिर नूह अलैहिस्सलाम का ज़माना आया। इंसानियत के मेयार में जिस क़द्र तब्दीली आई उसके मुनासिब अवामिर दिए गए। इस तरह तौरात, इंजल, ज़बूर और उन किताबों में भी बक़द्र ज़रूरत फ़रोई अहकाम में तब्दीली की गई, यहाँ तक कि आख़िर में हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब तशरीफ़ लाए तो ठीक इंसानियत की जवानी का ज़माना था। आपको क़ुरआन में वह उसूली चीज़ें जिनमें तमाम अंबिया (अलैहि०) मुत्तहिद और मुत्तफ़िक़ हैं जैसे तौहीद, रिसालत, आख़िरत वग़ैरह, उनके अलावा फ़रोआत में तर्मीम के साथ

मुहम्मद (सल्ल०) को वह अहकामात और ज़ाब्ते दिए गए जो पूरे आलम के लिए और क़ियामत तक के लिए काफ़ी हैं। इसलिए मुहम्मद (सल्ल०) की नुबूवत पर रहमतुल-लिल-आलमीन और ख़ातिमुन्नबिय्यीन की मुहर सब्त कर दी गई और उसके साथ क़ुरआन में भी एलान कर दिया गया :

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَ رَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا (پاره ۶)

"आज तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर लिया और तुम्हारे ऊपर मेरी नेत ताम कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन बनाकर मैं राज़ी हो गया।"

लिहाज़ा अब आपके बाद कोई नबी नहीं आएगा और मुहम्मद (सल्ल०) वाला तरीक़ा क़ियामत तक जारी रहेगा और यही तरीक़ा पूरे आलम के लिए बाइसे रहमत व बरकत होगा।

उस यूरोपियन आदमी ने मज़्कूरा बात ग़ौर से सुनने के बाद दूसरा सवाल पेश किया कि जब नबियों का आना बाइसे रहमत है और नबियों के सिलसिले का बन्द हो जाना बाइसे ज़हमत है, फिर आपका ख़ातिमुन्नबिय्यीन होना बाइसे फ़ज़ीलत कैसे हो सकता है। जब आपको ख़ातिमुन्नबिय्यीन तस्लीम किया जाए तो रहमतुल-लिल-आलमी कैसे हो सकते हैं और अगर रहमतुल-लिल-आलमीन होना तस्लीम किया जाए तो ख़ातिमुन्नबिय्यीन कहना कैसे सही हो सकता है?

वालिद साहब (रह०) ने जवाब दिया कि बेशक मुहम्मद (सल्ल०) ने नबियों का सिलसिला बन्द कर दिया, मगर आपने नबियों वाला काम बन्द नहीं किया बल्कि तमाम अंबिया अलैहिस्सलाम वाला काम अपने मख़्सूस तरीक़े के साथ इस उम्मत के हवाले कर दिया ताकि उम्मते मुहम्मदिया क़ियामत तक अंबिया (अलैहि०) के अनवारात और उनकी रहमतें और बरकतें मुहम्मदी मुहर के साथ हासिल कर सकें। इसी लिए क़ुरआन में अंबिया

अलैहिस्सलाम का ज़िक्र करने के बाद आपकी शान में फ़रमाया गया है :

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ (پاره ۷)

"ऐ मुहम्मद! तमाम अंबिया हिदायत पर थे और सीधी राह चले हैं। आप भी उनकी चाल चलिए।"

और जो हुक्म आपको होगा उम्मत भी उसकी मुकल्लफ़ है बशर्ते कि आपके लिए वह हुक्म ख़ास न कर दिया गया हो, लिहाज़ा उम्मते मुहम्मदिया तमाम अंयिबा की चाल चलेगी, मुहम्मदी तरीक़े के साथ। आप (सल्ल०) ने तमाम अंबिया अलैहिस्सलाम वाला काम भी किया और दूसरा मख़्सूस काम यह किया कि आपने काम करने वाले दाअी तैयार किए, आपकी इक़्तदा में उम्मत दीन पर अमल करेगी और दूसरों में आमाल ज़िंदा करने की कोशिश करेगी और तीसरा इस उम्मत का मख़्सूस काम यह होगा कि दावते दीन के लिए दाअी तैयार करेगी ताकि पूरे आलम में क़ियामत तक दीन ज़िंदा और ताबन्दा रहे। अंबिया साबिक़ीन में इस्माईल अलैहिस्सलाम अपने घराने के लिए मब्ऊस हुए, तो यह उम्मत भी अपने घराना में दावते दीन का अमल करके इस्माईल अलैहिस्सलाम वाला नूर हासिल करेगी मुहम्मदी मुहर के साथ और नूह अलैहिस्सलाम, हूद अलैहिस्सलाम और सालेह अलैहिस्सलाम अपनी क़ौमों के लिए मब्ऊस हुए थे, यह उम्मत भी अपनी क़ौमों में दावते दीन का अमल करके उन अंबिया अलैहिस्सालम के अनवारात हासिल करेगी मुहम्मद मुहर के साथ और शुऐब अलैहिस्सलाम ताजिरों में मब्ऊस हुए और क़ौमे सबा के तेरह अंबिया अलैहिमुस्सलाम किसानों और जागीरदारों में मब्ऊस हुए, यह उम्मत भी उन तब्क़ों में दावत का अमल करके उन अंबिया अलैहिमुस्सलाम वाले अनवारात हासिल करेगी मुहम्मद मुहर के साथ और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम हुकूमत वालों में मब्ऊस हुए, यह उम्मत भी हुकूमत वालों में दावते दीन का अमल करेगी। मूसवी नूर हासिल

करेगी मुहम्मदी मुहर के साथ, अलग़र्ज़ आलम के सब तब्क़ात में क़ियामत तक यह उम्मत दावते दीन का अमल करके सारे अंबिया अलैहिमुस्सलाम के अनवारात और रहमतें-बरकतें हासिल करेगी मुहम्मद मुहर के साथ।

लिहाज़ा आपका ख़ातिमुन्नबिय्यीन और रहमतुल लिल आलमीन होना शर्फ़ और रहमतों और बरकतों का बाइस है और उम्मते मुहम्मदिया के लिए तुर्राए इम्तियाज़ भी है और बाइसे फ़ख़्र व एज़ाज़ भी, नीज़ मुहम्मदी तरीक़ा मौजूदा दौर में भी अम्न व अमान का बाइस है बशर्ते कि दावते दीन का अमल नहज नबवी पर किया जाए। मौजूदा दौर की परेशानियाँ और शर व फ़साद उन मॉडर्न तरीक़ों की ईजादात हैं और मॉडर्न तरीक़ा अम्न व अमान क़ायम रखने में नाकाम और फ़ेल साबित हो चुका है।

उस यूरोपियन आदमी ने वालिद साहब (रह०) की बातें सुनकर कहा कि मुझे अपनी ज़िंदगी में कोई मुत्मइन नहीं कर सका था, आज आपने मुझे कामिल मुत्मइन कर दिया और आज से मुहम्मद (सल्ल०) को ख़ातिमुन्नबिय्यीन और रहमतुल-लिल-आलमीन होना तस्लीम करता हूँ। अब सिर्फ़ एक बात मालूम करना चाहता हूँ वह यह कि क्या इस दौर में मुहम्मदी तरीक़ा अपनाने के बाद चैन व सुकून और अम्न व अमान क़ायम होने का कोई नमूना भी मौजूद है।

इसके जवाब में वालिद साहब (रह०) ने फ़रमाया कि अतराफ़े आलम में जहाँ पर दावते दीन की मेहनत नहज नुबूवत पर की गई है, कई क़ौमों और मुल्कों के सैकड़ों अफ़राद ने मुहम्मद (सल्ल०) वाला तरीक़ा अपनाया जिसके नतीजे में उनको मेल मुहब्बत और चैन व सुकून वाली ज़िंदगी नसीब हुई। इस सिलसिले में हमारी एक जमाअत की कारगुज़ारी जो अफ़्रीक़ा गई हुई थी मुख़्तसर तौर पर इसके सुनाने पर इक्तफ़ा करता हूँ, उसके बाद आपने अफ़्रीक़ा में गई हुई जमाअत की कारगुज़ारी सुनाई।

दीनी दावत की बेशुमार मसरूफ़ियात के बावुजूद फ़न्ने फ़ल्कियात के मुताल्लिक़ अमीक़ बातें

सीना रौशन हो, तो है सोज़े सुख़न ऐन हयात
हो न रौशन, तो सुख़न मर्गे दवाम ऐ साक़ी

नमाज़ों के औक़ात के लिए तुलूअ व गुरूब का इल्म जिस क़द्र ज़रूरी और अहम है, इससे कौन नावाक़िफ़ है। वालिद साहब (रह०) को फ़नी हैसियत से तुलूअ व गुरूब के वक़्त की तख़रीज में इतनी महारत हासिल थी कि आप मुख़्तलिफ़ इलाक़ों के तुलूअ व गुरूब और ज़वाल के औक़ात की आसानी से तख़रीज कर लेते थे। हालाँकि इस फ़न से दिलचस्पी इस दौर में उनक़ाए होती जा रही है। सऊदी अरब के तुलूअ व गुरूब में आपके हिसाब से मामूली-सा फ़र्क़ था। आपने इस लाइन के दीगर माहिरीन से अपने हिसाब का इस्तसवाब करवाया। यह तो मुहक़्क़िक़ हो गया कि हरमैन के तुलूअ व गुरूब के वक़्त में मामूली फ़र्क़ है जिससे नमाज़ों के मामले में ग़लती का क़वी एहतमाल था। उसकी इस्लाह की ग़र्ज़ से आपने इमामे हरम मक्की शैख़ अब्दुल्लाह सबील साहब से मुलाक़ात की और निहायत मतानत के साथ औक़ात के मसले को ज़ेरे ग़ौर लाने की तरफ़ मुतवज्जह फ़रमाया। मगर इस्लाह औक़ात का मामला सिर्फ़ इमाम साहब के इख़्तियार में न था जब तक कि हरमैन के माहिरीन औक़ात को इस तरह मुतवज्जह न कराया जाए। इसके लिए आपकी जिद्दोजुहद जारी रही। बिल आख़िर वास्ता दर वास्ता हरमैन के माहिरीन औक़ात तक यह बात पहुँचाई गई और इस सिलसिले को वहाँ के माहिरीन ने ग़ौर व फ़िक्र करके जो भूल थी उसकी इस्लाह फ़रमाई और अलहम्दुलिल्लाह नमाज़ के औक़ात की इस्लाह का मसला इस तरह पाया-ए-तक्मील तक पहुँचा।

इसी तरह वालिद साहब (रह०) को इसका फ़िक्र लगा रहता था कि जिस मुल्क में भी मुसलमान क़याम-पज़ीर हों, वहाँ रमज़ानुल मुबारक की इब्तिदा ईदुल फ़ित्र, बग़रईद सही वक़्त पर हो। ज़ाहिर

है कि उसका ताल्लुक़ रवीयत क़मर की शहादत से है और रवीयत क़मर का मदाद शरअन नस्स सही के मुताबिक़ शहादत पर ही है और शहादत ही में एहतियात न हो तो मुख़्तलिफ़ मुस्लिम इलाक़ों और इस्लामी मुमालिक में अफ़रा तफ़री या कम से कम इंतिशार फैल सकता है और ऐसा कई बार हुआ भी है। इसी लिए वालिद साहब (रह०) मुताल्लिक़ीन और ज़िम्मेदारों को शहादत में हज़म और एहतियात की तरफ़ ख़ास मुतवज्जह करते रहते। बिल ख़ुसूस ऐसे अय्याम की शहादत में तो इंतिहाई कुरेद की ज़रूरत है, जिन्हें वालिद साहब (रह०) की तक़रीर के मुताबिक़ फ़िक़्ही इस्तलाह में क़िरान शम्स व क़मर या तौलीद क़मर जिसे अंग्रेज़ी में न्यू मून (New Moon) कहते हैं यानी हर माह की आख़िरी तारीख़ों में चाँद व सूरज की महाज़ात में आ जाता है और चाँद का वजूद चन्द मिनट के लिए दिखाई नहीं देता। उसके बाद चाँद का अलग होना महसूस होता है। उस अलेहदगी की इब्तिदा के बाद माहिरीन फ़ल्कियात के नज़दीक कम से कम सतरा घंटे और अमूमन बीस बाईस घंटों के बाद चाँद रवीयत के क़ाबिले होता है।

फ़ल्कियात के माहिरीन की राए के मुताबिक़ क़िरान या न्यू मून के दिन चाँद का दिखाई देना मुमकिन नहीं है। इसी लिए इस दिन की शहादत में इंतिहाई एहतियात और तहक़ीक़ की ज़रूरत होती है। ताकि शहादत में कोई वहम व इब्हाम न रह जाए। इम्कान रवीयत और उसके मुताल्लिक़ात के सिलसिले में वालिद साहब (रह०) ने उस फ़न से दिलचस्पी रखने वाले बाज़ हज़रात से ख़त व किताब करके ख़ुसूसी तौर पर तवज्जह दिलाकर ताकीद फ़रमाई है।

जनाब मौलाना बुरहानुद्दीन साहब के नाम एक मक्तूब में वालिद साहब (रह०) ने तहरीर फ़रमाया कि शहादत का सिलसिला बिला शुबहा शरीअत के मुत्तफ़िक़ अलैहि और नस्स क़तई पर मुंहसिर मसला है और उसकी बुनियाद पर दिए गए उलमा किराम के फ़ैसलों को हर हाल में क़बूल करना है चाहे वह हिदायत के ख़िलाफ़ ही क्यों न हो लेकिन इतना ज़रूर है कि बिदाहत को बिल कुल्लिया नज़र-अंदाज़ करने का मौजूदा जो रवैया है उसमें तब्दीली और

क़ुरआन पाक की आयत मुबारका (*वश्शम्सु वल क़मरु बिहुस्बान*) की नस्स क़तई की तरफ़ अज़हान को मुतवज्जह करके उसकी अहमियत का एहसास और उसके फ़िक़्ही वज़न के तआय्युन की ज़रूरत है।

वालिद साहब (रह०) की तमन्ना तो यह थी कि बिदाहत फ़न यानी अमलन रवीयत क़मर के इम्कान औक़ात से क़बूलियत शहादत के ज़िम्मेदारान भी अच्छी तरह वाक़िफ़ होते ताकि शहादत के फ़िक़्ही अहकाम और फ़न हैयत के एतिबार से क़िरान या न्यू मून के मुत्तसिलन बाद रवीयत क़मर के मुमकिना अय्याम दोनों की फ़िक़्ही अहमियत के इम्तिज़ाज को बरूए कार ला सके।

मज़्कूरा ख़त में वालिद साहब (रह०) ने तहरीर फ़रमाया कि दिल में यह बात आई कि काश ऐसी कोई किताब या रिसाला तस्नीफ़ किया जाए जो आसान ज़बान में हो और जिसमें दुनिया के सभी मुमालिक के अहम मक़ामात पर इम्कान रवीयत का दिन दर्ज हो और उसमें हर माह क़िराने शम्स व क़मर या तौलीद क़मर अपनी न्यू मून का दिन और वक़्त भी दिखाया जाए। फिर उसे हर मुल्क के एलान रवीयत के ज़िम्मेदारान तक पहुँचाया जाए ताकि वह हज़रात जिस दिन उनके यहाँ मुत्ला पर इम्कान रवीयत ही नहीं है उस दिन रवीयत हलाल की शहादत क़बूल करने में हज़्म व एहतियात की तरफ़ पूरे तौर पर मुतवज्जह हो सकें।

इस मामले में आप किस क़द्र मुतफ़क्किर रहते थे उसका अंदाज़ा प्रोफ़ेसर मलेशिया, डाक्टर मुहम्मद इलियास सहब के नाम लिखे हुए एक मक्तूब में इस तहरीर से कर सकते हैं। लिखा है : इस वक़्त में इस मामले में बहुत परेशान हूँ कि इस साल बरतानिया, दिल्ली और अमेरिका में चाँद देखा गया जबकि इस वक़्त चाँद की उम्र कहीं 7-8 घंटे थी और दिल्ली में तो न्यू मून से भी पहले शहादत मिली। बाज़ उलमा कहते हैं कि यह बात ग़लत है कि 20-24 घंटे के बाद ही चाँद देखा जा सकता है हालाँकि इस फ़न के माहिरीन के नज़दीक यह बात ज़रूरी है। अब दो सूरतें हैं या तो

माहिरीन से हिसाब में कहीं चूक हुई या उलमा से गवाहों की तहक़ीक़ में कोई तसामेह हुआ। आगे इसी ख़त में तहरीर फ़रमाते हैं कि :

मैं यह चाहता हूँ कि मुख़्तसर-सी ऐसी किताब तर्तीब दी जाए जिसमें साठ साला न्यू मून का हिसाब जो मेरे पास है, वह हो और मौलाना बुरहानुद्दीन साहब का मज़मून हो। फिर आप एक क़ायदा और ज़ाब्ता आसान करके तर्तीब दे दें कि (1) कितनी उम्र में चाँद का देखा जाना मुमकिन है (2) नीज़ सूरज के डूबने के कितनी देर बाद चाँद नज़र आ सकता है। यह भी लिखें कि तूलुल-बलद और अर्ज़ुल-बलद के फ़र्क़ से कितना फ़र्क़ हो सकता है और मौसम के एतिबार से क्या फ़र्क़ होगा।

मेरे इल्म में यह है कि अगर ये दो बातें क़ाबू में आ गईं तो काम आसान होगा अगरचे उसके अलावा भी बहुत-सी बातें हैं मगर ये दोनों ज़्यादा अहम हैं। इसके अलावा अगर कोई और बात आप लिखना चाहें तो मुझे लिख सकते हैं।

दूसरी बात यह है कि सूरज के हिसाब की दायमी जन्तरी तो बन सकती है मगर चाँद के लिए दायमी जन्तरी नहीं बन सकती बल्कि हर साल के लिए अलेहदा जन्तरी बनानी पड़ेगी, क्या यह बात सही है? इस मुख़्सर किताब में अगरचे साठ साला हिसाब होगा फिर भी लोग हर महीने का सनसेट और मून सेट अपने यहाँ के ऑब्ज़रवेट्री से मालूम करें। इसके अलावा और कौन-सी बात आप मुनासिब समझते हैं मगर हाँ, इस किताब में फ़न बिल्कुल न हो बल्कि सिर्फ़ आपकी बड़ी किताब का हवाला हो।

चूंकि रमज़ानुल मुबारक की इब्तिदा और ईदैन नीज़ हज में यौमे अरफ़ा की ताय्युन वग़ैरह तमाम ही मज़्कूरा अरकान का ताल्लुक़ रवीयत क़मर की शहादत से है। इसी शरअी अहमियत के पेश-नज़र आपने मुख़्तलिफ़ ज़राए यहाँ तक कि रसाइल व अख़्बारात वग़ैरह से भी कदो काविश करके साठ साला रिकार्ड जमा किया था जिससे रवीयत के इस रिकार्ड की एक मिसाल मौलाना बुरहानुद्दीन साहब के

नाम मज़्कूरा गिरामी नामा में शव्वाल 1407 हि० का क़िराने शम्स व क़मर यानी न्यू मून के मुताल्लिक़ औक़ात व मालूमात हस्बे ज़ैल तहरीर फ़रमाई है :

Shawwal 1407 H

27 May 15 : 13 (3 : 13) PM.G.M.T. (Wednesday)

27 May 2 : 45 (8:43) PM. Indian Time

Sun Set 27 May in Delhi= 7:11 PM.

Moon Set 27 May in Delhi = 7 :11PM.

1407 हि० मुताबिक़ 1987 ई० का यह न्यू मून मिसाल के तौर पर दर्ज किया गया है। इसी से साठ साला रिकार्ड का अंदाज़ा कर सकते हैं।

क़यास कुन ज़गुलिस्ताने मन बहार मरा

***

वालिद साहब (रह०) ने कई बार ख़्वाब में हुज़ूर (सल्ल०) को देखा

वालिद साहब (रह०) ने कई बार ख़्वाब में हुज़ूर अकरम (सल्ल०) की ज़ियारत का शर्फ़ हासिल फ़रमाया है, जिनमें आपने दीन की जिद्दोजुहद करने वालों के लिए बशारतें फ़रमाई हैं, बिल खुसूस दावते दीन के अमल करने वालों के लिए बशारतों के अलावा आप (सल्ल०) की तवज्जोहात को इस काम की तरफ़ होना बताया गया है। वालिद साहब (रह०) के ऐसे कई ख़्वाब हैं, इसके अलावा दूसरे हज़रात ने भी वालिद साहब (रह०) की हुज़ूर (सल्ल०) के साथ ज़ियारत फ़रमाई है लेकिन उन सबमें से सिर्फ़ वह ख़्वाब जो वालिद साहब (रह०) के हैं और आपने उनको क़लम बन्द किया है, उसमें से चन्द ख़्वाब दर्जे ज़ैल ज़िक्र किए जाते हैं, जिससे वालिद साहब (रह०) की आप (सल्ल०) के साथ ग़ायत दर्जे मुहब्बत का नीज़ दावते दीन के अमल की अज़्मत का भी अंदाज़ा होता है :

ख़्वाब : (1) अज़ मुहम्मद उमर पालनपुरी, 22 रबीउल अव्वल 1400 हि० मुताबिक़ 10 फ़रवरी 1980 ई० इतवार का दिन गुज़र कर आधी रात को ढाका कोकराईल में मैंने ख़्वाब देखा कि हुज़ूर अकरम (सल्ल०) को तलाश कर रहा हूँ, लोग बड़ी तादाद में जा रहे हैं। एक जगह चन्द आदमियों के दर्मियान में हुज़ूर (सल्ल०) हैं। मैंने आपको सलाम किया और मुसाफ़ा किया और जन्नत के बारे में सवाल किया। आपने फ़रमाया कि जन्नत में तो इंशाअल्लाह जाना है, बड़े मज़े हैं। फिर मैंने कहा कि हज़रत शैख़ुल हदस मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब और हज़रत जी दोनों ने सलाम कहा है और आप (सल्ल०) ने सलाम क़बूल फ़रमाया और फ़रमाया कि हज़रत शैख़ुल हदस तो ऐसे हैं कि आँखें चकाचौंध हो जाती हैं यानी ख़ूब नूर है। यह दिल में आया, अल्फ़ाज़ चकाचौंध के हैं फिर आँखें खुल गईं।

ख़्वाब (2) : ज़िलहिज्जा 1397 हि० मुताबिक़ 9 दिसम्बर, 1977 ई० मस्जिद नूर में हज़रत जी मद्दे ज़िल्लहू की क़यामगाह पर सोया। ख़्वाब में कई आदमी देखे। एक नौजवान से पूछा कि हुज़ूर (सल्ल०) कहाँ हैं? उसने इशारा किया कि उस कमरे में हैं। मैं कमरे में दाख़िल हुआ, तो देखा कि बहुत-से नेक लोग उसमें हैं। एक किनारे पर इबराहीम अब्दुल जब्बार साहब भी हैं औरों पर ग़ौर नहीं किया। आप चारपाई पर तशरीफ़ फ़रमा हैं। मैंने मुसाफ़ा करना चाहा तो फ़रमाया कि ठहर जाओ। यह फ़रमाकर आप (सल्ल०) चारपाई से नीचे उतर आए और मुसाफ़ा किया फिर चारपाई पर पाँव फैलाकर तशरीफ़ फ़रमा हुए। मैंने आपके दोनों पाँव मुबारक ख़ूब चूमे और आपने मना नहीं फ़रमाया। फिर मैंने ज़ियारत करना चाहा। आप दूसरे से बात करने में मशग़ूल थे। मुझे रोका और फ़ारिग़ होकर इरशाद फ़रमाया और मुझे मुख़ातिब करके फ़रमाया कि मौलवी साहब इस वक़्त हम एक मुहिम पर हैं तुम भी आ जाना। मैंने कहा कि कब? फ़रमाया कि कल। मैंने मालूम किया, कहाँ? फ़रमाया हरम में (यानी मदनी हरम मुराद है)। मैंने कहा,

किस वक़्त? फ़रमाया : जिस वक़्त चाहो आ जाना। फिर मैंने शैखुल हदीस और हज़रत जी मद्दे ज़िल्लहू के बारे में मालूम करना चाहा लेकिन ख़्वाब ख़त्म हो गया।

ख़्वाब : (3) 1389 हि० सिराए गाँव जो ज्वालापुर के क़रीब है, वहाँ सोया था कि ख़्वाब में बड़ा मज्मा देखा जिसमें हुज़ूर अकरम (सल्ल०) तशरीफ़ फ़रमा हैं। मैं जाकर मिला, मुसाफ़ा हुआ। मैंने हज़रत शैखुल हदीस साहब दामत बरकातुहुम के बारे में बात करना चाही कि क्या निज़ाम रहे, लेकिन मेरी बात से पहले आप (सल्ल०) ने बहुत एहतिमाम से यह बात तब्लीग़ के बारे में कहनी शुरू फ़रमाई कि यह क्यों कहा जा रहा है कि कुछ नहीं हो रहा है और तब्लीग़ वाले कुछ नहीं कर रहे हैं। यह कहा जा रहा है कि खुद यूँ कहो कि हम से कुछ नहीं हो रहा है, तवाज़ोअ वाली बात और है लेकिन नाशुक्री की हद तक न हो। पाँच-दस बार इसी को फ़रमाते रहे यहाँ तक कि मुझे हज़रत अक़दस शैखुल हदीस मद्दे ज़िल्लहू के बारे में बात करने का मौक़ा न मिला और आँख खुल गई। मैं ज़बान से और तहरीर से उस मंज़र को अदा नहीं कर सकता जो आप (सल्ल०) का था और बार-बार फ़िक्र से फ़रमा रहे थे कि हो रहा है।

ख़्वाब : (4) पानोली के इज्तिमा के आख़िरी दिन फ़ज्र की नमाज़ के बाद नींद आई तो ख़्वाब में हुज़ूर अकरम (सल्ल०) की ज़ियारत हुई। आपके क़रीब में एक और साहब भी कुर्सी पर थे। उनसे पूछा कि कौन है? उन्होंने कहा कि हुज़ूर (सल्ल०) हैं। फिर मैंने आपसे भी पूछा कि मैंने आपको सही नहीं पहचाना। फ़रमाया : मैं अल्लाह का रसूल (सल्ल०) हूँ। मैंने कहा : आप न फ़रमाते तो भी आप ही की हदीस की वजह से मुझे पक्का यक़ीन था कि आप अल्लाह के रसूल हैं, क्योंकि शैतान आपकी सूरत में नहीं आ सकता। मुसाफ़ा, मुआनक़ा ख़ूब अच्छी तरह किया। शुरू में दूर से तो हज़रत शैख़ की शक्ल के मुशाबा शक्ल थी फिर दूसरी शक्ल हो गई, वही आख़िर तक रही। फ़रमाया कि क्या हज़रत दिल्ली गए हैं?

मैंने कहा, हाँ। फ़रमाया : हज़रत शैख़ का कल सफ़र है? मैंने पहले तो कहा हाँ, फिर कहा अभी तो कई दिन हैं। मैं सवाल से पहले समझा कि मुम्बई का सफ़र कल है, बाद में जवाब में ही एहसास हुआ कि मदीना मुनव्वरा का सफ़र मुराद है, तो अर्ज़ किया कि इसको भी कई दिन बाक़ी हैं। फ़रमाया : बहुत अच्छा, फिर बहुत-सी बातें फ़रमाईं और ख़ूब तब्लीग़ के काम पर हिम्मत अफ़ज़ाई फ़रमाई। मैंने कहा कि हज़रत उम्मत बहुत परेशान है। फ़रमाया : तब्लीग़ वाले भी तो मुजाहिदे में हैं। मैंने अर्ज़ किया कि आप इस दीनी मेहनत से ख़ुश हैं? फ़रमाया : मैं बहुत ख़ुश हूँ। अर्ज़ किया : हम तब्लीग़ वालों के लिए कोई ख़ास पैग़ाम हो तो इरशाद फ़रमाएँ। फ़रमाया : तब्लीग़ वाले मुजाहिदों में हैं, बस मैं तो अहमियत के साथ दो बातें कहता हूँ कि मेहनत करने वाले अग़राज़ से पाक होकर अल्लाह की रज़ा के लिए करें, दूसरे यह कि इस्तख़लास हो यानी जो इस काम में लगें वह और झमेलों में न पड़ें, इस काम पर पूरी क़ुव्वत लगा दें। पूरी दुनिया के इंसानों की परेशानियों का हल इसमें है। मैंने कहा : हुज़ूर (सल्ल०) आपने ख़्वाब में वह कही जो जागते में क़ुरआन व हदीस में कही और कोई फ़रमाते तो हमें तावील करनी पड़ती, यह तो साफ़ बात है। मैं फ़ज्र की नमाज़ के बाद थोड़ा सोकर बेरून के आए हुए अहबाब से बात करने का इरादा रखता था। मौलवी मूसा साहब ने का, तुझे साढ़े सात बजे उठाऊँगा। मैंने कहा, मियाँ जी मेहराब साहब का हुक्म है कि आठ बजे बड़े मज्मे में आना है फिर तो मुश्किल हो गई, इसलिए फ़ज्र के बाद तुम फ़ौरन नहीं जमा कर लो, जब जमा हो जाएँ फ़ौरन बुला लो। दस-पंद्रह मिनट का वक़्फ़ा मिलेगा उसमें सो लूँगा, बेतकल्लुफ़ मुझे जगा देना। तो मैं इन दो फ़िक्रों के साथ सोया कि अल्लाह दोनों काम करवा दे ताकि हज़त के बड़े मज्मे में पहुंचने तक बात पूरी हो जाए। मैंने सोने से पहले हज़रत वाला से पूछा कि बैरून वालों से क्या बात करूँ? इरशाद फ़रमाया : इख़्लास और इस्तख़लास। मैंने उसके बयान का इरादा कर लिया और सो गया।

इसमें यह ख़्वाब आया और हुज़ूर (सल्ल०) ने भी यही दो बातें मअ तशरीह इरशाद फ़रमाईं जो हज़रत जी मद्दे ज़िल्लहू के दो कलिमों की तफ़्सील थी। मैंने अर्ज़ किया कि हज़रत आप (सल्ल०) से मिलते ही मेरा मुसाफ़ा, मुआन्क़ा हो चुका है, लेकिन ऐसे मौक़े मुझ जैसे ज़ईफ़ को बार-बार कहाँ मिलते हैं, उसके बाद अब दोबारा मुसाफ़ा व मुआन्क़ा करूँ और पेशानी पर बोसा भी दूँ। आमादगी का इज़्हार फ़रमाया। मैंने बहुत अच्छी तरह मुसाफ़ा किया, बहुत देर तक मुआन्क़ा में एक दूसरे को दबाने की कोशिश थी। जब फ़ारिग़ हुआ तो इरशाद फ़रमाया : अब मैं तुम्हारी पेशानी का बोसा दूंगा। मैंने शर्म के मारे सर नीचा कर लिया। आपने अपने दस्ते मुबारक से ऊंचा करके पेशानी पर बोसा दिया, फिर होंठ चूमा, फिर होंठों पर दम किया। उस वक़्त मेरा मुंह मामूल के मुताबिक़ खुला था। इरशाद फ़रमाया कि और ज़्यादा होंठ खोलो ताकि मेरा थूक और मेरा लुआब दहन मुबारक तुम्हारी ज़बान तक पहुंचे। मुंह इतना ही खोला फिर आप बार-बार कुछ पढ़कर अंदर दम फ़रमाते रहे और लुआब दहन मुबारक मेरे मुंह के अंदर होंठों पर और खुसूसन ज़बान तक पहुंचता रहा। फिर आप तशरीफ़ ले गए और मेरी आँख खुल गई।

मैं काग़ज़ लेकर यह ख़्वाब लिखने बैठा ताकि भूल न जाऊँ। इतने में मौलवी मूसा आ गए और कहा कि तुझे जगाने में डर लगता था, लेकिन ज़रूरी भी था। इसलिए हिम्मत करके मैंने कमरे का दरवाज़ा इस नीयत से खोला कि इंशाअल्लाह आप जगाने से खुश होंगे, क्योंक दीनी तक़ाज़े पर जगाया जाता है। यह सोचकर दरवाज़ा खोला। यह मौलवी मूसा साहब का थोड़ा-सा तवक़्क़ुफ़ करना मेरे ख़ास ख़्वाब का वक़्त था और वह डरे और जगाने में उन्हें देर हुई, इसमें ख़्वाब पूरा हो गया। मैं फिर ख़्वाब लिखे बग़ैर बैरून वालों में ख़िलाफ़ मामूल बिला वुज़ू गया वर्ना बावुज़ू बयान करने की आदत है बशर्ते कि ज़याबितीस का ज़ोर न हो और कान न बहता हो। यहाँ वक़्त की तंगी की वजह से बिला वुज़ू गया।

बेरून वालों से फ़ारिग होकर बड़े मज्मे में जाने से पहले इस्तिंजा ज़ोर से आ रहा था इसलिए इस्तिंजा व वुज़ू दोनों चीज़ें क़ाबू में आ गईं। फिर नर्म ग़िज़ा का नाश्ता जल्दी से करके अलहम्दुलिल्लाह चल दिया। हज़रत वाला की तशरीफ़ आवरी से पहले जितनी बातें करने का इरादा था कर चुका तो हज़रत वाला तशरीफ़ लाए और बयान फ़रमाया और दुआ भी की।

हुज़ूर (सल्ल०) ने बहुत तफ़्सीर से बात फ़रमाई और काम के हालात पूछते रहे और मैं जवाब देता रहा। अलहम्दुलिल्लाह हर जवाब पर आपका इंशिराह और इंबिसात पाया। पूरे ख़्वाब में तकदर एक सैकेण्ड के लिए भी महसूस न हुआ और ख़्वाब ही में यह महसूस हुआ कि आप तब्लीग़ी काम की तरफ़ हमातन मुतवज्जह हैं और सवालात इस अंदाज़ के थे जैसे निगरानी करने वाला पूछा करता है। इस वक़्त जो याद हैं वह लिख लिए हैं।

ख़्वाब (5) 1396 हि० 17 जून 1976 ई०— लंका में फ़ज्र की नमाज़ के बाद ख़्वाब में देखा कि आम इज्तिमा है, कोई साथी बात कर रहे हैं। एक कमरे में हज़रत जी मद्दे ज़िल्लहू हैं और एक कमरे में चारपाई पर मौलाना मन्ज़ूर अहमद नोमानी सरहाने बैठे हैं और मौलाना हबीबुल्लाह साहब पालनपुरी (मुसन्निफ़ हरकत आफ़ाक़ और सूरा इसराफ़ील, मुहतमिम दारुल उलूम छापा) पायती पर बैठे हैं। मैं उन दोनों हज़रात से मिलने गया। मौलाना हबीबुल्लाह साहब ने मुझसे कहा कि आपके फ़लाँ बयान के फ़लाँ अरबी शेर में नह्व के एतिबार से फ़लाँ ग़लती थी। मौलाना मन्ज़ूर अहमद नोमानी साहब ने उनसे कहा कि ऐसी गिरफ़्त नहीं करनी चाहिए, मज़्मून देखो। मैंने मौलाना मन्ज़ूर अहमद साहब से अर्ज़ किया कि नह्व की ग़लती बताई है। हुज़ूर (सल्ल०) भी एक कमरे में मुक़ीम हैं लेकिन मैं कभी हज़रत जी मद्दे ज़िल्लहू के पास, कभी आम मज्मे में, कभी ख़्वास के पास इधर-उधर जा रहा हूँ ताकि आपके पास जाने से पहले तब्लीग़ी काम हर एतिबार से ठीक हो रहा हो ताकि आपसे मुलाक़ात पर नाराज़गी न हो। मैं आपसे मिल न सका और ख़्वाब

ही में मेरी आँख खुल गई, हक़ीक़त में यह भी ख़्वाब ही था। मैंने हज़रत जी मद्दे ज़िल्लहू को यह सारा माजरा सुनाया और अर्ज़ किया कि आप (सल्ल०) से मुलाक़ात तो न हुई, लेकिन आपकी तरफ़ से दिल में ख़्वाब की ताबीर की चन्द बातें इल्क़ा हुई है, हज़रत जी मद्दे ज़िल्लहू को सुनाई। एक यह कि सफ़र मन्ज़ूर और मक़बूल है और अल्लाह की मुहब्बत के पैदा होने का ज़रिया है, दूसरे यह कि मेरी उम्मत के अवाम में मेहनत की वजह से उम्मत के ख़्वास भी अवाम की तरह हो रहे हैं यानी यह बात अला सबील मदह आई, तीसरी बात यह है कि हिन्दुस्तान का तब्लीग़ी काम क़ाबिले इत्मीनान है। मैंने कहा कि पाकिस्तान का? तो दिल में आया यानी आप वाला ही इल्क़ा है कि पाकिस्तान, सेलून, बरमा, बंगला देश सब हिन्दुस्तान ही में दाख़िल हैं, यह तक़्सीम तो आदमी की है। ये सब सुनाकर मैंने हज़रत जी मद्दे ज़िल्लहू से अर्ज़ किया कि अभी जो अवाम आपकी ख़िदमत कर रहे हैं उन्हें न हटाया जाए, हटाने वाले भी अभी एहतियात करें तो चारों तरफ़ ख़िदमत करने वालों का हुजूम था। फिर मैंने हज़रत जी से अर्ज़ किया कि फिर मैं सोता हूँ ताकि आप (सल्ल०) से मुलाक़ात कर लूं ताकि हज़रत शैख़ का कोई पैग़ाम मिले या आपके नाम कोई पैग़ाम मिले या कम से कम ज़ियारत ही हो जाए। फिर ख़्वाब ही में सो गया लेकिन ज़ियारत न हुई। फिर सचमुच आँख खुल गई।

नोट : इसके अलावा बहुत से ख़्वाब हैं जो अगली जिल्दों में आते रहेंगे। इंशा-अल्लाह!

वालिद साहब की तदफ़ीन से पहले ख़्वाब

तदफ़ीन से पहले दिल्ली के एक आलिम साहब ने ख़्वाब देखा जो दिल्ली की किसी मस्जिद में इमाम हैं। फ़रमाया कि कुछ नूरानी अशख़ास जा रहे हैं और उनके हाथों में कोई अजीब सी चीज़ है तो दिल में गुमान हुआ कि मलाइका ही हैं तो आवाज़ आई कि यह फ़र्श है जो हमारे हाथ में है, हम जिसे हुज़ूर अकरम (सल्ल०) की

क़ब्र अतहर से ले आए हैं और हज़रत मौलाना साहब की क़ब्र में बिछाने के लिए ले जा रहे हैं। तो उनको ख़्याल आया कि फिर हुज़ूर (सल्ल०) की क़ब्र में क्या रहा, तो जवाब मिला कि आपके लिए जन्नत से लाकर नया फ़र्श बिछा दिया गया है। वालिद साहब (रह०) के इंतिक़ाल के बाद मदीना के मशहूर आलिम अब्दुल मन्नान साहब ने ख़्वाब देखा कि एक मज्मा है जिसमें हुज़ूर पाक (सल्ल०) तशरीफ़ फ़रमा हैं और वहाँ तमाम सहाबा किराम (रज़ि०) मौजूद हैं। इतने में देखा गया कि हज़रत वालिद साहब (रह०) नव्वरल्लाहु मरक़दहू पैदल चलते हुए तशरीफ़ ला रहे थे। जब क़रीब हुए तो हुज़ूर (सल्ल०) ने बहुत इकराम किया और एक जोड़ा उठाया और जोड़ा पेश करते हुए फ़रमाया : तुम इसको पहन लो और फ़रमाया कि तुम बहुत ही थककर आए हो, आराम करो और तुम्हारा बयान मेरे सहाबा को बहुत पसन्द है। फिर ख़्वाब देखने वाले कहते हैं कि उसी के फ़ौरन बाद ही शैख़ुल हदीस हज़रत मौलाना ज़करिय्या साहब (रह०) भी तशरीफ़ ले आए। हाय अफ़सोस! आपकी मंज़िलत को हम न पा सके, आपकी ज़ात मुसम्मा कमालात और बाइसे ख़ैर व बरकात थी। आपको अपनी हयात में हुज़ूर (सल्ल०) की ज़ियारत का शर्फ़ ख़्वाब में कई मर्तबा नसीब हुआ और अजीब वारदातें नसीब हुईं।

वालिद साहब (रह०) ने फ़रमाया कि 1977 ई० में मक्का मुकर्रमा में आप (सल्ल०) की ज़ियारत हुई। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि उमर अपना मुंह खोलो। आपने अपना लुआब दहन डालना शुरू किया यहाँ तक कि मौलाना के मुंह से लुआब बाहर आना शुरू हो गया। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि उमर! तुम्हारा पेट भर गया। वालिद साहब ने फ़रमाया : हाँ, पेट भर गया। एक मर्तबा आप बीमार हो गए। ख़्वाब में आप (सल्ल०) की ज़ियारत हुई इस हाल में कि आप फ़रमा रहे हैं कि उमर मदीना से चलकर तुम्हारी इयादत के लिए आया हूँ।

आपकी वफ़ात के बाद इतराफ़े आलम से बेशुमार ताज़ियत के

ख़ुतूत आए जिसमें अज़ीम हादसे का इज़्हार अफ़सोस के साथ उम्मते मुस्लिमा के लिए पुर न होने वाला ख़ला महसूस किया गया। पूरे मुल्क के रसाइल और जराइद ने आपके औसाफ़ जमीला और ख़िदमाते मुक़द्दसा का एतिराफ़ करते हुए बुलन्द व बाला अल्फ़ाज़ में मज़ामीन शाया फ़रमाए। रूए ज़मीन पर बसने वाला इंसान वली कामिल और क़ुतुब ज़माँ से महरूम हो गया, वह यकाए ज़माना और यगाना रोज़गार जिससे तमाम शोबए दीन रौनक़ पज़ीर थे जिस पर मदारिसे इस्लामिया को फ़ख़्र था और उलमाए दीन को नाज़ था और जिसके इर्द-गिर्द आशिक़ाने रसूल और अफ़रादे उम्मत मुहम्मदिया जमा होकर तज़्किरों और मशवरों से मज्लिस गर्म किए रहते थे आज अपनी क़ब्र में अबदी नींद सो रहा है, वह पैकर सिद्क़ व सफ़ा और कोह अज़्म व वफ़ा और हामी ईमान व यक़ीन जन्नत की फ़िज़ाओं से लुत्फ़-अंदोज़ हो रहा है, ऐसी उम्मीद है। ख़ुदाए पाक हमें इस ख़ासाए अज़ीम का नेमुल बदल अता फ़रमाए और आपके नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ और हिम्मत इनायत करे।

खुदा हम कुंद अीं आशिक़ाने पाक तीनत रा।

اَللّٰهُمَّ اَكْرِمْ نُزُلَهٗ وَوَسِّعْ مُدْخَلَهٗ وَاَبْدِلْهُ دَارًا خَيْرًا مِنْ دَارِهٖ وَاَهْلًا خَيْرًا مِنْ اَهْلِهٖ وَنَقِّهٖ عَنِ الْخَطَايَا كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْاَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ وَبَلِّغْهُ الدَّرَجَاتِ الْعُلٰى مِنَ الْجَنَّةِ (آمين)

हज़रत वालिद साहब (रह०) का पहला चिल्ला

हज़रत मौलाना इलियास साहब (रह०) के बाद साहबज़ादा मोहतरम हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब (रह०) ने दावते दीन को इतराफ़े आलम में मुतआरुफ़ कराने और फैलाने के लिए बुलन्द अज़ाइम के साथ जिद्दोजुहद शुरू कर दी। सबसे पहले हिन्दुसन की चहार जानिब बड़े शहरों के लिए पैदल जमाअतें रवाना कीं। एक जमाअत दिल्ली से कलकत्ता, दूसर दिल्ली से मुम्बई,

तीसरी दिल्ली से पेशावर, चौथी दिल्ली से कराची। उन पैदल जमाअतों ने ख़ूब मुजाहिदों और मुशक़्क़तों के साथ जंगल और पहाड़ी रास्तों को उबूर करते हुए शहर-शहर और गाँव-गाँव में दावते दीन की मेहनतें कीं। इससे हिन्दुस्तान के चहार जानिब दावते दीन की सदा पहुंची।

नीज़ इस काम के लिए सबसे मौज़ूं मक़ाम हिजाज़ मुक़द्दस मालूम हुआ और 1946 ई० में सबसे पहली जमाअत मौलाना उबैदुल्लाह साहब (रह०) लेकर हिजाज़ मुक़द्दस गए। 1947 ई० में दूसरी जमाअत मौलाना सईद ख़ाँ साहब (रह०) मय मुफ़्ती ज़ैनुल आबिदीन साहब की गई। उन सब हज़रात ने ख़ूब जमकर काम किया। हुकूमत की जानिब से दुश्वारियों के बावजूद मुश्किलात का तहम्मुल करते हुए खुफ़िया तौर पर हिक्मत के साथ घरों में और खुसूसी जगहों में काम करते रहे। इसके अलावा मुम्बई से हिन्दुस्तान के हाजी हिजाज़ मुक़द्दस में पहुंचते हैं। इसलिए मुम्बई के हाजियों में यह काम भी ज़रूरी मालूम हुआ। दिल्ली से एक जमात 1948 ई० में हाजियों में और शहर में काम करने के लिए रवाना फ़रमाई जिसमें मुंशी अनीस और मौलवी मूसा, मौलवी हिक्मतुल्लाह, क़ारी सुलैमान नंगलवाले, जनाब इफ़्तिख़ार फ़रद वग़ैरह हज़रात थे। उनकी मेहनत से मुम्बई में काम की इब्तिदा हुई। एक दिन की जमाअत, कभी तीन दिन की जमाअत बनी जो डाबील तक गई। उनमें हाजी अलाउद्दीन, हाजी अब्दुर्रहीम जब्बारी होटलवाले और दीगर अहबाब मुम्बई के थे। यहाँ तक कि हाजियों की वापसी हुई। इस मौक़े पर घोघारी मोहल्ला के जमाअत ख़ाना में एक इज्तिमा हुआ जिसमें मौलाना इमरान ख़ाँ साहब का बयान हुआ और एक चिल्ला की जमाअत तैयार हुई। यह पहली जमाअत थी जो मुम्बई से दिल्ली के लिए रवाना हुई। उस जमाअत में हज़रत वालिद साहब (रह०) थे। यह 1948 ई० का आख़िरी और 1949 ई० का इब्तिदाई ज़माना था। आपके हमराह हाजी अलाउद्दीन, हाजी अब्दुर्रहीम जब्बार होटलवाले, हाजी हबीब नसीरुद्दीन वग़ैरह थे। यह जमाअत आनन्द

फिर अहमदाबाद, सीधपुर, छापी, पालनपुर उन मक़ामात पर एक-दो दिन काम करते हुए दिल्ली निज़ामुद्दीन पहुंची। चन्द दिन दिल्ली में काम करके उस जमाअत को कलकत्ता रवाना कर दिया। हज़रत वालिद साहब (रह०) सहारनपुर से दिल्ली मर्कज़ में वापस तशरीफ़ लाए, चूंकि आपे तीन चिल्ले का इरादा कर लिया था। आपको जमाअत के हमराह मेवात भेजा गया। कुछ अर्से के बाद इन्हीं तीन चिल्ले में आपके दिमाग़ को ख़ुश्की का आरज़ा लाहिक़ हो गया। इसलिए आपको अपने वतन गठामन वापस भेज दिया गया। आपने पालनपुर में माहिर हकीम हज़रत मौलाना मुहम्मद नज़ीर साहब (रह०) से चन्द दिन इलाज करवाया और इफ़ाक़ा हो गया। आप मुम्बई पहुंचकर अपने तालीमी शग़ल में मसरूफ़ हो गए। इसी सफ़र में हज़रत जी मौलाना यूसुफ़ साहब (रह०) से बैअत कर ली थी। इसके बाद तालीमी शग़ल के साथ गाहे-गाहे चिल्ला बीस दिन के लिए निकलते रहे यहाँ तक कि एक जमाअत 1955 ई० में दिल्ली से मुम्बई पहुंची जिसने आपकी चार माह की तश्कील की और आप तैयार हो गए। (इसी चार माह के बारे में अपने बयान में फ़रमाते थे कि मेरे चार माह पूरे नहीं हुए और ख़ुदा करे न हों) जब आप निज़ामुद्दीन पहुंचे और वक़्त पूरा हो रहा था और तालीम का एक साल बाक़ी था। इसलिए हज़रत जी ने तालीम मुकम्मल कर लेने का मशवरा दिया। आपने दोबारा दारुल उलूम देवबन्द में दाख़िला लिया और 1956 ई० में फ़राग़त हासिल करके मर्कज़ निज़ामुद्दीन वापस पहुंचे।

हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब (रह०) की जिद्दोजुहद और फ़िक्र और कुढ़न के एतिबार से मिन जानिब अल्लाह इस काम को फैलाने, बढ़ाने और जमाने की नित नई राहें वदीयत की जाती थी। इसी एतिबार से रिजालकार भी फ़राहम हो रहे थे। आपको जिस तरह हिजाज़ मुक़द्दस की फ़िक्र थी इस तरह यूरोप के मुमालिक़ जहाँ अंग्रेज़ी-दाँ हज़रात की ज़रूरत थी। इसलिए आपने अलीगढ़ यूनीवर्सिटी के तलबा और असातज़ा को इस काम के लिए

मौज़ूं समझा और इस जानिब मेहनतें शुरू कर दीं और इज्तिमा भी तै कर दिया। उन्ही अय्याम में वालिद साहब (रह०) फ़राग़त हासिल करके पहुँच चुके थे। आपको सबसे पहले खुरजा और अलीगढ़ की मेहनत के लिए रवाना किया। बारी तआला ने इब्तिदा ही से खुलूस, सादगी और इस राह की मेहन व मुशक़्क़त का आदा बना दिया था। इस एतिबार से आपने ख़ूब जमकर काम किया और माहे रमज़ान के अख़ीर अशरे का एतिकाफ़ मर्कज़ की मस्जिद में पूरा किया, दोबारा इसी जानिब जमाअत लेकर मेहनत के लिएं रवाना हुए। वहाँ के इज्तिमा तक काम करते रहे। इज्तिमा से फ़राग़त के बाद वापसी में दोनों हज़रत जी साहिबान मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ (रह०) और मौलाना इनामुल हसन साहब (रह०) ने मशवरे से आपके लिए हिजाज़ मुक़द्दस की पूरे एक साल की तश्कील की और आप तैयार हो गए। यह दावते दीन के लिए बेरून का पहला सफ़र था।

एक नसीहत

इंतक़ाम लेने वाला अपने दुश्मनों ही की सतह पर रहता है और माफ़ करने वाला उससे बुलन्द हो जाता है।

***

नज़रानए-अक़ीदत

—अज़ सय्यद मुहम्मद जामी

बरसानिहा इरतहाले लिसानुत्तब्लीग़ मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी (रह०)

माहे मुनीर व मुहर दरख़्शाँ चला गया
क़न्दील इल्म व हिक्मत व इरफ़ाँ चला गया

उम्मत के ग़म में माहीए बेताब था जो दिल
आशिबजाँ व सोख़्ता सामान चला गया

रोते हैं जिनको मिम्बर व मेहराब रात दिन
वह सुन्नते नबी (सल्ल०) का सना-ख़्वाँ चला गया

पैग़ामे दीन जिसका वज़ीफ़ा था उमर भर
वह जाँ-निसार दावते ईमान चला गया

कितने ही ग़मज़दा हैं तड़पते हैं आज भी
इंसानियत के दर्द का दरमाँ चला गया

बिखरे हैं यूं तो इल्म के मोती चहार सू
लेकिन वह एक लाल बदख़्शाँ चला गया

सरशार जिनसे होते थे सब तालिबाने हक़
वह साग़र निशाते ख़मसताँ चला गया

तेरह शबी में डूब चुकी थी तमाम क़ौम
अपने लहू से करके चराग़ाँ चला गया

तेरा वजूद रौनक़े मर्कज़ था ऐ उमर
तू क्या गया कि दीद का सामान चला गया

आते हैं याद अब भी तेरे दिलनशीं बयान

लगता है अन्दलीब गुलिस्ताँ चला गया

खिलते हैं यूं तो आज भी गुलाए रंगा-रंग
यादिश बख़ैर वह गुल ख़न्दाँ चला गया

सींचा था जिसको ख़ून से अपने तमाम उम्र
आज उस चमन को छोड़ के वीरान चला गया

जाने को यूं तो रोज़ ही जाते हैं सैकड़ों
तू क्या गया ज़मीं से इक इंसाँ चला गया

रातों को उठके रोते हैं पस्मांदगाँ तेरे
क्यों सबको छोड़-छाड़ के गिरयाँ चला गया

चश्मे फ़लक भी ख़ून चकीदा थी उस घड़ी
जिसमें तू सूए गोर ग़रीबाँ चला गया

जादू से हिफ़ाज़त का बहुत ही मुजर्रब नुस्ख़ा

(1) आगे पीछे ग्यारह बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिए।

(2) सूरह फ़ातिहा तीन बार

(3) चारों क़ुल तीन बार

(4) आयतुल कुर्सी तीन बार

(5) *वला यऊदुहू हिफ्ज़ुहुमा व हुवल अलिय्युल अज़ीम*

وَلَا يَؤُدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ नौ बार

(6) तीन बार

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ
عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

लक़द जाअकुम रसूलुम-मिन अनफ़ुसिकुम अज़ीज़ुन अलैहि मा अनित्तुम हरीसुन अलैकुम बिल मुअमिनी-न रऊफ़ुर्रहीम। फ़-इन तवल्लौ फ़क़ुल हसबियल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व अलैहि तवक्कलतु व हु-व रब्बुल अरशिल अज़ीम।

(7) سَلٰمٌ قَوۡلًا مِّنۡ رَّبٍّ رَّحِیۡمٍ سलामुन क़ौलम-मिर-रब्बिर-रहीम। सात बार

अपने बदन पर और बच्चों के बदन पर दम कर लीजिए और पानी पर दम करके पी लीजिए और पिला दीजिए।

हर क़िस्म की परेशानी से छुटकारे का तावीज़ लिखकर गले में डाल दीजिए

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔

بِسۡمِ اللّٰهِ الَّذِیۡ لَا یَضُرُّ مَعَ اسۡمِهٖ شَیۡءٌ فِی الۡاَرۡضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَ هُوَالسَّمِیۡعُ الۡعَلِیۡمُ. اَللّٰهُمَّ لَاسَهۡلَ اِلَّا مَا جَعَلۡتَهٗ سَهۡلًا وَاَنۡتَ تَجۡعَلُ الۡحَزَنَ سَهۡلًا اِذَا شِئۡتَ یَا حَیُّ حِیۡنَ فِیۡ دَیۡمُوۡمَةِ مُلۡكِهٖ وَبَقَآئِهٖ یَا حَیُّ یَا حَیُّ یَاحَیُّ اَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ وَقُلۡ رَّبِّ اَعُوۡذُ بِكَ مِنۡ هَمَزٰتِ الشَّیَاطِیۡنِ وَاَعُوۡذُ بِكَ رَبِّ اَنۡ یَّحۡضُرُوۡنِ وَاَعُوۡذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ مِنۡ عَقۡبِهٖ وَعِقَابِهٖ وَشَرِّ عِبَادِهٖ۔

बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर्रु म-अस्मिहि शैउन फ़िलअर्ज़े व ला फ़िस्समाए व हुवस्समीऊल-अलीम। अल्लाहुम-म ल-सह-ल इल्ला मा जअल-तहु सहलन व अन-त तजअलुल-ह-ज़-न सहलन इज़ा शिअ-त य हय्यु ही-न फ़ि दैमू-म-ति मुलकिहि व बक़ाएहि या हय्यु या हय्यु या हय्यु अऊज़ू बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम व क़ुर्रब्बि अऊज़ुबि-क मिन हमज़ातिश्शयातीनि व अऊज़ोबि-क रब्बि अन यहज़ुरू-नि व अऊज़ुबि-कलि-मातिल्लाहित्तम्माति मिन शर्रि मा ख़-ल-क़ मिन अक़बिही व इक़ाबिही व शर्रि इबादिहि।

बिखरे मोती

* ग़ीबत नेक आमाल को खा जाती है।
* तौबा गुनाहों को खा जाती है।
* ग़म उम्र को खा जाता है।
* सब्र बलाओं को खा जाता है।
* नेकी बदी को खा जाती है।
* झूठ रिज़्क़ को खा जाता है।
* गुस्सा अक़्ल को खा जाता है।
* तकब्बुर इल्म को खा जाता है।
* अद्ल ज़ुल्म को खा जाता है।
* बहादुर वह है, जो मुसीबत के वक़्त सब्र व तहम्मुल से काम ले और आड़े वक़्त में बुरे पड़ोसी की मदद करे।
* अल्लाह तआला बेहतरीन बदला देने वाला है।
* वह शख़्स सबसे बेहतर है जो ज़िंदगी बसर करता है, मगर अपनी ज़रूरियात के लिए किसी ग़ैर पर भरोसा नहीं रखता।
* क़वानीन क़ुदरत से इंहिराफ़ करने वाला कभी सज़ा से महफ़ूज़ नहीं रह सकता।
* दुनिया की थकन उतारने का सबसे मुअस्सिर ज़रिया ज़िक्र है।
* एक सच्चा दोस्त किसी हीरे से कम नहीं।
* मौत का ताल्लुक़ जिस्म से नहीं एहसास से होता है।
* रिश्तों में से सबसे अफ़ज़ल रिश्ता व दर्जा माँ का है।
* सबसे बड़ा गुनाह किसी का दिल दुखाना है।
* दोस्ती करने से पहले सूरत को नहीं सीरत को देखो।
* किसी को हद से ज़्यादा चाहो तो वह मग़रूर हो जाता है।
* दुनिया में इससे बड़ी मुसीबत कोई नहीं कि तुम्हारा कोई दुश्मन हो।

* गुस्सा ऐसा तूफ़ान है, जो दिमाग़ का चिराग़ बुझा देता है।
* तरक़्क़ी नाम है ग़लतियों की इस्लाह का।
* मुहब्बत और अदावत कभी पोशीदा नहीं रहती।
* नज़र न आने वाली चीज़ों पर यक़ीन करना ईमान कहलाता है।
* ज़ालिम लोग ऐसी ज़ंजीरें अभी तक तलाश नहीं कर सके जो दिमाग़ों को जकड़ सके।
* दुनिया वाले दुनिया के पीछे भागते हैं और दुनिया अहलुल्लाह के पीछे।
* ग़मे आख़िरत दिल का नूर है।
* एक रात की नींद में इंसान साढ़े छः हज़ार मर्तबा साँस लेता है।
* इंसानी जिस्म में साढ़े तीन करोड़ सुराख़ होते हैं जिनसे पसीना ख़ारिज होता है।
* जुनूबी अफ़्रीक़ा में इस तरह की मकड़ी पाई जाती है जो परिन्दों का शिकार करती है।
* चील सूरज की तरफ़ एक घंटे तक देख सकती है।
* चीन में एक ऐसा फूल है जिसका रंग रात में सफ़ेद होता है और सूरज निकलते ही सुर्ख़ हो जाता है।
* हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) को ख़लीफ़ा रसूल कहा गया और अमीरुल मोमिनीन सबसे पहले हज़रत उमर (रज़ि०) को कहा गया है।
* हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी (रह०) फ़रमाते थे कि आज के फ़क़ीर का मतलब है कि फ़ से फ़ीरनी, क़ाफ़ से क़ोरमा, या से यख़नी और रा से रोटी, और पहले ज़माने के फ़क़ीर का मतलब फ़ से फ़ाक़ा, क़ाफ़ से क़नाअत, या से यादे इलाही और रा से रियाज़त थी।
* हज़रत जी (रह०) फ़रमाते थे कि अमीर का मतलब हम समझते हैं कि तुम अमर बने, हालाँकि अमीर तो वह है जो चौबीस घंटे अल्लाह के अवामिर से मरबूत रहे और साथियों को

तर्ग़ीब, शफ़क़त और ख़ुशामद करके अल्लाह के अवामिर से मरबूत रखे।

* दौलत दिल की तारीकी बढ़ाती है।
* अगर ग़लतफ़हमियों को दूर न किया जाए तो वह नफ़रतों में बदल जाती हैं।
* हमेशा सच बोलो ताकि क़सम खाने की ज़रूरत न पड़े।
* मुरझाए हुए फूल बहार में ताज़ा हो सकते हैं मगर गुज़रे हुए दिन कभी लौट कर वापस नहीं आते।
* ख़ुदा को अगर दिल की नज़रों से देखोगे तो ख़ुदा तुम्हें शहे रग से क़रीब मिलेगा।
* ऐ अल्लाह के बन्दे! तू दुनिया में रहने के सामानों में लगा है और दुनिया तुझे अपने से निकालने में सरगर्म है।
* अगर सुकून से रहना चाहते हो तो लोगों से वादे कम करो।
* इल्म से मुहब्बत और उस्ताद की इज़्ज़त के बग़ैर कुछ हासिल नहीं होता।
* काम करो क्योंकि काम से ग़लती, ग़लती से तजुर्बा और तजुर्बा ही से अक़्ल आती है।
* ग़ुस्से में कोई ऐसी बात न करो जिससे बाद में नदामत हो।
* हर मुश्किल और परेशानी में जोश के बजाए होश से काम लो।
* दूसरों में बुराइयाँ तलाश करने के बजाय अपनी बुराइयाँ दूर करने की कोशिश करो।
* अच्छे दोस्त तलाश करो, इससे इंसान की इज़्ज़त बढ़ जाती है।
* कभी ऐसी चीज़ की ख़्वाहिश न करो जो पूरी न हो।
* उस महफ़िल में न जाओ जिसमें रुसवाई का अंदेशा हो।
* अपनी हार पर मत रोओ क्योंकि तुम्हारी हार किसी की जीत का सबब बनती है।
* जो शख़्स अपने ख़ुलूस की क़समें खाए उस पर कभी एतिबार न करो।
* जो लोग आज का काम कल पर छोड़ते हैं वे यह नहीं सोचते

कि आज हमने क्या किया जो कल कर लेंगे।

* आलिम उसे कहते हैं जो दर पर्दा ख़ुदा से डरता रहे और ख़ुदा की रज़ामन्दी की रग़बत करे और उसकी नाराज़गी के कामों से नफ़रत करे। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि बातों की ज़्यादती का नाम इल्म नहीं, इल्म नाम है ब-कसरत अल्लाह से डरने का।
* जिसने मेहफ़िल में अपने आपको बुरा कहा उसने अपनी तारीफ़ की और यह रिया की अलामत है। (हज़रत हसन बसरी (रह०))
* हज़रत थानवी (रह०) ने लिखा है कि क़ुरआन की दो आयतें हैं, उन दो आयतों को जिसने पढ़ लिया उसके बाद उसको उजब नहीं आ सकता। एक इल्म के बारे में, दूसरे अमल के बारे में। अल्लाह अपने महबूब को फ़रमाते हैं (अगर हम चाहें हम सब कुछ ले लें जो कुछ हमने वह्य के ज़रिए आपको अता किया) (पारा 15, सूरह इसराईल, आयत 86) और दूसरी आयत फ़रमाई अमल के बारे में (अल्लाह तआला अपने महबूब से फ़रमाते हैं, ऐ महबूब! अगर हमने आपको साबित क़दम न बनाया होता तो आप उनकी तरफ़ कुछ-कुछ झुकने के क़रीब जा पहुंचते।)

(पारा 15, सूरह इसराईल, आयत-74)

* अकमालुश्शयम में एक अजीब बात लिखी है। फ़रमाते हैं, ऐ दोस्त जिसने तेरी तारीफ़ की उसने दर हक़ीक़त तेरे परवरदिगार की सत्तारी की तारीफ़ की और वाक़ई गुनाहों में बू होती तो कई परहेज़गार जो पारसाई में मशहूर हैं उनके जिस्मों से ऐसी बू आती कि कोई उनकी तरफ़ देखना भी गवारा न करता।
* अता बिन रिबाह (रह०) इल्हामी कलाम फ़रमाया करते थे। अजीब बात कही, फ़रमाते हैं, एक बार रब्बुल इज़्ज़त ने इल्हाम फ़रमायाः अता! उन लोगों से कह दो कि अगर उनको रिज़्क़ की छोटी-मोटी तंगी और परेशानी आती है तो यह फ़ौरन लोगों

की महफ़िल में बैठकर मेरे शिकवे शुरू कर देते हैं जब उनके आमाल-नामा गुनाहों से भरे मेरे पास आते हैं तो मैं फ़रिश्तों की महफ़िल में उनकी शिकायतें नहीं करता।

* हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम (रह०) ने एक अजीब बात लिखी है। फ़रमाते हैं, यह न देखना गुनाह छोटा है या बड़ा, बल्कि उस ज़ात की अज़्मत को देखना जिसकी तू नाफ़रमानी करता है।

वक़्त की क़द्र

* वक़्त किसी का मीरास नहीं।
* वक़्त किसी का इंतिज़ार नहीं करता।
* लोग कहते हैं वक़्त गुज़र जाता है.......जी नहीं हम गुज़र जाते हैं।
* वक़्त को इस्तेमाल करने की आदत डालो।
* वक़्त की अपनी ज़िंदगी है।

मुंतख़ब अश्आर

अपनी प्यास को लेकर किसके पास जाता मैं
जिनके पास दरिया थे उनसे ही लड़ाई थी

❂ ❂ ❂

तेरी गाली मेरे कानों तक तो पहुंची बाद में
पहले तेरे मुंह में रहकर तुझको गन्दा कर गई

❂ ❂ ❂

न जाने कितने चिराग़ों को मिल गई शोहरत
इक आफ़ताब के बेवक़्त डूब जाने से

❂ ❂ ❂

इक रोज़ खुल ही जाएगी तेरी मुनाफ़िक़त
ख़न्जर को आस्तीन में कब तक छुपाएगा

❂ ❂ ❂

न जी रहे हैं न मर रहे हैं मगर बताने से डर रहे हैं

किसे पड़ी है जो जा सुनाए हमारी पी को हमारी बतियाँ

❂ ❂ ❂

ग़ज़ल के शेरों पर इस बार ताज़गी कम है
मेरे ख़्याल से आँखों में कुछ नमी कम है

❂ ❂ ❂

दिलों में पहली सी चाहत कहाँ है
कि अब इंसान की क़ीमत कहाँ है

❂ ❂ ❂

सामना था मुख़ालिफ़ हवा का मगर
मैं चिराग़े मुहब्बत जलाता रहा

❂ ❂ ❂

फले-फूले कैसे यह गूंगी मुहब्बत
न वह बोलते हैं न हम बोलते हैं

❂ ❂ ❂

मिले ग़ैरों से वो हंसकर चले दिल पर मेरे नश्तर
ख़ुदा ही जानता है ज़ख़्म खाए किस क़दर मैंने

❂ ❂ ❂

हमको रोको न अफ़ज़ाइशे नस्ल से
हमको मरना भी तो है फ़सादात में

❂ ❂ ❂

उन्हें फ़ैशन ने नंगा कर दिया है
जिन्हें सादा लुबादे काटते हैं

❂ ❂ ❂

पर्चा दवा का फाड़ कर बोले हकीम जी
लट्ठे का थान लीजिए बीमार के लिए

❂ ❂ ❂

हमारी तिशनगी मेआर तक पहुंची नहीं वर्ना
यह दरिया क्या समुन्द्र भी हमीं को ढूंढता फिरता

❂ ❂ ❂

बेनियाज़ी से रखा है मैंने ग़रीब का भरम
फिर भी मुझको दे दिया लोगों ने बेगाने का नाम

⊛ ⊛ ⊛

बस तुझी से माँगता हूँ कामयाबी की दुआ
ऐ ख़ुदा तेरे अलावा सुख़-रू करता है कौन

⊛ ⊛ ⊛

रोज़े रखकर सिर्फ़ जो पानी पिए इफ़्तार पर
कैसे बच्चों को करे ख़ुश ईद के त्योहार पर

⊛ ⊛ ⊛

पैदा होने से ही पहले क़त्ल दुख़्तरुल अमाँ
पिछले वक़्तों से गया गुज़रा ज़माना आ गया

⊛ ⊛ ⊛

हुकूमत की तरह गुरबत में माँ भी अपने बच्चों की
ज़िदों को करके कल परसों के वादे टाल देती है

⊛ ⊛ ⊛

अकेले पार उतर के बहुत है रंज मुझे
मैं उसका बोझ उठाकर भी तैर सकता था

⊛ ⊛ ⊛

हम इंतिज़ार करेंगे क़ियामत तक
ख़ुदा करे आज क़ियामत न आए

⊛ ⊛ ⊛

काँटों में जो खिलता है शोलों में जो पलता है
वह फूल ही गुल्शन की तारीख़ बदलता है

⊛ ⊛ ⊛

साहिल के तमाशाई हर डूबने वाले पर
अफ़सोस तो करते हैं इमदाद नहीं करते

⊛ ⊛ ⊛

पर देखूँ तो परवाज़ की जुर्रत नहीं होती
रहमत तेरी देखूँ तो सिरे अर्श खड़ा हूँ

❂ ❂ ❂

अब के हम बिछड़े तो शायद कभी ख़्वाबों में मिलें
जिस तरह सूखे हुए फूल किताबों में मिलें

ढूंढ उजड़े हुए लोगों में वफ़ा के मोती
यह ख़ज़ाने तुझे मुमकिन है ख़राबों में मिलें

ग़मे दुनिया भी ग़मे यार में शामिल कर लो
नशा बढ़ता है शराबीं जो शराबों में मिलें

तू ख़ुदा है न मेरा इश्क़ फ़रिश्तों जैसा
दोनों इंसाँ हैं तो क्यों इतने हिजाबों में मिलें

आज हम दार पे खींचे गए जिन बातों पर
क्या अजब कल वह ज़माने को निसाबों में मिलें

अब न वो में, न वो तू है, न वह माज़ी है फ़राज़
जैसे दो शख़्स तमन्ना के सराबों में मिलें

❂ ❂ ❂

दोस्त बनकर भी नहीं साथ निभाने वाला
वही अंदाज़ है ज़ालिम का ज़माने वाला

अब उसे लोग समझते हैं गिरफ़्तार मेरा
सख़्त नादिम है मुझे दाम में लाने वाला

सुबह दम छोड़ गया निकहते गुल की सूरत
रात को ग़ुंचए-दिल में सिमट आने वाला

क्या कहें कितने मरासिम थे हमारे उससे
वो जो इक शख़्स है मुँह फेर के जाने वाला

तेरे होते हुए आ जाती थी सारी दुनिया
आज तंहा हूँ तो कोई नहीं आने वाला

मुंतज़िर किसका हूँ टूटी हुई दहलीज़ पे मैं
कौन आएगा यहाँ कौन है आने वाला

क्या ख़बर थी कौन मेरी जाँ में घुला है इतना
है वही मुझको सिरे दार भी लाने वाला

मैंने देखा है बहारों में चमन को जलते
है कोई ख़ाब की ताबीर बताने वाला

तुम तकल्लुफ़ को भी इख़्लास समझते हो फ़राज़
दोस्त होता नहीं हर हाथ मिलाने वाला

❂ ❂ ❂

यह रात दिन की आमद शाम व सहर का जाना
यह तेज़ गाम दरिया यह साफ़ साफ़ चश्मे
पैदा हुएहैं यूँ ही हरगिज़ नहीं है ऐसा
है कोई एक बेशक जिसने किया है पैदा
सोचो मेरे अज़ीज़ो!
यह नर्म-नर्म सब्ज़ा यह सब्ज़-सब्ज़ पत्ते
मोती के मिस्ल शबनम हल्के लतीफ़ झोंके
खुद हो गए हैं पैदा हरगिज़ नहीं है ऐसा
सोचो मेरे अज़ीज़ो!
बादे सहर के झोंके यह भीनी-भीनी खुश्बू
यह मुस्कुराती कलियाँ यह चहचहाती चिड़ियाँ
पैग़ाम दे रही हैं जागो सहर है जागो
लो नाम उसका उठकर जिसने किया है पैदा
सोचो मेरे अज़ीज़ो!

तख़्लीक़ की बुलन्दी अक़्ल व दिमाग़ रौशन
यह बोलने की ताक़त यह सोचने की क़ुव्वत
है कौन उनका ख़ालिक़ यह सब इसी की राह में
क़ुरबान क्यों न कर दें आ जाओ अब तो मिलकर
सब उसका गीत गाएँ

⚬ ⚬ ⚬

लुत्फ़ दुनिया के हैं चन्द दिन के लिए
खो न जन्नत के मज़े उनके लिए

यह क्या ऐ दिल तू सब फिर यूँ समझ
तूने नादान गुल दिए तिन्के के लिए

⚬ ⚬ ⚬

हमें तो आज भी सूरज का एतिबार नहीं
हमारे घर में अभी तक चिराग़ जलता है

⚬ ⚬ ⚬

27 चीज़ें क़ुर्बे क़ियामत की अलामत हैं!

क़स्बा सलमान पाक जिसे ज़माना क़दीम में मदायन के नाम से याद किया जाता था और जो आज भी ईराक़ में बदतरीन तबाही और बर्बादी के बावजूद बग़दाद से तक़रीबन चालीस मील की मुसाफ़त पर आबाद है। एक और रूह-परवर वाक़िए के सबब उम्मते मुस्लिमा को ताक़ियामत अल्ला की रौशन निशानी का एहसास दिलाकर झिंझोड़ता रहेगा। यह अलग बात है कि हम समाअत के बावजूद सुनने से महरूम, बसारत के बावजूद देखने से आरी और इदराक के बावजूद तफ़क्कुर से ख़ाली रहें और मुझे भी यह ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ किसी वजह से तहरीर करना पड़ रहा है वर्ना तो उसे लिखने के लिए उंगयों का वुज़ू, पढ़ने के लिए तहारते चश्म और सुनने के लिए पाकीज़ा समाअत का होना बहुत ज़रूरी है। वजह क्या है? यह अगली सतरों में वाज़ेह हो जाएगी।

क़स्बा सलमान पाक की एक पुर शिकवा इमारत में सहाबी रसूल सय्यदना सलमान फ़ारसी (रज़ि०) का मज़ार मुबारक है और अब इसी मज़ार के गुंबद से मुत्तसिल सरकार (सल्ल०) के दो जलीलुल क़द्र सहाबा (जिनसे मुतअद्दिद अहादीस मरवी हैं) हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान और हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि०) की मरक़द पुरनूर मौजूद हैं लेकिन यह पहले यहाँ नहीं थीं बल्कि सलमान पाक से तक़रीबन तीन या चार फ़रलाँग के फ़ासले पर एक ग़ैर आबाद जगह पर मौजूद थीं जहाँ ज़ेरे ज़मीन पानी के आने के सबब हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान ने दो मर्तबा शाह ईराक़ (फ़ैसल अव्वल) के ख़्वाब में आकर उससे कहा कि मुझे और जाबिर को यहाँ से मुंतक़िल कर दो क्योंकि दरियाए दजला का पानी क़ब्र में रिस रहा है। शाहे ईराक़ ने मुसलसल दो रातों तक यही ख़्वाब देखा मगर समझ नहीं पाया ताहम जब तीसरी रात हज़रत हुज़ैफ़ा ने मुफ़्ती आज़म ईराक़ नूरी सईद पाशा के ख़्वाब में आकर यही बात दोहराई और जब मुफ़्ती साहब ने शाह ईराक़ से उसका ज़िक्र किया तो उसने फ़ौरन ही उनसे अर्ज़ किया कि आप मज़ारात से अजसाद मुबारका मुंतक़िल करने का फ़तवा जारी कर दीजिए, मैं बिला किसी तरद्दुद अमल करूंगा। फ़तवा और शाही फ़रमान ईराक़ के तमाम अख़्बारात में शाया हुआ और बाज़ ख़बर रसाँ इदारों ने उस तारीख़ी ख़बर को पूरी दुनिया में फैला दिया। मुक़र्ररा दिन और वक़्त यानी 24 ज़िलहिज्जा पीर के दिन (1932 ई०) लाखों इंसानों की मौजूदगी में यह मज़ारात खोले गए तो मालूम हुआ कि हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान की क़ब्र मुबारका में पानी आ चुका था और हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह के मज़ार में नमी पैदा हो चुकी थी हालाँकि दरियाए दजला वहाँ से कम-से-कम 4 फ़रलाँग दूर था। तमाम मुमालिक के सुफ़रा और ईराक़ के अराकीन हुकूमत, मज़हबी रहनुमाओं और शाहे ईराक़ की मौजूदगी में पहले हज़रत हुज़ैफ़ा के जसदे मुबारक को क्रेन के ज़रिए ज़मीन से इस तरह ऊपर उठाया गया कि मुक़द्दस नाश क्रेन के साथ रखे हुए स्ट्रेचर पर ख़ुद-बख़ुद आ गई और फिर

क्रेन से स्ट्रेचर को अलेहदा करके शाहे फ़ैसल, मुफ़्ती आज़म ईराक़, वज़ीर मुख़्तार जमहूरिया तुर्की और वली अहद मिस्र शहज़ादा फ़ारूक़ ने काँधा दिया और यह जसदे मुबारक बड़े एहतिराम से शीशे के ताबूत में रख दिया गया, फिर इसी तरह हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि०) के जसदे मुबारक को क़ब्र से निकाला गया, हदीस लिखने वाले उन अज़ीमुल मर्तबत सहाबा किराम के चेहरों, कफ़न और रीश मुबारक देखकर लगता था कि जैसे उन्हें रहलत फ़रमाए 1400 साल नहीं बस चन्द घंटे ही गुज़रे हैं। सबसे हैरतअंगेज़ बात यह थी कि दोनों सहाबा किराम (रज़ि०) की आँखें खुली हुई थीं और उनमें इतनी चमक थी कि बहुतों ने चाहा कि उन आँखों को अपनी आँख से देख लें मगर वह इस तरह चौंधया जातीं कि हर शख़्स दूर हट जाता और यक़ीनन वह देख भी कैसे सकते थे कि उन मुबारक आँखों ने मुस्तफ़ा (सल्ल०) को देखा और उनकी शबीह को महफ़ूज़ कर रखा था। अब जो उन आँखों को देखता तो मेरे सरकार को देखता और उन्हें देखने के लिए आँख की नहीं तय्यब नज़र की ज़रूरत है। यही हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान बताते हैं कि मुझसे मेरे आक़ा व मौला (सल्ल०) ने फ़रमाया कि 72 चीज़ें क़ुर्बे-क़यामत की अलामत हैं। जब तुम देखो कि लोग नमाज़ें ग़ारत करने लगें। अमानत ज़ाया करने लगें। सूद खाने लगें। झूठ को हलाल समझने लगें मामूली बातों पर ख़ूरेंज़ी करने लगें। और ऊँची-ऊँची इमारत बनाने लगें।

दीन बेचकर दुनिया समेटने लगें। क़ता रहमी (यानी क़रीबी अइज़्ज़ा और रिश्तेदारों से बदसुलूकी) होने लगे। इंसाफ़ कमज़ोर हो जाए। झूठ सच बन जाए। लिबास रेशम का हो जाए। ज़ुल्म, तलाक़ और नागहानी मौत आम हो जाए। ख़ियानतकार को अमीन और अमानतदार को ख़ाइन समझा जाए। झूठे को सच्चा और सच्चे को झूठा कहा जाए। तोहमत-तराशी आम हो जाए। बारिश के बावजूद गर्मी हो। औलाद ग़म व ग़ुस्से के मूजिब हो। कमीनों के ठाठ हों और शरीफ़ों के नाम में दम आ जाए। अमीर व वज़ीर झूठ के आदी

बन जाएँ। अमीन ख़यानत करने लगें। क़ौम के सरदार ज़ालिम हों। आलिम और क़ारी बदकार हों। और जब लोग भेड़ की खालें यानी पोस्तीन पहनने लगें। उनके दिल मुर्दार से ज़्यादा बदबूदार और ऐलवे से ज़्यादा तल्ख़ हों, उस वक़्त उन्हें अल्लाह तआला ऐसे फ़ितने में डाल देगा जिसमें यहूदी ज़ालिमों की तरह भटकते फिरेंगे। और जब सोना आम हो जाएगा। चाँदी की माँग होगी। गुनाह ज़्यादा हो जाएंगे, अम्न कम हो जाएगा। मुस्हफ़ (यानी क़ुरआन) को आरास्ता किया जाएगा। मसाजिद में नक़्श व निगार बनाए जाएंगे। ऊँचे-ऊँचे मीनार बनाए जाएंगे, दिल वीरान होंगे, शराबें पी जाएंगी, शरअी सज़ाओं को मुअत्तल कर दिया जाएगा, लौंडी अपने आक़ा को जनेगी, जो लोग किसी ज़माने में नंगे पैर और नंगे दन रहा करते थे वह बादशाह बन बैठेंगे, ज़िंदगी की दौड़ और तिजारत में औरत मर्द के साथ शरीक हो जाएगी, मर्द औरतों की नक़्क़ाली पर फ़ख़्र करेंगे और औरतें मर्दों की शबाहत आज़ादाना इख़्तियार करेंगी, ग़ैरुल्लाह की क़समें खाए जाएंगी, ग़ैर दीन (ग़ैर मुस्लिम) के लिए शरअी क़ानून पढ़ा जाएगा, आख़िरत के अमल से दुनिया कमाई जाएग, ग़नीमत को दौलत, अमानत को ग़नीमत का माल और ज़कात को तावान क़रार दिया जाएगा, सबसे रज़ील क़ौम का रहनुमा बन बैठेगा। आदमी अपने बाप का नाफ़रमान होगा, माँ से बदसुलूकी करेगा, दोस्त को नुक़सान पहुंचाने से गुरेज़ न करेगा और बीवी की इताअत करेगा, बदकारों की आवाज़ें मुसाजिदों में बुलन्द होने लगेंगी, गाने वाली औरतें दासिता रखी जाएंगी और गाने का सामान फ़ख़्रिया रखा जाएगा, सरे राह शराबें पी जाएंगी, ज़ुल्म को फ़ख़्र समझा जाएगा, इंसाफ़ बिकने लगेगा, दरिन्दों की खाल के मोज़े बनाए जाएंगे और उम्मत का पिछला हिस्सा पहले लोगों को तान तान करने लगेगा। उस वक़्त सुर्ख़ आँधी, ज़मीन में धँस जाने, शक्लें बिगड़ जाने और आसमान से पत्थर बरसने जैसे अज़ाबों का इंतिज़ार किया जाएगा। अहादीस मुबारका पर अपनी अक़्ल नाक़िस से एतिराज़ात की लकीरें खींचने वाले रौशन ख़्याल, एतिदाल-पसन्द

मुजद्दिददीन पहले हज़रत हुज़ैफ़ा की क़ब्र का वाक़िया ग़ौर से पढ़ लें ताकि उन्हें यक़ीन हो जाए कि उस सहाबी रसूल पर शक करना अपने रहे सहे ईमान को ग़ारत करने के मुतरादिफ़ है और फिर ज़रा सोचिए!

अपने बच्चों के नामों के साथ दाऊी इलल ख़ैर भी लगाया करो

सवाल : मौलाना साहब आपसे एक सवाल करना चाहती हूँ। सुना है कि नामों के असरात इंसान की ज़िंदगी में पड़ते हैं और मेरे बच्चे बहुत आवारा हैं और नाफ़रमान हैं तो क्या मैं उनके नाम बदल दूँ या नाम लिखकर आपको भेजूँ, या क्या तदबीर इख़्तियार करूँ?

जवाब : हम मुसलमान हैं। हमारे हर काम में दीन का जज़्बा ग़ालिब होना चाहिए, जैसे तिजारत भी करें तो ऐसी कि उसमें दीन का फ़ायदा हो। इसी तरह नाम भी ऐसे रखें कि उसमें दीन की इशाअत का जज़्बा हो जैसे अपने बच्चों के नामों के साथ दाऊी इलल ख़ैर (ख़ैर की तरफ़ दावत देने वाला) लगाया करो कि इस नाम की बरकत से वह बहुत-से गुनाहों से बच जाएंगे। जैसे मिक़्दाद दाऊी इलल ख़ैर, नाफ़िल दाऊी इलल ख़ैर वग़ैरह कि नाम की बरकत से गुनाहों से बचना आसान हो जाता है। हमारे वालिद साहब (रह०) ने हज़रत जी मौलाना इनामुल हसन साहब (रह०) से फ़रमाया कि मेरे बच्चे ध्यान से पढ़ते नहीं हैं तो उन्हें पढ़ाऊं या पढ़ाई मौक़ूफ़ करा दूँ? तो हज़रत जी (रह०) ने इरशाद फ़रमाया कि कम से कम नाम के भी मौलवी बना दो कि उस नाम से भी बहुत से गुनाहों से बच जाएंगे।

दूसरी तदबीर यह है कि अपने बच्चों के लिए दुआ करो क्योंकि माँ-बाप की दुआ अपने बच्चों के लिए क़बूल होती है। तीसरी तदबीर यह है कि बच्चे अगर छोटे और ज़िद्दी हैं तो उनके दोनों

कानों में पूरी-पूरी सूरह सफ़ पढ़ लिया करो और बन्दे की किताब बिखरे मोती जिल्द दोम और सोम में और भी बहुत से रूहान नुस्ख़े लिखे हैं उसका मुताला करें। इंशा-अल्लाह फ़ायदा होगा। फ़क़त वस्सलाम।

पानी मुँह में रख लेना और बैठ जाना, पानी निगलना भी नहीं और बाहर निकालना भी नहीं

दो मियाँ-बीवी में आपस में इख़्तिलाफ़ था और बिल्कुल तलाक़ की नौबत आने के लिए तैयार, वह बीवी एक बुज़ुर्ग के पास गई और पूरा वाक़िया बयान किया कि हज़रत जी मुझे सुबह व शाम में तलाक़ होने वाली है। बुज़ुर्ग ने कहा कि अच्छा, एक तदबीर बताई कि तो बोतल में पानी लेकर आ, मैं पढ़कर दूँगा। वह पानी लेकर आई, बुज़ुर्ग ने पढ़कर दिया और उससे कहा कि जब तेरा शौहर घर में आए और लड़ाई करे, झगड़ा करे, पानी मुँह में रख लेना, और बैठ जाना पानी निगलना भी नहीं और बाहर निकालना भी नहीं, जब तक शौहर का गुस्सा ख़त्म न हो जाए, पानी मुँह में लिए रहना। चुनांचे उसने हज़रत जी की बात पर अमल किया। आदत के मुताबिक़ लड़ाई-झगड़ा शुरू किया, यह जल्द से उठी और बोतल से पानी मुँह में लिया और बैठ गई। हुक्म था निगलना भी नहीं और बाहर भी नहीं निकालना, अब जवाब देगी तो पानी निकल जाएगा, तो इसलिए वह अब नहीं बोलती बल्कि ख़ामोश बैठी हुई है। पाँच मिनट, हुए दस मिनट हुए, आख़िर शौहर गाली देते हुए बुरा भला कहते हुए, आजिज़ आ गया, और सोचा कि यह तो कोई जवाब नहीं देती। अब उसे फिर शर्मिन्दगी हुई कि यह जवाब नहीं देती, और मैं उसे बराबर गालियाँ दे रहा हूँ, अब उसे ज़रा नदामत हुई, लेकिन फिर सोचा मुमकिन है, इत्तिफ़ाक़ से आज ऐसा हो वर्ना यह ऐसी नहीं थी, यह तो बड़ी ज़बान चलाती थी। अब मैं दूसरे वक़्त में फिर देखूंगा कि ज़बान चलाती है कि नहीं, फिर दूसरे वक़्त में

आया और फिर इसी तरह गालियाँ देना शुरू कीं, और बुरा-भला कहना शुरू किया, यह फिर जल्दी से उठी और जल्दी से पानी लेकर मुँह में रखकर फिर बैठ गई। शौहर आजिज़ आ गया, थक गया, उसने कहा भाई यह बीवी तो वाक़ई पहले जैसी बीवी नहीं रही, जवाब ही नहीं देती। अब उसे और ज़्यादा शर्मिन्दगी हुई, लेकिन उसने सोचा अभी तो दो मर्तबा ही हुआ है, हो सकता है यह इत्तिफ़ाक़ हो। फिर तीसरी मर्तबा देखा, चौथी मर्तबा देखा और वह कोई जवाब नहीं देती, जल्दी से पानी मुँह में लेकर बैठ जाती, जवाब ही नहीं देती, अब शौहर ने सोच लिया कि वाक़ई अब तो यह बीवी पहले जैसी नहीं है, अब तो यह बर्दाश्त करने वाली बन गई। सब्र करने वाली बन गई, मेरी बात का जवाब तक नहीं देती, मैं भी अब उसे कुछ नहीं कहूँगा, इसलिए अब उसने भी तौबा कर ली, और अब उल्टा बीवी से माफ़ी माँगता है। मैं तुझसे माफ़ी माँगता हूँ मैंने तुझे बहुत सताया है, तेरी कोई ग़लती नहीं, तू तो बहुत अच्छी बीवी है, ग़लती मेरी है, शौहर अलग से माफ़ी माँग रहा है, बीवी अलग से माफ़ी माँग रही है, या तो वह तलाक़ की नौबत थी, और घर बर्बाद होने को था, और अब आपस में माफ़ी-तलाफ़ी होकर एक ज़रा-सी तदबीर करने की वजह से और सब्र करने की वजह से घर बर्बाद होने से बच गया।

अल्लाह तआला की एक बहुत बड़ी निशानी "हवा"

وَتَصْرِيفِ الرِّيَاحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُونَ.

"और हवाओं के बदलने में और अब्र (बादलों) में जो ज़मीन व आसमान के दर्मियान मुक़य्यद है, दलाइल हैं उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं।" (बयानुल क़ुरआन)

अल्लाह आला की क़ुदरत की निशानियाँ बेशुमार हैं, हर चीज़ में दलील उसकी तौहीद व यकताइयत की पाई जाती है, जिसे एक

शायर ने यूँ कहा है : इसकी मिंजुमला निशानियों के एक निशानी हवाओं का इख़्तिलाफ़ व इंक़िलाब है, कि हवा भी ठंडी होती है, तो कभी गर्म, कभी सख़्त होती है, कभी नर्म कभी, तेज़ होती है। कभी आहिस्ता, कभी पुरवा चलती है, पछवा, कभी शुमाली चलती है, कभी जुनूबी, कभी रहम की ख़बर व बशारत देती है तो कभी अज़ाब लेकर आती है, ग़र्ज़ यह कि हवाओं का यह तग़य्युर व इंक़िलाब क़ुदरत ख़ुदावंदी और उसकी वहदानियत की दलील है।

क़ाज़ी शुरीह फ़रमाते हैं कि हवा या तो बीमार को सेहत व तंदुरुस्ती बख़्शती है, या तंदुरुस्त को बीमार करती है, चुनाँचे होता भी ऐसा है कि हवा किसी के लिए सेहत व शिफ़ा का बाइस बनती है। तो किसी के लिए बीमारी और कमज़ोरी का सबब बनती है, उलमा ने लिखा कि हवाओं की आठ क़िस्में हैं, जिनका तज़्किरा क़ुरआन करीम में है, जिनमें चार क़िस्म की हवाएं रहमत और ख़ुदावंदी इनायत की पेशगोई करती हैं, और चार क़िस्म की हवाएँ अज़ाब और ख़ुदा की पकड़ को लाती हैं, उन रहमतों की हवाओं में दो का ताल्लुक़ ख़ुश्की से है और दो का ताल्लुक़ समुन्द्र और तरी से है। रहमत की हवा जिसका ताल्लुक़ ख़ुश्की से है उनको मुबश्शिरात कहा जाता है, और दूसरी को रुख़ा कहा गया है, और जिनका ताल्लुक़ समुन्द्रों से है उनमें एक को नाशिरात और दूसरी को मुर्सलात कहते हैं, इसी तरह अज़ाब वाली हवा जो ख़ुश्की पर चलती हैं उनमें एक को अक़ीम और दूसरी को सरसर कहते हैं और दरियाई और समुन्द्रों की जो अज़ाब वाली हवा चलती है उनमें से एक को आसिफ़ और क़ासिफ़ कहते हैं।

यह हवा अल्लाह तआला के बेशुमार लश्करों में एक अज़ीम लश्कर है, जिसके ज़रिये दीन के दुश्मनों को सज़ा दी गई है, हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से मंक़ूल है। फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला के लश्करों में सबसे बड़ा लश्कर हवा और पानी हैं। चुनांचे इस हवा के ज़रिये बड़े-बड़े ताक़तवर लोगों को हलाक व बर्बाद किया गया, और अल्लाह तआला ने उसके ज़रिये अपने नेक बन्दों और रसूलों

की मदद व नुसरत फ़रमाई है। क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला ने क़ौमे आद जिसकी तरफ़ हज़रत हूद अलैहिस्सलाम को नबी बनाकर मब्ऊस किया था, और उसने हूद अलैहिस्सलाम को झुठला दिया और उनको अज़ीयत व तकलीफ़ दी, तो अल्लाह तआला ने उन पर पछवा हवा को मुसल्लत कर दिया और उसके ज़रिये उनको बर्बाद कर दिया, क़ुरआन करीम में कई मक़ामात पर इसका ज़िक्र किया है, जिसकी मुख़्तसर तौज़ीह बनस क़ुरआन और हस्बे तफ़्सीर यह है।

क़ौमे आद जिसे अल्लाह तआला ने आदे-ऊला के नाम से ताबीर किया था, जिसका शुमार क़दीमतरीन क़ौमों में होता है, बाज़ हज़रात ने उनको दो ढाई-हज़ार साल पहले अज़ मसीह माना है, सामी नस्ल क़ौमों में इसको सबसे पहली मुक़्तदर और हुक्मराँ क़ौम माना है, उनकी आबादी उमान से हज़रमौत और यमन तक फैली हुई थी, बड़ी ताक़तवर और मुतमद्दुन क़ौम थी, अल्लाह तआला ने उनको तमद्दुन और मईशत के ऐसे नादिर वसाइल और बेश क़ीमत ज़राए अता फ़रमाए थे कि दूसरी किसी क़ौम को वैसे वसाइल मयस्सर नहीं थे। दुनिया में कोई क़ौम उस जैसी क़ुव्वत व जसा वाली नहीं थी, और संगतराशी और नक़्क़ाशी में बड़ी महारत रखती थी। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं *"अतबनू-न बिकुल्लि रीइन आयतन ताबुसू न"* दूसरी जगह इरशाद है *"अल्लती लमयुख़-ल-क़ मिस्लुहा फ़िलबिलाद"* उनको अपनी क़ुव्वत व ताक़त पर बड़ा ग़ुरूर था, और अपने मुक़ाबले के लिए *"मन अशद्दु मिन्ना क़ुव्वह"* का नारा लगाते थे, उनके एक एक फ़र्द के बारे में मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि ऐसा ताक़तवर था कि पहाड़ की चट्टान को उठाकर दुश्मनों के क़बाइल के ऊपर दे मारता था, एक-एक आदमी उनका बारह-बारह गज़ लम्बा था, ग़र्ज़ कि बड़े-बड़े डील-डोल के मालिक थे, उनकी तरफ़ अल्लाह तआला ने हज़रत हूद अलैहिस्सलाम को नबी बनाकर भेजा, और उन्होंने उनको कुफ़्र व शिर्क से रोका, और बुतपरस्ती से हटाकर तौहीद इलाही की तरफ़ बुलाया, मगर क़ौम नहीं मानी। और

पैग़म्बर को झुठलाया और हिदायत क़बूल करने से इनकार कर दिया। हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने उन्हें नाफ़रमानी की सूरत में अज़ाबे इलाह से डराया, बजाय इसके कि उनमें ख़ौफ़ व दहशत पैदा होती उल्टा मुतालबा अज़ाब की जल्दी का करने लगे। अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया : "फ़ातिना बिमा तअिदुना" जब क़ौमे आद किसी तरह न मानी और इंतिहाई जुर्रत के साथ अज़ाब में जल्द मचाने लगी, तब अल्लाह आला की तरफ़ से उनकी हलाकत का यह सामान हुआ कि एक बादल को भेजा गया जिसे देखकर क़ौमे आद ने कहा कि यह बादल हम पर पानी बरसाएगा, अल्लाह तआला ने उनकी इस ख़ुशफ़हमी को रद्‌द करते हुए फ़रमाया कि यह तो वह अज़ाब है जिसकी तुमने जल्दी मचा रखी थी। वह बादल अपने अंदर एक तबाहकुन तूफ़ानी हवा को लिए हुए था, चुनांचे सख़्त सर्दी में सात रात और आठ दिन तक मुसलसल यह हवाई तूफ़ान उन पर चलता रहा, ऐसी तेज़ आँधी चलती कि उन देव हैकल लोगों को तिन्के की तरह ऊपर उठाती और ज़मीन पर पटख़ देती जिससे उनके सर चकनाचूर हो जाते, उनके पेट फट जाते, आँतें बाहर निकल कर फैल जातीं। इसी तरह उनके मवेशियों को उठाकर पटख़ देती। पछवाई तूफ़ानी हवा ने उन्हें ऐसा तबाह किया कि गोया खजूर के खोखले बेजान तने हैं, जिनके सिर ऊपर से काट दिए गए हैं। और उनका ग़ुरूर अपनी एक मख़्लूक़ "हवा" के ज़रिए निकाल दिया, यह हवा उनके मकानों के अंदर दाख़िल होती और उनकी छतों को उठाकर पलट देती, मकान, दरख़्त, मवेशी कोई चीज़ नहीं छोड़ी, सबको हलाक व बर्बाद कर दिया।

क़ुरआन करीम में अनेक जगहों पर इसका तज़्किरा है। एक जगह है—

وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ
وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ ۙ حُسُوْمًا ۙ فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ
خَاوِيَةٍ ﴿٧﴾ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْ بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾

और आद जो थे सो वे एक तेज़ व तुन्द हवा से हलाक किए गए। (6) जिसको अल्लाह तआला ने उनपर सात रात और आठ दिन लगातार मुसल्लत कर दिया था। सो (ऐ मुख़ातब! अगर) तू (उस वक़्त मौजूद होता) तो उस क़ौम को इस तरह गिरा हुआ देखता कि गोया वह गिरी हुई खजूरों के तने (पड़े) हैं।(7) सो क्या तुझको उनमें का कोई बचा हुआ नज़र आता है? (यानी बिलकुल ख़ातिमा हो गया)(8)

5 हिजरी माहे शव्वाल में अबू-सुफ़ियान अरब के अक्सर क़बीलों को लेकर मदीना मुनव्वरा चढ़ आया और वे सब लोग मुत्तफ़िक़ और मुत्तहिद मुसलमानों की बीख़कनी और उनका बिल्कुल नाम व निशान मिटाने के लिए और सबको फ़ना की घाट उतारने के लिए जमा हो गए थे, और अब अबू-सुफ़ियान के परचम तले इकट्ठा हो गए थे, जिनकी तादाद दस हज़ार से मुतजावुज़ थी। आप (सल्ल०) को इसका इल्म हुआ, तो आप (सल्ल०) ने सहाबा किराम (रज़ि०) से और बिल खुसूस सलमान फ़ारसी (रज़ि०) से मशवरे के बाद मदीना तय्यिबा के तहफ़्फ़ुज़ के लिए एक ख़न्दक़ जो तक़रीबन साढ़े तीन मील की थी, खुदवाई और हर दस सहाबा (रज़ि०) की एक जमाअत बनाकर चालीस-चालीस हाथ ख़न्दक़ खोदने की उन्हें ज़िम्मेदारी दे दी और खुद भी बनफ़्से नफ़ीस उसके खुदवाने में शरीक हुए। उस ख़न्दक़ को कुफ़्फ़ार ने देखा तो हैरान रह गए, इसलिए कि अरब में इस तरह ख़न्दक़ खोदने का कोई दस्तूर नहीं था, इसलिए कहने लगे *"अन हाज़ा मकीदह"* (बग़वी) इस ख़न्दक़ की वजह से कुफ़्फ़ार, मदीना पर चढ़ाई न कर सके, और मुसलमानों से बड़ी लड़ाई भी न हुई, अलबत्ता एक महीना तक पूरे ज़ोर व शोर के साथ मदीना का मुहासिरा किए रखा, और हर तरफ़ से पूरी शिद्दत के साथ नज़र रखी गई, इस मुद्दत में बाहम कुछ मामूली-सी झड़पें हुईं और मुसलमानों को बहुत ख़ौफ़ व दहशत और परेशानी का सामना करना पड़ा, इसी दर्मियान कि सख़्त सर्दी

का मौसम था, एक दिन बहुत तेज़ तूफ़ान, पुरवा हवा का चला जिसने उनके ख़ेमे-डेरे उखाड़ फेंके और उनकी हांडियाँ चूल्हों से औंधा दीं, और बर्तन भाँडे बिखेर दिए, उस तेज़ हवा में संग रेज़े और मिट्टी ने उनके चेहरों पर ज़रबें लगाईं, और उनके दिलों में ऐसा रौब तारी हुआ कि वे बिल्कुल सरासीमा हो गए और कम हिम्मत और शिकस्त ख़ोरदा मदहोश होकर भाग खड़े हुए और इस तरह अल्लाह तआला ने दुश्मनों के इस जमघटे को उस पुरवा हवा के ज़रिए मुंतशिर कर दिया, जो दर हक़ीक़त अहले इस्लाम के लिए बाइसे रहमत बनी और रसूले करीम (सल्ल०) का एक अज़ीम मोजिज़ा हुआ, "सूरह अहज़ाब" में इस वाक़िये को बयान किया गया है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا (الاية)

"ऐ लोगो जो इमान लाए हो, याद करो अल्लाह के एहसान को जो (अभी-अभी) उसने तुम पर किया है। जब लश्कर तुम पर चढ़ आए तो हमने उनपर एक सख़्त आँधी भेज दी और एसी फ़ौजें रवाना कीं जो तुमको नज़र न आती थीं। अल्लाह वह सब कुछ देख रहा था जो तुम लोग उस वक़्त कर रहे थे।" (पारा-9)

हदीस शरीफ़ में जनाब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया है कि

نُصِرْتُ بِالصَّبَا وَاُهْلِكَتْ عَادٌ بِالدَّبُوْرِ

"मेरी पुरवा हवा के ज़रिए मदद की गई है, और क़ौमे आद को पछुवा हवा के ज़रिए हलाक किया गया था।"

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की घबराहट

यूँ तो हर वक़्त ही रसूलुल्लाह (सल्ल०) का क़ल्ब ख़ौफ़े वहशते इलाही से मामूर रहता था, किसी वक़्त भी उससे ख़ाली नहीं रहता

था, और बेफ़िक्री कभी पैदा नहीं होती थी, लेकिन तेज़ हवा चलती और उसके झकड़ चलते या आसमान पर गहरी घटा छा जाती और सियाह बादल मंडलाने गते, तो आप (सल्ल०) इंतिहाई फ़िक्रमन्द हो जाते, और इस फ़िक्र का असर आप (सल्ल०) के चेहरे पर नुमायाँ हो जाता था, जिसकी वजह यही थी कहीं यह हवा और अब्र मख़्लूक़ के लिए मुसीबत और परेशानी का सबब न बन जाए, और उसके ज़रिए क़ौमों को हलाक व बर्बाद न कर दिया जाए, चुनांचे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को कभी इस तरह हँसते हुए नहीं देखा कि आपके हलक़ का कौआ नज़र आया हो, आप (सल्ल०) तो सिर्फ़ मुस्कुराते थे और जब आप (सल्ल०) बादल या हवा को देखते तो चेहरा अनवर पर तग़य्युर साफ़ नुमायाँ होता था।

और इस घबराह की वजह से कभी आप घर में दाख़िल होते कभी बाहर निकलते, कभी आगे को होते, कभी पीछे को होते, हज़रत आइशा (रज़ि०) ने उसकी वजह दरयाफ़्त की तो फ़रमाया, ऐ आइशा (रज़ि०) आसमान पर छाए हुए इस अब्र से ख़ौफ़ व इज़्तराब का सबब यह है कि कहीं यह बादल इसी तरह का न हो जिसके मुताल्लिक़ क़ौमे आद ने का था "हाज़ा आरिज़ुन मुमतिरुना" फिर जब क़ौमे आद ने उस अब्र को देखा जो उनकी वादियों के सामने आया तो उन्होंने कहा कि यह अब्र है जो हम पर बरसेगा।

तेज़ हवा चले तो यह दुआ पढ़े

जब तेज़ हवा चलती तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) यह दुआ पढ़ते थे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا فِيْهَا وَخَيْرَ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ وَاَعُوْذُبِكَ
مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا وَشَرِّ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ

अल्लाहुम-म इन्नी अस्आलुका ख़ैर-हा व ख़ै-र मा फ़ीहा व ख़ै-र मा उर्सिलतु बिही व अऊज़ुबि-क मिन शर्रि-हा व शर्रि मा फ़ीहा व शर्रि मा उर्सिलतु बिही।

"ऐ अल्लाह मैं तुझसे माँगता हूँ वह भलाई (जो तिब्बी तौर पर) इसमें तूने रखी है, और वह भलाई जो इसमें पोशीदा है, यानी मुनाफ़ास, और ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इसकी बुराई से और उस चीज़ की बुराई से जो इसमें रखी गई है, और उस चीज़ की बुराई से जिसके लिए इसको भेजा गया है।" (मिश्कात मज़ाहिरी)

हवा को बुरा मत कहो

हवा को बुरा-भला कहना और उसको लान-तान करना मना है। जनाब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इससे मना किया है, चुनांचे इब्ने अब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि एक शख़्स ने आप (सल्ल०) की मौजूदगी में हवा को बुरा कहा और लानत भेजी। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि इसको बुरा मत कहो, इसपर लानत मत भेजो इसलिए कि यह अल्लाह तआला की तरफ़ से मामूर है, और हुक्मे इलाही की बिना पर चल रही है। जिस चीज़ पर लानत की जाए और वह उसकी मुस्तहिक़ न हो तो वह लानत करने वाले पर लौट आती है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

नीज़ एक रिवायत में है जबकि एक औरत ने जब आप (सल्ल०) के क़ाफ़िले के साथ अपनी ऊंटनी को बुरा-भला कहा। आप (सल्ल०) ने उसको अपने लश्कर से अलग कर दिया, और फ़रमाया कि *"ला यन्बग़ी मअ़-न अल-मलऊ-न-त"* लानत की हुई चीज़ हमारे साथ नहीं रहेगी। (हाशिया तिर्मिज़ी शरीफ़, सावी, दुर्रे मन्सूर, बग़वी, बयानुल क़ुरआन)

क़ुरआनी मालूमात

सवाल नम्बर (1) : वे कितने अंबिया हैं जिनके नाम उनकी पैदाइश से पहले रखे गए?

जवाब : क़ुरआन करीम में पाँच अंबिसा का ज़िक्र है जिनके नाम उनकी पैदाइश से पले रखे गए हैं। (1) हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम (2) हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम इरशाद बारी है : فَبَشَّرْنَاهَا بِإِسْحَاقَ وَمِن وَرَاءِ إِسْحَاقَ يَعْقُوبَ "सो हमने उनको बशारत दी इस्हाक़ की और इस्हाक़ से पीछे याक़ूब की" (3) हज़रत याहया अलैहिस्सलाम, अल्लाह तआला ने फ़रमायाः إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ اسْمُهُ يَحْيَىٰ "हम तुमको एक फ़रज़न्द की ख़ुशख़बरी देते हैं जिसका नाम याहया होगा" (4) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, चुनांचे हज़रत मरयम को ख़िताब किया गया है : إِنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ "ऐ मरयम, बेशक अल्लाह तआला तुमको बशारत देते हैं एक कलिमे की जो मिंजानिबअल्लाह होगा, उसका नाम (लक़ब) मसीह ईसा इब्ने मरयम होगा" (5) हज़रत नबी करीम (सल्ल०), चुनांचे इरशाद है : وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِن بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ "और मेरे बाद जो एक रसूल आने वाले हैं। जिनका नाम अहमद होगा, उनकी बशारत देने वाला हूँ।"

सवाल नम्बर (2) : क़ुरआन करीम में कितने फ़रिश्तों के नाम मज़्कूर हैं और क्या क्या हैं?

जवाब : क़ुरआन शरीफ़ में मुतअद्दिद फ़रिश्तों के नाम ज़िक्र किए गए है। जो इस तरह हैं : (1) जिबरील अलैहिस्सलाम (2) मीकाईल अलैहिस्सलाम (3) हारूत (4) मारूत (5) रअ्द (6) बर्क़ (7) मालिक (8) सजल (9) क़ईद।

सवाल नम्बर (3) : जिबरील और मीकाईल के मानी क्या हैं?

जवाब : हज़रत इब्ने अब्बास से मन्क़ूल है कि हर वह नाम जिसमें ईल का लफ़्ज़ हो उसके यानी अब्दुल्लाह के होंगे जैसे

इस्राफ़ील बमानी अब्दुल्लाह, इसराईल (हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का लक़ब) बमानी अब्दुल्लाह जिबरील बमायना अब्दुल्लाह और मीकाईल बमानी अब्दुल्लाह।

दरबारे ख़ुदावन्दी का इनअक़ाद

हदीस में फ़रमाया गया है कि हर हफ़्ते में......वहाँ हफ़्ते तो नहीं होंगे मगर एक हफ़्ते की जितनी मुसाफ़त और मिक़्दार होती है......उसमें दरबारे खुदावंदी होगा। ऊपर नीचे सौ जन्नतें हैं और हर जन्नत आसमानों और ज़मीनों से बड़ी है, उन सौ के ऊपर फिर कुर्सी है, उसके ऊपर समुन्द्र है। उसके ऊपर फिर अर्श खुदावंदी है। तो कुर्सी मानो जन्नतियों की छत के ऊपर है। उसमें दरबार होगा।

(1) आख़िरत में रईयत ख़ुदावन्दी का मक़ाम

वह दरबार कहाँ होगा..........?

तो हदीस में इसकी शरह यह फ़रमाई गई कि हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम एक बार हाज़िर हुए तो एक आईना उनके हाथ में था। आईना के बीच में एक नुकता था। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया यह नुकता कैसा है..........?

अर्ज़ किया कि उसका नाम ज़ीद है।

फ़रमाया, "मज़ीद" क्या चीज़ है?

अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! जन्नत में एक मैदान है जिसका नाम मज़ीद है। और वह इतना बड़ा है कि लाखों साल से मैं घूम रहा हूँ और अब तक मुझे उसके किनारों का पता नहीं चला कि कहाँ हैं, उसकी हर चीज़ सफ़ेद है। ज़मीन सफ़ेद है। कंकरियाँ सफ़ेद हैं, घास भी सफ़ेद ग़र्ज़ हर चीज़ सफ़ेद है तो जब जुमा का दिन आए उस वक़्त उस दरबार के लिए तैयारी की जाएगी। उसके तमाम मैदान में बीचों बीच तो अल्लाह तआला की कुर्सी बिछाई जाएगी, जिसका ज़िक्र क़ुरआन करीम में है।

आसमानों और ज़मीनों से कहीं ज़्यादा कुर्सी बड़ी है। लेकिन उस मैदान में जब कुर्सी बिछेगी तो वह ऐसी मालूम होगी जैसे एक बड़े मैदान में एक छोटा-सा छल्ला डाल दिया जाए। वह बीचों-बीच बिछाई जाएगी........उसके इर्द-गिर्द अंबिया अलैहिस्सलाम के मिम्बर होंगे। वह नूर के मिम्बर होंगे। हर मिम्बर के पीछे उम्मतियों की कुर्सियाँ होंगी। फिर जो अमल में अंबिया से ज़्यादा क़रीब हैं उनकी कुर्सियाँ मिम्बर के क़रीब, और जो अमल में बईद थे कोताह अमल थे उनसे उनकी बईद। दर्जा ब दर्जा।

(2) दरबारे ख़ुदावन्दी में अहले जन्नत की शिरकत

जब दरबार का दिन आएगा तो तमाम अहले जन्नत दरबार की शिरकत के लिए चलेंगे, लाखों मील का फ़ासला होगा मगर सवारियों पर जाएंगे, तख़्त हवा होंगे वहाँ कोई मशीन नहीं है। जेट तय्यारे नहीं होंगे कि उनकी मरम्मत की ज़रूरत पेश आए। बल्कि कुव्वते-मुतख़य्यला के ताबे होंगे। तख़्त पर बैठकर आपने इरादा किया कि चलें। अब वह तख़्त चलना शुरू हुआ। और लाखों मील का फ़ासला वहाँ की सवारियाँ पल भर में तै करेंगी, कोई बुराक़ पर सवार है, कोई तख़्त पर सवार है। दर्जा ब दर्जा मुख़्तलिफ़ सवारियाँ होंगी। उस मैदान में आकर बैठेंगे जहाँ कुर्सियाँ होंगी।

फिर कुर्सियों में यह नहीं कि वहाँ नज़्म करने वाले खड़े हों कि भई! यह कुर्सी तुम्हारी है। यह सीट तुम्हारी है। वहाँ न बैठ जाना। यह नहीं होगा, हर शख़्स अपनी क़ल्बी शहादत से अपने मक़ाम को पहचानेगा। ठीक उस कुर्सी पर जाकर बैठेगा जो उसके नाम ज़द है। यह नहीं होगा कि दूसरी कुर्सी पर बैठ जाए। तो तमाम लोग जमा हो जाएंगे और मैदान भर जाएगा। इसमें जो बिल्कुल अवाम होंगे, जिनमें अमली कोताहियाँ ज़्यादा थीं, तो कुर्सियों के पीछे चबूतरे होंगे, उन पर मुश्क व अम्बर के ग़ालीचे होंगे, वह उस पर बैठे हुए

होंगे। अब यह पूरा दरबार शुरू होगा। जैसे अहादीस में फ़रमाया गया है यह महसूस होगा कि जब अल्लाह तआला की तजल्लियात उतरेंगी तो कुर्सी इस तरह चड़चड़ाएगी जैसे अब टूटी। वहाँ बोझ बदन का नहीं होगा। हक़ तआला बदन से पाक हैं, वह बदन के भी ख़ालिक़ हैं और रूह के भी हैं। वह अज़्मत का बोझ होगा जिसको अरवाह महसूस करेंगी। वह हिसी और जिस्मानी बोझ नहीं होगा तो कुर्सी गोया ऐसे चड़चड़ाएगी जैसे तहम्मुल की ताक़त नहीं है।

अब मानो तजल्लियात उतर चुकी हैं। हक़ तआला शानुहू मौजूद हैं और अंबिया (अलैहि०) इर्द-गिर्द नूरानी मिम्बरों पर हैं और उनके पीछे उम्मतें अरबों-खरबों अव्वलीन व आख़िरीन जमा हैं।

(3) दरबारे ख़ुदावंदी में शराबे तहूर का दौर

हदीस में है कि हक़ तआला मलाइका अलैहिमुस्सलाम को फ़रमाएंगे कि वह जो हमने क़ुरआन करीम में वादा किया था :

وَسَقٰهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا

एक पाक क़िस्म का शरबत पिलाएंगे, वह उन बन्दों को तक़्सीम करो। मलाइका तक़्सीम शुरू करेंगी। मानो शाही दरबार की तरफ़ से एक ज़ियाफ़त होगी। उसको पिएंगे तो उससे ऐसा सुरूर पैदा होगा कि उसको नशा तो नहीं कह सकते, रूहानी नशा ज़रूर होगा यानी दुनिया की शराब में तो यह नशा है कि अक़्ल जाती रहती है। आदमी मजनून हो जाता है, ख़बती बन जाता है।

इस शराब के पीने से अक़्ल में और तेज़ी पैदा होगी। और मआरिफ़ इलाहिया और उलूम रब्बानिया और ज़्यादा खुलने शुरू हो जाएंगे, अनवार व बरकात बढ़ जाएंगे। तो यह शराब तहूर तक़्सीम होगी।

(4) हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की तिलावत व मुनाजात

इसके बाद हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम, जिनको आवाज़ का मोजिज़ा दिया गया था इतनी पाकीज़ा, पाक और ख़ुशनुमा आवाज़ थी कि जब वह हम्द व सना की मुनाजातें पढ़ते थे तो चरिन्द व परिन्द सब उनके इर्द-गिर्द जमा होकर सर धुनते थे और मस्त हो जाते थे। हक़ तआला फ़रमाएंगे कि

ऐ दाऊद! उन अहल दरबार को वह मुनाजातें सुनाओ जो तुम दुनिया में पढ़ते थे। और उसी एजाज़ी आवाज़ से सुनाओ।

दाऊद अलैहिस्सलाम हम्द व सना की वह मुनाजातें पढ़ना शुरू करेंगे, तो आवाज़ तो मोजिज़ा थी ही और वहाँ मैदान में सारे अल्लाह वाले जमा हैं, सारे अंबिया अलैहिस्सलाम जमा हैं, अरबों-खरबों मलाइका जमा हैं और ख़ुद हक़ तआला शानहू मौजूद तो उसकी तासीर की क्या इंतिहा होगी! जब वह मुनाजातें पढ़ी जाएंगी तो अजीब क़िस्म के आसार नुमायाँ होंगे, सब बन्दे उसके अंदर महव हो जाएंगे।

(5) जमाले ख़ुदावंदी के दीदार का सवाल

इसके बाद हक़ तआला फ़रमाएंगे कि *"स-लुनी म-शेतुम"* जिसका जी चाहे, हमसे माँगे। और हमसे सवाल करे। बन्दे अर्ज़ करेंगे कौन-सी नेमत है जो आपने हमें अता नहीं की, जन्नत सारी नेमतों का मज्मूआ है, वहाँ नक़्श का निशान नहीं। हर चीज़ में कमाल है। जब आपने हमें सब कुछ दे दिया तो अब हम क्या माँगें, हमारे तो ख़्याल से भी ज़्यादा बुलन्द चीज़ें हमें मिल चुकी हैं। अब क्या माँगे, हमारा तख़य्युल भी नहीं जा सकता।

इरशाद होगा, नहीं! माँगो। जब किसी के समझ में नहीं आएगा तो सब मिलकर उलमा की तरफ़ रुजूअ करेंगे कि तुम फ़तवा दो

और मशवरा दो कि क्या माँगें, हमें तो सब मिल चुका है। तो मैं अर्ज़ करता हूँ कि लोग दुनिया में उलमा से किनाराकशी चाहते हैं कि छोड़ दें, यह वहाँ भी पीछा नहीं छोड़ेंगे। वहाँ भी फ़तवे की ज़रूरत पड़ेग, वहाँ भी उलमा की हाजत पड़ेगी। इल्म ख़ुदावंदी के बग़ैर न दुनिया में काम चल सकता है न आख़िरत में काम चल सकता है।

उलमा फ़तवा देंगे कि एक चीज़ नहीं मिली, वह माँगो, बेशक सारी नेमतें मिल गईं मगर एक चीज़ अभी तक नहीं मिली, और वह यह कि जमाल ख़ुदावंदी का दीदार अभी तक नहीं हुआ। वह तलब करो, उस वक़्त बन्दे अर्ज़ करेंगे कि—

"ऐ अल्लाह! अपना जमाले मुबारक दिखला दीजिए।" आपने सब नेमतें दीं मगर यह नेमत अभी तक बाक़ी है। यह दरख़्वास्त मंज़ूर की जाएगी।

(6) नेमतें मज़ीद

और हक़ तआला फ़रमाएंगे, *"अन कमा अनतुम"* हर चीज़ अपनी-अपनी जगह ठहरी रहे। अगर यह न फ़रमा दें तो لاحرق سبحات وجهه ما بلغ بينه उसके चेहरे की पाकीज़गियाँ हर चीज़ को जलाकर ख़ाक कर दें। ख़ुद फ़रमा देंगे कि हर चीज़ थमी रहे।

उसके बाद हिजाबात उठने शुरू हो जाएंगे। हिजाबात उठकर एक हिजाब किब्रियाई का बाक़ी रह जाएगा।

उस वक़्त बन्दों की यह कैफ़ियत होगी कि एक तो शराब तहूर से रूहानी नशा चढ़ा था। दाऊद अलैहिस्सलाम के मज़्मूनों से मारफ़त का नशा बढ़ा। हक़ तआला का जमाल देखकर इतने महव होंगे कि एक-दूसरे की ख़बर नहीं रहेगी। यह समझेंगे कि कोई नेमत ही हमें अब तक नहीं मिली थी। आज हमें नेमत मिली है। उस नेमत का नाम शरीअत की इस्तिलाह में "मज़ीद" है।

जिबरील अलैहिस्सलाम ने कहा कि यह वही मैदान मज़ीद है।

इसमें वह नेमत मिलेगी जो सबके ऊपर मज़ीद है, जिसको क़ुरआन करीम में फ़रमाया गया *'वलदैना मज़ीद'* हम ज़ाब्ते का अज्र तो सबको देंगे, और कुछ मज़ीद भी है जो हम बाद में देंगे, वह मज़ीद नेमत होगी।

अमारत क़बूल करने से इनकार करना

हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़दस (सल्ल०) ने हज़रत मिक़्दाद बिन असवद को घोड़े सवारों की एक जमाअत का अमीर बनाया। जब यह वापस आए तो हुज़ूर (सल्ल०) ने उनसे पूछा कि तुमने अमारत को कैसा पाया? उन्होंने कहा, ये लोग मुझे उठाते और बिठाते थे, यानी मेरा ख़ूब इकराम करते थे जिससे अब मुझे यूँ लग रहा है कि वह पहले जैसा मिक़्दाद नहीं रहा (मेरी तवाज़ोअ वाली कैफ़ियत में कमी आ गई है) हुज़ूर ने फ़रमाया, वाक़ई अमारत ऐसी ही चीज़ है।

हज़रत मिक़्दाद ने कहा, उस ज़ात की क़सम जिसने आपको हक़ देकर भेजा है! आइंदा मैं कभी किसी काम का ज़िम्मेदार नहीं बनूँगा। चुनांचे उसके बाद उनसे लोग कहा करते थे कि आप आगे तशरीफ़ लाकर हमें नमाज़ पढ़ा दें तो साफ़ इनकार कर देते थे (क्योंकि नमाज़ में इमाम बनना अमारत सुग़रा है) और एक रिवायत में है कि हज़रत मिक़्दाद ने कहा, मुझे सवारी पर बिठाया जाता और सवारी से उतारा जाता जिससे मुझे यूँ नज़र आने लगा कि मुझे इन लोगों पर फ़ज़ीलत हासिल है। हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया, अमारत तो ऐसी ही चीज़ है (अब तुम्हें इख़्तियार है) चाहे इसे आइंदा क़बूल करो या छोड़ दो। हज़रत मिक़्दाद ने कहा, उस ज़ात की क़सम जिसने आपको हक़ देकर भेजा है! आइंदा मैं कभी दो आदमियों का भी अमीर नहीं बनूँगा।

हज़रत मिक़्दाद बिन असवद (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) ने एक मर्तबा मुझे किसी जगह (अमीर बनाकर) भेजा, जब मैं वापस आया तो आपने मुझसे फ़रमाया, तुम अपने आपको कैसा

पाते हो? मैंने कहा, आहिस्ता-आहिस्ता मेरी कैफ़ियत यह हो गई है कि मुझे अपने तमाम साथी अपने ख़ादिम नज़र आने लगे और अल्लाह की क़सम! इसके बाद मैं कभी भी दो आदमियों का अमीर भी नहीं बनूँगा।

एक साहब बयान करते हैं कि हुज़ूर अक़दस (सल्ल०) ने एक आदमी को एक जमाअत का अमीर बनाया। वह काम करके वापस आए तो हुज़ूर (सल्ल०) ने उनसे पूछा, तुमने अमारत को कैसा पाया? उन्होंने कहा, मैं जमाअत के बाज़ अफ़राद की तरह था, जब मैं सवार होता तो साथी भी सवार हो जाते और जब मैं सवारी से उतरता तो वह भी उतर जाते। हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया, आम तौर पर हर मुसलमान ऐसे (ज़ालिमाना) काम करता है जिससे वह अल्लाह की नाराज़गी के दरवाज़े पर पहुँच जाता है। मगर जिस सुल्तान को अल्लाह तआला अपनी रहमत में ले लें वह उससे बच जाता है (बल्कि वह तो अल्लाह के अर्श का साया पाता है)। उस आदमी ने कहा, अल्लाह की क़सम! अब मैं न आपकी तरफ़ और न किसी और की तरफ़ से अमीर बनूँगा। इस पर आप इतना मुस्कराए कि आपके दन्दाने मुबारक नज़र आने लग गए।

हज़रत राफ़ेअ ताई कहते हैं कि मैं एक ग़ज़वा में हज़रत अबू-बक्र (रज़ि०) के साथ था। जब हम वापस आने लगे तो मैंने कहा, ऐ अबू-बक्र! मुझे कुछ वसीयत फ़रमा दीजिए। उन्होंने फ़रमाया, फ़र्ज़ नमाज़ अपने वक़्त पढ़ा करो, अपने माल की ज़कात ख़ुशी-ख़ुशी अदा किया करो, रमज़ान के रोज़े रखा करो, अल्लाह का हज अदा किया करो, और इस बात का यक़ीन रखो कि इस्लाम में हिजरत बहुत अच्छा अमल है और हिजरत में जिहाद बहुत अच्छा अमल है, और तुम अमीर न बनना। फिर फ़रमाया कि यह अमारत जो आज तुम्हें ठंडी और मज़ेदार नज़र आ रही है। अंक़रीब यह फैलकर इतनी बढ़ेगी कि नाअहल लोग भी इसे हासिल कर लेंगे (और यह याद रहे कि जो अमीर बनेगा, उसका हिसाब सब लोगों से ज़्यादा लम्बा होगा) और उस पर अज़ाब सबसे ज़्यादा सख़्त होगा

और जो अमीर नहीं बनेगा उसका हिसाब सबसे ज़्यादा आसान होगा और उसका अज़ाब सबसे हल्का होगा। क्योंकि उमरा को मुसलमानों पर ज़ुल्म करने के ज़्यादा मवाक़ेअ मिलते हैं और जो मुसलमानों पर ज़ुल्म करता है वह अल्लाह के अहद को तोड़ता है इसलिए कि यह मुसलमान अल्लाह के पड़ोस और अल्लाह के बन्दे हैं। अल्लाह की क़सम! तुममें से किसी के पड़ोसी की बकरी या ऊँट पर कोई मुसीबत आती है (वह बकरी या ऊँट चोरी हो जाता है या कोई उसे मार दे या सताए तो उस पड़ोसी की हमदर्दी और हिमायत में) ग़ुस्से की वजह से सारी रात उसके पुट्ठे फूले रहते हैं और वह कहता रहता है मेरे पड़ोस की बकरी या ऊंट पर फ़लाँ मुसीबत आई है। (जब इंसान अपने पड़ोसी की वजह से इतना ग़ुस्से में आता है) तो अल्लाह तआला अपने पड़ोस की ख़ातिर ग़ुस्से में आने का ज़्यादा हक़दार हैं। (हयातुस्सहाबा)

आपकी किताब "मोमिन का हथियार" हैज़ की हालत में पढ़ सकती हूँ या नहीं

सवाल (1) : हालते हैज़ में दुआओं की ऐसी किताब पढ़ना (जिस में क़ुरआन पाक की आयतें हों या सूरतें हों) जाइज़ है या नहीं?

मसलन 'मोमिन का हथियार' या 'मुनाजात मक़बूल' या 'अलहिज़्बुल आज़म' या 'मंज़िल' इन किताबों में आयतुल कुर्सी, सूरह फ़ातिहा, चार क़ुल, वग़ैरह बहुत-सी क़ुरआनी दुआएँ होती हैं, क्या इनको औरतें हालते हैज़ में पढ़ सकती हैं या नहीं पढ़ सकती?

जवाब : (1) दुआ की नीयत से उन आयात व सूरतों को हालते हैज़ में पढ़ना जाइज़ है, किसी क़िस्म की कराहत नहीं है, तिलावते क़ुरआन की नीयत से उनको पढ़ना जाइज़ नहीं है, और ज़ाहिर है कि इन किताबों को वज़ाइफ़ व औराद के तौर पर ही पढ़ा जाता है, तिलावते क़ुरआन के तौर पर नहीं पढ़ा जाता है। हाँ,

छब्बीस सूरतें बतौर तिलावत पढ़ी जाती हैं इसलिए उनको हालते हैज़ा में पढ़ना जाइज़ नहीं है। इमदादुल फ़तावा 1/93, अहसनुल फ़तावा 2/71)

सवाल (2) : दुआओं की उन किताबों को बग़ैर वुज़ू के या हैज़ की हालत में पकड़ना जाइज़ है या नहीं?

जवाब (2) : उन किताबों को बग़ैर वुज़ूर के या हैज़ की हालत में पकड़ना जाइज़ है, अलबत्ता ख़ास उस जगह जहाँ क़ुरआन की आयत हो हाथ लगाना जाइज़ नहीं है, बाक़ी दूसरे हिस्सों को हाथ लगाना जाइज़ है। (इमदादुल फ़तावा 1/93)

फ़क़त वस्सलाम वल्लाहु आलम (मुफ़्ती) आदम साहब पालनपुरी 6/शव्वाल 1430 हि०

नोट : मज़्कूरा फ़तवा सही है, मैं इसकी तस्दीक़ करता हूँ।

अल्लाह की रज़ा का तालिब : मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

बेअक़्ली भी नेमत है

उन मुनाफ़ेअ और हैवानात के उन ख़ल्क़ी मक़ासिद पर ग़ौर करो। तो उनके लिए फ़हम व अक़्ल की ज़रूरत न थी। बल्कि अक़्ल उनमें ख़ारिज होती क्योंकि अगर उनमें अक़्ल होती तो जब इंसान उन पर सवार होता, ज़ीन रखता, बोझ लादता तो अक़्लमन्द जानवर कहता कि ज़रा ठहरिए, पहले यह साबित कीजिए कि आपको मुझ पर सवारी करने या बोझ लादने का हक़ है या नहीं? अब आप दलाइल बयान करते, वह अपनी अक़्ल के मुताबिक़ आपसे बहस करता, तो सवारी और बोझ तो रह जाता और बहस छिड़ जाती। और अगर कहीं बहस में जानवर ग़ालिब हो जाता तो आप खड़े मुँह तकते रह जाते। बल्कि मुमकिन हो जाता कि वही आप पर सवारी करता। ज़ाहिर है यह बड़ी मुश्किल बात होती। हर हैवान से काम लेते वक़्त यही मुनाज़िर-बाज़ी का बाज़ार गर्म रहता। न बैल खेत जौत सकता, न घोड़े वारी ले जा सकते, न हलाल जानवर का गोश्त खाया जा सकता। सारे काम तिजारत वग़ैरह के

मुअत्तल हो जाते और इंसान को उन हैवानों के मुनाज़िरों से कभी भी फ़ुरसत न मिलती और यह सारी ख़राबी हैवानों को अक़्ल व फ़हम मिलने से होती, फिर आपकी तालीमगाहों में भी जो इल्म हासिल करने जमा होते और एक ही क्लास में घोड़े, गधे, कुत्ते सब जमा रहते बल्कि जंगलों से शेर, भेड़िये, रीछ, गीदड़ भी जमा होते तो आपको इल्म हासिल करना वबाले जान बन जाता। ग़र्ज़ इल्मी और अमली कारख़ाने सब के सब दरहम-बरहम हो जाते। इसलिए शुक्र कीजिए कि अल्लाह ने उन्हें अक़्ल व फ़हम नहीं दिया जिनसे आपके काम काज चल रहे हैं।

इससे मालूम हुआ कि जिस तरह अक़्ल नेमत है। इसी तरह बेअक़्ली भी नेमत है। हैवानात की बेअक़्ली ही से इंसान फ़ायदा उठा रहा है। यहाँ तक कि जो इंसान बेअक़्ल और बेवक़ूफ़ हैं वे अक़्लमन्दों के महकूम हैं जिससे लीडरों की हुक्मरानी चल रही है। बेवक़ूफ़ न होते तो लीडरों को ग़िज़ा न मिलती। अगर बेफ़हम न होते तो लीडर की दुकान न चल सकती। पस कहीं अक़्ल नेमत है तो कहीं बेअक़्ली नेमत है। इसलिए जानवरों में माद्दा अक़्ल न होना ही नेमत है जिससे उनसे मुख़्तलिफ़ क़िस्म के काम बिला बहस व मुजादला निकाल लिए जाते हैं वर्ना अगर उनमें अक़्ल होती तो ये तमाम मुनाफ़ेअ जो इंसान उनसे लेता है, पामाल हो जाते, हासिल यह निकला कि जानवर की पैदाइश से जो मक़ासिद मुताल्लिक़ हैं उनमें अक़्ल की ज़रूरत न थी इसलिए उनको उनके फ़राइज़ की वजह से बेसमझ रखा गया, ताकि वह इंसान की इताअत से मुँह न मोड़ें और जब अक़्ल व फ़हम उनको नहीं दिया गया तो उनसे ख़िताब करने की भी ज़रूरत न थी कि उनके लिए कोई शरअी क़ानून उतारा जाता, और वह मुख़ातिब और मुकल्लफ़ बनाए जाते। पस उनके लिए न अम्र है न शरीअत आई न कोई तशरीअी क़ानून, सिर्फ़ लाठी और डंडा है, जिससे वह काम पर लगे रहते हैं और रोज़ व शब मशग़ूल व मुंहमिक रहते हैं।

दुनिया की बेहतरीन नेमत नेक और दीनदार बीवी है

तारीख़े इंसानी में मोहसिने इंसानियत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्ल०) की ज़ात अक़दस ही वह वाहिद ज़ात है जिसने अपनी तालीमात और अहकाम के ज़रिए सिन्फ़े नाज़ुक और जिन्स लतीफ़ को ज़िल्लत व निक्बत के अमीक़ ग़ार से निकाल कर इज़्ज़हत व अज़्मत के बुलन्द मक़ाम पर पहुँचाया और इंसानी मुआशरे में औरत को वक़ार व एहतिराम का वह दर्जा अता किया जो फ़ितरत और इंसानियत का मुतक़ाज़ी था। इस्लाम से पहले औरत की तारीख़ मज़्लूमियत पर मुश्तमिल थी। औरत को सारी क़ौमों और मुल्कों में कमतर और फ़रोतर मख़्लूक़ समझा जाता था। उसका न कोई मुस्तक़िल मक़ाम था और न उसको कोई ज़िंदा रहने का हक़ देने को तैयार था। दीने इस्लाम उनके लिए बाराने रहमत बनकर आया और उसने औरत की महकूमियत व मज़्लूमियत के ख़िलाफ़ इस क़द्र ज़ोर से सदाए एहतिजाज बुलन्द की कि सारी दुनिया लरज़ उठी। इर्शाद बारी तआला है : "ऐ लोगो! अपने परवरदिगार से डरो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी से उसकी बीवी को पैदा करके उन दोनों से बहुत-से मर्द और औरतें फैला दीं।" (निसा, आयत-1) दूसरी जगह इरशाद है : "उन औरतों के साथ हुस्न व ख़ूबी से गुज़र-बसर करो। अगर वे तुमको नापसन्द हों तो मुमकिन है कि एक चीज़ तुमको नापसन्द है और अल्लाह तआला उसमें कोई बड़ी भलाई रख दे।" (निसा, आयत-19)

इस्लाम ने इसे दामने आफ़ियत के साए में जगह दी। नामूस निसवाँ की क़द्र व क़ीमत को उजागर किया। बदकारी व बेहयाई और बेआबरूई के जितने सरचश्मे थे एक-एक करके सबको बन्द किया और इस तरह इंसानी तहज़ीब व तमद्दुन की तरक़्क़ी और इस्तहकाम के लिए एक ऐसी पायदार, मज़बूत और ठोस बुनियाद क़ायम कर दी जिसके बग़ैर एक सालेह मुआशरे का वुजूद नामुमकिन है। अब उसे मीरास व जायदाद में शरीक किया जाने

लगा। वह मुआशरे में इज़्ज़त व एहतिराम की निगाह से देखी जाने लगी बल्कि उसे ईमान की तक्मील क़रार दिया जाने लगा। क़ुरआन मजीद ने औरतों को मर्दों का और मर्दों को औरतों का लिबास क़रार दिया "वे तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उनके लिए" (अल-बक़रा, आयत-187)। इसका मतलब यह है कि इंसान जिस तरह लिबास पहनकर सर्दी-गर्मी के मुज़िर असरात से महफ़ूज़ रहता है और ज़ेब व ज़ीनत इख़्तियार करता है इसी तरह मर्द जाइज़ तरीक़े से अज़दवाजी ताल्लुक़ात क़ायम करके हर क़िस्म की बुराइयों और बेहयाइयों से महफ़ूज़ हो जाता है। औरत मर्द की रफ़ीक़े-हयात भी है और दिल व दिमाग़ के लिए राहत व सुकून का ज़रिया भी। उसके बावजूद कि बग़ैर मर्द की जिंदगी बेकार और बेसुरूर है। वही मर्द की वीरान ज़िंदगी में ख़ुशियाँ बिखेरती है और उसके गुलदस्ते हयात को अनवाअ व अक़्साम के हसीन व ख़ूबसूरत फूलों से लालाज़ार बनाती है। इरशाद बारी तआला है "उसकी निशानियों में से एक यह भी है कि उसने तुम्हारे लिए तुममें से जोड़े पैदा किए ताकि तुम उनसे राहत व सुकून हासिल करो और उसने तुम्हारे दर्मियान मुहब्बत पैदा कर दी। बिला शुब्ह इसमें ग़ौर व फ़िक्र करने वालों के लिए निशानियाँ मौजूद हैं।" (रूम, आयत-21)

बहुत-से मुआशरे में औरतों को ख़ुला का हक़ हासिल नहीं था। इस्लाम ने औरतों को ख़ुला का हक़ दिया। उन मुआशरों में शौहर की वफ़ा के बाद बेवा शादी नहीं कर सकती थी और पूरी ज़िंदगी सोग और रंज व मलाल की हालत में गुज़ार देती थी। मुतल्लिक़ा औरत का दूसरी मर्तबा अक़्द निकाह से मुंसलिक होना सख़्त ऐब समझा जाता था लेकिन इस्लाम ने इन सब बातिल इफ़्कार व ख़्यालात पर कारी ज़र्ब लगाई और कहा कि मौत व हयात का मालिक अल्लाह की ज़ात है। वह जिसको चाहता है मारता है और जिसको चाहता है ज़िंदा रखता है। शौहर की वफ़ात से औरत हमेशा के लिए मसर्रत व शादमानी से महरूम नहीं हो जाती बल्कि वह भी

मख़्सूस अय्याम यानी इद्दत गुज़ारने के बाद अज़दवाजी ताल्लुक़ात क़ायम कर सकती है और किसी मर्द के गुलशने हयात की ख़ुश्बूदार कली बन सकती है। इरशाद बारी तआला है : "और अपने में से बेवा औरतों का निकाह करो।" (नूर, आयत-32)

इस्लाम ने इसको मआशी, तमद्दुनी और तालीमी हुक़ूक़ दिए। उसने मर्दो-ज़न के दर्मियान फ़र्क़ व इम्तियाज़ को ख़त्म किया और मेयार बुज़ुर्गी, तक़वा और ख़शीयते इलाही को क़रार दिया। इस्लाम में दूसरे मज़ाहिब की तरह बुज़ुर्गी और कमतरी का मेयार जिन्स को क़रार नहीं दिया बल्कि यहाँ इज़्ज़त व शराफ़त और बड़ाई का मैयार ईमान व आमाल की दुरुस्तगी, फ़िक्र की सलामती, ख़ुदा-तर्सी, ख़ुश अख़्लाक़ी, ख़ुलूस और हुस्ने सीरत है। जो आदमी चाहे वह मर्द हो या औरत, जितना ज़्यादा वह ख़ुदातर्स और ख़ुदा-शनास होगा, अहकामे इलाही पर अमल पैरा होगा और सुन्नत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेगा वह अल्लाह के यहाँ उतना ही ज़्यादा मुअज़्ज़िज़ व मोहतरम और बरगुज़ीदा समझा जाएगा। चुनांचे इस्लाम के इस असासी दस्तूर को यूं वाज़ेह किया गया है, "अल्लाह के यहाँ तुममें से बुज़ुर्गतरीन शख़्स वह है जो तुममें सबसे ज़्यादा अल्लाह से डरने वाला है।" (हुजुरात, आयत-13)। साफ़ ज़ाहिर होता है कि इस्लाम ने औरतों को मसावी क़रार दिया है और बताया कि एक औरत अल्लाह तआला की रिज़ा व ख़ुशनूदी और तक़र्रुब को उन्हीं शराइत की पाबन्दी करके हासिल कर सकती है जो मर्दों के लिए मुक़र्रर है। मर्द को अगर अच्छे आमाल की बदौलत जन्नत मिलेगी तो औरत भी अपनी नेकियों के बदले जन्नत की मुस्तहिक़ होगी।

इस्लाम ने ज़िदंगी की तामीर व तरक़्क़ी का जो तसव्वुर पेश किया है उसका ताल्लुक़ ताआत व इबादात से हो या बाहमी मामलात और लेन-देन से हो, ख़ानदानी इंतिज़ाम व इंसिराम से हो या मुआशरती आदाब व इक़्दार से हो। उसने हर शोबे ज़िंदगी में औरत का सही मंसब व मक़ाम मुतय्यन किया और उसका ज़िक्र

ख़ैर व मदह के साथ किया और उसे मुआशरे और सोसाइटी के लिए मूजिब नंग व आर नहीं समझा बल्कि उसके लिए लाज़िमी जुज़्व क़रार दिया।

इस्लाम ने औरत को बजाय लानत व मलामत करने के उसे रहम व सकीनत का मज़हर ठहराया। मोहसिने इंसानियत (सल्ल०) ने औरतों के मुताल्लिक़ मर्दों को दिलों में नफ़रत व कदूरत न रखने और प्यार व मुहब्बत और शफ़क़त व हमदर्दी का जज़्बा पैदा करने की मुतअद्दिदद हदीसों में नसीहत फ़रमाई है। दर्जे ज़ेल चन्द हदीसों का ज़िक्र है।

हुज़ूर रहमते आलम (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया :

"दुनिया की चीज़ों में मुझको सबसे ज़्यादा महबूब औरत और खुश्बू है और मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ है।" (नसई)

"तुममें सबसे ज़्यादा कामिल ईमान वाला वह है जिसके अख़्लाक़ अच्छे हों और अपनी बीवी के साथ अच्छे सुलूक से पेश आता हो।" (तिर्मिज़ी)

"तुममें से बेहतरीन वह है जो अपनी बीवी के लिए बेहतरीन साबित हो, और खुद मैं अपने अहल व अयाल के लिए तुम सबसे बेहतर हूँ।" (मिश्कात)

"नेक और दीनदार बीवी दुनिया में सबसे बड़ी नेमत है। दुनिया की नेमतों में कोई चीज़ नेक बीवी से बेहतरीन नहीं।" (इब्ने-माजा)

"दुनिया की नेमतों में बेहतरीन नेमत नेक बीवी है।" (नसई)

हक़ीक़ते-हुस्न

खुदा से हुस्न ने इक रोज़ यह सवाल किया
जहाँ में क्यों न मुझे तूने लाज़वाल किया

मिला जवाब कि तस्वीर ख़ाना है दुनिया
शबे दराज़े अदम का फ़साना है दुनिया

हुई है रंग तग़य्युर से जब नमूद उसकी
वही हसीं है हक़ीक़त ज़वाल है जिसकी

कहीं क़रीब था, यह गुफ़्तुगू क़मर ने सुनी
फ़लक पे आम हुई, अख़्तरे सहर ने सुनी

सहर ने तारे से सुनकर सुनाई शबनम को
फ़लक की बात बता दी ज़मीं के मेहरम को

फिर आए फूल के आँसू प्यामे शबनम से
कली का नन्हा सा दिल ख़ून हो गया ग़म से

चमन से रोता हुआ मौसमे बहार गया
शबाब सैर को आया था, सोगवार गया

* * *

हज़रत क़तादा का फ़लसफ़ायाना मक़ूला है कि ज़िंदगी का सामान इतना ही अच्छा है जितने में सरकशी, लाउबालीपन न आए।

दिल का ज़ंग दूर करने का नबवी नुस्ख़ा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्ला (सल्ल०) ने फ़रमाया : बनी आदम के क़ल्ब पर इसी तरह ज़ंग चढ़ जाता है जिस तरह पानी लग जाने से लोहे पर ज़ंग आ जाता है। अर्ज़ किया गया कि हुज़ूर (सल्ल०) दिलों के इस ज़ंग को दूर करने का ज़रिया क्या है? आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया कि मौत को ज़्यादा याद करना, और क़ुरआन मजीद की तिलावत। (बैहक़ी)

दूसरों की औलाद को बुरा कहना भी गुनाह है!

इस्माईल साहब अगरचे आलिम नहीं थे लेकिन इंतिहाई दीनदार और तहज्जुदगुज़ार, नमाज़ बाजमाअत तक्बीरे ऊला तक के पाबन्द थे। उनके कुल छः बच्चे थे, इंतिक़ाल से पहले वह जिस अज़ीयत-नाक कर्ब व अलम में थे वे बच्चों के तईं फ़िक्रमन्दी थी। उनके तीन बच्चियों की शादी हो चुकी थी लेकिन लड़के अभी ग़ैर शादीशुदा थे और उनमें से दो छोटे फ़रज़न्द, उनके लिए बदनामी का सबब बन गए थे। वह नाख़ल्फ़ और आवारा हो गए थे और पूरे मोहल्ले और गाँव के लोग उनसे तंग आ गए थे। दूसरा बच्चा बदनामतरीन शख़्स बन गया था।

उन बच्चों के वालिद आख़िर तक रो-रोकर कहते रहे कि ऐ अल्लाह मुझे याद नहीं कि मैंने ज़िंदगी में कौन-सा गुनाह किया, जिसकी वजह से मुझे आज यह दिन देखना पड़ रहा है। उनके हमउम्र भी यह कहते थे कि वह बचपन ही से नेक और सालेह थे। हराम व हलाल की हमेशा तमीज़ रही, कभी शराब व ज़िना व जुए के क़रीब भी नहीं गया। एक तरफ़ से उनके यह मुस्बत हालात थे तो दूसरी तरफ़ उनकी औलाद की मन्फ़ी कैफ़ियात, मुश्किल सुलझ नहीं रही थी। कई लोगों ने इस पर बहुत ग़ौर किया। इस सिलसले में एक मुआसिर बुज़ुर्ग ने मदद की और बात जल्द ही समझ में आ

गई। उनके बुज़ुर्ग साथी का कहना था कि जवानी में मस्जिद में जाते हुए रास्ते में जब शरीर लड़कों से इस्माईल साहब का सामना होता था तो उनको वह ताना देते थे कि तुम्हें किस बदमाश बाप ने जना है? क्या तुम्हारा बाप हराम कमाता है और वही खिलाता है, जिसकी वजह से तुम लोगों की यह हालत हो गई है?

किसी के मुताल्लिक़ कोई मन्फ़ी, नापसन्दीदा और नाक़ाबिले यक़ीन बात सुनने में आती तो वह सब के सामने तबसिरा करते कि कमीनों की औलाद भी कमीनी होती है, उन बच्चों के वालिद ने भी अपनी जवानी में इस तरह की हरकत की होगी, तभी तो उनको औलाद की यह हालत हो गई है।

ग़र्ज़ यह कि किसी ताना देने और किसी के गुनाह पर आर दिलाने में उनका कोई सानी नहीं था। यह सुनकर अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की हदीस याद आती है कि कोई शख़्स किसी को किसी गुनाह पर आर दिलाता है तो मरने से पहले ख़ुद उस गुनाह में मुब्तला हो जाता है। नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया कि किसी की मुसीबत पर ख़ुश न हो जाओ, अल्लाह तआला उसका ऐब छुपाएगा।

हमें यह समझ लेना चाहिए कि औलाद का यह बुरा अंजाम जवानी में उनकी इस बदज़बानी और दूसरों को आर दिलाने का नतीजा हो सकती है। उनके इसी बुज़ुर्ग दोस्त ने यह भी कहा कि अपने औलाद के सिलसिले में वह बहुत सख़्त वाक़ेअ थे। उनके किसी नाज़ेबा फ़ेल को कभी बर्दाश्त नहीं करते थे, डाँटते, मारते और कभी ग़ुस्से में उनको शैतान, इबलीस और मलऊन व मर्दूद भी कह देते थे। हो सकता है वह क़बूलियत की घड़ी हो, तभी तो अल्लाह ने उनकी औलादों को शैतान सिफ़्त बना दिया, इसलिए कि जिस तरह औलाद के हक़ में वालिदैन की दुआ जल्द क़बूल हो जाती है इसी तरह बददुआ भी वालिदैन की अपनी औलादों के हक़ में जल्द अपना असर कर दिखाती हैं। इसी लिए कभी भूलकर ग़लती से भी, ग़ुस्से व जोश में भी अपनी औलाद को डाँटने में

ग़लत नामों से नहीं पुकारना चाहिए, मुबादा क़बूलियत का वक़्त हो और उसका असर ज़ाहिर हो। उन्होंने अपने औलाद के हक़ में पाबन्दी से अल्लाह तआला के बताए हुए उसूलों और दुआओं से अपने बच्चों की तर्बियत की होती और किसी दूसरे के बच्चों को बुरा न कहा होता तो शायद उन्हें यह दिन देखना नहीं पड़ता। अल्लाह तआला से हमें दुआ करना चाहिए कि "ऐ अल्लाह हमें ऐसी बीवियाँ और बच्चे अता फ़रमा जो हमारे लिए आँखों की ठंडक का सबब बनें और हमें तक़वा वालों का इमाम बना।

हुज़ूर अकरम (सल्ल०) की मुबारक मज्लिस का एक वाक़िया

एक मर्तबा नबी करीम (सल्ल०) और हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक़ और हज़रत उसमान ग़नी (रज़ि०), ये बुज़ुर्ग हज़रात सहाबा हज़रत अली (रज़ि०) के मकान में तशरीफ़ ले गए तो उस मुबारक मज्लिस में सरवरे कोनैन हुज़ूर अक़दस (सल्ल०) और चारों ख़ुल्फ़ाए राशिदीन मौजूद हैं। हज़रत अली और उनकी बीवी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा (रज़ि०) ने उन मुअज़्ज़िज़ मेहमानों की ख़ातिर तवाज़ोअ करने के लिए उनके पास जो सबसे बेहतरीन चीज़ थी वह पेश की, एक शहद का प्याला। वह ख़ूबसूरत और चमकार प्याला था। इत्तिफ़ाक़ से शहद के प्याले में एक बाल गिर गया। हुज़ूर अकरम (सल्ल०) के दस्ते मुबारक जब वह प्याला आया तो आपने उन हज़रात के सामने वह प्याला पेश फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया, देखो ख़ूबसूरत प्याला। इसमें शीरीं शहद है। इसमें एक बाल पड़ा हुआ है। हर एक अपनी अपनी तबीअत पर ज़ोर डाल कर अपने अपने ज़ौक़ के मुताबिक़ उस प्याले और बाल के मुताल्लिक़ अपनी राय पेश करे (1) हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने फ़रमाया, अल्लाह के रसूल (सल्ल०) मेरे नज़दीक मोमिन का दिल तश्त से ज़्यादा रौशन और चमकदार है और उसके दिल में

जो ईमान है वह शहद से ज़्यादा शीरीं है लेकिन ईमान को मौत तक हिफ़ाज़त करके ले जाना बाल से ज़्यादा बारीक है। (2) हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) के सामने जब यह प्याला आया तो हज़रत उमर (रज़ि०) ने फ़रमाया, या रसूलुल्लाह (सल्ल०) हुकूमत इस तश्त से ज़्यादा चमकदार और रौशन है, हुक्मरानी करना यह शहद से ज़्यादा शीरीं है लेकिन हुकूमत में अद्ल व इंसाफ़ करना बाल से ज़्यादा बारीक है। (3) हज़रत उसमान (रज़ि०) ने फ़रमाया, या रसूलुल्लाह (सल्ल०) मेरे नज़दीक इल्मे-दीन तश्त से ज़्यादा रौशन है और इल्मे दीन सीखना शहद से ज़्यादा शीरीं है लेकिन उस पर अमल करना बाल से ज़्यादा बारीक है। (4) हज़रत अली (रज़ि०) ने फ़रमाया, या रसूलुल्लाह (सल्ल०) मेरे नज़दीक मुअज़्ज़िज़ मेहमान तश्त से ज़्यादा रौशन है और उनकी मेहमान नवाज़ी शहद से ज़्यादा शीरीं है और उनको ख़ुश करना बाल से ज़्यादा बारीक है। (5) हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) फ़रमाती हैं, औरत के हक़ में हया इस तश्त से ज़्यादा रौशन और चमकदार है और उसके चेहरे पर पर्दा इस शहद से ज़्यादा शीरीं है और एक ग़ैर मर्द पर निगाह न पड़े और ग़ैर मर्द की उस पर निगाह न पड़े यह बाल से भी ज़्यादा बारीक है। (6) हुज़ूर अक़दस (सल्ल०) ने फ़रमाया, अल्लाह की मारफ़त तश्त से ज़्यादा रौशन है। उसके बाद फ़रमाया, मारफ़ते इलाही से आगाह हो जाना और मारफ़ते इलाही हासिल हो जाना इस शहद से ज़्यादा शीरीं है और अल्लाह की मारफ़त के बाद उस पर अमल करना यह बाल से ज़्यादा बारीक है। (7) हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, मेरे नज़दीक अल्लाह की राह तश्त से ज़्यादा रौशन है और अल्लाह की राह में अपनी जान व माल क़ुरबान करना, जिहाद करना शहद से ज़्यादा शीरीं है और उसके बाद फ़रमाया उस पर इस्तिक़ामत यानी मौत तक राहे ख़ुदा में चलते रहना बाल से ज़्यादा बारीक है। (8) अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, जन्नत इस तश्त से ज़्यादा रौशन है और जन्नत की नेमतें इस शहद से ज़्यादा शीरीं हैं लेकिन जन्नत तक पहुंचने के लिए पुलसिरात से गुज़रना बाल से ज़्यादा बारीक है।

दीने फ़ितरत और हमारी ज़िंदगी

पूरे आलम में इस वक़्त उम्मते मुस्लिमा के अफ़राद एक बड़ी तादाद में मौजूद हैं। बयान किया जाता है कि वह दुनिया की पूरी आबादी का एक बड़ा हिस्सा हैं इस तरह मुसलमान दूसरे मज़हब और तहज़ीबों के मानने वालों के मुक़ाबले में एक अज़ीम क़ौम शुमार किए जाते हैं और बराबर इसमें इज़ाफ़ा हो रहा है। सिर्फ़ अमेरिका में तक़रीबन एक क़रोड़ से ज़्यादा मुसलमान मौजूद हैं और उनकी तादाद भी बढ़ती जा रही है। इस तरह यूरोप के तमाम मुमालिक और दुनिया के मशरिक़ी हिस्से में भी इस्लाम क़बूल करने वालों की तादाद में निहायत तेजी से इज़ाफ़ा हो रहा है। इसकी वजह ग़ालिबन यह है कि माद्दी तहज़ीबों के साए में जिन लोगों ने वक़्त गुज़ारे और ऐश व इशरत से पूरी तरह फ़ायदा उठाया, वह सब कुछ हासिल करने के बावजूद जौहरे नायाब से महरूम रहे और उसको दूर करने के लिए उन्होंने तमाम फ़ार्मूलों को आज़माकर देख लिया लेकिन उनको वह सुकून नहीं मिल सका जिसके बग़ैर ज़िंदगी में कोई लज़्ज़त या उसकी कोई क़ीमत बाक़ी रहे। आख़िरकार उनको इस्लाम का मुताला करने और उसके बनाए हुए निज़ामे ज़िंदगी को ब-नज़र ग़ायर देखने की तौफ़ीक़ हुई और उनको वह मताअ गुमशुदा मिल गई जिससे उनकी ज़िंगी का रुख़ बदल गया। उनको ख़ालिक़े कायनात का यक़ीन हासिल हुआ और उसके बनाए हुए उसूले ज़िंदगी को उन्होंने आज़माया तो अचानक उनके अंदर एक इंक़िलाब बरपा हुआ। यह इस्लाम के दीने फ़ितरत होने और निशानी मिज़ाज से मुकम्मल तौर पर हमआहंग होने की दलील है। अल्लाह तआला इस हक़ीक़त की वज़ाहत फ़रमाते हैं कि "पस सीधा रख अपना रुख़ दीन के लिए यकसू होकर। यही अल्लाह की फ़ितरत है जिस पर लोगों को पैदा किया, अल्लाह के दीन में कोई तब्दीली नहीं है। यही सीधा दीन है। लेकिन अक्सर लोग इसके समझने से क़ासिर हैं।" (सूरह रूम, आयत 30) अलबत्ता जिन

लोगों पर यह हक़ीक़त मुंकशिफ़ हो गई वह उसको अपनाने और उसको अपनी ज़िंदगी का रहनुमा बनाने पर मुत्तफ़िक़ हो गए और दुनिया की अज़ीम से अज़ीमतर मताअ उनकी नज़रों में बेक़ीमत बनकर रह गई, वह इस दरयाफ़्त पर न सिर्फ़ यह कि बेहद मसरूर व मुत्मइन हैं बल्कि इसको अल्लाह तआला का ख़ास फ़ज़्ल व इनाम समझकर उस पर नाज़ाँ हैं और उसे अपनी ज़िंदगी का असल सरमाया समझते हैं। एक नौमुस्लिम ने इस्लाम क़बूल करने के बाद जब इंतिहाई मसर्रत का इज़्हार किया तो मुसलमान रहनुमा ने उसको मुबारकबाद दी। उस वक़्त उसने जवाब दिया कि मुबारकबाद किस बात की? मैंने अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से फ़ितरत को पा लिया। जिसपर अल्लाह तआला ने औलादे आदम को पैदा किया और वह फ़ितरते इस्लाम है। लिहाज़ा मैंने मानो अपने आपको दरयाफ़्त किया है और इसके पहले मैं गुमराही में मुब्तला था और खुद अपनी ज़ात से नाआशना था।

तस्वीर का दूसरा रुख़ यह है कि हम मुसलमानों ने अपनी फ़ितरत के ख़िलाफ़ ज़िंदगी की गाड़ी चला रखी है। यही सबब है कि हमको क़दम-क़दम पर मुश्किलात का सामना करना पड़ता है और हमको मिटाने की कोशिश तेज़ रफ़्तारी के साथ जारी है और कामयाबी से हमकिनार हो रहे हैं। रसूले अकरम (सल्ल०) सारे जहाँ के लिए रहमत बनकर तशरीफ़ लाए। इस सरापा रहमत का नमूना आपकी सीरत तय्यिबा में मौजूद होते हुए भी हम उससे बड़ी हद तक मुस्तग़ना हो गए हैं और हम तहज़ीबों की बेरहमाना बन्दिशों में अपने आपको मुक़य्यद करने में कोई आर नहीं महसूस करते। मशरिक़ व मग़रिब में हर जगह हम यह तास्सुर देने की कोशिश कर रहे हैं कि अब इस्लामी निज़ामे अद्ल व मुसावात और आलमी उखुव्वत का तसव्वुर एक ख़्वाब बनकर रह गया है और माद्दा-परस्त निज़ामे ज़िंदगी में उसकी कोई गुंजाइश नहीं है। औरतों को इसने एक तवील ग़ुलामी और बेरहमाना ज़िंदगी से नजात दिलाकर इज़्ज़त व अज़्मत का बुलन्द मर्तबा तय किया और इस्लामी

मुआशरे की तामीर में उनके किरदारों को दुनियावी एहमियत दी। आज हम अपने सिराते मुस्तक़ीम से हटकर दीगर अक़्वाम की तरह बेसिम्त माद्दा-परस्ती के अलमबरदार बनकर रह गए हैं और यहूद व नसारा के मन्सूबों को अमली जामा पहनाने में कोई शर्म महसूस नहीं करते। यह ऐसा संगीन ख़तरा है कि हम इसका मुक़ाबला संजीदगी के साथ उस वक़्त कर सकते हैं जब हम मुकम्मल तौर पर इस्लामी तहज़ीब की नुमाइंदगी कर सकें। यही तहज़ीब ज़िंदा व जावेद है और हर ज़मान व मकान में इसकी क़यादत इंसान की अज़्मत को तस्लीम कराने में मशाले राह है। रहमतुल लिल आलमीन की उम्मत आज दोराहे पर ख़ड़ी है और अपने किरदार को रहमत के आईने में पेश करने से दूर है।

एक आँसू का मक़ाम

रसूलुल्लाह (सल्ल०) से रिवायत की गई है। आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया, "जिस बन्दे की आँखें ख़ौफ़े ख़ुदा से भर जाएँ, अल्लाह तआला उसके जिस्म को जहन्नम पर हराम कर देते हैं फिर अगर वह उसके रुख़्सार पर बह पड़े तो उसके चेहरे को न कोई तकलीफ़ पहुंचेगी और न ज़िल्लत।

और अगर कोई बन्दा जमाअतों में से किसी जमाअत में रो पड़े तो अल्लाह तआला उस बन्दे के रोने के ख़ातिर उसे जहन्नम से नजात दे दें। हर अमल का वज़न और सवाब है लेकिन आँसू के सवाब का कोई भी हिसाब नहीं, यह तो जहन्नम के आग के पहाड़ों को बुझाकर रख देता है। (इब्ने अबिद्दुनिया)

वालिदैन के साथ मैदाने हश्र में सुलूक करनेवाले का अजीब क़िस्सा

हदीस में एक शख़्स के मीज़ाने अमल के दोनों पलड़े बराबर हो जाएंगे। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि तुम जन्नत वालों में से नहीं

और न ही दोज़ख़ वालों में से हो तो उस वक़्त एक फ़रिश्ता एक कागज़ लेकर आएगा और उसको तराज़ू के एक पलड़े में रख देगा। उसका कागज़ में "उफ़" लिखी होगी तो यह टुकड़ा नेकियों पर भारी हो जाएगा क्योंकि यह वालिदैन की नाफ़रमानी का ऐसा कलिमा है जो दुनिया के पहाड़ों से भारी हो जाएगा चुनांचे उसे दोज़ख़ में ले जाने का हुक्म किया जाएगा। कहते हैं, वह शख़्स मुतालबा करेगा कि इसको अल्लाह तआला के पास वापस ले चलें तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे इसे लौटा लाओ। फिर अल्लाह तआला उससे पूछेंगे, ऐ नाफ़रमान बन्दे! किस वजह से तुम मेरे पास वापस आने का मुतालबा कर रहे थे? वह कहेगा, इलाही आपने देख लिया, मैं दोज़ख़ की तरफ़ जा रहा हूं और मुझे कोई जाए फ़रार नहीं, मैं अपने वालिदैन का नाफ़रमान था हालाँकि वह भी मेरी तरह दोज़ख़ में जा रहे हैं आप इसकी वजह से मेरे अज़ाब को बढ़ा दें और उनको दोज़ख़ से नजात दे दें।

फ़रमाते हैं अल्लाह तआला हँस पड़ेंगे और फ़रमाएंगे तूने दुनिया में तो उनकी नाफ़रमानी की और आख़िरत में उनके साथ नेक सुलूक किया, जा अपने बाप का हाथ पकड़ और दोनों जन्नत में चले जाओ। (जन्नत के हसीन मनाज़िर)

अल्लाह की रहमत पर यक़ीन रखने वाला नौजवान

हज़रत अबू-ग़ालिब (रह०) फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत अबू-उमामा (रज़ि०) की ख़िदमत में मुल्क शाम में आता-जाता रहता था। एक दिन मैं हज़रत अबू-उमामा (रज़ि०) के पड़ोसी नौजवान के पास गया जो बीमार हो रहा था। उसके पास उसका चचा भी मौजूद था, वह उस नौजवान से कह रहा था कि ऐ ख़ुदा के दुश्मन, मैंने तुम्हें यह काम करने को नहीं कहा था, मैंने तुझे इस काम से नहीं रोका था? तो उस नौजवान लड़के ने कहा, ऐ चचा जान! अगर अल्लाह तआला मुझे मेरी माँ के सुपुर्द कर दें तो वह मेरे साथ क्या मामला

करेंगी? चचा ने कहा, वह तुझे जन्नत में दाख़िल कर देगी। तो लड़के ने कहा, अल्लाह तआला मेरी माँ से ज़्यादा शफ़ीक़ है। उससे ज़्यादा मुझ पर मेहरबान है। बस यही बात कही और उसकी जान निकल गई। तब उसके चचा ने उसके कफ़न-दफ़न का इंतिज़ाम किया और उस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ ली और इरादा किया कि इसको क़ब्र में उतारे तो मैं भी इसके चचा के साथ क़ब्र में उतरा। जब उसने लहद को दुरुस्त किया तो उसकी चीख़ निकल गई और घबरा गया। मैंने उनसे पूछा, तुम्हें क्या हुआ? उसने बताया कि उसकी क़ब्र बहुत वसीअ हो गई और नूर से भर गई है, मैं इसी से दहशतज़दा हो गया। (जन्नत के हसीन मनाज़िर)

ऐसा मुल्क भी है जो वीरान न हो और न उसका मालिक मरे

गुज़िश्ता ज़माने में एक बादशाह ने एक शहर बसाया और निहायत ख़ूबसूरत बनवाया, और उसकी ज़ेबाइश और ज़ीनत में बहुत-सा माल ख़र्च किया फिर उसने खाना पकवाकर लोगों की दावत की और कुछ आदमी दरवाज़े पर बिठाए कि जो निकले उससे पूछा जाए कि इस मकान में कोई ऐब तो नहीं है। चुनांचे सबने जवाब दिया कि कोई ऐब नहीं है। आख़िर में कुछ लोग कम्बल-पोश आए उनसे भी सवाल किया गया कि तुमने इसमें कोई ऐब देखा? कहा, दो ऐब हैं। पासबानों ने उसे रोक लिया और बादशाह को इत्तिला दी। बादशाह ने कहा, मैं एक ऐब पर भी राज़ी नहीं हूँ, उन्हें हाज़िर करो। पासबानों ने उन कम्बल-पोशों को बादशाह के सामने हाज़िर किया। बादशाह ने दरयाफ़्त किया कि वे दो ऐब क्या हैं? कहने लगे कि यह मकान उजड़ जाएगा और इसका मालिक मर जाएगा। बादशाह ने सवाल किया कि ऐसा भी कोई मकान है कि कभी वीरान न हो और न उसका मालिक मरे? उन्होंने कहा, हाँ है। और उन्होंने जन्नत और उसकी नेमतों को ज़िक्र किया और शौक़

दिलाया और दोज़ख़ और उसके अज़ाब से डराया। और हक़ तआला की इबादत की रग़बत दिलाई। उसने उनकी दावत क़बूल की और अल्लाह तआला से तौबा की।

बेतकल्लुफ़ होने के बावजूद भी इजाज़त ज़रूरी

हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) और आपके चन्द असहाब का गुज़र एक ख़ातून की तरफ़ हुआ तो उसने एक बकरी ज़िब्ह की और खाना तैयार किया। आप (सल्ल०) ने उसमें से एक लुक़मा लिया मगर उसको आप (सल्ल०) हलक़ से उतार नहीं सके। तो आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया कि यह बकरी असल मालिक की इजाज़त के बग़ैर ज़िब्ह कर ली गई है। उस ख़ातून ने अर्ज़ किया कि हम लोग मुआज़ (अपने पड़ौसी) के घर वालों से कोई तकल्लुफ़ नहीं करते, हम उनकी चीज़ ले लेते हैं इसी तरह वे हमारी चीज़ ले लेते हैं। (मुस्नद अहमद)

इस वाक़िये में यह बात ख़ास क़ाबिले ग़ौर है कि बकरी न चुराई गई थी न ग़सब की गई थी बल्कि बाहमी ताल्लुक़ात और रिवाज व चलन की वजह से इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं समझी गई, और ज़िब्ह कर ली गई। इसके बावजूद इसमें ऐसी ख़बासत और ख़राबी पैदा हो गई।

इल्म की अहमियत

इब्ने जौज़ी (रह०) फ़रमाते हैं कि सबसे बड़ा दरवाज़ा जिससे इबलीस लोगों के पास आता है वह जिहालत का दरवाज़ा है। पस इबलीस जाहिलों के यहाँ बेखटके दाख़िल होता है और आलिम के यहाँ सिवाय चोरी के किसी तरह नहीं आ सकता।

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि०) ने फ़रमाया कि आँहज़रत (सल्ल०) का गुज़र हज़रत सअद (रज़ि०) की तरफ़ इस हाल में हुआ कि वह वुज़ू कर रहे थे। फ़रमाया, ऐ सअद यह क्या

इसराफ़ है? सअद (रज़ि०) ने अर्ज़ किया कि क्या वुज़ू में भी पानी का इसराफ़ मोतबर है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, अगरचे तू बहते दरिया से वुज़ू करे। हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया, वुज़ू में वसाविस के वास्ते एक शैतान मुक़र्रर है, उसका नाम वुलहान है। तुम उससे बचो, वह वुज़ू में लोगों से मुज़हिका फ़रमाता है।

आख़िरी मुग़ल ताजदार बहादुरशाह ज़फ़र की "मज़लूम" ग़ज़ल

न किसी की आँख का नूर हूँ, न किसी के दिल का क़रार हूँ
जो किसी के काम न आ सके, मैं वो एक मुश्ते ग़ुबार हूँ

मेरा रंगो-रूप बिगड़ गया, मेरा यार मुझसे बिछड़ गया
जो चमन ख़िज़ाँ से उजड़ गया, मैं उसकी फ़सले बहार हूँ

न तो मैं किसी का हबीब हूँ, न तो मैं किसी का रक़ीब हूँ
जो बिगड़ गया वह नसीब हूँ, जो उजड़ गया वो दयार हूँ

पिए फ़ातिहा कोई आए क्यों, कोई चार फूल चढ़ाए क्यों
कोई आगे शमा जलाए क्यों, मैं वह बेकसी का मज़ार हूँ

मैं नहीं हूँ नग़मा जाँफ़िज़ा, मुझे सुनकर कोई करेगा क्या
मैं बड़े बरोग की हूँ सदा, मैं बड़े दुखी की पुकार हूँ

रहमत की घटा उठी और अब्र करम छाया

जब वक़्त पड़ा नाज़ुक अपने हुए बेगाने
हाँ काम अगर आया तो नाम तेरा आया

पुरसिश थी गुनाहों की और पास का था आलम
बेकस की ख़बर लेने महबूबे ख़ुदा आया

यह नाम मुबारक था या हक़ की तजल्ली थी
दम भर में हुआ फ़ासिक़ अबदाल का हम पाया

चर्चे हैं फ़रिश्तों में और रश्क है ज़ाहिद को
इस शान से जन्नत में शैदाए नबी (सल्ल०) आया

क्यों नज़अ की दुश्वारी आसान न हो जाती
था नाम तेरा लब पर और सर पर तेरा साया

हिक्मत का सबक़ छोड़ा इ़ज़्ज़त की तलब छोड़ी
दुनिया से नज़र फेरी सब खोक तुझे पाया

समझे थे सीह कारी अपनी है फ़ज़ूं हद से
देखा तो करम तेरा इससे भी सवा पाया

ज़िंदगी जिस जगह भी गुज़ार यादे ख़ुदा में गुज़रनी चाहिए

जेलख़ाने के चन्द माह पहले हज़रत मुजद्दिद साहब (रह०) अपने असहाब से फ़रमाया करते थे कि मेरे ऊपर एक बला नाज़िल होगी, जो मेरे लिए मक़ामात और विलायत की तरक़्क़ियात का ज़रिया होगी, उस बला के बग़ैर उन तरक़्क़ियात का हुसूल मुमकिन नहीं। हज़रत मुजद्दिद साहब (रह०) ने ज़माना क़ैद में भी कभी बादशाह को बद्दुआ नहीं की बल्कि फ़रमाया करते थे कि बादशाह अगर मुझको जेलख़ाने में न भेजते तो इतने हज़ार नुफ़ूस को दीनी फ़वाइद कैसे मिलते, और हमारे मरातिब की तरक़्क़ी जो इसी मुसीबत के नुज़ूल पर मुंहसिर थी कैसे हासिल होती। आपके साथी यह चाहते थे कि आप बद्दुआ करके बादशाह को नुक़सान पहुँचाएँ, उनको आप मना फ़रमाते रहते चूंकि आप हत्तुल वुसअत अंबिया किराम की सुन्नत को नहीं छोड़ते थे तो तक़दीरे इलाही का तक़ाज़ा हुआ कि जेलख़ाने के ज़रिए से हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की सुन्नत को भी अदा कराया जाए।

आपने जेलख़ाने से अपने फ़रज़न्द ख़्वाजा मासूम साहब को लिखा कि आज़माइश अगरचे तल्ख़ और बेमज़ा है अगर तौफ़ीक़ हो तो बसा ग़नीमत है। आजकल आपको फ़ुरसत मयस्सर है, ख़ुदा का शुक्र अदा करते हुए अपने काम में मशग़ूल रहो, एक लम्हा भी ज़ाया न हो।

तीन चीज़ें, पहला तिलावत क़ुरआन, दूसरा तवील क़िरअत के साथ आम नमाज़, तीसरा कलिमा ला इला-ह इल्लल्लाहु का विर्द, इनमें से किसी एक का विर्द हर वक़्त रखो। कलिमा ला से नफ़्स के माबूदों की नफ़ी करो, अपने मक़ासिद और मुरादों को दफ़ा करो, अपनी मुराद माँगना यही अपनी माबूदियत का दावा है, सीने में अपनी कोई मुराद वहम ख़्याल में भी अपनी कोई हवस बाक़ी न

रहे, बन्दे की शान उस वक़्त ज़ाहिर होती है जब अपनी मुराद माँगने में अपने मौला की मुराद की तर्दीद होती है और अपने मौला के इरादे का मुक़ाबला है। मानो अपने आक़ा के हुक्म को रद्द करके खुद को आक़ा क़रार दिया जा रहा है, उसकी क़बाहत को अच्छी तरह ज़ेहन-नशीन करके नफ़्सानी माबूद के दावाए माबूदियत की तर्दीद करे, उसको इब्तला और आज़माइश के दौर में उम्मीद है कि अल्लाह तआला की इनायत से यह बात पूरी तरह मयस्सर हो जाएगी, ज़माना इब्तला के सिवा दीगर औक़ात में अपनी मुरादें और ख़्वाहिशात सद सिकन्दरी बनी रही हैं, खुदा ख़ैरियत रखे, मुलाक़ात हो या न हो हमारी नसीहत यह है कि अपनी मुरादे हवस बाक़ी न रहे, जो कुछ हो रज़ाए इलाही और इरादए-खुदावंदी हो यहाँ तक कि मेरी रिहाई जो आजकल तुम्हारा बहुत बड़ा मक़सद बना हुआ है, वह भी मक़सूद और मुराद न हो और हज़रत हक़ जल मुजदा की मुक़र्रर फ़रसूदा तक़्दीर पर उसके इरादे और उसकी मर्ज़ी पर पूरी तरह राज़ी हो जाओ।

हवेली कुआँ बाग़ और किताबों का ग़म बहुत मामूली बात है अगर हम मर जाते तब भी जाती रहती अब ज़िंदगी में जाती रही तो कोई फ़िक्र की बात नहीं है, औलिया अल्लाह उन चीज़ों को खुद छोड़ देते हैं। अब शुक्र अदा करो कि खुदाए तआला ने अपने इख़्तियार से उन चीज़ों को छोड़ दिया, चन्द रोज़ ज़िंदगी है जहाँ बैठे हो उसको वतन ख़्याल करो, ज़िंदगी जिस जगह भी गुज़रे यादे खुदा में गुज़रनी चाहिए, दुनिया का मामला आसान है आख़िरत की तरफ़ मुतवज्जह रहो, अपनी वालिदा को तसल्ली देते रहो, अगर अल्लाह तआला ने चाहा तो हमारी मुलाक़ात होगी वर्ना हुक्म खुदा पर राज़ी रहो और दुआ करो कि अल्लाह तआला जन्नत में एक जगह रखे और मुलाक़ात दुनिया की तलाफ़ी करे।

वफ़ाए-महबूब से जफ़ाए-महबूब ज़यादा लज़्ज़त बख़्श हुआ करती है

एक दूसरा ख़त हज़रत मुजद्दिद साहब का शैख़ बदरुद्दीन साहब के नाम है। लिखते हैं : तुम्हारे ख़त में मख़्लूक़ के ज़ुल्म व तअद्दी की शिकायत तहरीर थी, ये चीज़ें हक़ीक़त में जमाअत औलिया का जमाल है, और उनके ज़ंग के लिए सैक़ल, लिहाज़ा तंगदिली और कदूरत का सबब क्यों हो, अव्वल जब यह फ़क़ीर इस क़िले में पहुँचा तो यह महसूस होता था कि लोगों की मुलाक़ात के नूर शहर और देहातों से बुलन्द होकर नूरानी बादलों की सूरत में मेरे पास पेदरपे पहुँच रहे हैं। और मेरे मामले को पस्ती से बुलन्दी पर पहुँचा रहे हैं।

तर्तीब जमाली से सालहा इस मुसाफ़त को तै किया है, अब तर्तीब जलाली से उन मराहिल को तै किया जा रहा है। सब्र व रज़ा के मक़ाम में रहो, जमाली और जलाली को मुसावी समझो, तहरीर फ़रमाया था कि ज़हूर फ़ितना से न ज़ौक़ रहा है न हाल, हालाँकि चाहिए तो यह था कि ज़ौक़ और हाल में और ज़्यादती हो क्योंकि वफ़ाए महबूब से जफ़ाए महबूब ज़्यादा लज़्ज़त बख़्श हुआ करती है। क्या हो गया है! अवाम की तरह बात करते हो और मुहब्बत ज़ातिया से बहुत दूर हो गए हो, बहरहाल गुज़िश्ता के ख़िलाफ़ आइंदा जलाल को जमाल से बढ़ा हुआ समझो और इनाम के मुक़ाबले में तकलीफ़ को बेहतर तसव्वुर करो, क्योंकि जमाल और इनाम में महबूब की मुराद के साथ अपनी मुराद की भी आमेज़िश है, और जलाल व तकलीफ़ में सिर्फ़ महबूब की मुराद सामने है और अपनी मुराद की मुख़ालिफ़त है।

महबूब की हर अदा महबूब ही है

एक दूसरे ख़त में मीर लुक़मान साहब को तहरीर फ़रमाते हैं, मालूम हुआ कि मेरी रिहाई के मुताल्लिक़ ख़ैर-अंदेश अहबाब की जिद्दोजुहद कामयाब नहीं हुई। बमुक़्तज़ाए बशरियत किसी क़दर अफ़सोस ज़रूर हुआ मगर थोड़ी देर के बाद ख़ुदावंद आलम के फ़ज़्ल व करम से वे तमाम हुज़्न, अफ़सोस मसर्रत और ख़ुशी में बदल गया और ख़ास तौर पर इसका यक़ीन हो गया कि यह जमाअत जो हमारी ईज़ा-रसानी के दरपे हैं, उसकी मुराद जबकि हज़रत हक़ जल्ल मुजदह के इरादे के मुताबिक़ है, तो तंगदिली और हुज़्न व मलाल बेमाना और दावा मुहब्बत के सरासर मुख़ालिफ़, महबूब की हर अदा महबूब ही है। आशिक़ जिस तरह इनाम से ख़ुश होता है इसी तरह तकलीफ़ व ईज़ा से भी लज़्ज़त हासिल करता है बल्कि तकलीफ़ व ईज़ा में लज़्ज़त ज़्यादा होती है। वह हज़रत नफ़्स और अपनी ख़्वाहिश व मुराद के शायबे से भी मुबर्रा है, हज़रत हक़ जल्ल सुल्तानुहू जमील मुतलक़ है, उसे बन्दा नाचीज़ की आज़ाद व परेशानी मंज़ूर है उनकी इनायत से यह बन्दा नाचीज़ ख़ुश है, बल्कि लज़्ज़त महसूस कर रहा है लिहाज़ा उस शख़्स की बुराई चाहना और उसकी बुराई के दरपे रहना मनाफ़ी मुहब्बत है, यह शख़्स क्या और उसकी हक़ीक़त क्या! वह सिर्फ़ फ़ेल महबूब का आईनादार है, जो लोग दरपे आज़ार हैं तमाम मख़्लूक़ में सबसे ज़्यादा प्यारे मालूम होते हैं। अहबाब से फ़रमाएँ कि तंगीए दिल दूर करें और इस जमाअत की तकलीफ़देही का ख़्याल भी छोड़ दें बल्कि चाहिए कि उनके अफ़आल से लज़्ज़त-अंदोज़ हों, हाँ चूंकि दुआ के लिए मामूर है लिहाज़ा हज़रत हक़ जल्ल सुल्तानुहू आजिज़ी और तज़र्रुअ के साथ बला को दूर करने की दुआ करें, यह हुक्म दुआ की तामील ही है, आरज़ुए दिल नहीं, क्योंकि तमन्नाए दिल तो वह है जो मुराद महबूब हो।

यह याद रखो, ग़ज़ब हक़ीक़ी, दुश्मनाने ख़ुदा का हिस्सा है और

आशिक़ाने ख़ुदा के लिए तो सिर्फ़ सूरत ग़ज़ब है जो हक़ीक़त में आईनए-रहमत है। और इस क़दर मुनाफ़े के हामिल है कि उसकी तफ़्सील नामुमकिन है। नीज़ इस सूरत ग़ज़ब में मुंकिरों की ख़राबी मुज़मिर है, और उनकी इब्तला का बाइस व सबब।

☆☆☆